श्रीमद्पूर्वाचार्यादिविरचित

॥ षट् द्रव्य नय विचारादि प्रकरण संग्रहः ॥

समस्त जैन बंधुओने अवश्य उपयोगी जाणी यथामति संशोधन करावी

श्री पार्श्वचंद्रगच्छनी जैन [illegible] सरस्वती सभा तरफथी छपावी

श्रावक मंगळदास लल्लुभाइए प्रसिद्ध कर्युं. शामळानी पोळ, अमदावाद.

अमदावाद पीरमसा रोड उपर निर्मळ प्रिन्टिंग प्रेस नामक मुद्रालयमां लल्लुभाइ इश्वरभाइए मुद्रित कर्यो.

प्रत ५००. संवत १९६९. किंमत रु. १-०-० आवृत्ति १ ली.

समर्पणपत्रिका.

श्रीमन्नागपुरीय वृहत्तपगच्छाधिराज युगप्रवराचार्य जंगमतीर्थराजतुल्य सहश्राष्ट श्रीयुत् परमपूज्य सद्गुरु भट्टारक श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वर महाराज !

आप श्रीमान् सेवक जनमनवांछितपूरक कल्पवृक्ष सदृश छो, सत्यप्रवचनोपदेष्टा होवाथी भविजीवोद्धारक (भाविजनतारकप्रवहणरूप छो, प्राचीन जैनशैली मुजब विधिपरंपरा पद धारक शुद्ध क्रियानुष्ठानवंत छो, शांतरसना समुद्र, सुरूपगुणाकर, वचनातिशयवंत, चारित्रपात्रचूडामणि, कुमतांधकारनभोमणि छो, अने मुनिजन मनमानसहंस होइ उग्रविहार युक्त भारतभूमंडलमां विचरी स्वपरनुं सदा कल्याण कर्या करोछो. इत्यादि प्रातःस्मरणीय सद्गुणोथी लोभाइ आकर्षायला मनोभावसह, आप परमोपकारी गुरुराजना सद्गुणोनुं सदैव स्मरण रहेवा हितार्थ आ "षट् द्रव्य नय विचारादिप्रकरणसंग्रह" नामक परम लाभदायि पुस्तक समर्पण करी अत्यानंद पामुंछुं ते आप सेवकश्रेय कारी स्वीकारी लइ आभारी करशोजी !

उपकार

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय परमगुणान्वित स्वच्छ मति गति रति (भाग्य) यशवंत गच्छपति श्रीमान् भट्टारक श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीना सुविनयी सुशिष्य साक्षर श्री सागरचंद्रजी मुनिमहाराज के जेओ साहेब आ परम लाभकारी पुस्तकने प्रसिद्धिमां लाववा हितार्थ अलग अलग स्थळेथी परमोपयोगी लेख एकत्र करी सुधारी आपवामां अवर्णनीय काळजीपूर्वक ध्यान आपी पोताना पठन पाठन क्रियानुष्ठानादि करवाना महान् कीमती समयनो भोग आप्यो छे, अने भव्यजीवोना आत्मकल्याणनो मार्ग खुल्लो करवा खंत राखी छे, ते माटे शुद्धांतःकरण पुरःसर तेओश्रीनो उपकार मानी श्री पार्श्वचंद्र गच्छनी जैन हठिसिंघ सरस्वतीसभा अत्यानंदपामे छे.

ली. सदगुरु चरणारविंद सेवक.



वीर संवत २४३९ श्री विजय राज्ये

श्री आ श्री

श्री आ त् आ श्री

श्री आ त् चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र सू द्र चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र सू री सू द्र चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र सू री श्व री सू द्र चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं त् आ श्री

श्री आ त् चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं त् आ श्री

हु

रे

भ्यो

नमोनमः



॥ श्रीज्ञातृचन्द्रसूरीषट्पदी ॥

शिवगंज नगरे आचार्य पद समये संवत. १९६७ ना वैशाख सुदी १२

"व्रजराज आज साँवरो बंसी बजा गयो" इत्यनेन रागेण गीयते ।

श्रीज्ञातृचन्द्र सूरिराजमर्थदायकं । भजस्व हे सखे गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेर ॥

संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा। मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ १ ॥

प्रवेशमीहसे यदा धियो निवेशने । तदा मनःप्रसारये ममोपदेशने ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ २ ॥

करालकाल एव संनिधौ समागतः । किमीक्षसे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ३ ॥

विहायकर्मशास्त्रमर्मधर्मकर्मणे । प्रहीतुमीहसे यदा तदा सुशर्मणे ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजवंशदीपकं । सुमुक्तिराजधानिकाध्वनः समीपकम् ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ५ ॥

तपः प्रकर्षनिर्जितोरुपञ्चसायकं । महानिदेशनासुधारसप्रपायकम् ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ६ ॥

नित्यानन्देन रचिता भाईलालेन गापिता । आचार्यज्ञातृचन्द्रस्य षट्पद्यास्तां मुखाम्बुजे ॥ १ ॥

भाषाटीका । मित्र ! वांछित अर्थको देनेवाले, गुरु मुनिराज आचार्य श्री ज्ञातृचन्द्र सूरि-

राजमहाराजको सेवन कर ॥टेर॥ जो कि तु इस संसारकी छोडना चाहता है, और जो मुक्तिको जाना चाहता है तो हर्षसे हे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले० ॥१॥ तूं बुद्धिके घरमें जो प्रवेशको चाहता है तो मेरे उपदेशमें मन फेला । हे मित्र० ॥२॥ यह भयंकर काल पासमेंही आया हुवा है, रागसें क्या अनित्यसुखको देख रहा है । हे मित्र० ॥३॥ जो कि तूं (सांसारिक) कर्मको छोडकर धर्म करनेके लिये शास्त्रके मर्मको लेना चाहता है तो मुक्तिके लिये हे मित्र० ॥४॥ (श्री बृहत्तपागच्छीय) श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजीके वंशके दीपक, मुक्तिरूप राजधानीके मार्गको समीप[1] करनेवाले । हे मित्र० ॥५॥ तपके प्रकर्षसे कामको जीतने वाले, व्याख्यानरूप अमृतरसके पानेवाले हे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रजी सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥६॥ नित्यानन्दशर्मासे बनाइ गई, और झाइलालजीसे गाइ गइ, यह आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीकी षट्पदी मुखरूप कमलपर रहो ॥ १ ॥

ली. आपश्रीजीथी जन्म पामेली, श्रीपार्श्वचंद्र गछनी जैन हरिसिंघ सरस्वती सभा अने सेवक मंगलदास.

---

१ समीपयतीति समीपकस्तं मुक्तिराजधान्याः सामीप्यदर्शकमिति भावः ।

॥ पुस्तक प्रकट थवानुं प्रयोजन. ॥

आ पंचम कालनी अंदर विषय कषायनी लोलुपताने लीधे के धन धान्यादिनो लाभ प्राप्त करवानी धामधूमने लीधे महान् पुस्तको (आगमो–सिद्धांतो) छे ते सांभली विचारी मनन जेटलो अवकाश अने समजशक्ति हाथ न होवाथी जैनागमनी अंदरनुं रहस्य आपणने प्राप्त थइ शकतुं नथी. केमके सागर समान अगाध भावभर्यां सूत्रोने ध्यानपूर्वक अवलोकवां ए कंइ न्हानीशूनी वात नथी. महान् भूमंडलमांनी दूर रहेली के आगमनी अगम सूक्ष्म वस्तुओनुं निरीक्षण करवा माटे तो खास उमदा दुर्बीननीज जरूर पडे छे. परंतु तेवी दुर्बीनरूप ज्ञानचक्षुओ आपणां सतेज न होवाथी आपण तेवा सुक्ष्म विचारोने अंश मात्र पण जाणवा भाग्यशाली थता नथी.

आपणी आ अडचणने ध्यानमां लइ अगाउथी ते श्रुतसमुद्रनुं मंथन करी आपणे समजी शकीए तेवी भाषामां आपणा परोपकारी पूर्वाचार्योए पृथक् पृथक् सत्य वार्त्ताओनुं रहस्य जाहेरमां आणी सागरने गागरमां समावी दीधेल छे. जेथी गागरमां समायला सागर सम रहस्यनुं अवकाश

पूर्ण अवगाहन करी शकवा वखते शक्तिमान् थइ शकिये. एज हेतुने अवलंबी आ विविध विषयविभूषित प्रथम प्रकरणगुच्छने प्रसिद्धमां लाववा यत्न आदरेलो छे.

महान् खुलासानी प्रमाणिक चर्चाओ आपणा अल्पमतिवंत अल्पसमयमां समजी शकीए एवां प्रकरणो रचवाना संबंधमां पूर्वाचार्योए उठावेलो अपार परिश्रम सफल थवा आपणे ए प्रकरणो भणवां—वांचवां—सांभलवां के मनन करवां ए अवश्य आपणुं कर्त्तव्य कर्म समजवुं योग्य छे, आवी मान्यताने लीधे आपणी एज फर्ज अदा करवाने माटे आ अमारो प्रथम प्रयास छे, ते तरफ सुलभ दाखवी आ ग्रंथपक्कवाननी वानगी चाखवा तत्पर रहेवुं अवश्यनुं छे.

आपणा पूर्वाचार्यो निष्प्रेही, निरभिमानी, निर्लोभी, अप्रमत्त, परोपकारी, असमत्ववादी, तत्वगवेषी, हितचिंतक, स्वपरोन्नतिकारक, शास्त्राज्ञानुगामी, निष्पक्षपाति, सत्यवक्ता, प्रमाणिक अने भवभीरु हता. जेथी शंकाने स्थान आपवानुं कारण नथी के तेमणे टाढा पहोरनां गप्पां जगतजीवोने वंचवा माटे हांक्यां हशे. तेओनां तो सटंकः वचनो अक्षरशः मान्य करवा योग्य छे.

पूर्वाचार्योंए विषयभोगनी लालसात्यजी, सरसनीरस अहार तथा प्राशुक पाणीनो उपयोग, करी, वनमां, उपाश्रय, के भयंकर स्थलोमां रही, आपणा उपकार माटे ग्रंथो निर्माण करेला छे. तेओए पंथ वधारवा, किंवा शिष्य संततीनो झूंडो जमाववा के यशनी आकांक्षा आदि स्वार्थपरायणताने अवलंबी वाक्यजालमां बाल जीवोने फसावा उद्यम आदरेल न हतो, तो पछी तेवा परोपकारी प्रमाणिक प्रभाविक पुरुषोनां वचनोने स्वार्थीवचनो मानवां ए आपणी भूल नहि तो बीजुं शुं गणाय ? एमनां विशुद्ध वचनोने हैयाना उमलकासाथ हीरा मोतीथी वधावी लेवांज जोइये छे.

आपणा मुख्य पूर्वाचार्यजी के जेमनां रचेलां प्रकरणो आ पुस्तकनी अंदर विशेष छे ते श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी महान् प्रभावशाली पुरुष हता अने जैनशासनना उत्तमोत्तम उद्योतकारी होवाथी अद्यापि लगण तेमना वचनानुसार चालनार हजारो सेवक विद्यमान छे. तेओ साहेबजी आबुराजनी तलेटीमां आवेला हमीरपुरमां संवत १५३७नी सालमां जन्म धरी पोरवाडवंशी, वेलगशाह पिता अने विमलादेवी माताने महत्तावंत कर्यां हतां, ते कुसाग्र बुद्धिवंत महत् पुरुषने विद्यातो सुप्रसन्नज हती,

।२।।

तेमज ते सुल्लभबोधी हता, जेथी गुरुराज श्री साधुरत्न पंडितराजना उपदेशथी बोध पामी संवत १५४६ नी सालमां फक्त नव वर्षनी किशोरवयमांज दीक्षा अंगीकार करी कुलनो उद्धार कर्यो हतो.

मरुधरना सुरतरु सदृश जनमनवांछितपूरक अने पुष्करावर्त्त मेघसमान हृदयक्षेत्रने रसाल करनार देशनावंत पंडितराज श्रीसाधुरत्नजीनी कृपाथी नवदीक्षित मुनि शास्त्रोना पारगामी थया अने तेथी हृदयक्षेत्रमांथी तत्त्वज्ञानांकुर स्फुरायमान थतां संवत १५५४ नी सालमां उपाध्याय पदना अधिकारी थया.

ए समयमां जैनसमुदायनी अंदर शिथिलाचार विशेष वधी पडतां क्रियानुष्ठान विधिविपरीत थया करतां हतां, एथी शिष्ठाचारनी प्रवृत्ति करवा त्यागी वैरागी सौभागी महदात्माए गुरुराजनी आज्ञा संपादन करी संवत १५६५ नी शालमां क्रियाउद्धार करी शिथिलाचारने धीरे धीरे दूर करवा भगीरथ प्रयत्न आदर्यो.

दरम्यान पोते योधपुर पधार्या त्यां श्री संघे अने जोधाणनाथे आचार्यपद स्वीकारवा वीनंति करी, जेथी भक्तजनोनी भावश्रेणीने वृद्धि साथे भेटाडवा सर्वानुमतनी ऐक्यता थतां पोते सूरिपद अंगीकार करी आचार्यताना गांभीर्य अर्थने शोभाववा लाग्या. प्रमादी बनेला साधुसाध्वी श्रावक-श्राविकाओने सिद्धांतानुंसार धर्मोपदेशना तत्त्ववडे जाग्रत करी शुद्ध क्रियानुष्ठान धारी बनाववा एक सरखो विचार राखी अमलमां आणता भारत भूमिना घणा भागोमां मिथ्यांधकारनो अभाव कर्यो. तेमज महान् सूत्र सिद्धांतोनुं दोहन करी साररुप बालावबोध अने भाषाना ग्रंथो तैयार करी भव्य जीवोने भवतारक मार्ग खुल्लो मुक्यो.

एओ सूरीश्वरजीमां उत्तमोत्तम काव्यशक्ति हती. तेथी संस्कृत, मागधी भाषामां अने प्राकृतमां विविधविषयमां काव्य रची चमत्कृती जाहेरमां लावी पोते आपणा उद्धारक थया. एटलुंज नहीं पण भारतवर्षनां दरेक शहेर अने बनतां लगे दरेक गामोमां विचरी असंख्य संकटो सहन करी भव्य जीवो हितार्थे जैन ज्ञानभंडारो तपासी जे जे तत्व प्राप्त थयुं ते ते परोपकार निमित्त जाहेरमां मूकी अनेक जीवोनुं श्रेय कर्युं.

मजकुर महदात्माश्रीए रचेलां प्रकरणो पैकी यतांकिंचित् जे हाथ लाग्यां तेमानां थोडांक वानगीरुप प्रसिद्धिमां आणवा आ षट् द्रव्य स्वभाव नयविचारादि प्रकरण संग्रह नामक पुस्तक प्रकट करवामां आव्युं छे, अने एथी मानवाने कारण मले छे के तत्वग्राही पुरुषो तत्वसंग्रही पोतानी सद्‌भावना भर्या ज्ञानमां वृद्धि करी स्वर्गमां बिराजेला तेओ महदातमाश्रीने आत्मानंद अर्पशेज.

आ पुस्तकमांनां प्रकरणोमां शुं शुं रहस्यो समायेल छे ते जाणवा माटे कहेवानी जरुर छे के नीचे बतावेलां प्रकरणो तथा स्तवनो, स्तोत्र चैत्य वंदनो, स्तुतिओ सझायादि अंदर सिद्धांतोनुं दोहन करी जैन सिद्धांतोनुं केवुं आराधन करवुं ते स्पष्ट बतावेल तेना विषयानुं क्रम निचे मुजब छे.

१ षट् द्रव्य स्वभाव नय विचार, २ श्री अरनाथजिन स्तवन, ३ आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय, ४ मोहवल्ली स्वाध्याय, ५ शीलनो रास, ६ षट द्रव्य स्वाध्याय, ७ नेमि राजुल प्रीति, ८ नेमि राजुल बारमासी, ९ स्थूलिभद्रनी सज्झाय, १० स्थूलिभद्रनी सज्झाय, ११ श्री सीमंधरस्वामीनुं स्तवन, १२ अथ श्री सीमंधरस्वामीनुं स्तवन १३ अथश्री वीरजिणंद आलोयण स्तवन, १४ अथ

श्री शांतिजिन स्तवन, १५ अथश्री नेमिजिन स्तवन, १६ अथश्री आदीश्वर स्तवन, १७ अथश्री रुषभजिन स्तुति, १८ अथश्री पार्श्वजिन स्तुति, १९ अथश्री महावीराजिन स्तुति, २० अथश्री नेमिजिन स्तुति, २१ अथ श्री शांतिजिन स्तुति, २२ अथश्री चैत्रकूट परिपाटि, २३ अथश्री सम्यक्त्व दीपक दोधका, २४ अथश्री श्रोता परीक्षानी सज्झाय, २५ अथश्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विपंचाशिका, २६ अथश्री वीतरागाष्टक, २७ अथश्री पांसठा यंत्र उद्धारमय श्री चोविशाजिन स्तोत्र. २८ अथश्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम्, २९ अथश्री अनंतनाथजिन स्तवन, ३० श्री चतुर्विंसतिजिन स्तुति, ३१ श्री जिनेंद्र स्तुति. ३२ श्रीपंचतीर्थ स्तुति, ३३ श्री वीशविहरमानाजिन नमस्कार. ३४ श्री जिननाम रक्षास्तोत्रम्, ३५ श्रीरुषभादिजिन स्तुति, ३६ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम्, ३७ श्री आदिनाथजिन स्तवन, ३८ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन, ३९ श्रीउपदेश रहस्य सज्झाय, ४० श्री वीसस्थानक तपनी सज्झाय, ४१ श्री एवंति सुकुमालनां चोढालीआं, ४२ बावनयमकगर्भित रहनेमिजीनी सज्झाय, ४३ श्रावक बारव्रतनीसज्झाय, ४४ सती सुभद्रा सज्झाय ४५ श्री सती अंजनासुंदरीनी

सज्झाय. ४६ श्री दशारणभद्रनी सज्झाय, ४७ श्री गुरुगुणनी सज्झाय, ४८ श्री प्रसन्नचंद्र राज-
र्षिनी सज्झाय, ४९ श्री शत्रुंजय मंडन आदिनाथ स्तोत्राष्टक. ५० श्री विषयविकार त्यागनी स-
ज्झाय, ५१ श्री जिनेश्वरदंडक स्तुति, ५२ सासु वहुना झघडानी सज्झाय ५३ श्री वर्द्धमानजिन
स्तुति, ५४ अध्यात्मनी सज्झाय, ५५ श्री वर्तमानचतुर्विंसातिजिनेश्वरस्तुति, ५६ श्री जिनपालित
जिनरक्षित स्वाध्याय, ५७ श्री जीरावला पार्श्वजिन स्तोत्र ५८ श्रावकव्रत शिक्षानी सज्झाय, ५९
श्री युगादि देव स्तुति, ६० श्री आचारंगसूत्रना लोकविजायाध्यननी सज्झाय. ६१ अथ श्री शास्त्र
पूजाष्टकम्, ६२ त्रेसठ शलाका पुरुषरत्न स्तवन, ६३ निंदा परिहारनी सज्झाय, ६४ श्रीजीरापल्लि
पाटक आदीश्वर जिन स्तुति, ६५ अस्वाध्याय विचार सज्झाय, ६६ प्रीति छत्रीशीनी सज्झाय, ६७
अथ श्री राजर्षि सुकोसलजीनी सज्झाय, ६८ श्री जिन आज्ञानी सज्झाय, ६९ अथ श्री सनंत-
कुमारजीनो रासो, ७० श्री वीर प्रभुना अग्यार गणधरनी स्तुति, ७१ श्री गौतम स्वामीनी स्तुति,
७२ श्री फलवधि मंडण पार्श्वजिन स्तवन, ७३ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवन, ७४ श्री सीमंधर जि-

नवर स्तवन, ७५ वर्तमान चौवीश जिन चैत्यवंदनम्, ७६ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन, ७७ श्री वासुपूज्य जिनराज स्तवन, ७८ श्री पार्श्वनाथ जिनवर स्तवन, ७९ आत्मशिक्षानी सज्झाय, ८० श्री रुषभदत्त ने देवानंदजीनी सज्झाय, ८१ श्री मेघकुमार मुनिनी सज्झाय, ८२ रात्रिभोजन निवारक सज्झाय, ८३ श्री नंदिषेण मुनिनी सज्झाय.

८४ पाक्षिक प्रतिक्रमणनी स्वाध्याय. ८५ श्री धर्म जिनस्तवन. ८६ श्री पार्श्वजिन स्तवन. ८७ श्री महावीर स्वामी स्तवन. ८८ श्री पार्श्वजिन स्तवन. ८९ श्री विमलजिन वासुपूज्यजिन स्तवन. ९० श्री शत्रुंजय मंडण आदिजिन स्तवन. ९१ श्री महावीर जिनवर स्तवन. ९२ श्री रुषभ स्तुति प्रारम्भः ९३ श्री पार्श्वनाथचैत्यवंदनम्. ९४ श्री जिनेंद्रस्तुतिः ९५ श्रीवासुपूज्यस्तुतिः ९६ अथ परमात्मस्तवः ९७ श्री पार्श्वनाथस्तुतिः ९८ श्रीधरणोरगेन्द्रस्तोत्रम्. ९९ श्री महावीर गुणस्थानसूचिका विज्ञप्तिः १०० सामान्यनीतिस्लोकमाला. १०१ श्री सिद्धाचलचैत्यवंदनम्. १०२ श्री युगादिदेवचैत्यवंदनम्, १०३ महावीरस्वामि चैत्यवंदनम् १०४ गिरनारमंडन श्री

०५॥ नेमिनाथ चैत्य वंदनम्. १०५ श्री पार्श्वजिनचैत्यवंदन. १०६ सुभाषितव्याख्यानसंग्रह.

(१) प्रथम व्याख्यान, (२) व्याख्यान बीजुं (धर्मरुपी कामधेनुनुं वर्णन.) (३) व्याख्यान त्रीजुं (मायामयि संसारचक्रमां बावन अक्षरनी संख्यामां शास्त्रो निर्माण करेल छे) (४) व्याख्यान चोथुं (शरीरनी अनित्यता दर्शावी छे) (५) व्याख्यान पांचमुं (संसारनी असारतानुं वर्णन) (६) व्याख्यान छठुं (दश दृष्टांते मनुष्य जन्मनी दुर्लभता बतावी छे) (७) व्याख्यान सातमुं (मनुष्य जन्मनी उत्तमता बतावी छे) (८) व्याख्यान आठमुं (शोक निवारणार्थे उठमणाना समय अगर शोकवंतनेशांति आपवानुं बताव्युं छे) (९) व्याख्यान नवमु (धर्मना चार पाया संबंधी) (१०) व्याख्यान दशमुं (मनुष्यजन्ममां गृहस्थनी करणी) (११) व्याख्यान अगीआरमुं (मनुष्य जन्ममां गृहस्थने जिनेश्वरे प्रणितधर्म पालन करवाथी सरलता) (१२) व्याख्यान बारमुं (श्रावकनुं कृत्य समाप्त.)

१०७ श्री वैराग्यशतक, १०८ श्री जिनेश्वरप्रार्थना, १०९ अथश्री आदिजिनेंद्रचैत्यवंदन,

११० पंचपरमेष्ठिस्तोत्रम्, १११ श्री सिद्धगुणस्तवना, ११२ श्रीगोडी पार्श्वनाथजी-स्तोत्र, ११३ श्री गोडी पार्श्वनाथजी स्तोत्र. ११४ अथ तत्वविचाररुप दुहा सोरठा, ११५ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन, ११६ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन, ११७ श्री माहावीर स्वामी स्तवन, ११८ उपदेश बत्रीसी, ११९ पुष्पो माटे असत् आक्षेप दाताओ ने उत्तर, १२० श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन, १२१ श्री विमळजिन वासुपूज्यजिन स्तवन, १२२ श्री जिनेंद्रस्तुति; १२३ आत्महितोपदेश. (इत्यादि बीजा विषयो छे.)

आ प्राचीन पूर्वाचार्य निर्मित्तग्रन्थोनुं अवलोकन करवाथी वाचकवर्गने प्रमोद साथ प्रतीति मळशे के आपणा ऊपर पूर्वाचार्योनो केटलो बधो (अगाध) उपकार ? ! ! अने एनो बदलो कोइ पण वाली शकीए तेम नथी; तथापि एमना गुंथेला पुष्पगुच्छरुप आ ग्रन्थगुच्छनी सुवासनाना भोगी भ्रमर जो के तत्वरुप मकरंद ग्रहण करी पोतानी आत्मोन्नति करवा प्रवर्त्ते थइ ए तो आपणे कंइक सहस्रांसे पण बदलो वालवावाला गणाइये अने ते पूज्यपादना अमर आत्माने पुण्यना भा-

गी करी शकिये. अस्तु !

ए शिवायना अन्यमहान् पुरुषोनां करेलां पण प्रकरणो स्तोत्र स्तवनो स्तुतिओ सज्ञायादि आ पुस्तकमां होवाथी तेओनी, अने जंगमयुगप्रवर आचार्य भगवान् श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीनी कृपाप्रसादीनो आस्वाद अनुभवी आनंदमान थइ धर्मध्यानमां तत्पर रहिये तो सर्वना श्रमनी सफलता हाजर रहेज !

आ ग्रंथमां कोइ प्रुफ सुधारवामां, लेखमां समजमां अशुद्धि रही होय तो ते संबंधी हुं मिच्छामिदुक्कडं दइ निर्दोषतानो संगी थाउछुं, अने इच्छुंछुं के–सदा सर्व जैनवीरो आवां रहस्य गर्भित पुस्तको प्रकट करवामांज तल्लीन रहे एवीज शासनदेवनी प्रेरणा थाओ ! शांतिः शांतिः शांतिः

संवत १९६९ वीर संवत २४३९
सने. १९१३ पर्युषणापर्व.

महद्‌ात्माना चरणांबुजनो मधुप
मंगलदास.

शुद्धिपत्र.

पृष्ट	पांक्त	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	विचार	विचारो	१८	८.	अखन्ड	अखंन्ड
२	७	श्रोत्रं	श्रोत्रें	१९	९	ढे	ढ
५	४	जीवनो	जीवनुं	२२	५	जोव	जोवे
५	४	कह्यो	कह्युं	४८	५	वार	वारए
७	७	चारित्रचरण	चारित्र मोहनीय	४८	९	संबंधि	संबंध
१७	१०	द्व्यास्तिक	द्व्यार्थिक	४८	११	चरित्र	चारित्र
१७	४	तनाथी	तेनाथी	५८	१	कीधी	कीधो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५०	१	सदंह	संदेह
५०	२	छन्दः	छन्दः ॥
५०	४	संदेवः	शंदेव
५१	५	प्राव	प्राप
५१	६	नाथस्यः	नाथस्य
५१	६	मुकुक	मुकुकः
५२	१	म	मू
५९	७	स्थिति	स्थित
६०	७	घरे	घरे
६३	१	सोबन	सोवन
६३	७	सरूप	स्वरूप
६४	८	जिनेडं	जिनेंडं
६५	७	जगन्नाथं	जगन्नाथ
६५	७	अरनाथं	मरनाथं
६६	१	तवांक्रिपद्मं	तवांघ्रिपद्मं
७३	७	द्व	द्व
८९	९	लं	लैं
९१	४	सद्गगतिं	सद्गतिं
९३	७	मोढेर	मोढेरे
९३	१०	मेर	मेरे

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९५	१	गुम	गुण
९५	३	म	म्
९५	९	गाधं	गाथं
९६	९	अरेर	अरेरे
९७	१	वेग	वेगे
९७	९	ज्ञावंम्	ज्ञावम्
९७	४	कस्याप्ये	कस्याप्य
९८	१	प्रतिचा	प्रतिमा
१०२	२	सातदात्रा	सातदात्र
१०२	३	पात्रमार	पत्रिमार
१११	९	शीले राग रंगे नवि रमे	सत्य शीले राग रंग नव नव रमे
१११	१०	म्ने	ले
११२	२	जागी	जग
११२	५	धावि	धाव
११३	८	चित्ते	चिंते
११३	१०	सकल	सुकल
११३	४	तणो	तणा
११३	५	आपणो	आपणा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११३	९	लागे	लाग
११४	९	वाघे	वाघे
११४	९	लधु	लघु
११९	९	लब्धा	लब्ध्या
१२६	६	नारा	नरा
१३१	९	ञजाञं	ञंजाउं
१३२	२	ञाजन	ञोजन
१३२	४	नदि	नंदि
१३६	६	हीन	ही
१३६	१०	पद्म	पद्मः
१४१	७	अंगराजी	अंगजी
१४२	२	विचरियेजी	विचारियेजी
१४२	३	अरधमि	अधरमि
१४९	१	सत्यष	सत्यौष
१४९	२	सितौ	तिथौ
१५०	४	निर्नाशम	निर्नासम्
१५२	६	स्पाद	स्याद
१५३	२	स्पृशेतू	स्पृशेत्
१५४	७	गर्द्धज्ञातू	यर्द्धज्ञात्
१५५	१०	९	८

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	२	च	चं
१५६	६	?	!
१५७	१	च	चू
१५८	४	तुनु	तनु
१६२	७	पाख	पाखि
१६४	१	माट	माटे
१६४	८	पुरुषा	पुरुषो
१६५	४	लेशा	लेश्या
१६५	७	कार्यौ	कायो
१६६	५	खेलजल्ल	खेलल्लसंघाण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६८	५	कर	करे
१६९	६	शोगा	सोगा
१७०	३	नर्कं	नर्कं
१७१	८	अनु	उन्
१७६	३	सुखदः	सुखद
१८४		जणे पुत्रने अनाथाश्रममां सुंपी	मांथी कुबेरसेना वेश्याए श्रावकोनां बार व्रत अंगीकार कर्यां अने कुबेरदत्ते

पत्र ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	११	ज्ञव	ज्ञय
२०७	५	त	ते
२०८	१०	मदोन्ममत	मदोन्मत्त
२०९	११	पोकत	प्रोकत
२११	१	गणाग	गणाय
२११	१	ने	न
२१४	१	ज्ञत	ज्ञत्त
२१५	२	राग	रोग
२१५	१०	द्व	द्वे
२१९	१	जवी	जेवी
२२२	५	मर्ख	मूर्ख
२२२	६	जओ	जेओ
२२५	२	यह	यहु
२२५	१०	ज्ञूत	ज्ञूत
२२५	१०	प्रसन्न	प्रसन्नं
२२६	१	वोर	वीरं
२३३	४	ज्ञावे	ज्ञावे

अनुक्रमणिका.

क्रमांक	विषय	पृष्ट
२१	अथश्री शांतिजिन स्तुति ...	५१
२२	अथश्री चैत्रकूट परिपाटी, ...	५२
२३	अथश्री सम्यक्त्व दीपक दोधका...	५५
२४	अथश्री श्रोता परीक्षानी सज्झाय	५६
२५	अथश्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विपंचाशिका	५८
२६	अथश्री वीतरागाष्टक	६४
२७	अथश्री पांसठा यंत्र उद्धारमय श्री चोविशजिन स्तोत्र	६५
२८	अथश्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम् ...	६६
२९	अथश्री अनंतनाथजिन स्तवन ...	६७
३०	,, चतुर्विंसतिजिन स्तुति ...	६९
३१	,, जिनेंद्र स्तुति	६९
३२	श्रीपंचतीर्थ स्तुति	७०

क्रमांक	विषय	पृष्ट
३३	श्री वीशविहरमानजिन नमस्कार...	७१
३४	,, जीननाम रक्षास्तोत्रम् ...	७२
३५	श्रीऋषभादि जिन स्तुति ...	७३
३६	श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम्	७३
३७	,, आदिनाथजिन स्तवन ...	७४
३८	,, मुनिसुव्रतस्वामीनु स्तवन ...	७५
३९	श्रीउपदेश रहस्य सज्झाय ...	७६
३९	अ मेघकुमारनी सज्झाय ...	७७
४०	श्री वीशस्थानक तपनी सज्झाय ...	७९
४१	,, एवंति सुकुमालनां चोढालीआं	८०
४२	बावन यमक गर्भितरह नेमिजीनीसज्झाय	८२
४३	श्रावक बार व्रतनी सज्झाय ...	८३
४४	सती सुभद्रा सज्झाय	८४

सुभाषित व्याख्यान संग्रह.

पानां १६३ थी २१४ सुधी



॥ परम पुरुष प्रणीत—श्रीप्रवचनाय नमः ॥

॥ अथ श्री षड्द्रव्य-स्वभाव-नय विचार लिख्यते. ॥



श्री जिनागम बोहित्थं, संसारार्णव तारणम् ॥
ममेदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय, ३. आकाशास्तिकाय. ४. काल. ५. पुद्‌गलास्तिकाय, ६. जीवास्तिकाय.

ए षट्‌द्रव्य श्री जिनशासनने विषे कह्या, बीजे दर्शने न पामीयें. ए षट्‌द्रव्यनी द्रव्यजाति तथा पर्याय प्रवाहे आदि तथा अंत नथी, ए मध्ये कालद्रव्य वर्जीने पांच द्रव्यने अस्तिकाय

कहीए. (अस्तयः प्रदेशास्तेषांकायः समूहः) अस्तिकाय प्रदेशनो जे समूह एटले ढगलो ते अ-स्तिकाय कहीए. कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहीए, जे माटे कालना प्रदेशनो ढगलो नथी, एक समय बीजा समयने न मळे, ते माटे वर्त्तमान समयरूप तेज वस्तुगते कालद्रव्य छे. अतीत एटले के विणसी गयो, अनागत ते हजी उपन्यो नथी, ते माटे अतीत काल, अनागत काल ते परमार्थे अवस्तु छे. व्यवहारे अतीत, अनागत काल कहपीए, एज माटे आगमने विषे असंख्याता समय मळे आवली कहीए. असंख्यात आवलीए अंतर्मुहुर्त्त कहीए. एवं उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, काल-चक्र पुद्गलपरावर्त्तादिक वर्णव्या छे. पुनः अनंत पुद्गलपरावर्त्त गये छते अतीत काल थाय, अनागत काल अतीत काल करतां अनंतगुणो थाय. शा माटे जे समय आवली मुहूर्त्तादिक जाय छे ते अतीत कालमां जळता जाय छे, तो पण अनागत कालनो अंत नथी आवतो. खुटतो नथी ते माटे अतीत कालथी अनागत काल अनंतगुणो कह्यो. जेम अनागत कालनो अंत नथी, तेम अतीत कालनी आदि नथी. ए अभिप्राये बे अतीत तथा अनागत सरखा थाय. इत्यादिक सर्व

व्यवहारने अर्थे कल्पित छे, परमार्थे वर्त्तमान समय तेज कालद्रव्य छे, ते माटे कालने प्रदेशना समूहना अन्नावथी अस्तिकाय न कहीए. ए षड्द्रव्यनां नाम कह्यां. हवे तेनां लक्षण कहे छे.

॥ प्रथम धर्मास्तिकायनां लक्षण कहे छे. ॥

स्वन्नावे गति परिणामे परिणम्या जे पुद्गलद्रव्य, जीवद्रव्य तेनुं जे अपेक्षा कारण परिणमन व्यापार रहित आधाररूप उदासीन कारण ते धर्मास्तिकाय. जेम गमनागमनादि क्रिया परिणत, माछलाने जल आधाररूप अपेक्षा कारण छे, तेम धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने गमनक्रियाने विषे आधाररूप कह्यो. धर्मास्तिकाय विना जीव पुद्गल चाली शके नहीं, जे अन्यदर्शनी १. उत्क्षेपण, २. अपक्षेपण, ३. आकुंचन, ४. प्रसारण, ५ गमन, ए पांच कर्म माने छे.

१. उत्क्षेपण ते उंचो नांखवो. २. अपक्षेपण ते हेठल नांखवो. ३. आकुंचन ते संकोचवो. ४. प्रसारण ते विस्तारवो. ५. गमन ते चालवो. ए प्रकारे पांच कर्म माने छे. तेउ धर्मास्तिकाय मानता नथी, तेने कारणविना गमनादि कार्य न थाय. ते माटे धर्मास्तिकाय अवश्य मानवो. अने

जो गतिसहायक धर्मास्तिकाय न मानीए तो सहज उर्ध्वगति पामी सिद्धभगवान् एक समयमां लोकाग्रे जाय. एवा स्वभावे अनंते अलोकाकाशे इजी लगी फर्याज करे. ते माटे गतिने विषे नियामक धर्मास्तिकाय जाणवो. धर्मास्तिकाय द्रव्यथी एक द्रव्य, चौदराजलोकप्रमाण, कालथकी अनादि अनंत, भावथी पांच वर्णरहित, बे गंधरहित, पांच रसरहित, आठ स्पर्शरहित, गुणथी चलनगुण, एवो धर्मास्तिकाय द्रव्य अनंत धर्मात्मिक छे. तेटली वस्तु ते अनंत धर्मात्मकज छे, जे अनंत धर्मात्मक नथी ते वस्तु पण नथी. जेम आकाश–कुसुम, धर्मास्तिकायने विषे असंख्यात प्रदेशपणुं, गति सहायपणुं, मति आदि ज्ञान विषयपणुं, निश्चलपणुं, अरूपीपणुं, एकद्रव्यपणुं, ने अक्रियपणुं, इत्यादिक अनंत धर्माध्यासीने रह्या छे.

॥ हवे अधर्मास्तिकायनुं लक्षण कहे छे. ॥

स्वभावथी स्थिति परिणामे परिणम्या जे पुद्गल जीवद्रव्य तेनो स्थितिनो हेतु अपेक्षाकारण तथा उदाशीन कारण ते अधर्मास्तिकायद्रव्य कहीए. जेम–पंथीजनने वाटे (रस्ते)

गया सहाय कारण छे. तेम जीव पुद्गल चालताने अधर्मद्रव्य जोरावरी स्थिति करावे नहीं, स्थिति करतां सहाय थाय. अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी एक, क्षेत्रथी लोकप्रमाण, कालथी अनादि अनंत, भावथी पांचवर्णरहित, बे गंधरहित, पांच रसरहित, आठ स्पर्शरहित छे. गुणथी स्थितिगुण. ए पण असंख्यात प्रदेशमय अरूपी, अक्रिय, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञानादि विषयत्व इत्यादि अनंत धर्मात्मक छे.

॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षण कहे छे. ॥

सर्व द्रव्यने जे सर्वदा साधारण सरखो अवकाश मार्गस्थान आपे ते आकाशास्तिकाय कहीए. आकाशास्तिकायना बे प्रकार छे. एक लोकाकाश, बीजो अलोकाकाश. धर्म अधर्मादिके सहित ते लोकाकाश कहीए. धर्मास्तिकायादिकनो अभाव ते अलोकाकाश कहीए. ते अलोकाकाश अनंत छे, सीमा (मर्यादा) रहित छे, एतावता (एटले तेनो छेह) नथी कोइक एम कहेशे जे, जेम लोकनी पासे अलोकनो अवधि छे, अंत छे, तेम आगळ पण अंत हशे? तेने कहीए जे लोक

तो ज्ञाव वस्तुरूप छे. ते लोक अलोकाकाशनो अवधि घटे, पण आगळ केवळ अज्ञावने अलोकावधिपणुं केम घटे, ससलानुं शींगडुं जेम कोइनो अवधि न थाय, अने जो ज्ञावरूप अंत मानीए तो ते अन्य द्रव्यरूप नथी, ते माटे अलोकाकाश अनंत जाणवुं. ए आकाश द्रव्य अवस्थित, अक्रियत्व, अरूपीत्व, मत्यादि, विषयत्वादिक अनंत धर्ममय छे. आकाश द्रव्यथी एक, क्षेत्रथी लोकालोक प्रमाण, कालथी अनादि अनंत; ज्ञावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरहित; गुणथी अवकाश गुण; पण अन्यदर्शनी नैयायिकादिक शब्दगुण आकाश कहे छे. आकाशनो गुण शब्दने माने छे ते खोटु. शब्द ते पुद्गलीक छे. इंद्रियार्थपणा माटे रूप, रसादिक जेम इंद्रियग्राह्य छे, तेम शब्द पण श्रोत्रेंद्रियग्राह्य छे, ते आपणने प्रत्यक्ष छे; ते माटे शब्दनो आश्रय आधार ज्ञाषावर्गणा छे पण आकाश नथी. आकाशनो गुण अवगाहदातृपणुंज युक्तिए घटे छे. इति. ॥

॥ हवे काल द्रव्यनुंलक्षण कहे छे. ॥

सकल द्रव्यने पोतपोताना पर्यायने विषे परिणमावे ते काल कहीए. इहां कोइक आचार्य एम

कहे छे जे कालने परमार्थथी द्रव्य नहीं तो शुं सर्व द्रव्यनुं वर्त्तनालक्षण पर्यायज छे. ते पर्यायने विषे अनादि कालिक द्रव्योपचार करे ते कालद्रव्य कहीए, एटले काल ते द्रव्यनो धर्म छे, पर्याय छे, द्रव्यना उपचारे द्रव्य कहीए. सूत्रे काल ते जीवाजीवरूपज कह्यो छे. ते माटे जुदो द्रव्य केम कहीए ?

तेमज जीवाभिगमादि सूत्रने विषे कह्युं छे जे,–(किमयं भंते कालोत्ति पव्वुच्चइ ? गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव. इति)

जीव अजीव तेज सूत्रे काल कह्यो; पण जूदो काल द्रव्य न कह्यो, बीजा आचार्य एम कहे छे जे, ज्योतिचक्रने चारे परत्व, आरेपर, पूर्व पश्चात् नवो पुराणो इत्यादिक जे भावे तेनुं अपेक्षा कारण, उदासीन कारण मनुष्यलोकमां काल द्रव्य छे. श्री भगवती सूत्रमां पण कह्युं छे जे, (कइणं भंते ! दव्वा पन्नत्ता ? गोयमा ! छ दव्वापणत्ता–धम्मत्थिकाए जाव अद्धा समए) ए वचनने अनुसारे कालद्रव्य निरूपचरित जाणवो. ए बे मत देखाड्या, तेमां प्रथम मत सूत्र संमत छे. आ-

गममां काळ पर्यायज कह्यो छे. उपचारे द्रव्य पण कह्यो छे. इति तत्वं.

हवे पुद्गलास्तिकायनुं लक्षण कहे छे.

(पूरण गलन धर्माण) पुराय-भराय अने गळे-खाली थाय एवो जे धर्मस्वभाव ते पुद्गल कहीए. पुद्गलनो परिणामन विचित्र छे. शुभपणे परिणमे, अशुभपणे परिणमे. सूक्ष्म, बादर, संकोच, विकोच, नवपुराण इत्यादिक अनेक प्रकार छे. पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी अनंत, क्षेत्रथी चौदराज प्रमाण, कालथी अनादि अनंत, भावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शसहित, गुणथी परिणमन गुण, इति पुद्गल द्रव्य.

॥ हवे जीवद्रव्यनुं लक्षण कहे छे. ॥

जीवद्रव्य सहज चेतनागुण छे. ते लक्षणेज सर्व अचेतन द्रव्यथी भिन्न छे, अमूर्त्त अरूपी छे, शुभाशुभ कर्मनो कर्त्ता छे, सुख दुःखनो भोक्ता छे, जीवने अने पुद्गलने क्षीर नीरनी पेरे संबंध छे, ते माटे रूपी छे. पोतपोताना देह प्रमाणे छे. ए व्यवहारनयथी जीवनुं स्वरुप कह्युं. वली

अशुद्ध नयथी ५६३ भेद, चौदगुणठाणा प्रमुख जाणवा. निश्चयनयथी सिद्ध छे, सकल कर्ममल रहित छे. वळी जीवद्रव्य केवो छे तो के,–साकारोपयोग, अनाकारोपयोगवान् छे. पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान ते साकारोपयोग कहिए. तेमां मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ए बे परोक्ष ज्ञान. अक्ष आत्मा ते थकी पर–अन्य इंद्रिय पांच अने अर्थ घटादिक पदार्थ मळवाथी वस्तुनुं ज्ञान थाय, ते माटे परोक्ष ज्ञान कहीए. अवधिज्ञान तथा मनःपर्यवज्ञान ए बे देशप्रत्यक्ष छे, केवळज्ञान सर्वप्रत्यक्ष छे, अक्ष–कहीए आत्मा तेने जे अतिंद्रियज्ञान–इंद्रियरहित–इंद्रियविनाज वस्तुने जाणे ते प्रत्यक्ष ज्ञान कहीए. ए आठ ज्ञान साकारोपयोग कहीए. जाति वस्तुनो नियत ग्रहणरूप विशेष तेणे करी सहित ते साकारोपयोग. चार दर्शन–तेमां १. चक्षु दर्शन, २. अचक्षु दर्शन, ३ अवधि दर्शन, ४ केवल दर्शन. ए अनाकारोपयोग–आकार विशेष रहित सामान्यरूप वस्तुनुं ग्रहवुं ते अनाकारोपयोग. सामान्य रूप, विशेष रूप सकल ज्ञेय वस्तु छे. ज्ञेय ते ज्ञानने जाणे ते माटे ज्ञान पण सामान्य विशेष रूप छे, जेम वेगळेथी साल, तमाल, ताल, चंपक, अशोक प्रमुख वृक्षनो समुदाय देखाय

छे तेथी सामान्य वृक्षमात्रनी प्रतीति थाय छे, पण विशेष आंबो छे अथवा तालज छे, एवो निश्चय न थाय ते सामान्य रूप अनाकारोपयोग दर्शन कहीए. तेज ताल, तमालादिक वृक्ष समुदायनी पासे आवीने जोइए डीए के ए तालज छे, आंबो छे, इत्यादिक निर्धार थाय ने विशेष रूप साकारोपयोग ज्ञान कहीए. ते बार उपयोगवान् जीवनो लक्षण व्यवहारनयथी कह्यो. शुद्ध निश्चयनयथी केवलज्ञान, केवलदर्शन, ए जीवनुं लक्षण जाणवुं. वळी ए जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे. १ अनंत ज्ञान, २. अनंत दर्शन, ३. अनंत चारित्र, ४. अनंत वीर्य, ५. अनंत सुख, ६. अक्षयस्थिति, ७. क्षायिक सम्यक्त्व, ८. अमूर्त्त अनवगाहन, ए आठ गुण सिद्ध जीवना छे. जीवास्तिकाय द्रव्यथी १. अनंत, २. क्षेत्रथी लोक प्रमाण, ३. कालथी अनादि अनंत, ४. भावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरहित, ५. गुणथी उपयोग गुण, इति जीवद्रव्य. एटले षद्द्रव्यनो विचार संक्षेपथी कह्यो. विस्तार श्रुत समुद्रथी जाणी लेवो.

॥ हवे द्रव्य, गुण, पर्यायनुं लक्षण कहे छे. ॥

गुण पर्यायनुं भाजन—आधार स्थानक, जेमां गुण पर्याय रहे, वळी जे अतीत, अनागत तथा वर्त्तमानकाळे एक स्वरूप होय, पर्यायनी परे फरे नहीं, पलटाय नहीं ते द्रव्य कहीए. सामान्य ते द्रव्यरूप जाणवुं. विशेष ते गुणपर्यायरूप जाणवुं. सहभावी तें गुण कहीए. क्रमभावी (अनुक्रमे) थाय ते पर्याय कहीए. इहां शिष्य प्रश्न करे छे जे सूत्रने विषे द्रव्य, पर्याय बे कह्या छे. पर्यायथी जुदो गुण देखाड्यो नथी. जे सूत्रे एक गुण कालो, द्विगुण कालो, त्रिगुण कालो, इत्यादिक स्थानके जे गुण शब्द कह्यो छे ते संख्यावाची छे. ते माटे द्रव्य गुण, पर्याय, ए नाम केम कहेवाय? गुरु कहे छे के ते भेदनयनी कल्पना करी जुदा देखाड्या. जेम के, तेलनी धारा—अहीं तेल अने धारा ए भिन्न देखाड्यां पण तेलथी धारा जुदी नथी, तेम सहभावी ए लक्षणे करीने गुण पर्याय जुदा कही देखाड्या, पण परमार्थथी भिन्न नथी. तेम संज्ञानामथी जुदा कह्या. १. द्रव्य नाम, २. गुणनाम, ३. पर्यायनाम, संख्यागणती तेथी भेद. द्रव्याणि षट् (द्रव्य ६,) गुण

अनेक, पर्याय अनेक, वळी लक्षणथी भेद द्रव्ये अनेक पर्यायने पामें, ते द्रव्य कहीए. एकथी अन्यने भिन्न करे ते गुण कहीए. परिगमन सर्वत्र व्यापी ते पर्याय कहीए. अभेद नयनी अपेक्षाए द्रव्यथी गुणपर्याय जुदो नथी. गुणपर्यायथी जुदो द्रव्य पदार्थ भासतो नथी, ते माटे भेदाभेद पक्ष स्याद्वाद तेज अंगीकार करवो. इति तत्त्वम्. एटले द्रव्य गुण पर्याय संक्षेपथी कह्या. विस्तारथी श्रुत समुद्रथी जाणी लेवा. जिनाज्ञा विरुद्ध जे कंइ होय तेनो मिच्छामि दुक्कडम्.

॥ हवे भाव विचारनुं लक्षण कहे छे. ॥

जीव, अजीवने ते ते रूपे परिणमवुं ते भाव कहीए. ते भावना ६ प्रकार छे. १. औपशमिक भाव, २. क्षायिक भाव, ३. क्षायोपशमिक भाव, ४. औदयिक भाव, ५. पारिणामिक भाव, ६. सान्निपातिक भाव, विपाकथी अने प्रदेशथी उदय नावे कर्मदल ते औपशमिक भाव कहीए. जे कर्मक्षयथी थयो ते क्षायिक भाव कहीए. उदय आवे तेनो क्षय, अनुदयनो—सत्तागतनो प्रदेशथी वेदनविपाकथी वेदन न हुवे ते क्षायोपशमिक कहीए. शुभाशुभ कर्मनुं विपाकथी भोगववुं ते

औदयिक कहीए. परिणामवुं एटले पोतपोताना स्वरूपने अनुभववुं तथा पोतपोताना स्वरूपमां रहेवुं ते पारिणामिक भाव कहीए. ए पांच भावनो शब्दार्थ कह्यो. छठो भाव ए पांच भावने संयोगें थाय, ते माटे छठो भाव पछी निरूपण करशे. प्रथम औपशमिकभाव कहे छे—तेना बे भेद छे. १ उपशम सम्यक्त्व, २ उपशम चारित्र. क्षायिकभावना नव भेद छे. तेमां ज्ञानावरण, दर्शनावरणकर्मना क्षयथी उपन्या १ केवलज्ञान, २ केवलदर्शन, दर्शनमोह कर्मना क्षयथी ३ क्षायिक सम्यक्त्व, ४ दान, ५ लाभ, ६ भोग, ७ उपभोग, ८ वीर्य, अंतराय कर्मक्षयथी ए पांच लब्धि ए क्षायिक चारित्र ते चारित्रावरणकर्मक्षयथी थाय. ए नव भेद क्षायिकभावना कह्या. हवे क्षायोपशमिक भावना अढार भेद कहे छे. तेमां १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, ५ मति अज्ञान, ६ श्रुत अज्ञान, ७ विभंगज्ञान, ८ चक्षुदर्शन, ए अचक्षु दर्शन, १० अवधि दर्शन, ११ दान, १२ लाभ, १३ भोग, १४ उपभोग, १५ वीर्य, १६ क्षायोपशमिकसम्यक्त्व, १७ देशविरति, १८ सर्वविरति. ए अढार भेद क्षायोपशमिक भावना कह्या. त्यां ४ ज्ञान,

३ अज्ञान, ३ दर्शन. ए ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण कर्मना क्षयोपशमथी. दानादिक पांच लब्धि अंतरायकर्मना क्षयोपशमथी. तथा दर्शनमोहनीना क्षयोपशमथी सम्यक्त्व. चारित्रमोहनीना क्षयोपशमथी देशविरति तथा सर्वविरति उपजे. औदयिकभावना २१ भेद १ अज्ञान, २ असिद्धपणुं (संसारीपणुं), ३ असंयम (अविरतिपणुं), लेश्या छ ४–कृष्ण, ५ नील, ६ कापोत, ७ तेजु ८ पद्म, ए शुक्ल, कषाय चार १३. गति चार १७. वेद त्रण २०. मिथ्यात्व २१. ए औदयिकभावना भेद कह्या. हवे पारिणामिक भावना ३ भेद कहे छे. तेमां १ भव्यपणुं, २ अभव्यपणुं, ३ जीवपणुं. ए त्रण अनादि पारिणामिकभावथी वर्त्ते. ए भावना ५३ भेद कह्या.

हवे छठो सन्निपातिकभाव तेना औपशमादिक पांच भावने संयोगे २६ भांगा थाय छे ते कहे छे. तेमां १० द्विक संयोगिया भांगा, १० त्रिक संयोगिया भांगा, ५ चार संयोगिया भांगा, १–पांच संयोगियो भांगो. ए प्रमाणे २६ भांगा थया, ते कहे छे–१ औपशमिक क्षायिक १-२, २-औपशमिक क्षायोपशमिक १-३, ३ औपशमिक औदयिक १-४, ४ औपशमिक पारिणामिक १-५

५ क्षायिक क्षायोपशमिक २-३, ६ क्षायिक औदयिक २-४, ७ क्षायिक पारिणामिक २-५, ८ क्षायोपशमिक औदयिक ३-४, ए क्षायोपशमिक पारिणामिक ३-५, १० औदयिक पारिणामिक ४-५, ए प्रमाणे दश द्विक संयोगिया भांगा कह्या.

हवे दश त्रिक संयोगिया भांगा कहे छे. १ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक १-२-३, २ औपशमिक, क्षायिक, औदयिक १-२-४, ३ औपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक १-२-५, ४ औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक १-३-४, ५ औपशमिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक १-३-५, ६ औपशमिक, औदयिक, पारिणामिक १-४-५, ७ क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक २-३-४, ८ क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक २-३-५, ए क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक २-४-५, १० क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक ३-४-५. ए दश त्रिक संयोगिया भांगा कह्या.—हवे पांच चतुष्क संयोगिया भांगा कहे छे. १ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक १-२-३-४, २ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक १-२-३-५. ३ औपशमिक, क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक

१-२-४-५, ४ औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक १-३-४-५, ५ क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक २-३-४-५. एक पंच संयोगियो ज्ञांगो १-२-३-४-५. ए प्रमाणे २६ ज्ञांगा सन्निपातिक ज्ञावना थया. तेमां २० ज्ञांगा असंज्ञवी छे, कोइकमां संज्ञवे छे, ते कहे छेः— द्विक संयोगिया ज्ञांगा १० छे, तेमां सातमो ज्ञांगो २-५ क्षायिक,पारिणामिक; ते सिद्ध ज्ञगवान्ने विषे थाय. सिद्धने क्षायिक ज्ञावे ज्ञान दर्शनादिक छे; पारिणामिक ज्ञावे जीवत्वादिकछे; दश द्विक संयोगिया ज्ञांगामां एक ज्ञांगो संज्ञवी देखाड्यो. दश त्रिक संयोगिया ज्ञांगा तेमां छेल्ला २-४-५ अने ३-४-५ ए बे ज्ञांगा संसारीजीवने विषे संज्ञवे छे. तेमां क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक ए ज्ञांगो केवलीने विषे संज्ञवे. केवलीने क्षायिक ज्ञावथी ज्ञान दर्शनादिकछे, मनुष्यनी गति औदयिक ज्ञावे छे. जीवत्वादिक पारिणामिक ज्ञावें छे. ए प्रकारे त्रिक संयोगियो १ ज्ञांगो केवलीमां संज्ञवे. क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक ए त्रिक संयोगियो ज्ञांगो चार गतिमां संज्ञवे छे. संसारी जीवमां इंद्रिय ज्ञानादिक क्षायोपसमिक ज्ञावे, औदयिक ज्ञावे नरकादिक गति, पारिणामिक ज्ञावे जी-

वत्व, भव्यपणुं. ए बे त्रिक संयोगिया भांगा संभवी कह्या. चार संयोगिया भांगा बे संभवे छे. १-२-४-५ अने २-३-४-५ ए बे भांगा चार गतिना जीवमां संभवे छे. औपशमिकभावमां सम्यक्त्व; क्षायोपशमिकभावमां इंद्रियादिक, औदयिक भावथी नरकादिक गति; पारिणामिक भावथी जीवत्वादिक. ए प्रकारे चतुष्क संयोगिया भांगा बे संभवे छे. अने एकसंयोगियो भांगो मनुष्यने उपशमश्रेणीमां पामीए. ते केवी रीते के कोइक क्षायिक सम्यक्दृष्टि मनुष्य उपशमश्रेणीए चढ्यो हुए तेने औपशमिकभावे चारित्र, क्षायिकभावे सम्यक्त्व, क्षायोपशमिकभावे इंद्रिय, औदयिकभावे मनुष्यगति, पारिणामिकभावे जीवत्व भव्यत्व. ए प्रकारे छठा सन्निपातिक भावना २६ भांगा प्ररूप्या, एटले छ भावनी प्ररुपणा जीवने विषे करी.

॥ हवे अजीवने विषे कहे छे. ॥

त्यां प्रथम आठ कर्मने विषे चिंतवे छे. ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, ए त्रण कर्मने विषे १ क्षायिक, २ क्षायोपशमिक, ३ पारिणामिक, औदयिक. ए चार भाव होय. मोहनीय कर्मने

विषे पांच ज्ञाव पामीए. वेदनीय कर्म, आनखा कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म, ए चार कर्मने विषे क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक; ए त्रण ज्ञाव होय. ए प्रकारे आठ कर्मने विषे ज्ञाव कह्या. १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ काल; ए पारिणामिकज्ञावे वर्त्ते छे. १ धर्म, २ अधर्म, ३ आकाशने विषे गति स्थिति अवकाशदान परिणामे परिणम्याथी अनादि पारिणामिक ज्ञाव छे. कालने पण आवलीयादिक परिणामे परिणम्या माटे अनादि पारिणामिक ज्ञाव छे. पुद्गल स्कंध मेरु पर्वतादिकने विषे अनादि पारिणामिक ज्ञाव वर्त्ते छे. औदयिक ज्ञाव पण थाय एटले कर्मपुद्गल खंध जीव संबंधे पुद्गल विपाकनी कर्मप्रकृतिने उदये औदारिकादिक जे नोकर्म तेना पुद्गलने विषे वर्णादिक होय, माटे अनंत प्रदेशी स्कंध, कर्मवर्गणादिक पुद्गल, ते सर्व औदयिक ज्ञावे होय, एवी रीते पुद्गल स्कंधने विषे १ पारिणामिकज्ञाव, २ औदयिकज्ञाव पण थाय छे. एटले अजीवने विषे पण ज्ञाव कह्या.

॥ हवे सात नयविचार संक्षेपथी कहे छे. ॥

१ नैगमनय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहारनय, ४ ऋजुसूत्र, ५ शब्दनय, ६ समभिरूढ, ७ एवंभूत, ए सात नयनां नाम कह्यां.

॥ प्रथम नैगमनयनुं स्वरूप कहे छे ॥

ज्यां अनेक प्रकारे सामान्य विशेषरूप विचार कही एक पदार्थनो भाव जाणीए, ते नैगमनय कहीए. जेम कोइक पुरूषने कोइ पुरूषे पूछ्युं के अहो पुरूष ! तुं क्यां वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के हुं लोकमां वसुं छुं, एम कहे छे तेने नैगमनयवादी सामान्य विशेषादिक करी पूछे छे के, लोकमां तुं किया लोकमां वसे छे; ऊर्ध्वलोक अधोलोक के तिर्यग्लोकमां ? ते वारे तेणे कह्युं के, हुं तिर्यग्लोकमां वसुंछुं. तेवारे नैगमनयवादी बोल्यो के,—तिर्यग्लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेमां तुं किया द्वीपमां वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं जंबुद्वीपमां वसुंछुं. तेवारे वळी नैगमनयवादी पूछे छे के,—जंबुद्वीपमां भरतादिक अनेक क्षेत्र छे, तेमां तुं किया क्षेत्रमां वसे छे ? तेवारे ते

पुरुष कहे छे के, हुं भरतक्षेत्रमां वसुंछुं. तेवारे वळी नैगमनयवादी पूछे छे के,— हे पुरुष ! भरत-क्षेत्रमां अनेक गाम तथा नगरादिक छे, तेमां तुं क्यां वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं पाटलीपु-रमां वसुंछुं. तेवारे नैगमनयवादी बोल्यो के,—पाटलीपुरमां अनेक ब्राह्मण तथा क्षत्रियादिकनां घर छे, तेमां तुं क्यां वसे छे ? तेवारे ते कहे छे के, हुं देवदत्तने घेर वसुंछुं. तेवारे वळी पूछे छे के,—देवदत्तने घेर अनेक ओरडा, साल, चित्रशाला, सभा तथा गवाक्षादिक छे, तेमां तुं कये ठेकाणे वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं ओरडामां वसुंछुं. एम जे एक भाव सामान्य विशेषादिके बोलीए ते नैगमनय जाणवो. वळी भूतनैगम, भावीनैगम, वर्त्तमाननैगम इत्यादिक अनेक प्रकार नैगम-नयना छे. इति नैगमनय विचार.

॥ हवे बीजा संग्रहनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

एक शब्दे करी घणी वस्तुने संग्रहे ते संग्रह कहीए. जेम मार्ग जतां आगळना भागमां वृ-क्षवल्ली देखी गहन स्वरूप जाणी कह्युं के, आगळ वन छे. ए प्रकारे जे सामान्य वचन कह्युं ते

संग्रहनय कहीए. जे कारणे वनमां नानाप्रकारनां जेमके,–धव, खदिर, पलाश, आंबो, लींमडो, जांबू, ताल, तमाल, नाग, पुन्नाग, अशोक वृक्षादिक; तथा ससलां, शीयाळवां, हरिण, रोझ, संबर, शुकर, सिंह, चित्रादिक अनेक जीव; तथा भीलनीपाल, अनेक गोकुल, वाव, पुष्करिणी, सरोवरादिक घणा भाव संग्रहे. पण मुख्य वचन एक जे आगळ वन छे; ते कारणथी संग्रहनय जाणवो.

॥ हवे त्रीजा व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

जे सर्व द्रव्यने विशे निश्चयरहित. (निश्चय ते कहीए जे तत्त्वदृष्टि पुरुष एक पदार्थने विषे अनेक अधिकाधिक जाणे) ते ज्यां नथी परंतु लोक प्रसिद्ध अर्थ जे घट श्याम छे, अथवा रक्त छे, ए रीते जे प्रगट देखाय ते ग्रहे, पण जगत्मां जे घटपटादिक वस्तु छे ते पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श छे एवुं न ग्रहे ते व्यवहारनय जाणवो. ए नय सामान्य अर्थ बोले नहीं, जेम घट कहे ते व्यवहारथी वर्त्ते, लोकप्रसिद्ध जल आणवाने काजे, वस्त्र पहेरवाने काजे, स्तंभ घरना

आधार काजे, पुस्तक जणवाने काजे, इत्यादिक लोकप्रसिद्ध एकेक व्यवहार कहेवाय. ए व्यवहारनय जाणवो.

॥ हवे चोथा ऋजुसूत्र नयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

अतीत काल ते गयो, अनागत काल ते हजी उपन्यो नथी, तेने ग्रहेवुं ते कुटिलन्नाव. ते बे परिहरी ऋजु कहेतां सरल वर्त्तमान काल, न्नावित न्नाव तेने सूत्रे ग्रहे ते ऋजुसूत्र कहीए. एटले ए नय अतीत, अनागत न माने, अने वर्त्तमान माने. वर्त्तमान पण पोताना कालनो अर्थ माने, पण परकीय न माने. ए नय पांच ज्ञानमां एक श्रुत ज्ञाननेज वांछे. बीजां चार ज्ञानथी मुख्य वृत्तिए परोपकारनुं कारण नथी जणातुं. श्रुत ज्ञान सर्व जीवने हितनुं कारण छे, ते कारणथी ए नय श्रुतज्ञान बहु बहु करी ग्रहे, ए ऋजुसूत्र नय जाणवो.

॥ हवे पांचमा शब्दनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

ऋजुसूत्र नयनी माफक एपण वर्त्तमान कालने ग्रहे. तवारे मांहोमांहे न्नेद कयो ते कहे छे. ऋजु

सूत्रनयवादी सामान्यगत अर्थ ग्रहे. पण लींग वचननो भेद कांइ न माने. जेम तट एम कहेतां पुल्लींग बोलाय, अने तटी एम कहेतां स्त्रीलींग शब्द थाय, तटं एम कहेतां नपुंषकलींग थाय पण ऋजुसूत्रनय तट ए शब्दनोज अर्थ ग्रहे. लींगनो विशेष न ग्रहे. अथवा गुरु एक वचन, गुरवः ए बहुवचन अहीं बेहु शब्दे गुरु एटलोज अर्थ ग्रहे. पण एक वचन, बहुवचननो विशेष न गणे. हवे शब्दनयवादी शब्दना लिंग वचनादिक जे भेद छे, ते विशेष जुदा जुदा ग्रहे, ते माटे शब्दनय कहीए. तथा सम्यक् प्रकारे कार्यसाधक शब्द बोलाय तेने ए माने. जेम इंद्र शब्दना चार निक्षेपा नाम १–इंद्र, २–स्थापनाइंद्र, ३–द्रव्यइंद्र, ४–भावइंद्र. ए मांहे शब्दनयवादी एम कहे के नाम इंद्र, स्थापना इंद्र, द्रव्य इंद्र, एमने इंद्र केम कहीए ? जे भणी इंद्रनुं जे कार्य ते करी शके नहीं ए कारणथी इंद्र कहेवाय नहीं. आकाश फूलनी पेरे, जेम फूलनुं कार्य ते आकाश कुसुमथी न थाय. तेम अहीं पण जाणवुं. एक भाव इंद्र ते इंद्र कहीए, शक्र कहीए, पुरंदर कहीए. इत्यादिक अनेक इंद्रनां नाम ते भाव इंद्रने मळे ए शब्दनयविचार कह्यो.

॥ हवे छठा समभिरूढनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

समभिरूढनय एम कहे जे भिन्न शब्दे (शब्द भेदे) अर्थ भिन्नज होय, घट शब्दनो अर्थ भिन्न, कुंभ शब्दार्थ भिन्न, घट शब्दे करी कुंभ कहीए ते अवस्तु कहेवाय. जेम कोइ शिष्य पुछे के, हे भगवन् ! इंद्रने शुं कहीए ? तेवारे श्रीगुरु इंद्रना भाव, अन्य पर्याय शब्द कही देखाडे ते; कया के, इंद्रने शक्र कहीए, पुरंदर कहीए; शचीपति कहीए. बीजां पण इंद्रनां नाम छे ते कही देखाडे. एटले नामांतरे कही शब्दनय मते एक इंद्र लाभे. समभिरूढवादी इंद्र, शक्र, पुरंदर, ए प्रकारे भिन्नार्थ माने. परम ऐश्वर्य करे ते इंद्रपदनो अर्थ. शक्तिप्रधान ते शक्र, पुरंदर शत्रु तेनो नाश करे ते पुरंदर. जे इंद्रपदनो अर्थ ते शक्र पुरंदरथी केम मळे, अने शक्र पुरंदर ए इंद्रपदना अर्थथी केम मळे, एटले इंद्र, शक्र पुरंदर ए एकार्थी केम कहेवाय. एम भिन्न अर्थे वर्त्तमान शब्द, जो भिन्न अर्थने पर्याये मेळवीए तो इंद्रनो पर्याय घट केम न कहीए. इत्यादि समभिरूढ नयना अनेक भाव छे. अहीं आगळ थोडाज देखाड्या छे.

॥ हवे सातमा एवंभूतनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

जेवो शब्दार्थ तेवो निश्चय करी स्थापे, जे वस्तु जे काले पोतानी अर्थक्रिया करे ते वस्तु कहीए. जेम "राजति शोभते इतिराजा."—अत्र चामरादिवमे शोभे ते राजा कहीए. ते पर्षदामां बेठां चामर ढलाय तेवारे, परंतु स्नानादिक वेलाए ते अर्थ विना राजा न कहेवाय. एमज कुलवर्द्धन जे कुलने वधारे ते कुलवर्द्धन कहीए. जो ते कुल वधारे नहीं तो ते कुलवर्द्धन केम कहेवाय. एज प्रमाणे रूमो वर्ण ते सुवर्ण, रत्ननो आगर ते रत्नाकर सुधानो आकर ते सुधाकर कहेवाय. एवा अनेक भाव जेवां नाम तेवा परिणाम जे थाय ते एवंभूत नयवादी प्रमाण करे. ते एवंभूत नय संक्षेपथी कह्यो.

हवे ए सात नय द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक नयमां अंतर्भूत थाय. प्रथमना चार नय जे १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ ऋजुसूत्र. ते द्रव्यार्थिक नय कहीए. आगलना त्रण नय शब्द, समभिरूढ, एवंभूत ते पर्यायार्थिक नय कहीए.

हवे ए सात नयमां जो निश्चय भावथी एक नय प्रमाण करी जे आगमनो अर्थ विचारे ते

दुर्नयवादी कहीए अने जे सात नय सहित अर्थ विचारे ते स्याद्वाद, यथार्थवाद श्रीवीतरागनो मार्ग जाणवो. ए सात नयथी ७०० नय उपजे. चार बोले करी रहित तेने नाम निक्षेप कहिए. १ जाति २—गुण ३—कर्म ४—जोग ए चार बोल सहित भाव निक्षेप छे. जाति कोने कहीए? जेमके गाय, भेंस, बकरी, एडका इत्यादि जाति नामभावनिक्षेप. गुण जेमके ज्ञानी, ध्यानी, त्यागी, वैरागी इत्यादिक गुण भावथी निक्षेप. कर्म; जेमके सोनार, लोहार, कुंभार, बजाज, सराफ इत्यादि कर्मभावनिक्षेप. जोग; जेमके वस्त्रवंतने वस्त्री कहीए, तेमज दंडवालाने दंडी कहीए, खड्गवा-लाने खड्गी कहीए इत्यादिक भावनिक्षेप. ए चार बोले करी भावनिक्षेपो उलखीए, (जाणीए) ए चार बोलोथी रहित त्रण निक्षेपा जाणवा. नाम ते नाम मात्र. स्थापना ते आकार मात्र, द्रव्य. ते वस्तुनो भाजन मात्र. ए त्रण भावना रहित नैगमनयना ३ भेद ते दश प्रकारना द्रव्यार्थिक नयथी गणीए त्यारे दशत्री ३० थाय. संग्रहनयथी गणीये तो दशदुए वीश थाय. व्यवहार नयथी गणीये तोए पण वीश थाय. एम चालीस थाय. सर्व मली ७० थया. ऋजुसूत्रना ९. ६ प्रकारना पर्या-

यार्थिकथी गणीए तो छडु १२ थाय. शब्द, समभिरूढ, एवंभूत ए भेदथी गणीए तो छत्री १७ थाय, सर्व मली १०० थाय, ते १०० भेद स्यात् अस्ति १ स्यात् नास्ति, स्यात् अस्ति नास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य ए सातेने सोए गणवाथी सातसें थाय छे. वली घणा भेद छे, ते सर्वे प्रमाण करी एक बोल स्थापतां श्री वीतरागनी आज्ञा प्रमाण थाय. एकांतवाद ते मिथ्यात्व एम जाणी श्री जिनागम साचां सद्दही सम्यक्त्व निर्मल करवुं. (तमेवसच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेइयं) इति वचनात्. श्रीरस्तु.



इति श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचंद्रसूरिकृत-

श्री षट्द्रव्य स्वभाव नय विचारः

संपूर्णः

अथ श्रीअरनाथजिन स्तवन.

(लाग्या दोय पिचाशके झूरे अति घणुं हो लाल—ए राह.)

अमल विमलगुण अब्धि समाधिरसें भर्यो हो लाल समाधिरसें० ॥ जगतजंतु सुखकाज तारु भलें अवतर्यो हो लाल तारुभलें० ॥ दशविधि मुनिवर धर्म्म साधन भणी संचर्यो हो लाल साधन भणी० ॥ वस्तु तत्त्व सुध्यान स्वामी मुझा वर्यो हो लाल स्वामी मुझा० ॥१॥

अर्थ—श्री अरनाथजी कहेवा छे ते संबंधमां कविवर मुनि वाघजी कहे छे के—हे भव्य जीवो ! श्री अरनाथप्रभु अमल एटले के रागद्वेष वगेरेनी आवरणारूप मलथी रहित छे, विमल एटले के भावउज्ज्वलता ज्ञानादि गुणना समुद्ररूप होइ समाधिरसवडे भरपूर छे. (समाधिनुं लक्षण ए छे के—आत्मगुणोथी जे विपरित प्रवर्त्तन ते उपाधि कहेवाय छे, अथवा तो विषयकषाया-नुयायी प्रवर्त्तन रूप उपाधि, किंवा तम-उद्धत-वक्रता परिणामादि सर्व विभाव रूप उपाधिनुं

निवर्त्तन, सकलगुण स्वरूप परिणामी थइ आत्मगुणनी वस्तुमा स्थिर थवुं ते समाधि रसथी भरपूर-पूर्ण समाधिरसमयी छे.) पुनः प्रभु केहेवा छे ? सकल जंतु अर्थात् सूक्ष्म एकेंद्री-बेंद्री-तेंद्री-चउरिंद्री-पंचेंद्रि-त्रस अने थावर ए समस्त जीवने सुख करनारा छे. एटलुंज नहीं पण संज्ञी जीव नर पंचेंद्रीने भवसमुद्रथी तारनारा छे ए भले अवतर्या; केमके ए तारक परमात्मा क्षमा मार्दव वगेरे दश प्रकारनो जे श्रमण-साधु धर्म ते साध्य करवानी साधना करवा प्रवर्त्तमान अर्थात् परम क्षमा, परम मार्दव, परम आर्जव अने परम मुक्तिमयी धर्मना भोक्ता थइने संचर्या छे अने वस्तु-जीवस्वरूप एक शुद्धः निष्कलंक आत्म चिदानंदघनना अनुभव-यथार्थज्ञान सह वेद्य संवेदक पदयुक्त ध्यान मुद्राने श्री अरनाथस्वामी वर्या छे अर्थात् ए मुद्राने पामेल छे. ॥१॥

सुमति आचरणारीति परम सुचि योगता हो लाल परम सुचि० ॥ शम दम गुण अभिराम गुपति जिन साधता हो लाल गुपति० ॥ परपरिणति परिराग नहीं भाव द्वेषता हो लाल नहीं भाव०॥ दीठा श्री अरनाथ महारस भ्यासता हो लाल महारस० ॥२॥

अर्थः—उपर बतावेली मुद्रानी अंदर सुमतिनी आचरणायुक्त रीतिवडे परम उत्कृष्ट पवित्र उज्वल जे योग ते मयी छे, तथा शम दमना गुणोवडे मनहर गुप्ति साधना अलंकृत अर्थात् गुप्ति त्रयात्मक छे. पुनः पर एटले पुद्गलनी परिणतिथी (अशुद्धता—ज्ञानावरणादिक कर्म—काम क्रोधादि आत्मधर्मथी भिन्नपणुं तेने पुद्गलपरिणति कहेवाय छे तेनाथी) अद्वेषता—अनादरपणुं छे—मतलब ए के जेमणे पर परिणति उपर रागभाव द्वेषभाव तजी दीधेल छे अने जे आत्मिकज्ञान शुद्ध रूपतामां प्रवर्त्तनारा छे ते प्रभुने में भवचक्रमां भ्रमण करतां कुदेवनी वासनाओ एटले के जे देव-पदवीनी योग्यतावाला नहीं तेवा नामना देवने देवपणानी बुद्धिथी मानी लइ अथवा सुदेव-वीत-रागप्रभुने कर्तृत्व वगेरे दोषथी कोइ समय पण प्रभुनी प्रभुता ध्यानमां लीधी न हती ते भवस्थि-तिना परिपक्वपणाने लीधे पूर्वपुण्योदय थतां श्री अरनाथ परमेश्वरनां दर्शन थयां-एवीः— ॥२॥

निरखी निमित्त संयोग लहे गुण विसर्यो हो लाल लहे गुण०॥ अजकुलगत हरी देखि हरीने संभर्यो हो लाल हरीने० ॥ आतमशक्ति संभाली परमपदने वर्यो हो लाल परमपद० ॥ हवें

अरनाथ स्तवन ॥१६॥

करता करम क्रियाथी ओसर्यो हो लाल क्रियाथी ओसर्यो० ॥३॥ अ०स्त०

अर्थः—ए प्रभुदर्शनना निमित्त संयोगवशे मने एक महान् लाभ थयो एटले हुं पोतानुं आत्मस्वरूप—शुद्ध चिदानंद लक्षण अनादि अतीत काल (वीतेला लांबा समय)थी विसरी गयो हतो ते महारस-आत्मस्वरूप अनुभवरस अभ्यासी श्रीप्रभुजीने निरखतां पुनः मने प्राप्त थयुं अने जाणपणामां आव्यो. (में मारुं स्वरूप ओलख्युं.) एटले के, जेम तुरतनुं जन्मेलुं सिंहणनुं बच्चुं बकरांओना टोलामां जइ चढतां बकरांओनी संगति—सहवासना संयोगवशे बकरांओना जेवुं—आचरण करवा लाग्युं; परंतु तेनी स्थिति परिपाके कोइ एक बीजो सिंह ते सिंहबालकनी नजरे पड्यो जेथी तेना जेवुंज पोतानुं स्वरूप जणातां, 'हुं बकरांओना कुलनुं नथी; पण आ सिंहना कुलनुंज छुं' एम पूर्णपणे जाणी स्वस्वरूपने लांबा वखतथी विसारी मूक्युं किंवा संगति संयोगे विसरी गयुं हतुं तेने निमित्तसंयोगवशे पुनः ध्यानमां लीधुं, एटले तुरतज तेणे बकरांओना टोलाने त्यागी दइ पोताना सिंहकुलने प्राप्त कर्युं; तेम मारा आत्माए पण भूली गयेल स्वरूपने प्रभुदर्शनना निमित्त ॥१६॥

संयोग प्रतापथी पुनः प्राप्त करी लीधुं. मतलब ए के में मारुं आत्मिकशक्ति ज्ञानपणुं स्मृतिमां लावी परमपदरूप ज्ञानने प्राप्त कर्युं–(मिथ्यात्व-कुमतिनुं स्थल त्यागी समताना घरमां ज्ञान प्राप्त करी स्थिति करी.) आटला समय लगी विषयसुखना अभिलाषथी मारो आत्मा विषयसुखनो अविरतकर्त्ता हतो, ते भ्रम भागी जतां विषयसुखथी पाछा हठी–प्रभुना निर्विकार देदारवडे अव्याबाध सुखनो अभिलाषी थयो अने आठ कर्मरूप कार्यनो कर्त्ता हतो ते हवे संवर निर्जरारूप कार्यनो कर्त्ता थयो. ॥३॥

सत्तागुणें ए जीव हुवे अति निरमलो हो लाल हुवे अति०॥ जिम स्फटिकरँगभेद दीसे पण नवि मिळ्यो हो लाल दीसे पण०॥ दुष्ट उपाधि विभाव मिळ्यो नवि शामलो हो लाल मिळ्यो नवि० ॥ आनंदघन पद लील विलासी हीरलो हो लाल विलासी हीर० ॥४॥

अर्थ–मारो जीव सत्तागुणवडे द्रव्यास्तिक संग्रहनयें निर्मल–निष्कलंकी-असंगी-अरूपी छे, जेम के स्फटिकरत्न कोइ पण रंग वगेरे वा कुंदनना संयोगवडे भिन्न भिन्न प्रभावंत भासे छे;

परंतु ते भक्ता स्फटिकना रंगथी भिन्नज होय छे. कंइ संग कर्याथी स्फटिकरंगवंत थयो गणाय नहीं. तथापि अपरीक्षक (अजाण) लोको स्फटिकने निर्मल छतां रंगदार माने छे. तेमज कर्मना संगवशे आत्मा अशुद्धरूप भासे छे; तदपि सत्य रीते जोइशुं तो ते निर्मलज छे. दुष्ट उपाधि तथा विभाग आत्मगुण विपरित प्रवर्त्तनवशे तेनाथी शामेल देखाय; परंतु ते श्याम–मलिन थयो कहेवाय नहीं; केमके ते चिदानंदघनपद लीलानो विलासी–परमेश्वर पुद्गलादिकना संगी न थवाने लीधे परम अव्यय आनंदरूप चिद्रूपावस्थान रूपलीलानो विलासी हीरानी पेठे सदा निर्मलज रहे छे.॥४॥

भासे परम स्वरूप सदा मुज सांभरे हो लाल सदा मुज० ॥ व्यक्ताव्यक्तनी छाक मोहादिक ऊतरे हो लाल मोहादिक०॥ अमल अखंड सुभाव सुचिध्यान आदरे हो लाल सुचि ध्यान०॥ तुमपद-पंकज सेव मुनि वाघ आचरे हो लाल मुनि वाघ० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥

अर्थः–मारुं स्वरूप शुद्ध सत्तारूपी अनंतज्ञान दर्शन चारित्र-आनंद स्वरूप-कर्त्ता स्वरूप-भोक्ता स्वरूप परिणामी असंख्यात प्रदेशी प्रति देखाय छे तथा अनंतपर्यायी नित्यानित्यादि अनंत

स्वभावी स्वकीय कारकचक्र परिणामी छे, ते हमेशां मनें याद आवे छे-ज्ञानदृष्टिगोचरमां विद्यमान भासे छे ते मात्र श्रीअरजिननी कृपानोज प्रताप छे. व्यक्त अने अव्यक्त ए बेउ मिथ्यात्व एकेंद्री-आदि समस्त जीवने होय छे ते पैकी व्यक्तमिथ्यात्व पंचेंद्रिनरनेज होय छे तेथी ते कुदेव कुगुरु अने कुधर्ममां लयलीन-मग्न थइ मद्य मोहरूप मदिरानी केफमां छाको रहेल होय छे तेना प्रतापथी ते शुद्ध देव शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मने पिछानी शकतो नथी. पूर्ण मिथ्यात्ववडे मोहमां छकयाथी बौद्ध-सांख्य-जैमिनीय-वैशेषिक-गौतमीय-भट्ट-प्रभाकर-मीमांसक आदि विविध मतनी कल्पनाने लीधे शुद्ध देव-गुरु-धर्म जाणी न शके; पण श्रीप्रभुना दर्शनवडे मिथ्यात्वनी भूल दूर थइ जतां निजधर्मनी प्राप्ति थइ, तेथी अमल-कर्ममलरहित अखंड-खंडित न थाय तेवुं स्वात्मस्वरूप स्वभाव आत्मिकभाव पवित्र ध्यानना आदरवाथी पर गुण निवर्त्तनाथें स्वीयगुणनी प्रवर्त्तनावडे विभावनुं विरमण अने स्वभावनी रमणता थइ तेना प्रभावें परिणमन प्रवृत्ति ए बेउ एक धर्में थवाथी हे प्रभु ! आपना चरणकमलनी सेवना आ वाघमुनि निरंतर निजगुणरागी बनीने आचरे छे अर्थात्

आपनाज ध्यानमां मग्न थइ रहेल छे. ॥५॥ इति श्रीअरजिन स्तवन.

॥ अथ आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय. ॥

सुण सुण जीवरे शीखामण श्री जिनतणी, जे भाखेरे हित कारण त्रिभुवन धणी, अनुयोगेरे आवश्यक करवो कह्यो, साहु साहुणीरे श्रावक श्राविका सद्दह्यो ॥त्रुटक॥ सद्दहिये निरतो करे भवियण दिवस निसि अंतरालए, अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारा यथाशक्ति टालए, जिनवयण वाणि विमल पाणि पापपंक पखालए, भवभ्रमण करतां दुल्लह लाधी आण निरति पालए॥१॥चालती॥ विधि विनारे वार अनंति तें कर्यो, आवश्यकरे काज न कोइ तुज सर्यो, जिम भोजनरे विधिशुं कीधे जीवीये, ते अविधिरे कीधे इह भव रीबीये॥त्रुटक॥इम जाणि विधिश्युं करो निरतो सूत्र साखे संभ-लि, संसार आरति सर्व टाली जेम पुगे मन रली, एक खंध छह अध्ययन तेनां ग्रंथमान विचारीये, सतअधिक पणवीस (१२५) श्लोकनी सूत्रथी मन धारिये ॥२॥चालती॥ तिह पहेलोरे सामायक समता करि, ते करियेरे पाठने नकए मनेंधरि, तीन श्लोकारे अक्षर पणवीस गणो, बत्रीसेंरे अक्षर श्लोक

ज मनज्ञणो ॥त्रुण॥मनज्ञणो तसु फल कह्यो जिणवर मोक्षना सुख पामिये, मद मान मच्छर लोज्ञ टाली कर्मअरि शिर नामिये; तसु दोष त्रीस छ आगला सविटालि सावद्य परिहरि, मन वचन दस दस वार काया दोष एम निराकरि ॥३॥चालती॥ हवे बीजोरे चोवीसथ्थो जाणीए, तसु अक्षररे बसें पंचावन माणिये; शतश्लोकारे अक्षर एकत्रीस साहिया, फल दंसणरे करें विसोधिति साहिया ॥त्रु०॥ वंदनय त्रीजो ऊयण साते श्लोक अक्षर छइ सुणो, करें निर्जर ज्ञावे देतां राग बंध ते शुज्ञ गणो; सौज्ञाग्यवंत सरूप जनने प्रीतिकारी सो हुवे, आदेयवयण जिणाण फल ते एह परज्ञव ज्ञोगवे ॥ ४ ॥ ॥छहा॥ आवश्यक पणवीस तसु, दोष बत्रीस विचार ॥ टालि दूषण वंदिये, गुरुगुणमणिज्ञंकार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ पडिक्कमणारे तुरिय ऊयण ठह सूत्र ए, न कचइचउरे इरियावहीयति सूत्रए; सवि श्लोकारे बिहुत्तरि अधिक अढार ए, ते अक्षररे सय चउवीसति साढ ए॥त्रु०॥इम धारि अक्षर अरथ सूधो करे पडिक्कमणुं सदा, व्रत बिड ढांके रहित आश्रव सबल चारित्र नहु कदा; सावधान पंचय समिति गुप्ति गुपत चरण न वेगलो,इम कह्यो उत्तराध्ययन गणधर तेहनो फल सांज्ञलो॥६॥चालती ॥ काउस्स-

आवश्यक-
कअक्षर
प्रमाण
॥१९॥

गेरे ऊयण सत्त सुय जिणे कह्या, नक इच्छारे तस्सुत्तरियति संग्रह्या; श्रीश्रुतथवरे सव्वलोए अरिहंत चेइआ, सिद्धस्तवरे सात पाठ ए वेइया ॥त्रु०॥ अढारश्लोका वीस अधिका सात अक्षर तेहमा, उगणीस दूषण टालि करतां डुक्ख बूटे देहना; प्रायश्चित्त शोधिये हृदय शीतल न्नार ऊम्री जेम सुखी, इह होइ तिम शुक्लध्यान ध्यावत थाय मुनीमांहे ते मुखी ॥७॥ दुहा ॥ अन्नत्थुसादिय सुहुम, दृष्टि अंति ए बार॥ चउअग्गि ऊंदण धाम्हिअहि, काउसग सोल आगार ॥८॥ चालती॥पच्चरकाणरे ऊयण पाठ बारह जणो, नमु १ पोरसिरे २ पुरिमढ्ढ ने ३ एकासणो ४; एकठाणरे ५ आंबिल ६ विगइ नविगइ ७, ए बेबेरे एकज अन्नत्तठं डुइ ८ ॥त्रु०॥ एक चरिमदिन न्नवचरिम नवमो ए दसम चीवर ऊंम्हणं १०,पाणस्स ११ अन्निग्रह १२ चिहुंपरे ए करे आतमममंऊणं; पणवीस अक्षर श्लोक दश ए मान इम संन्नारिये, पच्चरकाण करी मन शुद्ध पाली इच्छापसरत वारिये॥ए॥ चालती॥ नवकारसीरे दो आगार बे पोरसें, पुरिमढ्ढरे सत्तविगइ निविगइ विषें; नव नव गिणेरे एकासणे एकठाणिए, अठसत्तयरे आंबिल अठ-ति जाणीए॥त्रु०॥ उपवास पंचय बहयपाणसि चरिम चउ चउ अन्निग्रहे,चउवस्त्र ऊंम्हणि कह्या मुनिने

एम भवियण सद्दहे; एम सर्व मेली भंया एकुत्तरि यथायोगे चितधरो, वंदणय युग गुरुपाय देइ तासु साखे ऊचरो ॥१०॥ चालती ॥ ग्रंथ संख्यारे एकसो छप्पन्न साहिया, ते श्लोकारे अक्षर एकत्री साहिया; वारंवाररे गणना करतां ते सही, श्लोक एकसोरे पंचवीसाधिकते नहीं ॥त्रु०॥ श्रुति जाणी इम एगतीस श्लोका अक्षरा इगतीस ए, ते काढी निरतो धम्मो करिये एकसो पचवीस ए; अध्ययनि चउथें आठ श्लोका तेर अक्षर पंचमें, अठ चउदे श्लोकात्रीस वीसे ऊण अक्षर छठमें ॥११॥चालती॥ फल एहनोरे अध्ययने गुणत्रीसमें, तेह भाख्योरे विस्तरी जिण चउवीसमें; इम सांभलीरे उत्तम आवश्यके रमे, मानवभवरे लाधो आलि न निगमे॥त्रु०॥निगमे नहीं यति साहु साहुणि सावया वली साविया, जिनवचनरसे जसु चित्त लाग्यो नमे तसु सुरभाविया; निर्युक्ति लघुगुरुवृत्तिचुर्णी आवश्यकथी उद्धरी, सज्झाय कीधो श्री समरचंदे सुगुरुमुख धारी करी॥१२॥दुहो॥ चार सहस अक्षर सवे, गणना करो प्रमाण ॥ श्रीपार्श्वचंद विनयी कहे, धरज्यो हिये सुजाण ॥ १३ ॥ इतिश्री आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय. ॥

॥ अथ श्री मोहवल्ली भास. ॥

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरजी सद्गुरु भ्योनमः ॥ ढाल वणजारानी ॥ मोह लाग्योरे चरम जिणेसर वीर, गर्भवास मांही छतां मोह लाग्योरे ॥ मो० ॥ व्रत लेवानो नीम, मातपिता मुज जीवतां मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ प्रसनचंद ऋषिराय ॥ काननमें काउसग रह्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ सांभली पुत्रनी वात, मोहराय बाणे ग्रह्यो ॥ मो० २ ॥ मो० ॥ श्री श्रेणीकनो पुत्र, नंदिखेण सरीखो यति ॥ मो० मो० ॥ ते वेश्या घरजाइ, वेष मूकी थयो घरमती ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ आद्रकुमर ऋषिराय, पंचसें मूकी सुंदरी ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते पण नारिपास, वरस चोवीस पड्यो फिरी ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ अरन्नक अणगार, कामरागते रोळव्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ तिण अवसर एक नारि, घरमांहे घाली भोळव्यो ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ आषाढभूत मुनिंद, गयो नाटिकघर विहरतो ॥ मो० मो० ॥ दीठो लाडुकाज, नाटकणी रूप फेरतो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ६ ॥ ते मुनिवर ततकाल, हावभावथी घर रह्यो, ॥ मो० मो० ॥ श्री ललितांगकुमार,

संचाराने जल वह्यो ॥ मो० मो० ॥ ७ ॥ सम्भूत अणसणमांहि, वेणी फरसथी चित चल्यो ॥ मो०
मो० ॥ चित्र सरीखा मित्र, तेहने वचनें नवि नढ्यो ॥ मो० ॥ ८ ॥ मो० रहनेमि चरम शरीर,
राजुल देखी मन पड्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ कोणिक राजने काज, कठपिंजर श्रेणिक जड्यो ॥
मो० ॥ ९ ॥ मो० ॥ कनकरथे नकसांन, पुत्र विगाड्या लोहथी ॥ मो० ॥ मो० ॥ श्री सिज्जंभवसूरि,
आंसु ढल्यां सुत मोहथी ॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ मयणरेहाने रूपे, हण्यो सहोदर मणिरथे ॥ मो०
॥ मो० ॥ पढम जिणेसरमाय, अंध टली देखे पथे ॥ मो० ॥ ११ मो० ॥ दीरघ राखण हेत, चुल-
णीए सुत मारियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ मंत्रीसर परपंच, पुरुषरतन उगारीओ ॥ मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥
हरिना छुटया प्राण, बलभद्र लेइ फिरतो जुओ ॥ मो० ॥ मो० ॥ ब्रह्मदत्त छेल्ले काले, कुरुमती
मुखे लवतो मुओ ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ सगरतणा सवि पुत्र, साथे गया यममंदिरे ॥ मो० ॥
मो० ॥ देवे दीधी सीख, ते आदर चित्त दृढ करे ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ अइमत्तो ऋषिबाल,
काचलीये जल मोहतो ॥ मो० ॥ मो० ॥ कुमर इलाची पुत्र, नाटकणी मन मोहतो ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥

हाथी हारने काज, पद्मावइ वचने वह्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ कीधो बहु संहार, कोणीक चेडासुं झीड्यो ॥मो०॥१६॥मो०॥ शालिभद्रनो बाप, पेटी पूरे दिन मत्ये ॥मो०॥मो०॥कयवन्नाना पुत्र, पिता परख्यो सहु छते ॥मो०॥१७॥ मो० ॥ भद्रबाहुनो शिष्य, भ्रष्ट थयो घरमांहि वसी ॥मो०॥मो०॥ चूक्यो कोश्या जोइ, सींहगुफावासीऋषी ॥मो०॥१८॥मो०॥ बाहुबल भरतेश, कीधा झगडा अति घणा ॥ मो० मो० ॥ रामरावण वलि देख, सीता काजे विडंबणा ॥ मो० ॥ १९ ॥ मो० ॥ शब्द रूप रस गंध, फरस विषय रस रंजिये ॥मो०॥ मो० मृगलो वलिय पतंग, मीन भ्रमर गज गंजिये ॥ मो० ॥ २० ॥मो०॥ देखी मोहनरूप, चित्त धरे धीरज सदा, ॥ मो० मो० ॥ ते तो पुरुष प्रधान दुख न पामे सही कदा ॥मो०॥२१॥मो०॥ गौतम जंबु मेघ, वयरकुमर थुलिभद्र वली ॥मो०॥मो०॥ ए मोटा मुनिराज,नमतां पोंचे मनरली॥मो०॥२२॥मो०॥खंभनयरपरतख,थंभण पास सेवा विषे॥मो०॥ मो०॥ श्री पदमचंदसूरि जोड, कहे सहु लोक रहो सुखे ॥ मोह लाग्योरे ॥ मो० ॥ २३ ॥ इति श्री मोहनवल्ली भास संपूर्ण ॥

॥ ॐ नमः ॥ अथ श्री शीलनो रास.॥

पहिलुं प्रणाम करुं जिनराय, लागुंजी गोयम गणधर पाय ॥ सुगुरुवाणी वली संभरु, भूलो अक्षर आणजो ठाय ॥ रास रचीशुं रलिआमणो ॥ जे सुणी शील हीये थिर थाय ॥ कोकिल जे कलरव करे, मास वसंते ते अंब पसाय ॥ १ ॥ के सील अखंडित सेवज्यो, धर्म अछेजी अनेक प्रकार ॥ सील समाणोजी को नहीं, सूत्र पुराण कुराण विचार ॥ सील सहु कोइ वर्णवे भाइ सीलसुं मंडजो प्रीति अपार ॥ पररमणी जणणी गिणो, आंख मींची मतकरो अंधार ॥ कालेही परभवे पहोचवो, दुख देसि तिहां कामविकार ॥ आकही अंब न लागशे, तुमे संबल लेज्योजी समकित सार ॥ सील संघाती जो मिले, रतनजडित जाणुं सौवनहार ॥ तणु सिणगार सोहामणो, सील समो नहीं कोइ आधार ॥ के सील अखंडित सेवज्यो ॥ आंचली ॥ सीलना गुण किहां किह मुज नाण, सरसलिलां नहीं कुंभनो ठाण ॥ भडुपें न अंबुधि कोइ तरे, जो पण मुज अछे अलप विनाण ॥ तो पण सील वखाणशुं, हास्य करो मत कोइ सुजाण ॥ बालक बांह

पसारीने, शुं न कहे कह्यो सायरमाण ॥ २ ॥ के० ॥ जेवो चंचल कुंजरकान, वेगे पके जिम पाको पान ॥ जेवी चंचल वीजुली, जेवो चंचल सांझनो वान ॥ झाजअणी जल जेहवो, तेवो योवनशुं अभिमान ॥ क्षिण क्षिण जाये छे जीजतो, विषय म राचजो विषसमान ॥ ३ ॥ के० ॥ पंकित वोलिजे तेहवो बोल, जेहवो जाणिजे एह अमोल ॥ जिम तिम बोल न वोलीजे, विषय कह्या किम विष समतोल ॥ अचल सिद्धारथ अंतरो, चिंतव्यो डुरक न देइ निटोल ॥ जो विष नोजन वारीजे, विषय चिंत्यां जीव जाये डहबोल ॥ ४ ॥ के० ॥ चोथे संवरे दसमेजी अंग, अर्थ कह्यो ते सुणो मन रंग ॥ अंगथी आलस परिहरो, चतुर चतुरविध संघने संग ॥ वाणी जोजनगामिनी, श्री वीर वखाणिय सील सुचंग ॥ सगुण मानस मन मानीओ, ए कहेजो सदा सील अजंग ॥ ५ ॥ के० ॥ ग्रहगणमांहे वमो जिम चंद, फूलमांहे वमो जिम अरविंद ॥ नूखणे मोरु नलो नणयो, मणिहिं वैडूर्य जेम अमंद ॥ मेरु महीधर मांहे वमो, गजिहिं औरावण जेम गइंद ॥ ध्यानह शुकल सराहि जे, धर्म मांहे तिम सील नरिंद ॥ ६ ॥के०॥ चंदनमांहे गोसीस वखाणि,

वनहमांहे वडो नंदन जाणि ॥ सरितह सीत वडी सही, साधुमांहे वडो जेम अरिहंत ॥ वृक्षह जंबू सुदंसणा, वस्त्रह खोम जिसो जसवंत॥ लेसह शुकल सुलक्षणा, ज्ञानमांहे वडो केवलज्ञान ॥ दानमांहे वडो अन्नय जे दान, आगरे अंबुधि जाणिजे, धर्ममांहे तेम सील प्रधान ॥ ७ ॥ के० ॥ सगुण माणस तमे सांनलो रास, जो छे जोवन वनह निवास, तां सरखा रहजो सही, इण वने मुग्धने मंकिओ पास, वेसे विलासे म नूलज्यो, इण वने दलपति थाये छे दास, आखे अणी किमे नगरो, मोरू छे अंग करे मुखे हास, इण वने वसी राक्षसी, दृष्टि देखत करे सीलह ग्रास ॥ ८ ॥ इण वने चित्तनी चोरणहारि, कामकटक मोह नायका नारि ॥ लोयण बाणह वरसती लहकती वेण तीखी तरवार, लाख चतुर आगे लुटिया, अरहनकादिक आङ्कुमार, संजम धन लीधोरे धूतारि,वइर समा विरला हवे, जेणे उतारियस्त्री अहंकार, ते सरिखा तुमे नहीं झुझणहार, नारीनी संगति वारहीवारि ॥ ९ ॥ के० अथिर जिसी छे आन्ननी छांय, अथिर जिसी होवे कायर बांह, अथिर कन्याधन जेहवो, अथिर जिसो छे ठारनो त्रेह, अथिर जिसो राजा डुबलो

अथिर जाणे तिसो नारीनो नेह, प्राणजो आपे जे एहने, बेहम्हे तोइ दिखाले बेह ॥ १० ॥ के० ॥ जो पण एहनो नीच आचार, जे कहिये परदोष लगार, तोपण सुयणइ सीखवुं, इण मुग्धे मूंस्यो अछे सर्व संसार, मधुर वचने मत वीससो, विरचत कांइ न लावे वार, स्वारथ देखी असीझतो ॥ नारि त्रिणासे निज जरतार, सूरियकंत संजारजो, नारीना अवगुणको नहीं पार॥११॥ के० ॥ अवर सामु जोवे सविकार, अवरसुं जोगवे जोग सिंगार. रमणितो अवरने रीझवे, अवरने चिंतवे चित्त मझार, दूषण अवरह शिर दिये, कुरू तणी कोठि कपटजंमार, कलह काजल तणी कुंपली, एहनो नेह तिसो जिसो लिंपणो छार ॥ १२ ॥ के० ॥ नारीने चरित न लाजेजी अंत, बंदर देखीने हुए जयभ्रंत, साप ओसीसे देइ सुवे, मेहेली लंघतां दुःख लहंत, गिरिशिखरे सुखे संचरे, संकल घाए न किंपिघमंत, पुहपहणीधरणी ढले, मुगध न छे अछे बहु बुद्धिमंत ॥ १३ ॥ के० ॥ खिणमांहे रंग विरंग करंत, मरण जीवण खिणमांहे दियंत, धारिनो नाथ धुजावियो, नरकेसुं देवह नारी वलंत, निरखज्यो नेउर पंमिता, पछ्याद पछे सहुको पतीजंत, प्रदिलुंदी

आप संबाहिज्यो, मतकरो रमणिशुं रामत खंत ॥ १४ ॥ के० ॥ काम करालित लोपेकार, कुल तणे केम्ह नमावे भार, जिम मनमाने तिम करे, नंच नीच करे नीच आचार, निरचे तो वाघ सामी बुरी, मुंज राजातणो कीधो संहार, भरतहरी जिम जागज्यो, नेह न कीज्यो नारी दुख दातार ॥ १५ ॥ के० ॥ जे तरुणी तजे निजभरतार, ते केम चाले अवरनी लार, अंतर आंख उघाडजो, प्रेम देखाडे दिन दोय च्यार, वित्त गये न रहे घरबार, लाज केहनी कुलटा करे, मरण लगे तब हुइ मनिसाल, स्त्री तणी संगति कोम्हि कुहाल ॥ १६ ॥ के० ॥ नाम कहे मुहरो सब लोय, विष समो कडुओ तो अवर न कोय, फोम्हीय नाम जे सियली, तृष्णा लागे पर अगनि ज्युं सोय, नाम छे अबल त्युं नारीनो, पण इण सरिखो सबल न कोय,साहमा होइयें तो हारिजे, पूत्र देतां इहां खोम्ह न होय ॥१७॥ के०॥ गवरीने रूपे जीत्यो इण ईश, जेय न नामतो केहने सीस, विहि चित चालव्यो सारद माय, ताप-नट जेम तेह नचावियो, राधाना रूपे जीत्यो जदुराय, लणी सुरपति छल्यो, त्रिभुवन जीती लगावीओ पाय, आप हुइ सहु सामिणी, जिन तणे नामे

नाठी जाय ॥ १८ ॥ के० ॥ साच कह्यो तमे ए न हुवे तात, सहजेही नीच होय नारीनी जात, दोष द्यो ते शिर ऊपरे, पण एक सांभलजो अम वात, नर प्रत्ये कहे कामिनी, आपणो दोष न देखेजी कोय, स्त्रिया कुलंबन केम चढे, पुरुष जेह सर्व सुलक्षणा होय, वाजती ताली कीह वींधे, एकण हाथे वजावीने जोय ॥ १९ ॥ के० ॥ सघलीही नारी न चंचल होय, पुरुष सहु भला मत कह्यो कोय, सहु सरखी नहि अंगुली, चऊ वरणे गुण अवगुण संति, पुरुषहि केइ पर स्त्रिय रमे, हसी हसी परघर पाय ठवंता, पगतले मरण न पेख हि, भाइ हाथे दीवो कीधे कुवे पमंता ॥ २० ॥ के० ॥ नारीहि केइक होइ सुसील, जे लहे सर्गने शिव तणी लील, सत्यभामा शिवासुदरी, द्रौपदी लक्षणा ने दयमंती ॥ चंदनबाल कलावती, मयनरेहा पद्मावइ कुंति, जडुरायराणी रुक्मिणी, नाम लीधे ज्यां पातक जंति ॥ २१ ॥ के० ॥ सुरतरु भग्यो अंगणे ऊखणी रोपे ते आक धतूर, असुचि करे मुखवास ते, नांखीने सीतल सुरभि कपूर, हस्ती साटे खर संग्रहे, रतन चिंतामणी रालिने दूर, काच करे कुमति ग्रहे, विषय सेवे जे चोथो व्रत चूर;

॥ २२ ॥ के० कूकम्म मोरह जेम मंजार, सीलवंतां तिसि संगते नार, प्राण विन्नाणह चूकवे, अन्नयाराणी तणुं चरित चितारी, शेठ सुदंसण किम कियो, गामे गामे नहीं निर्मल नारी, सतिय सुन्नद्दा सारिखी, जिण तिणसुं लाइ स्नेह निवारी, वचन अमारमो अवधारि, तिम करो जिम कियो नेमिकुमारे ॥ २३ ॥ के० ॥ कवण ते नेमिजी कवि कहे वात, केम पाळ्यो तेणे ब्रह्म विख्यात; सीलवती ते कुण सुंदरी, जो तमे नाखशो एह दिठंत, तो अम सांन्नलवा तणी खंत, आलस अंगे न आणशो; सेवस्यां सील सदा फलवंत, ध्यावसुं एकज श्री अरिहंत ॥ २४ ॥ के० ॥ नयर सोरीपुरि राजीओ, समुद्दविजय राजा तसु घरनारि, सीलवती राणी शिवादेवी तसु घरे, अवतर्या नेमिकुमार; लोकनो नाथ दमीसरसार; श्याम शरीरे शोन्नता, पेहेल संघयण ने पेहेल संगण, सहस अठोत्तर लक्षण विन्नाण, रूप गुणे अति आगला, जेनी वरती छे त्रिभुवने आण ॥२५॥ के० ॥ एक दिन कृष्ण करे मन खंति, बंधु विवाह करुं किसि नंति; कवण कन्या परणावीजे, असरिस संग न शोन्न लहंत, चिंतवतां चित्ते सांन्नरे, कुंवरी अछे एक बहु गुणवंत, उग्रसेन घर

रयण दीपंत, वीजलीना झमकार ज्युं, रूपे रंभा अने सीले शोभंत, नामे राजेमती राजती नेमिजी कीजशे तेहनो कंत ॥ २६ ॥ के० ॥ कृष्णजी लेख पठावणहार, उग्रसेन प्रत्ये कहे छे विचार, कुंअरि तुमारे राजीमति, परणशे बंधव नेमिकुमार, ए छे कामतणो अवतार, वचन अमारो मानज्यो, ए समो अवर न कोइ भुपाल, वानर कंठे न शोभे हार, सारिखे सारिखो जो मले, तो जुगतो हुवे जगत आचार ॥ २७ ॥ के० ॥ वात सुणत राजा अधिक उछाह, राजेमति तणो रच्यो विवाह, घर घर उछव अति घणा, घर घर बंधि जे वंदनमाल, घर घर होय छे वधामणा, घर घर तोरण मंगलचार, कुंवरिने कीजे छे सहु शणगार, उग्रसेन कृष्णने विनवे, वेगे लइ आवज्यो नेमिकुमार, कुंवरीना जीवनो जे आधार ॥ २८ ॥ के० ॥ स्नान करे जिन उवधीनीर, कौतुक मंगल कीध शरीर, आभरणे अति दीपता, हस्ती आरूढ थया वरवीर, शीश छे छत्र सोहामणो, बिंहु पाखे चामर ढाले छे धीर, वाजित्र वाजे छ गुहिर गंभीर, चतुरंग सेनशुं परवर्या, स्वामी शोभे जेम मुकुटे हीर ॥ २९ ॥ के० ॥ क्रमे क्रमे आविया

पोल डुवार, सहिय साहेलियां हरख अपार, कुअरिजी द्योने वधामणी, नेमिजी आव्याहे तोरण बाहार, हार दियानोहे आपीने,कांइ कहो सखी एवडी वात, म्हारो फुरके छे दाहिणो गात,नाहसुं संग नहीं मिले, एह विना गुण लाव न खात॥ ३०॥ के०॥ तिहां प्रभु पेखियां सारस मोर, तेतर पारेवा चीढ्ह चकोर, सुअर संबर हरिणला, कुरलता देखी करंत ए सोर, सारहीसुं स्वामी इम भणे, एहसुं एवडो कांइ कियो जोर॥ ३१ ॥ के० ॥ सारही बोले छे बे कर जोडी, इणि खिणे कोइ न लावे खोड, स्वामी न जाणो छो शुं तमे, गोरवे जिमस्ये यादव कोड, उग्रसेन चित्ते आणं दियो, शीश तमारे शोभशे मोड ॥ ३२ ॥ के० ॥ स्वामी भणे धिग एह विवाह, जिहां होशे एटला जीवनो दाह, एणे अपराध न को कियो, कांइ विणासिजे एह अनाह, जीवित सहु किंही वालहो, नेमि नयणे झरे नीरप्रवाह, परडुखे होये विरलो डुखी, जीवदया करे यादवनाह ॥ ३३ ॥ के० ॥ बोकडे कांइ न पाडिय वाट, मींढे न मार्या बांभण भाट, गाडरां गाम न वजाडीउ; आपणी पुंठे जके वहे भार, महिष ते सा भणी मारीजे, छालिय छल नवि करे लगार,

कांइ विणासिजे ए निरधार ॥ ३४ ॥ के० ॥ तीतर केहने नवि दिये गाल, चिमीय कमेमीश्र
कांइ घरी जाल, गुनह न कोइ कबूतरां, राते हुंतो चकवा चित डुःख, संप्रति कोइ न दीसे सुख,
खार द्यो कां कृत कपरें, परजीव पीमतां होय न सुख्ख ॥ ३५ ॥ के० ॥ मोर लवे मधुरो
मुखे साद, शकुन रूमो सही सारस नाद, कोयल कोइ न डुहव्यो, एतो रूखें वासो वसे गयणे
विहार, आथमे आदित्य न ले आहार, परघरें खात्र न पामे, झूझ न मांमे लइ हथिआर, पंखियाने
केम कीजे प्रहार, ॥ ३६ ॥ के० ॥ कहे हरिणी तव हरिणसुं, मारा बालकमां अछे वनह मझार,
हवे कुण करसि तेहनी सार, पाणीयं कोण तिहां पात्रशे, ग्रोबकवल कुण आपशे तास;
सींह सादे तिके बीहतां, नासीने आवशे केहने पास, मात विना छोरु होय निरास, सासनो हवे
नहीं कोइ विसास, ॥ ३७ ॥ के० ॥ हरण कहे हरिणी सुणो, थांका बालकमा न विणाससे
कोय, जो एक दैवज वंक न होय, दैव समे सहुको समो, दैव वांके सहु वंकज जोय, अमृत पीजे
प्रिये विषज होय, सुख डुःख दैव दीधा हुवे, मरण जीवण सहु आपसी सोय, हिये न हारिजे

मुधा म रोय ॥ ३८ ॥ के० ॥ संबरसुं कहे संवरी, गरज्ञ छे मारा उदर मझार, आज पूरांदिन एहने, कंतजी किणी परे एह उवारी, आपणो दोष तो को नहीं, अम्हे झुरां छां एह संञ्जारि संञ्जारि, संबर चाहे छे चिहु दीसे, मुख विलखे आंखे आंसुधार, प्रिये कोइ न दीसेहे राखणहार, किणहीने मन करुणा नहीं, कंता नेमजी आगल करोने पुकार, बालक माय न मारही, अबलाने स्वामी उवेलणहार ॥ ३९ ॥ के० ॥ जीव इशी विधि विलवता देख, स्वामी हाहारव करे विशेष, कायर कांइ विणासिजे, एं वध परतख नरकनिवास, जाणीने किम कीजे विषग्रास, परजीव किमे न पीमीजे, पर डुःख देत किसी सुख आश, तिम करुं जिम न हुए एहनो नाश, सारहीने देइ सवि अलंकार, रथ थकी ऊतर्या नेमिकुमार, कर्म कह्यो न करे किस्युं, छोमिया बंधन त्रोमिया जाल, अज्ञय दीधो पसु पंखियां, धन धन जीवदयाप्रतिपाल ॥ ४० ॥ के० ॥ गगने कानने जात देइ आसीस, पशु अने पंखिया जय जगदीस, त्रिज्ञुवन पीहर तुं सही, बलीहार तुज जणणी तणी आज, पुत्ररतन जिणे जनमियो, स्वामी साध्यां तुमे पारकां काज,

जादवा हवे चिर जीवज्यो, त्रिजगतणो तमे पामज्यो राज ॥ ४१ ॥ के० ॥ स्वामी पाछो वळ्यो कियो वैराग, राजेमती तणो को नहीं राग, कृष्णजी कर गहि शीखवे, बंधव त्याग तणो नहीं लाग, जीव राख्यो ते रूडुं कियुं, राजेमति शिर ठवहुं सोहाग ॥ ४२ ॥ के० ॥ नेमि कहे श्रीपति सुणो, कारिमुं यौवन कारिमो देह, कारिमो सगपण किसो सनेह, इह जगे को केहनो नहीं, आउ खूटे जेम आतपे त्रेह, विषय विलास न सेवस्युं, शिवनगरी करशुं निजगेह, सीलवंतां मांहे राखस्युं रेह ॥ ४३ ॥ के० ॥ पामीने नरभव देवि दुलंभ, विषय न सेवशुं जो लहुं रंभ, जीवित दिन दस पाहुणो, विषय सेव्यां थकी नरक सुलंभ, दुःख तो दारुण होय तिहां, सरण न लाभही नारिनितंब, रणझणे जिहां मणि मेखला, मोतिय माल बण्यो कुचकुंभ, पेखुं नहीं फरसुं किहां, जान पाछी वालो पालिशुं बंभ ॥ ४४ ॥ के० ॥ इम प्रतिबुझव्यो नेमि मुरार, आविया द्वारिकानयर मझार, संजम लेवा हे सामुहे, देवे संवछरि दान विचारी, दीन दया हियडे वहे, दुर्बल लोक कीधोजि साधार, कणय कोडि तिहां तीनसे, कोडी अठयासीय

वली असिलाख, धन खरचे मुखे मधुरिय नाथ ॥ ४५ ॥ के० ॥ चंद नगेंद मिढ्या तिणिवार, त्रिभुवने वरत्यो जयजयकार, इंदे महोत्सव मांमिओ, नेमिजी आदर्यो संयमसार, मोह माया सहु परहरी, धनधन यादव कुल अवतार ॥ ४६ ॥ के० ॥ कृष्ण कहे जय जय जगदीस, जीपज्यो हवे तुमे राग ने रीस, मोह महा नृप भंजज्यो, आणज्यो आठ कर्मह तणो अंत, चारित्र तुमे चिर पालज्यो, शिवपुरें पामज्यो सुख अनंत ॥ ४७ ॥ के० ॥ एम कही द्वारिका जाय जडुराय, सुरनर सवि गया निज निज ठाय, नेमजी संयमसिरि रमे, रेवय गिरि रहेतो जगनाथ, सील सनान सदा करे, हसि करि मुगतिने सुंपियो हाथ ॥ ४८ ॥ के० ॥ सखी मुखे राजलि सांभले, व्हालो नेमि वळ्यो रथ पाछो वालि, धरणी ढले लहे मूरछा, सीतल वींझणो वींज्यें बाल, सज्ज थइ विलवे सुकुमाल, सखी मुज पवन म लावज्यो, विरह वसंतर छे विकराल, वायरो लागतां ऊगस्ये झाल ॥ ४९ ॥ के० ॥ फोमे छे कंकण त्रोमे छे हार, मोमे छे अंग तजे सिणगार, तिलक मेटे मृगमद तणो, चंदन लागे छे जेम अंगार, धीरपणो न धरे किमे, जाणे

वहे हिये करवतधार ॥ ५० ॥ के० ॥ नयणले नीर झरे असराल, जाणेके ब्लस्यो पावस काल, चातक ज्युं प्रिय प्रिय चवे, हियरूलो सींचे सा सलखणी बाल, कारण ए मने आठवे, हवे वसे मारे नेमिकुमार; विरह वैसंनर तनु दहे, तो जिन दाझे जीव आधार ॥ ५१ ॥ के० ॥ नाहने दीये ओलंभमा, स्वामी हुता तुमे दीनदयाल, अमतणी कांइ न कीध संभाल, नाह निःकारण कां तजी, हुं छुं स्वामीना चरणनी दास, अहनिश राखवी आपणे पास, अवगुण कोइ न में कीयो, नारि न मेल्जिये एम निरास, वेगे मिलो मुज लील विलास ॥ ५२ ॥ के० ॥ आठ भवंतर नेहलो; नवमे भव वृथा कां दील दोस, तुमविण अवर न वालहो, सपथ करुं अने पीवुंजी कोस, साच विसें विसा मानज्यो, ए दुःख भाजस्ये केम असोस, माछली जल विणु किम जिये, विणु अपराध रूमो नहीं रोस ॥५३॥के०॥ एकसरो रथ पाछो वालि, वदनकमल ताहरुं नयणे निहाली, हरख पुरुं हियमातणो, तमे मत जाणो ए जोवन काल, लामली अंचले लागइये, जे तमे आपशो सीख संभालि, तेहजी अमे करीशुं सही, अरुचती कांइय न मंमस्युं आल ॥ ५४ ॥ के० ॥ वली वली

राजलि इम कहे, के सखी में कियो सामिशुं द्रोह, के कोइ छल करी छेतर्यो, के किसि वालह कियो विछोह, के धन चोर्यों परतणो, देखी शकी नहीं के परसोह, के कियो गरब सोभागनो, तो जडुराय तज्यो मज मोह ॥५५॥ के० ॥ के कियो अणगल नीर सनान, के सखी त्रोमिया तरुवर पान, के रे विलूरिय वेलमी, ईंचतां डुहवी के तरुमाल, के जलमांहि में मंमिया जाल, मछ ने कछ संतापिया, के दिया किणहीने कूमांज आल, के मृगपासे पामिया, तो न मिळ्यो मज त्रिजग नुपाल ॥ ५६ ॥ के०॥ के वने दीध दावानल लाय, के रे विछोहियां बालक माय, के निशिभोजन में कियो, पाप कीधे सखी सुख म जोय, अगनीहि कमल न नीपजे, हवे पस्तावो कीधे किसुं होय, बीज सारे फल पामीजे, जडुराय दोष म लावशो कोइ ॥ ५७॥ के०॥ मात कहे हवे कुंवरि म रोय, मणिमय झारीये ले मुह धोय, जादवो गयो तो जाण दइ, तेह थकी चमतो चित्त जोय, तुमे वरजो वर वालहो, नेमि विना जग शून्य न होय ॥ ५८॥ के०॥ वरांस्यां हे मात ए कां कहो वात, लोह किहां किहां सोवन धात, खल केम सज्जन सारिखा, नक्षत्र किहां किहां आदित तेज,

किहां तृणसाथरो किहां सुखसेज, किहां विष अमृतरस किहां, चोर किहां किहां सज्जन साथ, सरप न फूलह सेहरो, अवर राजा किहां किहां जगनाथ ॥ ५९ ॥ के०॥ पंमित बोले एकज बोल, जेहनो जगत मांहे नहीं मोल, एक वचन नरपति जणे, तिम सती एक करे जरतार, जिहतिहनी नहु लागे लार, सार जाणि सत आपणुं, माता अनुमति द्यो लेशुं संयमजार॥ ६०॥ के०॥ मातनी अनुमति लेइ तिवार, रतन गये किसो काच सिंगार, नेमिशुं प्रीति न टालशुं, जमर जिम श्यामने कामनो जाल, लोचो वेणी लहकती,हवे आदरी चतुरा महाव्रत च्यार,धन धन राजलि राजकुमारि, प्रेम इसो जग जोइये, हवे चित्त न चालव्यो कामविकार, नेमि वंदन चढे गढ गिरनार ॥ ६१ ॥ ॥ के० ॥ फरमर फरमर वरसे बे नीर, जीजे बे कंचुअ कोमल चीर, गिरि गुफामांहे आवे महा सती, हवे वस्त्र उतारि ठव्या बे एकंति, अंगह दीपे आगीय जंति, रहनेमि ध्यान धरे तिहां, हवे रूप देखी ऋषि चित्त चलंत, मनमथ बाणे वेधियो, हवे राजीमति प्रत्ये एम कहंत, जय म करिश परजवतणो, हवे तुं मुज वालही हुं तुज कंत, जोगवस्यां आपे जोग अनंत, जोली हे नरजव

दोहिलो, पछे आदरशुं वली संयम अंत, ए अवसर अछे एहवो, हवे विलंब निवारी मनोहरि मुंधि, अहह न देखे कोपि कामंध ॥६१॥ के०॥ हवे सतीय भणे भाइ बोल म बोल, रतन मांहे अछे सील अमोल, काग उडावणे कांई तजे, तुंतो निलज थाये छे कांइ निटोल, निलखण कांइ करे संयम लोप, बंधु सामुंह जोवे कां नहीं, हवे हूंरे तजी नव जोवन जेणे, वम्योरि आहार लीजे कहो केम: तुने जीवितथी मरवो भलो, थारो छे अगंधन कुल अवतार, गंधण कुल तणो किसो आचार, अति अविचार्योजी कां करो, हवे अंकुश गज जिम आवियो माग, पाप आलोविया नेमि पय लाग, कर्म छेदी थयो केवली, हवे सील सहु कोइ पालज्यो एम, राजमति जस जागियो जेम, कामकादव मांहे खूचतो, जिणे बांह ग्रहीने राख्यो रहनेमि ॥ ६२॥ के० ॥ इणिपरे विषय कषाय हजीपि, सतिय आवी निज नाह समीपि, उलट अंगेहि अति घणो, हवे वंदेछे त्रिण्ह प्रदक्षिण देइ, भावि भले नरभव फल लेइ, साथ विछोहोरे नव कियो, भाइ प्रीतम माणस नवि तजे केम, पहिलही कांइ न जाणियो एम, तुम विणु अमे न रहुं सही, हवे राजुल सारे छ स्वामीनी सेव, एक

मने सेवतां तूठ्योजी देव, सील सूधो सती निरवहे,स्वामी पेहेलो लहे केवलसार, तोरणनाथ थयो नेमिकुमार, आज लगी जस झगमगे, हवे ए सहु सील तणोरे प्रभाव, राजुल नेमि नमो निज भाव, सील सरोवरे झीलज्यो, भाइ दिने दिने ओछेरे आयछे आउ, राउ राखे सहु खेलज्यो, हवे सील रूडां राखो धर्मनो राउ ॥ ६४ ॥ के० ॥ हवे नेमि राजुल परे पालज्यो सील, सीलथी पामज्यो सासती लील, विषय वैरी जिन वीससो, हवे लखण महासती रूपी राय, काल घणो रूल्या विषय पसाय, चित्त विषे जनि चिंतवो, हवे विषये विणासियो रावण राण, सीत सीले जल तरिया पाषाण, सील समो सगो को नहीं, हवे सीलथी सरप हुए कुसुमकी माल, विष थकी अमृत होय रसाल, सीलथी संकट सवि टले, हवे एक शिक्षा वली सुणहु सुजाण, अविचल राखज्यो अरिहंत आण, में कसिने कसि जोइयो, हवे आण विनाजि कीजे पच्चख्काण, ते तुस खंडण सरिखो, हवे आणनो मूल एहजी जाण, जे जिण भाख्यो ते सर्व प्रमाण, जिनवचनेः नहीं अन्यथा, हवे आप छंदो मत करहु अज्ञान, जिन प्रतिमा म उथापज्यो, हवे आपणा नाथनो एह आकार, देखतां

उपजे हर्ष अपार, एणि पूजे जिन पूजियो, जाइ अंग उवंगे ळे एह विचार, परजवे बोधिबीजह दातार, हगतजीने हिये धारज्यो, तमे प्रहसमे पूजिज्यो एहना पाउ, आले म हारज्यो मानव आउ, दसह दृष्टांतहिं दोहिलो, अने चित्तथी ळांमज्यो विषय कसाउ, मूलजइह जिम धोजज्यो जाउ, सार वचन हवे हुं कहुं, जाइ पररमणि सवि मानज्यो माउ ॥६५॥ के० ॥ हवे नर अमरह सुख पामशे सोय, क्रमे क्रमे सिद्धि वधूवर होय, कीरति दिसे दसे विस्तरे, हवे सुजस पामे सही ते इह लोय, त्रिविधिहि सीलजिको धरे, हवे ते समो त्रिजुवनमांहे न कोय ॥ ६६ ॥ के० ॥ श्री पूज्य पार्श्वचंद्रसूरि सुपसाय, सीस धरी निज निर्मल जाय, नयर जालोरे जागतो, हवे नेमि नमुं नित्य बे कर जोम, विनति एहज विनवुं, स्वामी एक क्षण अम मनथी म विळोम, सील संगात जी प्रीतमी, हवे उत्तराध्ययन बावीसमो जोय, वलीय अनेराही ग्रंथथी, अरथ आज्ञा विना जे कह्यो होय, विफल होजो मुज पातक सोय, जिम जिन जांखे तिम सही, स्वामि दुरितने दुख सहु हरो दूर, वेगे मनोरथ माहारो पूर, आणसु संजम आपज्यो, हवे विनवे एम श्री विजयदेव

सूरि ॥ ६७ ॥ के० ॥ सूरज ससिहर जिहां थिर थाय, चूलिका मंरुण जिहां गिरिराय, सतीयतणो सत्य ज्यां लगे, श्री जिनशासन जिहां जगमांहे दीप समुद्र मांहे मेदिनि, तिहां रास ज्ञणतां होय उब्बाह, सील चिंतामणि सारिखो, सुणे सुणावे जे मन शुद्ध ज्ञाव सहित सील जे धरे, अजर अमर पद पामे सोय, के सील अखंरुित सेवज्यो ॥ ६८ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागछाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर–अन्तेवासीसुविदित–सन्नाशृङ्गार–सितपटाचार्यश्रीविजयदेवसूरिविरचित श्रीशीलरक्षा–प्रकाशक श्रीनेमिरासः संपूर्णः ॥



॥ अथश्रीषट्द्रव्यस्वाध्यायः ॥



(नाभिरायांके बार-ए देशी.)

सिद्ध नमुं करजोरी, पास नमुं हितकारी; जस सेवें सुरवरवृंद, नर नारी बहु प्यारी. ॥ १ ॥

श्रुतदेवी सुपसाय, कीजे मति निरमलरी; मया करी मुज माय, दीजे वचन अखलरी. ॥ २ ॥

लोकालोक स्वरूप, कछुएक कहुंअ विचारी; तामें जीव अजीव, जिनवर वचन सुधारी. ॥ ३ ॥

पंच अजीव बखान, एकही जीव सुचारी; पंच अरूपी होय, पुद्गलरूपी न चारी. ॥ ४ ॥

तीन द्रव्य तहां एक, तीन अनंत कहेरी; तामें चेतन एक, पंच अचेत लहेरी. ॥ ५ ॥

चार अकरता होय, दो करतार ठहेरी; सबही लोकस्वरूप, एक अलोक नहेरी. ॥ ६ ॥

चलन हेतु धरम होय, थिरही अधर्म लहीरी; पुग्गल जिन अवकाश, एक आकाश सहीरी. ॥ ७ ॥

कालही वरतन हेत, नवही पुराण करेरी; निश्चे अरु व्यवहार, दोय स्वरूप धरीरी. ॥ ८ ॥

घटे वधे छिनमांहि, चय उपचय लहेरी, पुद्गल एह विज्ञाव, आपेआप खहेरी. ॥ ९ ॥
पंच वरन दोय गंध, पंचही रसही उरेरी; आठ फरस सब होय, सबमिली बीस करेरी. ॥ १० ॥
पुद्गल लछन एह, लोक अनंत उर्योरी; तामें जीव अनंत, उरऊ अनादि रह्योरी. ॥ ११ ॥
खीर नीर ज्युं दोय, पुद्गल जीव मिल्योरी; लोह आग ज्युं एक, अपनो पोष उिल्योरी. ॥ १२ ॥
विषय सुख न छोराय, हेत परमाद मच्योरी; करमबंध तिहां होय, निविम्म मिथ्यात्व खच्योरी.॥१३॥
सात करमको बंध, निशिदिन समेही करेरी; आयु बंधन आठ, युंही संसार फिरेरी. ॥ १४ ॥
लाख चौराशि योनि, गर्ज्नज मनुष्य बिनारी; वर्ष संख्यको आयु, करमही उोमसुं नारी. ॥ १५ ॥
सो परजापत जान, संगनी नाउं धरेरी; सात आठ छही एक, उनकों बंध करेरी. ॥ १६ ॥
प्रथम आदि लही तेर, गुणठाणाही फलेरी; तहां इनहीको बंध, उपरिञ्र बंध उलेरी. ॥ १७ ॥
ज्ञावड्व्य दोउ कर्म, चेत अचेत मुनेरी; ज्ञाव करम चिडूप, पुद्गल ड्व्य सुनेरी. ॥ १८ ॥
राग द्वेष परिणाम, जीव अनादि धरेरी; करम जालको खेल, तिनही विज्ञाव उरेरी. ॥ १९ ॥

आयो निकट संसार, कबुएक सुरत सरीरी; तब कहा जाने सोय, ए मोही विपत परीरी. ॥ २० ॥
धन परिजन परिवार, मोसुं न्यारे चलेरी; हुं इनहीसुं और, आपही आप मिलेरी. ॥ २१ ॥
फिर वासुं लपटाइ, अपनपो खोइ रह्योरी; परसुं माने आप, मोह जंजाल पर्योरी. ॥ २२ ॥
ज्युं नर खाय धतूर, सबही कनक खटेरी; त्युं जड चेतन जान, नेक विषे न हटेरी. ॥ २३ ॥
ज्युं कपी शीत मरंत, गुंजा आन तपेरी; मूरख त्युंही करंत, नाटक भरम ठपेरी. ॥ २४ ॥
मृगतृष्णा ज्युं देखि, मृग धोखे धावेरी; त्युं विषेलंपट लोग; तृपति न छिन पावेरी. ॥ २५ ॥
ज्युं कोउ बाल अजान, रतन भोलाय लयोरी; पंच विषय सुख हेत, मूरख डहक दयोरी.॥ २६ ॥
पांचुं इंद्रि लोभाय, परवश पांच परेरी; संकट सहे अपार, जनम मरनही करेरी. ॥ २७ ॥
सहज सुभाव मिटाइ, नाउं अनेक भज्योरी; पर सुरूपसुं राची, कबहु न नेक तज्योरी. ॥ २८ ॥
भेद ज्ञान जब होय, आपापरहि चितेरी; द्रव्य कर्म अरु भाव, दोसुं न्यारो मितेरी. ॥ २९ ॥
खेले आप सरूप, रेले करम अरीरी; ग्यान ध्यान चमू जोर, गाजे किरिय खरीरी. ॥ ३० ॥

नय निक्षेप परिमाण, सपत भंगी सजेरी; थिर विनसे उपजेह, पंच सम वाय मफेरी. ॥ ३१ ॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव भलोही सुनेरी; हेय गेय उपादेय, ताको विचारी गिनेरी. ॥ ३२ ॥
वचन सोल तहां आण, भाषा बयालीस भलेरी; अनुयोग चार प्रकार, वचन जिन सबही किलेरी. ३३
गुन पर्यय अरु द्रव्य, भेदाभेद भरीरी; विशेष अरु सामान्य, गुन अरु गुनिय शरीरी. ॥ ३४ ॥
धरमी अरु धर्म विशेष, लिंगी लिंग अरीरी; ग्यायक ग्येय सुभाव, ध्याता ध्येय जरीरी. ॥ ३५ ॥
ग्राहक भाव अरु ग्राह्य, आधाराधेय फिलीरी; शुद्ध अशुद्ध अशुद्ध, तीन परिणाम भिलीरी. ॥३६॥
कारण कारज दोय, निमित उपादान हेरी; उपादेय अरु सनबंध, व्यापाव्याप कहेरी. ॥ ३७ ॥
ए सबही व्यवहार, निश्चे अभेद करीरी; संकल्प विकल्प त्याग, सिद्ध सरूप धरेरी. ॥ ३८ ॥
जिउ पावे निरवान, सुगतिसुं जाय अरेरी; लोक अग्र रहे एष, बहुरि न उलटी परेरी. ॥ ३९ ॥
तिहां थिर शुद्ध सुभाव, अचल निवास ठह्योरी; लोकालोक सरूप, सबही जानि रह्योरी. ॥ ४० ॥
निर्मल दर्शन ज्ञान, सिद्ध सुभाव नरेरी; असंख है परदेश, लोकाकाश खरेरी. ॥ ४१ ॥

मुक्त समय जो देह, कछुएक हीन भयेरी; तीजे भागें हीन, घन अवगाह लहरी. ॥ ४२ ॥
एक सिद्ध तहां अनंत, जैसो खेत भरीरी; जोयण पिस्तालीश,—लाख,सिद्धशिलारी. ॥ ४३ ॥
उज्वल वरन न शेष, ऊपरि एक जोयनरी; ता ऊपरि एक कोष, छठे भाग मोयनरी. ॥ ४४ ॥
ताके छठे भाग, ऊपर सिद्ध रहेरी; वाको कीजे जाप, कर्मरज ते न रहेरी. ॥ ४५ ॥
अतींद्रिय सुख जान, मुगतिरमनीसुं वरेरी; पावे परमानंद, सकल सुशुद्धि जुरेरी. ॥ ४६ ॥
ए षटद्रव्यको खेल, नान कथक लहेरी; (श्री) पार्श्वचंदसूरि शिष्य, हेम मुनीश कहेरी. ॥ ४७ ॥

इतिश्रीषट्द्रव्यसज्झाय ॥



अथश्रीनेमिराजुलप्रीति.



(राजनगरनोरे सोनीओ. ए देशी.)

सुमति जिणेश्वर वीनवुं, स्वामी सुमतितणो दातार रे;
जे नेमि ने राजुल प्रीतडी, ते कवियण कहे सुविचार रे. ॥ १ ॥
इम राजुल नेमिशुं वीनवे, कंता वीनती अवधार रे;
जे माहरे मन तुं वालहो, ते जाणे करतार रे. इम. ॥ २ ॥
परणवा काजें नेमजी, प्रभु आव्या तोरण बार रे;
ए जीव देखया ते रूडी करी, तें माहरी न करी सार रे. इम. ॥ ३ ॥
ए रथ फेर्यो जब नेमजी, तब राजुल रडे अपार रे;
ए नेहवशें पिउ पिउ करे, दो आंखे आंसुधार रे. इम. ॥ ४ ॥

ए जीवनजीव श्री नेमजी, ए तुं मुज प्राणाधार रे;
ए नेह विलुधी कामनी, तुं कां छोम्मे निराधार रे. इम. ॥ ५ ॥
ए नेमजी नेह तुमाहरो, जेहवो तम्के त्रेह रे;
ए पतंगरंग परें कारमो, तें वहेलो देखाम्यो छेह रे. इम. ॥ ६ ॥
ए अष्ट ज्ञवंतर आदरी, कां नवमे दीधो छेह रे;
एक वांक विना जे परिहरी, ए ते मुज साले देह रे. इम. ॥ ७ ॥
ए नेमजी तें मोशुं करी, ए तेहवी न करे कोइ रे;
ए तें कीधी तिम हुं करुं, तो जनमांहि हांसी होइ रे. इम. ॥ ८ ॥
ए नेमजी लालिपालि माने नहीं, सखी नेमजी कठीन कठोर रे;
ज्यां वात न माने वालहो, तिहां अबलानुं शुं जोर रे. इम. ॥ ए ॥
ए नेमी प्रति राजुल कहे, कंता सुख मीठा संसार रे;

ते भोग भला आपां भोगवी, पछे लेशुं संयमभार रे. इम. ॥ १० ॥
ए सतिय शेरी असती भजे, ए आ विधि इण संसार रे;
जे परणी नारी परिहरी, ते मूरख रमे परदार रे. इम. ॥ ११ ॥
ए शिवरमणी वेश्या सारीखी, जेने मातंग सेती प्रेम रे;
जेणे हरीकेशी म्हेल्यो नहीं, ए तेशुं रातो नेमि रे. इम. ॥ १२ ॥
ए नेह निठुरने नवि हुवे, श्रीनेमि कहे सुण नार रे;
ए तोरणथी जब फिर चल्या, हिव पीछे किही पोकार रे. इम. ॥ १३ ॥
ए वरसी दान देइ करी, नेमि लीधो संयम भार रे;
ए गिरि गिरनारें चढी करी, प्रभु पाम्या केवल सार रे, इम. ॥ १४ ॥
ए रंग राख्यो राजेमती, संयम लीधो नेमिने हाथ रे;
ए पिउ पहिली मुगते गइ, तहां तूठो श्री जगनाथ रे. इम. ॥ १५ ॥

ए धन धन राजेमती सती, जिणे पाली अविहड़ प्रीति रे;
हजी जगमांहे सहु जस भणे, ए उत्तमनी आ रीति रे. इम. ॥ १६ ॥
ए वीनती नेमें मानी खरी, पछे मिलिया मुगति मझार रे;
तिहां सुख अनंता भोगवे, ते कहेतां नावे पार रे. इम. ॥ १७ ॥
ए संवत सोल नवाणुए, गीत गायो मन उल्लास रे;
ए भणे गुणे जे मानवी, नेमि तेहनी पूरे आश रे. इम. ॥ १८ ॥
सती शिरोमणि राजेमती, श्रीनेमिजी त्रिभुवनराय रे;
जसु सुरनर सेवे अहनिशि, मुनि ठाकुरने सुखदाय रे. इम. ॥ १९ ॥

इतिश्री नेमिराजुल प्रीति.



अथश्रीनेमिराजुलबारमासि.

(इडर आंवा आंवलीरे–ए देशी.)

सद्द गुरु पाय प्रणमी करी रे, गाइश नेमि जिणंद;
शिवादेवीनंदन अति जलो रे, जिणें दीठे परमाणंद–
सखी मेरी, जाय मनावो नेम. हुंतो नेमि विना रहुं केम, मारे नेमिशुं अधिको प्रेम;
सखी मेरी, जाय मनावो नेम. (आंकणी.) ॥ १ ॥
आषाढो आव्ये थके रे, जनह्यो मेघ अपार;
वीजली फबुके चिहुं दिसें रे, सांजरे मुज जरतार. सखी. जाय. ॥ २ ॥
श्रावण मासें सरवमे रे, वरसे वारंवार;
चातुक तो पिन पिन चवे (लवे) रे, किम रहिये निराधार. सखी. जाय. ॥ ३ ॥
जादरवे मासें जली रे, पामे फाफी रेल;

आश हुती मुज कंतनी रे, तेतो गयो अब म्हेल. सखी. जाय. ॥ ४ ॥
आसो आश फले सही रे, जो आवे भरतार;
हुं तन मन आपीने मिलुं रे, वाधे प्रीति अपार. सखी. जाय. ॥ ५ ॥
कातिक मासें कंतने रे, समरे सोहागिणी नार;
इहां विछडीआ साजन मिले रे, राणी राजुल हरख अपार. सखी. जाय. ॥ ६ ॥
मगशिर मनसा माहरी रे, मिलीए नेमि जिणंद;
सहज सलूणो व्हालो शामलो रे, जिण दीठे परमाणंद. सखी. जाय. ॥ ७ ॥
पोषें तन सुख पोषीए रे, अतिसे मीठा आहार;
नेमिशुं नेह धरी खरो रे, सुख विलसीजे सार. सखी. जाय. ॥ ८ ॥
माहें मोटी जामनी रे, यौवन लहेरे जाय;
नेमि विना रति न ऊपजे रे, मुने घडी वरसां सो थाय. सखी. जाय. ॥ ९ ॥

फागुण फाग रमे सहु रे, फर फर वाजे वाय;
अबिल गुलाल झमे घणो रे, नेमि विना न सुहाय. सखी. जाय. ॥ १० ॥
चैत्रे चतुर श्रीनेमिनेरे, मिलवा दोमे मन;
सासज पहिलां सांभरे, माहरे अंग न लागे अन्न. सखी. जाय. ॥ ११ ॥
वैशाखे विरहा तणी, वेदन खमी न जाय;
वैद्य-विचार क्यों न ऊपजे, मुजनें नेमि मिळ्ये सुख थाय. सखी. जाय. ॥ १२ ॥
जेठें में जाण्युं सही रे, नेमि न आव्यो नेटि;
पूरव प्रीति जाणी करी रे, कांइ न मेलि भेटि. सखी. जाय. ॥ १३ ॥
सखी साहिब माहराशुं जइ रे, वीनती करो हजार;
राणी राजुलने रमवा भणी रें, तेमो गढ गिरनार. सखी. जाय. ॥ १४ ॥
पूरव भवनी प्रीतमी रे, राखी राजुल नार;

नेमिशुं नेह धरी खरो रे, जाय मिलि गिरनार. सखी. जाय. ॥ १५ ॥
मन वैरागें पूरीने रे, लीधो संयम-भार;
पिउ पहिली मुगतें गइ रे, आवागमन निवार. सखी. जाय. ॥ १६ ॥
हिवे मुनि ठाकुर कहे सांभलो रे, बाविशमा जिनराज;
राणी राजुलने राखी कने रे, सारो वांछित काज. सखी. जाय. ॥ १७ ॥

इतिश्री नेमि राजुल बारमासी संपूर्ण.

अथ श्रीथूलीभद्रनीसज्झाय.

वीर जिणेसर वीनवी, लागी ते गोयम पाय; गाइश थूलिभद्र राजियो, जिम सुखसंपति थाय—
थूलिभद्र साधुजी धन ताहरो अवतार; तें पाम्यो भव पार. थूलि. धन. १
पाडलिपुरमांहे भलो, राज करे नंदराय; तेहने बुद्धिनिधान सुंदर, सकडाल मंत्री सवाय. थूलि. २

मंत्रिय घरणी अति भली, लाछलदे जसु नाम; शील सुभागिणि सुंदरी, महिमा गुणमणिधाम. ३
लाछलदे उरमानसें, उपनो अभिनव हंस; सकडालसुत सोहे भलो, कुल मांहे अवतंस. थूलि. ४
तिहां नगरमंडन नायका, कोश्या ते नामें नार; रूपें ते रंभा सारिखी, तिणे मोह्यो सहु संसार. ५
श्री थूलिभद्र सुकुमाल सुंदर, दीसतो देवकुमार;रूप देखी कोश्या वीनवे, तुं मुज प्राण आधार. ६
तसु वचन रचना रंजियो, श्री थूलिभद्र कुमार; पंचेंद्रि विषय सुख अनुभवे,इंद्रतणे अनुसार. थू. ७
बत्रिश बद्ध नाटिक करे, थे थे अहनिशि सार;साडी बार कोडी कंचन तणी,विलसे तिहां वर्ष बार.
वररुचि वचने सकडालशुं,कोप्यो तिहां नरराज; दरबार तुं आवे मती, माहरे नहीं तुज काज. थू.९
सरियो तिहां साथे हुतो, संभली सघली वात; राय रंजवाने कारणे, कीधो पितानो घात. थूलि.१०
स्वामीधर्मी जाणी करी, राजा दिये सनमान;शिरपा तुमे सरिया लियो, आज मुज परधान. थू.११
सरियो ते वलतुं इम कहे, वीनती सुणो महाराज; वडा भाइ थूलिभद्रनें, सुंपो सघलो काज. थूलि.१२
राज भणे सरिया सुणो; थूलिभद्र अबे कुण देश ? सरियो कहे कोश्या घरें,विलसे सुख अशेष. थू. १३

कोश्यानेथी थूलिभद्रने, तेडी पूछे नरराय; परधान पदवी तुमे लियो, तो मुजने सुख थाय. थूलि.१४
थूलिभद्र वलतुं इम कहे, सांभलो एक विचार; ए राजकाज मेलां अछे, ए दुरगति दातार. थूलि.१५
ए माय ताय बंधव बहिन, पुत्र कलत्र परिवार; ए स्वारथ करी संसारमां, मिळ्यां अनंतिवार. थू.१६
ए तन धन यौवन तेहवो, जेहवो रंग पतंग; इम जाणी जिन धर्म आदरुं, जो मिले सद्गुरुसंग. १७
इण अवसरें गुरु आवीआ, श्रीविजयसंभूति अणगार; उत्सव मेघकुमार ज्युं, करी लीधो संयमभार.
पंच महाव्रत आदरी, पाले संयम श्रीकार; जिनवाणिशुं अहनिशि रमे, करे सफल अवतार. थू.१९
श्रीथूलिभद्र चारित्र लिउ, सांभळ्यो कोश्या नार; मूरछा खाइ धरणी ढली, शोचे मनह मझार. २०
शिर केश तोडे अंग मोडे, फाडे ते कंचुकि चीर; अति रुदन करती इम कहे, लागे विरह दुःख तीर.
स्नान अंजन तिलक आदि, तजे सोल शिंगार; तंबोल सरस आहार छंडी; रही समरे भरतार. थू.२२
अनुक्रमे आषाढ आवियो, सदगुरु करे सुविचार; चउमासें रहेवा चिहुदिसें, मूक्या चेला चार. थू.२३
पहिलो रह्यो सिंहनी गुफा, बीजो अहीबिल पास; त्रीजो रह्यो कूप ऊपरें, थूलिभद्र कोश्या आवास.

थूलिभद्र आव्यो अंगणे, हरखि ते कोश्या नार; पाय लागी मुनीवरने कहे, आज तूठो करतार. २५
आ चित्रशाला अति विशाला,शय्या अति सुकुमाल;पंचेंद्रीविषयसुख अनुभवो,कापी विरहदुख जाल.
थूलिभद्र कहे अमे मुनि थया, सांभल कोश्या नार; संसार-सुख राचुं नहीं, मत करजो मनोहार.२७
कोश्या ते वलतुं इम कहे, सांभलो प्राण आधार;आद्रकुमार नंदिखेण ज्युं, पछे लेजो संयमभार.थू.२८
थूलिभद्र वलतुं इम कहे, छठे ते अंगे विचार; कुंडरीक एकदिन विषयने सुखे, पहुतो नरक मझार.
इणि वचन कोश्या बूझवी, श्राविका कीधी सार;एक राजपुरुष राजा विना,और सहु परिहार. थू.३०
आगमवाणि सांभले, करे पोषह पच्चख्काण; साधुगुरु सेवे सदा, पाले श्री जिनआण. थूलि. ३१
चउमासि ततर्थेत्रिण आविया,जिहां विजयसंभूति अणगार;वंदतां गुरु इम कहे,आवो दुष्करकार.थू.३२
थूलिभद्र कोश्या बूझवी,आव्यो गुरुने पास;दुष्करकार त्रिणवार श्रीगुरु,भला थइ कहे शाबास.थू.३३
सिंहगुफा जे साधु हुतो,तणकी बोल्यो तिणिवार;अरण्यमांहिं अमे एकला,पचखी रह्या मास चार.थू.३४
खटरस सरस आहार करतो,रहेतो कोश्या घरबार;नितु नाटारंभ जोवतो,तेहने कह्यो शाबास.थू.३५

सदगुरु वलतुं इम कहे,सांभलो शिष्य विचार;नारि अग्नि नर घृतकुंभ सरिखो,पिघले अंग विचार.थू.३६
थूलिभद्र मेरुगिरि चूलिका,चळ्यो न चित्त लगार; हाव भाव गुणिकातणो,नाण्यो मनह मझार.थू.३७
आदेश द्यो अमे जोइशुं, कोश्या छे जिहां नार;सदगुरु वलतुं इम कहे, ते न पले आचार. थूलि.३८
गुरु वचन सांभली विहार कीधो,गयो कोश्या घरबार;दासीए दीठो आवतो,मोही लीधो तिणवार.थू.३९
तसु रूप देखी रंजियो, कोश्या छे तुमे नार;दासी कहे मुज स्वामीनी,बेठी महेल मझार. थूलि.४०
ऋषि कहे कोश्या मेलवो, दासी कहे दुर्लंभ;सवा लाख टका हुवे हेमना, तो मलवुं सुलंभ. थू. ४१
चउमासा मांहे ऋषि चालियो,जइ वीनव्यो महीपाल;नेपाल देशी राये दीधो,रतनकंमल सुकुमाल.थू.४२
रतनकंबल ऋषि लइ चाल्यो,आव्यो पालिनी पास; शुकवचन भोले खोसी ते, ऋषि कर्योरे निराश.
पाछो वली नृप भाखियो,आप्यो बीजी वार;जतन करी ऋषि लेइ चाल्यो,घाली दंड मझार. थूलि.४४
शुक कहे सवा लाख जाए,सांभलो भील विचार;ऋषि लूंटवा दोला फिर्या,कने नहीं कंइ लगार.थू.४५
भील कहे बोल बापनो,सांभलो तमे ऋषिराज;ए शुकवचन साचुं करो,सारो तुमचो काज. थू. ४६

रतनकंबल देखाडियां, भीले मूक्यो तिणिवार;ते आणी कोश्याने देइ,भाखो करे मनोहार. थूलि. ४७
कोश्या कहे ऋषि सांभलो,हिवे सजुं सोल शिंगार;स्नान अंजन करुं तां लगी, बेसो घरने बार.थू.४८
रतनकंबल अंगलूणो,करी नाख्यो तिणिवार;ऋषि देखी कोश्याने कहे, आशुं कर्युं रे गमार ! थू. ४९
कोश्या कहे ऋषि सांभलो,सवा लाख एहनो मोल;मूरख ते पांचे गम्यां,ते तो कहिये अमोल. थू.५०
कोश्याए ते ऋषि बूझवी,मोकल्या गुरुनी पास;पंच महाव्रत फरी उचर्यां,जनमांहि पाम्यो हास.थू.५१
श्रीथूलिभद्र मुनीश्वरें, जिणें बुझवी कोश्यानार; सुरनर सहु संथव करे, ए मोटा अणगार. थूलि.५२
शीले ते सवि संकट टले,शीले ते सवि सुख थाय;शीले ते सुर सानिध करे,पातिक दूर पलाय.थू.५३
चोराशी चोवीशी लगे, रहेशे जेहनुं नाम; अलप भवने अंतरे, लहेशे शिवपुरि ठाम. थूलि.धन.५४
संवत सोल नवाणुए, आगरा नयर मझार; ए भणे गुणे जे मानवी, तेहने सदा सुखकार. थूलि. ५५
वमतपगछ गुरु राजियो, श्रीपार्श्वचंदसूरींद; रूपें ते रतिपति हारव्यो, भविजननयनानंद. थूलि. ५६
श्रीसमरचंद्र सूरीश्वरु, पेखतां पातक जाय; तसु श्री रायचंद्र सहगुरु, नामे नवनिधि थाय. थू. ५७

जुगप्रधान गुरु राजिया,श्रीहीरानंदचंद्र उवझाय;तसु शिष्य पन्नणे मुनि ठाकुर, लहिवा मुक्ति उपाय.
॥ थूलि० ॥ ५८ ॥ इति श्री थूलिन्नद्र अष्टपंचासिका प्रबंध समाप्त.



अथश्रीथूलिन्नद्रजीनीसज्झाय.

(माइ तुंगीआ गिरि शिखरें सोहे ए देशी.)

पाटलीपुर वर रायनंदन, मंत्री न्नलो सकडाल रे;
तसु घर लाछलदे रूपें रंन्ना, सती ने सुकुमाल रे. ॥ १ ॥
श्री थूलिन्नद्र ऋषि न्नमर न्नोगी, योगी तत्त्वनो जाण रे;
साढी बार कोडि विलसी रंगी, कोश्या नारि सुजाण रे. श्री थूलि. ॥ २ ॥
तात मरणें मन वैराग्यो, जाग्यो मोहनिद्रा रंगी रे;
श्री विजयसंन्नूती गुरुपासि दीक्षा, लेइ धरमशुं प्रीति मंडी रे. श्री थूलि. ॥ ३ ॥

कोश संभली लीध संयम, डुखें दाधी अंग रे;
श्री थूलिभद्र चौमासे आवी, प्रतिबोधे मन रंग रे. श्री थूलि. ॥ ४ ॥
कोश हाव भाव विलास कीधा, दीधा सरस आहार रे;
चौमासि राख्या चित्रशाली, हिये हरख अपार रे. श्री थूलि. ॥ ५ ॥
पूरव प्रीतें कोश बोधी, शोधी तत्त्व विचार रे;
श्राविका ते सूधी कीधी, देइ देशणा सार रे. श्री थूलि. ॥ ६ ॥
सकडालसुतें शुद्ध शील पाळ्युं, मोड्यो मयण विकार रे;
चौराशी चौवीशी नाम रहशे,-ते कहे सहु संसार रे. श्री थूलि. ॥ ७ ॥
संवत सत्तरसें अठोत्तर. जेठ शुदि तिथि सातम सार रे;
नयर खंभातें मुनि भणे ठाकुर, आणी हरख अपार रे. श्री थूलि. ॥ ८ ॥
इतिश्री थूलिभद्र स्वाध्याय.

अथ श्रीसिमंधरस्वामीस्तवन.

(उत्तराध्ययनें बोल्या सोलमेजी ए राह.)

श्रीसिमंधर तुमशुं प्रीतडीजी, में कीधी चित्त लाय;
दूरि रह्यां ते नवि विसरेजी, नेहलियो वाधे रे सवाय. ॥ १ ॥
ए मनडुंने मोह्युं रे जिनजी तें माहरुंजी, जिम चकोर चित्त चंद;
नामने लीधे रे हियडुं उल्लसेजी, पेखये परमाणंद. ए मनडुं. ॥ २ ॥
अलजोने आवे रे अंगें अति घणुंजी, दूर वसंते रे वास;
दर्शनीड देखाडो रे एकवार आवीनेजी, पूरो मारा मननी रे आश. ए मनडुं. ॥ ३ ॥
संदेशा कहावुं रे दिन सास डगमेजी, जो चाले रे कोइ साथ;
विसमीने वाटें रे पंथि कोइ नवि वहेजी, ते जाणे जगनाथ. ए मनडुं. ॥ ४ ॥
मन तन वचने रे साजन तुं सहीजी; निश्चय ने व्यवहार;

जीवन जीवथी रे प्राही वालहोजी, तुं मुज प्राणाधार. ए मनडुं. ॥ ५ ॥
साजन तुमारे रे जिनजी छे घणाजी, मुज मनि तुं जगदीश;
रागी ने कुरागी रे सरीखा लेखवोजी, ते देखी चढे मुज रीश. ए मनडुं. ॥ ६ ॥
आकीदोने राखी रे प्रीतनी पालशुंजी, ते जाणे विशवा रे वीश;
हीये ने तुमारारे रूडा गुण वश्याजी, ते समरुं निशिदिश. ए मनडुं ॥ ७ ॥
गुणने तुमारा रे दीसे छे घणाजी, ते कहेतां नावे रे पार;
व्हालेसर विरहो रे सहेतां दोहिलोजी, हिवे करजो सेवकनी सार. ए मनडुं ॥ ८ ॥
सुरतरु सरीखा रे जाणी सेवियेजी, वंछित फल दातार;
ए चितडुंने लागे रे ताहरा नामशुंजी, ते रहिये संसारि संसारि. ए मनडुं. ॥ ९ ॥
कह्यो न लागे रे सघलो कारिमोजी, साहिब तुं रे सुजाण;
तलग हमारी रे किम मानो नहींजी, तुमे अगो गुणजाण. ए मनडुं. ॥ १० ॥

ए प्रीतमीने कीधी रे गुण तारा सांभलीजी, श्रीगुरुजीनी पास;
रंगभर रातो रे ठाकुर इणिपरे कहेजी, हिये होशे लील विलास. ए मनडुं. ॥ ११ ॥

अथ श्रीसिमंधरस्वामी स्तवन.

(राग भैरव.)

सुणो सुणो रे सिमंधर सुखदातार, माहरा जीवन प्राणाधार. सुणो. ॥ १ ॥
तुम नाम निरंतर हृदय मझार, मुखें जपतां हुवे हरख अपार. सुणो. ॥ २ ॥
तुम वदन पूनमचंद्राकार, गति जित्या गज रहे वन मझार. सुणो. ॥ ३ ॥
तुं उपकारी दातारी अपार, तुं दुखतरुकप्पण कहियें कुठार. सुणो. ॥ ४ ॥
तुं ज्ञानी ध्यानी धरमधार, तुं मनमोहन महिमाभंडार. सुणो. ॥ ५ ॥
हुं निशिदिन समरुं वारंवार, गुण कहेतां किमहि न आवे पार. सुणो. ॥ ६ ॥
ऋषि ठाकुर एहवो कहे विचार, शिवसुख आपो म लावो वार. सुणो. ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीवीरजीणंद आलोयण स्तवन. ॥

॥ ढाल—सफल संसारनी ॥ ए धन शासन वीरजिनवर तणो, जास परसाद उपगार थाये घणो ॥ सूत्र सिद्धांत गुरुमुख थकी सांभली, लहिये समकित्त ने विरत लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धरि तप जप खप करे, जिणथकी जीव संसारसागर तरे ॥ दोष लाग्या जिके गुरुमुख आलोइयें, जीव निरमल हुवे वस्त्र जिम धोइयें ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार परकारना, धुरथकी नाम ने अरथ ते धारणा ॥ किणहिक कारणे पाप जे कीजियें, प्रथम ते नाम संकप्प कहीजिये ॥ ३ ॥ कीजियें जेह कंदर्प्प प्रमुखे करी, दोष ते बीय परमाद संग्या धरी ॥ कूदंतां गरवतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नाम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणसतां जीवने गिनर न करै जिको, चौथो आकुट्टिआ दोष उपजे तिको ॥ अनुक्रमे च्यार ए अधिक इक एकथी. दोष धर प्रायछित लेई विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास, ए देशी. पाटी पोथी कवली

नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण तणीय आशातना कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमड्ढ एकासण आंबिल उपवास, अनुक्रमे एह आलोयण सुगुरु बतावे तास ॥ ६ ॥ ए जो खंम्ति थाये अथवा किहांहो गमाय, तो वलि नवा करायां दोष सहु मिटि जाय ॥ थापना अणपम्लेिहां पुरमड्ढनो तप धार, खिरतां एकासण ते गमतां चोथ बे वार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमड्ढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं उदै मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीशुं अप्रीति, जघन्य एकासणथी आलोयण चढती रीति ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विनास्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चौरंदी त्रसियां एकासणथी वृद्धि ॥ बहु बि ति चोरिंदीय हएयां बि ति चौ उपवास, संकप्पादिक चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकाश ॥ ए ॥ उद्देही कुलियाबम्ा कीम्ीनगरा भंग, बहु जल नाह्यां धोयां दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमिपातन आंबिल इक एक, जीवाणी ढोलंतां दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकप्पादिक एक पंचेंदि उपद्रव होय, दोय त्रण आठ दसे उपवास आलोयां जोय ॥ बहु पंचेंद्री उपद्रव खट अठ ने दस वीस, चिहुं प्रकारे चढती आलोयण

सुण शीष ॥ ११ ॥ पंचेंद्रिने लकम्मी प्रमुखे दीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास ने छठ विचार॥ साध समक्षें लोक समक्षें राज समक्ष, कूम्रो आल दियो होय चौ खट चौथ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ दस उपवास दंम्फायां ते मरायां वोस, एक लख असीय सहस्र नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लगे एक त्रण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तौ आलोयण नांहि तास ॥ १३ ॥ सूआवम्मीना दोष कियां वली आपणमोस, बोल्या वलि उत्सूत्र किया गुरु उपरे रोस ॥ करीय डुवालस वार हजार गुणो नवकार, मिच्छाडुक्कम्म देइ आलोवो वारंवार ॥ १४ ॥

ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोम्मी ताम ॥ ए देशी ॥ विण कीधां पच्चरकाण । त्रिण दीधां वांदणा । पम्मिक्कमणा विधि पांतरे ए ॥ अणोझाने असझाय । तिहां अविधे ज्ञणिया । इकम्र आंबिल आदरे ए ॥ १५ ॥ घम्मसी ने एकत्त । निवि आंबिल । ज्ञंगै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच खट आठ । नवकरवालीयां । गुण नवकार अनुक्रमें ए ॥ १६ ॥ उपवास ज्ञंग उपवास । आंबिल उपरां । अधिको दंम्म वखाणिये ए । पांचम आठमे आदि । ज्ञंग कियां वलि । फिर अट्ठपातक हाणिये ए ॥ १७ ॥ क्रखल मूशल आग ।

चुल्हो घरटीय । दीधे अठम तप करे ए ॥ मागी सूई दीध । कातरणी छुरी । आंबिल चढतां आदरे ए ॥ १८ ॥ जीव करावे जुद्ध। रात्री भोजन। जलतरणो खेलण जुवो ए ॥ पाप तणो उपदेश । परिद्रोह चिंतव्यां । उपवास एक एक जूजूत ए ॥ १९ ॥ पनरे कर्मादान । नियम करी भंग । मद्य मांस मांखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास । संकप्पादिक । चिहुं भेदे चढता लिख्याए ॥ २० ॥ बोल्या मिरषावाद । अदत्तादान त्युं । जघन्य एकासण जाणीए ए॥ अति उत्कृष्टि एण । जाणी आलोएण । उपवास दस दस आणीये ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगुण सनेही मेरे लाला ॥ ए देशी ॥ चौथे व्रत लागे अतिचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उतकृष्टे गुण लख नवकार ॥ २ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रत मांहे भंग ॥ च्यार सिख्याव्रतरे अतिचार, आंबिल एक प्रत्येके धार ॥ २३ ॥ शीलतणी नव वाडी कहाय, तिहां जो लाग्यो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ श्रावकने श्राविका पोसीध,

एकेंद्रि संघट्टे कीध ॥ बी सर भेलौ सचित जल पीध, दंड एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोये विण लोह्ये पात्रे, एकासण तिम पुरिमढ मात्रे ॥ गइ मुहपत्ति आंबिल सारो, तिम ओघे अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार छ छंडी राखे, व्रत पच्चरकाण करे खट साखे ॥ दोषें मिच्छादुक्कड दाखे, आलोयण तेहने अभिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहेतां नावे पार ॥ तोपण संखेपें तंत सार, निरमल मन करतां निसतार ॥ २८ ॥ धन्य श्री वीर जिणेसर सामि, जसु आगम वचने विध पामी ॥ जीतकलप ठाणा अंग आदि, वलीय परंपरा गुरु परसादि ॥ २९ ॥

॥ कलश ॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी पाप आप आलोयणे, एकंत पूछे गुरु बतावे सकल बय तसु जोयनै ॥ विधि एह करसी तेह तरसी धरमवंत तणे धुरें, ए तवन श्री ध्रमसींह कीधो चउपने फलवधि पुरें ॥ ३० ॥

इतिश्री वीरजिन आलोयण स्तवनं.



॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन ॥

[1]कवण पाताले निवसंति [2]नरने सदा, शुं घणो भाखिये जिणवरे परखदा ॥
[3]भुजगगति किणि हुइ [4]सयल जगे सुखकरो, [5]कवण परचक्रना भीम जण भयहरो ॥ १ ॥
[6]कवण डाह्यो सदा आपणो दे नही, [7]जीपवो कवण संसारे साचो सही ॥
[8]धर्मनी गोठि कहि मूरख शुं अहे, [9]जगतना जीवनी उपमा कुण लहे ॥ २ ॥
[10]वाणियो भमत व्यापारे वंछे किश्युं, [11]रायने ऋद्धि ने वृद्धि आपे किश्युं ॥
[12]जीवनो घातक जीवनो शुं हणे, [13]जीव उपगारने हेते गुरु शुं भणे ॥ ३ ॥
[14]रवितणुं खेत्र शुं [15]विष्णु आयुध किशुं, [16]जीवनो वृंद जलमांहि बहुलो किशुं ॥
[17]सुरतणो वास जे तास शुं भाखिये, [18]खीरनो सार शुं जाणि जगे राखीये ॥ ४ ॥

---

१ नाग, २ गर्व, ३ उर, ४ रिपि, ५ नग, ६ गल, ७ रिपु, ८ छल, ९ जल, १० लाभ, ११ नीति, १२ प्राण, १३ साता, १४ दिन, १५ शंख, १६ तिमि, १७ नाक, १८ थर,

शां०स्त०

वंणसई[19] नीपनो मधुर सुर कुण करे, शत्रुने[20] जीपवा किशुं एकठ सरे ॥
हर[21] तणी घरणि कुल घरणि मंडलि कही, एहनो भाव ग्राह्यो कहो को लही ॥ ५ ॥
भली एकवीस वे वे अक्षर मंडिये, तेहनो आगलो अक्षर ठांभीये ॥
प्रथम अक्षरे लहुं नाम जगे जेहनो, तेहने समरणे पापक्षय देहनो ॥ ६ ॥
निर्मल वाणी भवियण जाणी, सेवकनी तमे मने धरो ॥
वसु अंतर कल समे अहनिशि नमि नमि, लीले भवसायर तरो ॥ ७ ॥

॥ इतिश्री शांतिजिनस्तवन संपूर्ण ॥

---

१९ वंश, २० दल, २१ ऊमा.

आ दरेक शब्दनो पहेलो अक्षर वांचवाथी ए वंचाय छे के–"नागउरि नगरि छजलाणी प्रासादि शांतिनाथ वंदउं."

आ भाषामां ह्रस्व इ एक मात्राना रूपमां वंचाय छे माटे नागोर नगरे छजलाणी प्रासादे शांति नाथ वंदुं. ए स्पष्टार्थ थाय छे.

॥ अथ श्रीनेमिजीन स्तवन ॥

[1] गिरिसुतापति कवण वखाणिये, [2] शशि समान जगे कुण जाणिये ॥
[3] कवण मानवनां मन मोहए, [4] कवण अंगे ऊवंगे सोहए ॥ १ ॥
[5] कुण कहो जनवदन अलंकरे, विषम [6] मारगें कवण ते संचरे ॥
[7] कवण धारे चंड तणी प्रभा, किम कही गुरुजनने खलसभा ॥ २ ॥
[9] रसतणो रस कवण लहे सही, [10] हुंअ जुओ विवरे कुण घी मही ॥
[11] तुरिय वर्ग विचाले कुण रहे, [12] जिणहरे बहु शोभा कुण वहे ॥ ३ ॥
[13] कवण कैटभ कंस ति निर्जणे, [14] रमणि चरणे कवण ते रणझणे ॥
[15] कवण मल्लिसु जन्म तणी पुरी, [16] कवण तारे जल करि धरि तरी ॥ ४ ॥

---

१ श्रीकंठ, २ वदन, ३ रमणी, ४ हाटक, ५ नयन, ६ पुरुष, ७ रजनी, ८ वरांगी, ९ रसना, १० मंथान, ११ डकार, १२ नगर, १३ श्रीपति, १४ नेउर, १५ मिथिला, १६ नावड.

न्हवरावी जिन जत्ति, ते विधि संजलतां हर्ष न माये चित्ति ॥ माय पासे ठवि नंदीसर सवि जाय, अठाइ महोछव करी पहुता निय ठाय ॥ ४ ॥

ढाल ॥ विवाहलानी ॥ चैत्रकसिण अठमि दिनेए । उत्तराषाढाये श्री जिनेए ॥ जनम लह्यो त्रीजे अरेए ॥ जसु नाम जपंतां मन ठरेए ॥ ५ ॥ धन्नुनी ठे धन राशिए । वृषत्न लंछण करे प्रकाशए ॥ थया योवन वय जे वार । दोय कन्या परणे तेवार ए ॥ ६ ॥

ढाल अढइयानी ॥ धनुष पंचसयां देह । उंचो गुणमणिगेह । सोवन वन्न जिसोए, चन्नदो कसिकस्योए ॥ ७ ॥ पूरव लक्ष कुमार, वीसति करो विचार, सारसुख जोगवए, अंतरंगे योगिवए ॥ ८ ॥

ढाल फागुनी ॥ हवे श्री जिणवर पालए, त्रेसठि पूरव लख राज, अनेक दान तिहा देतां सारे जविय्रण काज ॥ बहुतरि कला ते नरनी, चनसठ्ठि नारि संबंधि ॥ शिल्पि सय नपदेशी, न कर्यो अशुत्ननो बंध ॥ ए ॥ त्रीआसीय पूरव लाख, ते गृहवासे जिनराज, जरतादिक सय पुत्रने, आपीय देशनो राज ॥ लोकांतिक आवी कहे, बूझो जिणवर देव, चरित्र सवि जिय हितकर पालो करस्यां सेव ॥ १० ॥

॥ काव्य ॥ सुणी देवनी वाणी प्रभु दान देई, एक वरस लगे तेह निःशंक होई, कोमी त्रिणसय अधिक अठयासी जाणो, असी लाख वली ऊपरे तिहां वखाणो ॥ ११ ॥ हवे चैत्र वदी अठमी दिवस आवे, दिक्ख लीधीय मन तणे शुद्ध भावे ॥ सिद्धारथ वनमहि च्यार सहस, करी मनशुद्धि तप करे वरिस सहस ॥ १२ ॥

ढाल दोढी ॥ पाले संयम सार, वरिस लगी तप, पान रहित सूधो करे ए, सहस वरिस छद मस्थ, पाली संयम, कर्म खपी केवल वरे ए ॥ देशना दिए जे वारे, सुरनर गण मझे, प्राण तणी हिंसा नहीं ए, विधिवादे निरवद्य, वचन ते प्रभु तणो, जाणयो गुरु मुखे में सही ए ॥ १३ ॥ कुगुरु तणे उपदेश, लाग्या जे जन, तुम उपदेश ते नवि लहे ए, पमिया लोक प्रवाहे, मुग्ध ते बापमा स्वामि वचन सावद्य कहे ए ॥ हिंसा मृषा प्रमाद, निद्रा निशि त्रीजे, जामे थापे मन रली ए, एक वलि करे प्रमाद, माथे तुम तणे, दे तेहनी मति भंभली ए ॥ १४ ॥

ढाल ॥ स्वामीनी थापना एक नहु मान ए, वंदवी पूजवी पमिय अभिमान ए ॥ नाम लेतां

जसु द्वेष मति ऊपजे, तेहने ज्ञवतणी स्थिति घणी नीपजे ॥ १५ ॥ जेय जिनवचनथी जीव ऊपरावठा, गच्छ निज रागि ते जाणिये सही शठा ॥ प्रकरण सूत्र मति एकठी जे करे, रागी निरागी ते सम वड्डि मन धरे ॥ १६ ॥ माग कुमाग ए ज्ञेद मिच्छत्त ए, तेहने जाणिये जिणवर ज्ञत्ति ए ॥ धन्य जे स्वामिना वचन अंगीकरे, समकित प्रवहणे ज्ञवजलनिधि तरे ॥ १७ ॥

॥ ढाल ॥ एक पूरव लख पालिय, संयम ज्ञवज्ञय टालिय, पालिय साधु समाचारी खरी ए ॥ बहु जिय मुगति पहुचाड्डिय, टाली कर्मनी आड्डिय, आगल शिवरमणीसें वर वरी ए ॥ १८ ॥ माघ अंधारी तेरसे, साथें मुनिवर दस सहससें, परिवस्था अष्टापद शृंगे जइए ॥ छड्ड ऊपवासे अण सण, लीधुं जिह नही जर मरण, प्रज्ञु शरण करिये एक मना सही ए ॥ १९ ॥

कलश ॥ प्रज्ञु शरण करिये ज्ञवजल तरिये हरिये कसमल मन तणो ए, मुज ठाकुर मिलिउ सुरतरु फलीउं बुधणाउर मुख मंडणो ए ॥ प्रज्ञु तुम गुण सारा अतिहि ऊदारा में मुखे जाए किम कह्या ए, इम ज्ञणे समरचंद पाठक जिनजी नाम मात्र गुण जे लह्या ए ॥ २० ॥ संवत

सोल संवछरे, कातीक मासें एह ॥ थव मनरंगे आपणे, कीधी नही सदंह ॥ २१ ॥

इतिश्री बुधणानर आदिश्वर स्तवन संपूर्ण ॥



॥ अथ श्रीऋषभजिन स्तुति. ॥



गीर्वाणमालार्चितपादपद्मं नाभेयमाप्तंकिललब्धवर्णाः॥ यूयंनुतश्रीभवनैः समस्तैः यथाप्रणूयन्त अपार सारम्म् ॥ १ ॥ मयात्रविश्वेभ्रमता जिनेश नाकर्णितंतेवचनंश्रुतिभ्याम्म् ॥ अमी अतःकर्मगणाः सुदुष्टा मांहन्तुमुद्यन्तिवराकमात्रम् ॥२॥ कृपांविधायाशुततश्चतेभ्यः मां मोचयस्वाहितदेवसेव ॥जगज्जनानन्दकरश्चनाभि नरेन्द्रसूनोमरुदेवमात ॥ ३ ॥ त्वयाप्रभोलब्धश्रियास्वकीय मात्रेपिदत्ताशिवमुक्तिलक्ष्मीः॥ नत्वत्समः कश्चिदभूज्जिनेशः सुवर्णवर्णाङ्ग जिताङ्गमार ॥ ४ ॥आद्यो भवत्तीर्थकृतांय आद्यो धात्रीपतीनांप्रथमोमुनीनाम् ॥ सत्केवलज्ञानभृतां धुरीणः समुद्गम्भीरिमतां-

दधानः ॥ ५ ॥ यस्यप्रधानंपरमंनिरीक्ष्य वक्रंकुमुद्बन्धुरयंमृगाङ्कम्म् ॥ मन्येविभिन्नंकिमितिप्रकर्तुं घत्तेश्रियानिर्जितशुद्धकान्तिः ॥ ६ ॥ प्रमुदितवदना ब्भन्दः पृथुजघनधरानिशेशाननाः कुचकलशभराः सुबिम्बाधराः ॥ भजतिवरजनो लभ्नेयुर्वराः प्रमुदितवदनाः स्त्रियस्तंनरम्म् ॥ ७ ॥ इत्थंश्रीवृषभशंभुः स्तुतःसागर साधुना ददातुभूरिशंदेवः वृषलक्ष्माजिनेश्वरः ॥ ८ ॥ इति श्रीऋषभजिनस्तुतिः



॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुति. ॥

संसारागाधविस्तार पारापारभयंकरात् ॥ मांपाहित्रिदशश्रेणि सेवितानघपत्कज ॥ १ ॥
अश्वसेनोद्भवोद्दाम वामकामानलंप्रभो ॥ विधेहिशमनंनामा कर्णानाम्बुधरेणते ॥ २ ॥
रागद्वेषादयोदुष्टास्तस्करा मुक्तिवर्त्मनि ॥ मांप्रयातंप्रमुष्णन्ति ततोरक्षजगत्प्रभो ॥ ३ ॥
दुष्टाष्टकर्मसमिधः प्रदह्यभगवन्नगाः ॥ शुक्लध्यानाग्निनासिद्धिं केवलाद्दष्टविष्टप ॥ ४ ॥

जयस्वामिन्नवर्ष्म प्रत्नावात्सागरोयतिः ॥ अतन्नत्परमानन्दमेतुराज्ञः सुखव्रजम् ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिन स्तुति.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तुति. ॥

श्रीमन्मुक्तिरमानाथं वीरनाथंनुवीतन्नो ॥ यदिसिद्ध्यङ्गनोरोज बाढालिङ्गनमिछत ॥ १ ॥
यद्रूपंवीक्ष्यपञ्चेषुः सुरस्त्रीभिरपीप्सितम् ॥ लज्जयानङ्गतांप्राप त्रिलोकविजयीकिमु ॥ २ ॥
जन्माभिषेकसमये प्रेंखोलितइलाधरः ॥ तस्यकिंवर्ण्यतेवीर्यं मानवैरेकजिह्वया ॥ ३ ॥
यस्यानेकान्गुणान्वक्तुं गीःपतिःशतजिह्वया ॥ नशक्नोतिततोमन्दो हंकथंवक्तुंशक्नुयाम् ॥ ४ ॥
एवंस्तुतःप्रभुर्वीरः सागरेणमुमुक्षुणा ॥ अनारतंस्वभक्तेभ्यो ददातुपरमंसुखम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनेमिजिन स्तुति ॥

श्रीनेमिनाथंन्नविकाब्जजध्वं तमालनीलच्छविमूर्तिधारकम्म् ॥ यदीयपादाब्जरजः प्रमशान्तरोग-

न्न्तेकिलन्नूरिसौख्यम्म ॥ १ ॥ यदीयसद्देशनयाजम्रोपि लन्नेतनीरागमशोकवृक्ः ॥ यश्वेतनावान् खलुकायधारी किंतस्यवर्ण्येतनरासुरस्य ॥ २ ॥ न्नूपालचारु विजयान्वयसून्नूतः राजीमतीस्तन विशालविशालहार ॥ मां पाहिमोहचरटस्यन्नयाज्जिनेश शैवेयनाकिनरवन्द्यपदारविन्द ॥ ३ ॥ श्रीरामकृष्णावपित्वत्प्रशादादन्नविष्यतस्तीर्थकरौविशुद्धौ ॥ उदारसम्यक्त्वधरौबलिष्ठौ महान्नुजौगौर विनीलवर्णौ ॥ ४ ॥ योवीतरागस्तवधर्मनिष्ठः प्रयातिसिद्धिंकिमुचित्रमत्र ॥ सुरागयुक्तोपितवक्रमाब्ज द्वन्द्वेनरोवैतिपरंपदंवै ॥ ५ ॥ इत्थंश्रीनेमिनाथस्यःस्तवंकुर्वन्मुमुक्षुक ॥ सागरो लन्नतांदेव परमानन्दजं सुखम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तुति. ॥

समग्रध्वापरध्वान्त विध्वंसनन्नोमणे ॥ मुक्तिवामांप्रधानंच शान्तिनाथप्रयच्छमाम् ॥ १ ॥
विश्वसेनमहिनाथ गोत्रोदधिनिशाकर ॥ अचिरोत्सङ्ग संक्रीमातत्पराद्वैतन्नूषण ॥ २ ॥
पारापतोविवेकश्व त्वयात्रातोहिश्येनकात् ॥ मांकथंत्रायसेनत्वं विवेकंतवसेवकम् ॥ ३ ॥

भवकूपंचतुर्दिक्षु प्रस्थितंवनिरीक्षितुम् ॥ चतुर्मुखो भवञ्चातास्वंचमेनेकृतार्थताम ॥ ४ ॥
मुमुक्षुवक्तचंद्रस्य शिष्यःसागरसञ्ज्ञकः ॥ प्रणाथतिपरंब्रह्म नास्तियत्रजराभयम्म् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीचित्रकूटचैत्यपरिपाटि ॥

विमल विवेक विचार, ज्ञानकला भंमार; जे गुरु नित दिये ए, तस पय प्रणमिये ए. ॥ १ ॥
मोहतिमिर भरपूर, जेह करे गुरु दूर; ते मन शुद्धि नमी ए, मागि वचन अमी ए. ॥ २ ॥
चैत्यप्रवाम्हि रचीश, त्रिकरण सत्य नमीश; चित्रकूटि अति घणा ए, बिंब श्रीजिनतणा ए. ॥ ३ ॥
अश्वसेन नरनाथ, तस सुत बहु जननाथ; चैत्य भटे वरे ए, देखी नयन ठरे ए. ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ जिनचंद, नमिये धरी आनंद; वांछित सुखकरु ए, वंदित सुरवरु ए. ॥ ५ ॥

(ढाल गाहली.)

पल्लिवालगण देहरे, दृष्टि निरखतां मन हरे, गुण करे सीमंधरजिन वंदतां ए;
जिणहर नाणावालतणे, त्रिभुवन जन जसु जस भणे, सुखि घणे श्रीमुनिसुव्रत वंदिये ए. ॥ ६ ॥

संघपति खरहत्थ कारीय, शीतलजिन सुखकारीय, वारीय कुमति नमीजे ते सदा ए;
हवे चोधरीयह चैत्यघरे, ठाकुरसी कारित वरे, हर्ष धरे मुनिसुव्रत नमिये मुदा ए. ॥ ७ ॥

(ढाल जमावसी.)

हवे मालवियें श्री आदिनाथ, सत्रि बिंब सहित नमुं जंतुनाथ; ज्ञंमारी वेला तणि शांति, चौमुख नमिये मन धरिय खंति ॥ ८ ॥ वलि शीतल आदिजिनेश पास, मूलनायक पूरे चित्त आश; शाह सहणा जिणहरे बीय देव, जसु इंद सवे मिलि करें सेव ॥ ए॥ तिहां अजित जिनेसर गुण उदार, नमिये जन मन आनंदकार; भोजा वसही श्रीशांतिदेव, त्रिविह परे वंदी करुं सेव ॥१०॥

(ढाल.)

राजसिंघ मंत्री तणे ए, चेईहरे श्री शांतित; वंदीजे मन भाव धरे, फेमे चउ गति भ्रंतित. ॥ ११ ॥ ऊरधि चौमुख आदिजिण, वराढी संभव सामित; सोम चिंतामणि वंदिये ए, जिम हुवे वांछित कामित ॥ १२ ॥ सुमति सुमति कर वंदीए ए, पंचम जिनवर वंदत; उशवाल कारित

जुवणि, वंदित सुरनर वंदित ॥ १३ ॥ चंद्रप्पह आणंद करे, आदिश्वरजिन जाणित; जाव धरी सो वंदिये ए, ज्ञान प्रमुख गुण खाणित ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥

तेवीशमा जिण वंदिये ए, जव संजव पाप निकंदिये ए; पालितलावद पंचमो ए, जिन वंदी शिवपुरे वीसमो ए ॥ १५ ॥ मूल गंजारे पाश ए, सहु तोमे जवडुख पास ए; जिनदर नमुं आशंबरे ए, जे दीठे जवडुख वीसरे ॥ १६ ॥ केइ प्रवाहे वाहिया ए, मिथ्या मत बांदे साहिया ए; ते इह आणे जंति ए, तस जाणी रत्नमय जंति ए ॥ १७ ॥ सवि जिन प्रतिमा सारिखी ए, ए वात अछे आगमें लिखी ए; वेष विशेषे न वंदिये ए, इम कहेतां समकित निंदिये ए ॥ १८ ॥ इम गिणि कुमति दूर करो ए, शुद्ध समकित जाव हृदे धरो ए; जिन प्रतिमा समतुल कहो ए, इणे शुद्ध जावें शिवपुरि लहो ए ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥

तीर्थस्तंभ पासे अछे तुं भमरली, अतिहि उदार प्रासाद तुं भमरली; वीरजिनेश्वर वंदिये तुं० जिणे कही धर्मह आदि ॥ तुं भ० ॥ २० ॥ पास सुपास डुइ एकठा तुं० दीसे काउसग्गें चंग; तुं भ० उलट धरी ते वंदिये तुं भ० आपे सुख अभंग ॥ तुं भ० ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रप्रभ वंदिये तुं भ० भवसय संसयहार; तुं भ० शशिलंछन जग मोहतुं तुं भ० अभय करे जयकार ॥ तुं भ० ॥ २२ ॥ प्रतिमा अदबुद आदितणी तुं भ० जोतां हर्ष अपार; तुं भ० जे जनवंदे एक मना तुं भ० ते पामे भव पार ॥ तुं भ० ॥ २३ ॥ अष्टम जिनवर वंदिये तुं भ० चंद्रप्रभ जिनराय; तुं भ० पीतलिये प्रासादे सदा तुं भ० थाये निर्मल काय ॥ तुं भ० ॥ २४ ॥ सूराणे श्रीसुमतिजिण तुं भ० खरहथ वसही सांतित; तुं भ० पार्श्वनाथ जिन शामलो तुं भ० नमतां करे भव अंत ॥ तुं भ० ॥ २५ ॥ सुमति जिनेश्वर वंदिये तुं भ० आपे सौख्य अनंत; तुं भ० नागल्लिये चित धरी नमुं तुं भ० सोलसमा श्रीशांति ॥ तुं भ० ॥ २६ ॥

॥ ढाल ॥

लोलावसही श्रीशांतिजिणंद, दीठे मुज मन अति आणंद; सकोशले श्रीरिसह नमीजे, जिम मनवांछित शिव पामी जे ॥ २७ ॥ पूनमिये श्रीसुमति जुहारो, जिम भव संचित पातिक हारो; इग्यारमो जिन श्री श्रेयांश, छेदे जे क्रोधादिकनो वंश ॥ २८ ॥

(चोपाइ छंद.)

भछित वाले आदि नमीशुं, शिवपुरपंथ सुखे पामीशुं; तोला शाह घरें जिन जोय, पार्श्वनाथ हुं वंदु सोय ॥ २९ ॥ अष्टापद शत्रुंजय जाण, विपुल गिरिंद सुतीर्थ वखाण; कनकाचल वैभार भज्जंत, शेल शिखरे वंदुं भगवंत ॥ ३० ॥ राणकपुर अर्बुदगिरिशृंग, वरकाणे वंदुं मनरंग; एह आदि जगे तीरथ ठाम, ते सविहुं हो मज्झ प्रणाम ॥ ३१ ॥

(ढाल.)

इम चौवीश जिनेंद्र नमीजे, मानव जन्म तणां फल लीजे, कीजे दूर प्रवाह;

जिह जिन प्रतिमा दृष्टिये दीसें, तिहां वंदीजे चित्त जगीशें, रीस न कीजे लगार. ॥ ३२ ॥
श्री अनुयोगद्वारें कहिये, निक्षेपा चारे सद्दहिये, लहिये समकित साचो;
तेह मांहि इण काल विशेषे, निक्षेपा दुइ जेह उवेखे, लेखे कुमति म राचो. ॥ ३३ ॥
तिणे कारण नाम ठवणा मन धरी, हुं वंदुं मिथ्यामति परिहरी, करी जिन आगम साखी;
हवे जिनवचन विचार्या शुद्ध, गुरु मुखें ते नही कहुं विरुद्ध, कीध विचार मन राखी. ॥ ३४ ॥
जिनवचने हिंसा नवि भाखो, जे पूछे तसु इण परे दाखो, राखो निरतो बोध;
जे गुरु इण उपदेशें चाले, ज्ञानक्रिया ते नित अजुआले, ते जाणुं मुनि योध. ॥ ३५ ॥

(कलश.)

इण परे मन रंगें सद्गुरु संगें चैत्य सवि में वंदिया ए, पूर्यो मन सुकृत टाल्यो दुष्कृत पाप सवि मुणि निंदिया ए; जे अतीत अनागत संप्रति जिन श्री पासचंद शीषें स्तविय, वेले सुखदायक वांछित कारक श्री जिनचंदो जन भविय ॥ ३६ ॥ इति श्री चित्रकूट चैत्य परिपाटी समाप्तः

अथ श्री सम्यक्त्वदीपक दोधका (सोरठा) छंद.



जेह तणो आदेश. सावद्यनय दीसे नही; तेहनो किम उपदेश, भूला लोक मतांतरें ॥ १ ॥
तें वलि न करे कांय, जे अनुमोदे कारवे; पशु जिम ताएया जाय, मुग्ध किंपि जाणे नहीं ॥ २ ॥
सावद्यमय उपदेश, देतां जे शंके नहीं; बिहु मिलि म्हेले वेष, तेहनुं शुं अनुमोदिये ?! ॥ ३ ॥
ढांक्या कूप समान, मुग्ध तिहां धसकी पडे; भंजे जिननी आण, बे भव विणठा तेहना ॥ ४ ॥
मुनिवर पोषहशाल, दीसे जे मंफि रह्या; जाणे बालगोपाल, ते तो ऊघाडा कुआ ॥ ५ ॥
गरजु होशे जेह, जाणी पाणी काढशे; मांहे न पडशे तेह, काज सरे कांठे छतां ॥ ६ ॥
मा होजो नर धीर, ढांक्या कूवा ढूकडा; लहेशुं नीर न तीर, जीवित गण तिहां दोहिलुं ॥ ७ ॥
क्रिया अनंती वार, आगें इण जीवें करी; तोय न पाम्यो पार, विण समकित ते वेगलो ॥ ८ ॥
क्रिया थकी शिव दूर, समकित हुंती ढूकडो; वाजे वाजी तूर, धावत धंधा चूकशुं ॥ ए ॥

क्रिया तणो विश्वास, जे तेहने आवे हिये; विणु समकित ते पास, पंमित जन जाणे सही ॥ १० ॥
नहुं राचियें गमार, फटा टोप किरिया तणे; उलखि समकित सार, जो आशा शिवपद तणी ॥ ११ ॥
सांभलजो सहु कोय, (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि वीनवे, शिवसुख दायक होय, आण सहित किरिया मिलि १२

(देशना संबंधी आर्या छंद.)

अरकेवणि विरकेवणि णिव्वेयणी तहय होइ संवेयणी ॥ तं सुण माणो जीवो बेरग्गं लहइ सुहमूलं ॥ १ ॥ आयारं ववहारं हेऊ दिठंत दिठिवायाई ॥ दसिज्जइ जीएसा अरकेवणि देसणा पढमा ॥ २ ॥ परमय विक्काहिं परमय वयणाहिं जीइ परमयाउ जणो ॥ विरकेविज्जइ एसा विरकेवणि देसणा वीया ॥ ३ ॥ भवसम विवेगसंवर समया संतोष संभवं सुरकं ॥ वन्निज्जई जीएसा संवेयणि देसणा तईया ॥ ४ ॥ जरा मरण रोग सोगाइएहिं अइ दारुणं भवसरूवं ॥ पयडिज्जइ जीएसा णिव्वेयणि देसणा तुरिया ॥ ५ ॥



॥ श्रोता परीक्षानी सज्झाय ॥

(राग कालंगडो.)

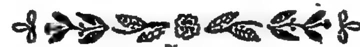
वरसे पुष्करावर्त्त सुमेहा । तब पृथिवी भेदाये नीर । पण एक मगसेलीउ न भेदाये । अति न्हानो ने कठिन शरीर ॥ १ ॥ तिम गुरुवचने किमें न भेदाये । जे प्राणी होय भारी कर्म । कंठ (शुंक) शोष जो अति घणो कीजे । तोय न पामे सूधो धर्म ॥ २ ॥ बावना चंदन गंध तजीने । कसमल ऊपर माखी जाय । परिमल कलमतणो छंमीने । मेमकमो नित कादव खाय ॥ ३ तिम० ॥ काले कांबल गुलियलि कापम । चोल तणो नवि बेसे रंग । वायस वान न थाये धोलो । जो नित म्होहे यमुना गंग ॥ ४ तिम० ॥ चिगटे कुंभे जल नवि भेदे । न रहे काणे भाजन नीर । रवि देखी घूवम हुए अंधो । पान न लहे वसंत करीर ॥ ५ तिम० ॥ मूंग कांगमू कण मांहे जेहवो । पाणी अगनि न भीपे अंस । जव केलव्या न होवे तंडुल । बग सीखव्या न थाये हंस ॥ ६ तिम० ॥ मृगमद अगर कपूरे वास्यो । लसण न पामे रूमो गंध । सूरज शशिहर दीवा जोतें । किमही

नवि देखे जात्यंध ॥ ७ तिम० ॥ ऊग्यो चंद चोरने न गमे । मेहे जवासो सूकी जाय । खीर खांड घृत मीठो भोजन । पेट कूतराने न समाय ॥ ८ तिम० ॥ मीठी द्राख न वायस चाखे । श्वानपुंछडी न समी थाय । आंबानुं वन (करहो) ऊंट चरे नही । अन्याइने न गमे न्याय ॥ ए तिम० ॥ खाय न संनिपातियो साकर । पापी ने धरमी न सुहाय । रुचे नही चंपो मधुकरने । घुण नित सूको लाकड खाय ॥ १० तिम० ॥ गाम समीप नदी मूकीने । रासभ राखे खरडे अंग । कुलवंती कामिनी तजीने । नीच करे पररमणी संग ॥ ११ तिम० ॥ नल फीटीने सेलडी न थाये । इक्षु तणे जो वाधे संग । दूध गुले जो लींब सींचाये । तोहे मीठो नवि थाय प्रसंग ॥ १२ तिम० ॥ खीर सर्प्प मुख न हुवे अमृत । काच कमायो रतन न होय । खारो न टले समुद्र नो नदीयें । मोटे वड फल नीरसज होय ॥ १३ तिम० ॥ माथे मणि नितु वहे भुजंगम । तोहे ते नवि निरविष हुंत । राम तणी सेवा करे हणुमंत । लंगोटी अधिको न लहंत ॥ १४ तिम० ॥

(ढाल—श्री सदगुरुवचन करे शुं तेहने ए राग) इम लौकिक संबंध विचारी । लोकोत्तरनी

सुणजो वात । चित्रे ब्रह्मदत्त बहु समजाव्यो । विरति तणी नवि आणी धात ॥ श्री सद्गुरुवचन करे शुं तेहने.१५ महावीरनो शिष्य जमाली। तिहनें नवि लागो उपदेश । कालिगसूरीयो कपिलादासी। गोसालो पामशे कलेस ॥ १६ श्री०॥ विष्णुकुमरनां वचन सुणीने । नमुचि न मानी कांई सीख । मारणहार उदाई नृपनो । बार वरस लगि पाली दीख ॥ १७ श्री० ॥ शिष्य पांचसे केरो नायक। अंगारमर्दक नामें सूरि । श्रावक परख्यो अभव्य दया विणु । निर्गुण जाणी कीधो दूरि ॥ १८ श्री०॥ संवेगी सावद्याचारज । सूत्र विरुद्ध तिणें कह्यो विचार । नागिल बंधव बहु समजाव्यो । सुमतिअें कुगुरु न तज्या लगार ॥ १९ श्री० ॥ शीलसनाह रिषिये प्रतिबोधी । रूपीये नवि काढ्यो साल । वरस पंचास तपे तप लखणा । तसु फल न थयो एके वाल ॥ २० श्री० ॥ ईसरने मन धर्म न नेयो । रज्जा महासतीने थयो रोग । फासू जलथी काया विणसे । इम नामें घाल्यां बहु लोग ॥ २१ श्री० ॥ पालककुमर नेमि जइ वंद्या । कंमरीक पाल्यो चारित्र । कृष्ण साथें वीरे जइ वंद्या । फलें फेर अति थयो विचित्र ॥ २२ श्री० ॥ संगति एहने हुंति रूडी । पुण नवि प्रीछ्यो

सार विचार । कर्म निकाचित जेहने पोते । ते प्रतिबोध न लहे लगार ॥ २३ श्री० दृष्टिरागें नर जे हुए रातो । जे हुइ दोषी अति घणघोर । मूढ वचन परमारथ न लहे । विग्रह पडिया वदे कठोर ॥ २४ श्री० ॥ ए चिहुंने धर्म कहेवा बेसे । ते नवि जाणे आगम रीत । कूकरवदनें कपूर ज घाले । जे डाहपणाने न धरे चित्त ॥ २५ श्री० ॥ लोह वणिग जिम करे कदाग्रह । सूत्र न साचो प्रीछे जेह । लोक प्रवाहे मूंड मेल्हावे । साचो धर्म न जाणे तेह ॥ २६ श्री० ॥ भारी कर्म घणाने ए परें । हलूकर्म प्रीछे ततकाल । सनतकुमार चिलातीनंदन । थावच्चासुत गय-सुकमाल ॥ २७ श्री० ॥ पर्षद पुरुष जोइने कहिवो । धर्म कह्यो इम आचारंगि । नंदी सूत्रें सोष संभारी । ब्रह्म कहे ज्यो ज्यो मनरंगि ॥ २८ श्री० ॥



अथ श्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विपंचाशिका.



(सुण सुण कंतारे सीख सोहामणी—ए देशी.)

ढाल—गोयम गणहर पाय प्रणमी करी, ब्रह्मव्रत स्तवशुं रे हर्ष हीये धरी;
सूधो पाली रे भवसागर तरी, पामी पामे रे पामशे शिवपुरी.

[1]उथलो—शिवपुरीनां सुख लहे भवियण तेह फल बंभचेर तणुं,
मन वचन कायें शुद्ध पालो किशुं कहिये जिय घणुं;
सिद्धांत मांहे अछे विस्तर तेह संखेपें भणुं,—
ते भविकना उपकार हेतें सारभूत सवे शुणो. ॥ १ ॥

---

१ उथलो ए हरीगीत छंदना जेवी ढबनो मात्रामेल छंद छे. अने २८ मात्राओ दरेक पदमां होय छे.

ढाल–नारी रूपें रे जगमांहे मंभीज, पासति नरने रे समरथ खंभीज;
एहथी डुस्तर जगमांहे छे नहीं, जाल मनोहर रमणी इम कही.

त्रथलो–इम कही जिणवरें उत्तरऊयणे अध्ययनें बत्तीशमे,
जे हुए कम्मैं लहुअ प्राणि नारी विषय न वीसमे;
ए छंभिवानो करे उपक्रम हीये जावे जावना,
अबला तणो जे पिंम बांध्यो तेह फल छे पापना. ॥ २ ॥

ढाल–पाप अशंखह राशि एकठी मिली, स्त्रीयोनिने रे पामे संजली;
श्रुत मांहे जाखे रे इणि परें केवली, एहवी सन्मुख जोइए केम वली ?

त्रथलो–वली संजली नारी पेखी करे श्लाघा जे जगें,
ते मोहे माता रंगे राता जमे जवमांहि तां लगें;
पुदगल अनंता एम जाणी रूप देखी चिंतवे,

मल मूत्रनो भंडार तनु ए सुखी किम ते संथवे. ॥ ३ ॥

ढाल—मुख ते लाले रे भरियो नाशिका, पुरा सिघाणो रे परतिख पासिका;
नेत्र ते पीहे रे कान मेलें भर्यां, कुच पलग्रंथीरूप हिये धर्या.

त्रथलो—धर्यां कोठा हाड केरा मेद मांस रुधिर भर्यां,
नसाजाल अमेध पूर्यां पेट चर्मे परवर्यां;
जघन मूत्रे नखशिखादिक अशुचि देह अछे सही,
विषय वाह्यो काम अंध जिय यथास्थिति जाणे नही. ॥ ४ ॥

ढाल—विषय रसासव माता जीव ए, जुगताजुगतो न जाणे कीव ए;
तिल तुस मित्तं सुखे डुख मेर समं, कुश अग्र बिंदु सागर उपमं.

उथलो—उपमा डुखनी देशथी ए सर्वथी जगगुरु कहे,
जे विषय वाह्यो कर्म बांधे पार किम उनमय लहे;

उत्कृष्ट तेतिस अयर नरगें सातमे आयु भोगवे,
शारीर मानस डुःख अहनिशि सहे डुःखे जोगवे. ॥ ५ ॥
ढाल–त्रिहु लगे क्षेत्रज सुरकृत वेदना, भोगवे जीवमो रे छेदन भेदना;
ताता तरुवो रे काने ढाल ए, विषय तणां गीत मीठ संभाल ए.
उथलो–संभाल ए तुज गंध प्यारो नाकि खार संचार ए,
आंख मूल थकी उखाडे नारिरूप संभार ए;
जीव खंमो खंरू करीने कहे परमाहम्मिया,
नारिनां मुख सुखें फरस्या भोग अरथ अहंम्मिया. ॥ ६ ॥
ढाल–रे ते मरद्या रे पीन पयोधरा, पर रमणिनारे जाणी मनोहरा;
पग २ परनारी भोमारथि भर्या, इम संभारीने रे चवरंगा कर्या.
उथलो–कर्या ते परिणाम डुष्टे अंगि फरस संभाव ए,

लोहमय पूतली अगनिमांहि अधिक अधिक तपाव ए;
आणी ऊभो राखे नारक आलिंगन देवराव ए,
लोहमय धगधगत गोला हाथे तेह धराव ए. ॥ ७ ॥

ढाल–कहुं जे न करे संजसि दोष ए, मुदगरि मारी अंग ति मोष ए;
नयण श्रवणना वसण ऊपाष ए, सूधी लोपी तिहां पुणि बाष ए.

त्रथलो–वाषए एहवा वचन संभरि नारि भुंगेठवी,
हावभाव विलास पोख्या प्रियाशुं कूमो लवी;
रयणि भोयणि असत्य बोल्या अदत्त लीधा पर तणा,
मैथुने नरमुछिम असंखा लाख नव गर्भिज हणया. ॥ ८ ॥

ढाल–पंचम अंगे ए दृष्टांत भणयुं, गौतम पूछे भवियणें ते सुणयुं;
कहेवो असंजम स्त्री संभोगिए, होवे वंसनी नली रुइ जोगिए.

त्रयलो–जोग रुइ नली वांसनी भरी कोइ पुरुष करे ग्रहे,
तप्त लोह शलाकया मक्षि घालि ततखिण ते दहे;
गर्भिक माहि एक दो तिय भगरे अथ ते नहीं,
मूर्छिम विणसे अने उपजे भोग भोगवतां सही. ॥ ए ॥

ढाल–एहवी करणी विवेकी किम करे, जीवघात देखी हियडे अति डरे;
मैथुन छांडीरे संयम आदरे, चोखे चित्ते रे व्रत सूधो धरे.

त्रयलो–धरे सूधा हर्ष अति घण शील पाले जिण दिशे,
ते सफल वासर थयो नरभव तर्यो भवसागर मिशे;
नारी अशुचि भंडार देहे अछे अवगुण अति घणा,
संखेपथी वानगी पेखी संग तजजो तेह तणा. ॥ १० ॥

(ढाल–राग गोडी.)

अवगुण एह सन्नावतणा, अंग वसे निशिदीश; असत्य वदे साहस करे ए, ए विसवावीश. अवगुण. ॥ ११ ॥ अवगुण चिंती नारी सरिस, किम कीजे संग; चित्त जूठी मुख मीठडीए, ए नव नव रंग. अवगुण. ॥ १२ ॥ माया मूर्खपणो पत्तर, लोन्नह आगार; निर्दय अने अशुचि बहुल, इच्छाइ विचार. अवगुण. ॥ १३ ॥ शोकनदी पापहदरीय, कपटहनी कोडि; क्लेश करे आपण परह, ए मोटी खोडि. अवगुण. ॥ १४ ॥ वैर अगनि अरणी अछे ए, ए दुःखनी खाणि; सुखनी ए छे वेरणीय, इम हियडे आणि. अवगुण. ॥१५॥ हिये अनेरो नर धरेए, देखे अन्य चिंतेय; बोले दोष अनेथि दिये, इम पाडे न्नेय. अवगुण. ॥ १६ ॥ सो चित्तह सही मणह, हियडां पंचास; कर्मे विटंब्या ते पुरष, जस नारी विसास. अवगुण. ॥ १७ ॥ अस्थिखंड निरस न्नीषणो, चगले जिम मुग्ध; काय परिश्रम ते लहे; तिम रमणी लुब्ध. अवगुण. ॥ १८ ॥ रूडी परे विचारी जुवो, जिम कदली थंन्न; सार नही तिम नारी तनें, नहु सुखनो लंन्न. अवगुण. ॥ १९ ॥ दर्शन मात्रे चित

हरे, फरशें बल जाय; रेत हरे संन्नोग तिणे, राकसी कहेवाय. अवगुण. ॥ २० ॥ प्रमेह न्नगंदर धातुक्षीण, श्वासादिक रोग; एवमाइ अवगुणजलही, देखी ढंडो न्नोग. अवगुण. ॥ २१ ॥

(राग धनाश्री.)

एह सम वक्र अवर न वैरी, तिणे नाम धरावे नारी रे;
जोजोरे मति हियडे आणी, इम बोले केवलनाणी रे-
इण न्नवे परन्नवे संतावे, राग दोषे पास घलावेरे-
इह न्नवि दृष्टांत वियाणी, तुमे विरचो न्नवियण प्राणी रे. जो. ॥ २२ ॥
परदेशीने सूरीकंतीअें, विष दीधो कह्यो न्नगवंतेरे; जो.
चुलणीये ब्रह्मदत्त मार्यो, ते मदेते बुद्धि न्नगार्यो रे. जो. ॥ २३ ॥
महाशतक श्रावक घरि नारी, रेवतीए बार शोक मारी रे; जो.
श्रीदेवीने देवदत्तें बाली, कामांधिये सासू न पाली रे. जो. ॥ २४ ॥

पचस एक कण शाक जणाणां, शामा सिंहसेनराय घरणा र; जो.
कूडीराजा पाही प्रजलावी, इग्यारम अंगे भलावी रे. जो. ॥ २५ ॥
रत्नद्वीप देवीये लीधो, जिनरक्षित शूलीए वींध्यो रे; जो.
खंडोखंड करीने नाख्यो, अंग छठे जिणवर भाख्यो रे. जो. ॥ २६ ॥
आवश्यक नारी गोझारी, बंभणीय भणी पति मारी रे; जो.
दासीपति भाल लिखाव्यो, चंडप्रद्योतन जीवतो बंधाव्यो रे. जो. ॥ २७ ॥
सुदर्शन शूलि आरोप्यो, राय अभया वचने कोप्यो रे; जो.
खर दूषण मरणज पाव्यो, सूर्पनखा नारि बोलि आव्यो रे. जो. ॥ २८ ॥
रावण मुख भू रडवडियां, परनारी संगे पडियां रे; जो.
कीचक कुंभी तले चांप्या, पांडवे तेह काम वाप्या रे. जो. ॥ २९ ॥
सुसरो ने जक्क कूडा कीधा, नेउर पंडिय छली लीधा रे; जो.

ललितांग संचारे दीधो, नारी नयणे जे वींधो रे. जो. ॥ ३० ॥
पहिलां लालच देखाडे, लोभीने पासे पाडे रे; जो.
दासनी पदविये पहोचाडे, स्वारथ विण संगति छांडे रे. जो. ॥ ३१ ॥
जाति कुल शीलादि छंडावे, त्रिभुवन मांहि भंडावे रे; जो.
कपिले दासीने संगे, आपद पामी निज अंगे रे. जो. ॥ ३२ ॥
कुले कूचो मेशनो दीधो, जिणे परदारा संग कीधो रे; जो.
अकीरति पडह वजाव्यो, पररमणी चित्त लगाव्यो रे. जो. ॥ ३३ ॥
चारित्र जलांजली करिउ, नारी संग करेवा ठरियो रे; जो.
बहु गुण आराम ते वाढ्यो, रामाथी मन नहु वाढ्यो रे. जो. ॥ ३४ ॥
नानाशुं दोहित्रो वढियो, पद्मावइ कोणिक गढियो रे; जो.
एक कोडी असी नर लाख, विणठा इम केवलि भाष रे. जो. ॥ ३५ ॥

सोवन गुलिका दोवइ सीता, एह कारण ऊगम्म विदीता रे; जो.
रुकमिणी प्रमुख जे नारी, कलि कारण अंग विचारी रे. जो. ॥ ३६ ॥
ब्रह्मदत्त माधवति पहुतो, कुरुमति कुरुमति लवतो रे; जो.
कंम्हरिकादिक जे रुलिया, ते मदीला संगें मिलिया रे. जो. ॥ ३७ ॥
दृष्टांत लौकिक लोकोत्तर, ते अछे ग्रन्थमांहि विस्तर रे; जो.
इम जाणी जे नर विरता, जव तरीए तसु गुण सरता रे. जो. ॥ ३८ ॥
सढपविष अधिको कामजोग, ए नाम विना छे रोग रे; जो.
विष खाधे एक जव मारे, पामे डुर्गति संजारे रे. जो. ॥ ३९ ॥
चिंतन किर्त्तन नहु कीजे, इछी नयणे नवि निरखीजे रे; जो.
विणु वांछ्ये दृष्टिये आवे, तिहां एवी जावन जावे रे. जो. ॥ ४० ॥
अति बाली वये ते पुत्री, थिवरि ते गिणीजे जनयत्री रे; जो.

मध्यम वये बहेन समाणी, ते नमिये उत्तम प्राणी रे. जो. ॥ ४१ ॥
ब्रह्मव्रत तरु राखण काजे, नववाडी कही जिनराजे रे; जो.
ते कहीशुं गुरुमुखे धारी, सोलमो अज्झयण संभारी रे. जो. ॥ ४२ ॥
बेसे सूवे जिहां नारी, तिहां न रहे ब्रह्मव्रतधारी रे; जो.
मूषक कूकड मंजारी, दृष्टांत हिये अवधारी रे. जो. ॥ ४३ ॥
मा बहेन सुता वधू आदें, ए भाख्यो जिन विधिवादें रे; जो.
नारी अग्नि नर घृतकुंभ, पिगले तिम विणसे बंभरे. जो. ॥ ४४ ॥
नाक कान चरण कर पाखे, दांत रहित सिथिल अंग दाखे रे; जो.
पूरवधर दशवियालें, शतवर्षी व्रती न निहाले रे. जो. ॥ ४५ ॥
विकथा जाति कुल बल रूप, नेपथ्य शृंगार सरूवरे; जो.
स्त्री सरीर आलोक न कीजे, एकांति व्रते चित्त दीजे रे. जो. ॥ ४६ ॥

एक आसने शयने न बेसे, अंग फरसणकी मन विणसे रे; जो.
मागहिय संगें कूलवालू, वेणी फरसें संन्नूति सीआलू रे. जो. ॥ ४७ ॥
कुच आदि नयणे नहु निरखे, देखी मातादिक परखे रे; जो.
कोम्यंतरे वास न करीए, पूरव न्नोग हिये न समरिये रे. जो. ॥ ४८ ॥
अति सरस आहार न जिमिये, रस लंम्नी इंद्रिय दमिये रे; जो.
अति मात्रा आहार ते टाले, देह थोम्ने कवले पाले रे. जो. ॥ ४९ ॥
विन्नूषण अंगे वरजे, नववाम्ने मनमथ तरजे रे; जो.
ऊदारिक वैक्रिय वेदं, नव नव अढार इम न्नेदे रे. जो. ॥ ५० ॥
सूधो जे व्रत आराधे, ते शिवसुख सुरसुख साधे रे; जो.
जंबू ने गयसुकुमाल, ए मुनीनो शील विशाल रे. जो. ॥ ५१ ॥
दोष देखी अथ गुण देखी, जिणे नारी दूर ऊवेखी रे; जो.

समकित वैरागे पूरा, ते नमिये नित नित सूरा रे. जो. ॥ ५२ ॥

(कलश. हरगीत सम वृत.)

एकेक इंद्री वशे आठे कर्मग्रंथि सुदृढ करे, अनादि अने अनंत चउगइ काल अनंत संचरे;
श्रीपासचंदसुरिंद शिष्य समरसिंघ इम उच्चरे, इंद्रितणो जे करे संवर हेलें शिवरमणी वरे. ॥५३॥

इति श्री ब्रह्मचर्य बावनी स्वाध्याय संपूर्ण.

॥ अथ श्री वीतरागाष्टक. ॥

(शिखरणी छंद.)

चिदानंदंकंदं जिनपति जिनेइं अघहरं, सदा शुभ्रं ज्ञानं विशदवर ध्यानं सुखकरं;
शरण्यं कारुण्यं अचल शिवअर्कं मुनिवरं, अनंतं अव्याघं परमपदसार्कं जिनवरं. ॥ १ ॥
हितं सर्वंसत्वं सुगुणगुणराजं जगपतिं, विधी ब्रह्मं रम्यं विदित सब योगं मगपतिं;
अनेकं एकंवा हरन सब रोगं प्रभु तुमे, सदा शक्ति व्यक्ति परम सुखरक्ति विभु तुमे. ॥ २ ॥

जगत्वंद्यं जेष्टं जयति जगश्रेष्ठं जगगुरुं, महावीरं वीरं सकल मति त्रासं त्रयहरं;
महाभाग्यं भोग्यं भगतजनपालं गतदरं, महामोक्षंसोक्षं रहितरजपंकं जयकरं. ॥ ३ ॥
गुणाधीपंधीशं रटत तव नामं मुनिजनं, महा मुक्तं गुप्तं कटत सब क्लेशं भ्रमवनं;
महा बुद्धं सिद्धं चढत सुखश्रेणी दमयुतं, महाकिर्तं स्फुर्तं घटत दुखश्रेणी समयुतं. ॥ ४ ॥

(द्रुतविलंबित छंद.)

अघी गुणाकर शंभु सुधाघनी, भविजनांबुजबोधदिवामनी; कुमतिखंडन घोर यतीश्वरं, सुमतिमंडन शंकर ईश्वरं ॥ ५ ॥ भवत भावित भूत विभासने, तरन तारन पालन आसने; प्रबल कर्मदलंहतमोहनं, मदनकंदन आननसोहनं ॥ ६ ॥ अइ सुरासुर-किन्नर-अर्चिते, अमल भासत ज्ञान सुखार्चते; सरव सत्वहितं गुनसागरं, सुख अनंत महाद्युतिआगरं ॥ ७ ॥ अतिशयं वसु पुन्य अलंकितं, जगतनाथ पदं त्रय शोभितं; सहससिद्धिलसद् वपुलक्षणं, सरव सिद्धिप्रदं भव रक्षणं ॥ ८ ॥

(कलश) इम तरनतारन दुरितवारन सकल सुख संपतिकरो ॥ रविहर्ष विधुवर चरन चितधर थुएयो श्री जगदीशरो ॥ निधि पूर्न केशव चंद्र वत्सर रचित गुनमनी दाम ए ॥ आनंदकंदा हरत फंदा उदय सुरगवि काम ए. ॥ इति श्री हर्षचन्द्रसूरीश्वर चरणकमल सेवी उदयचंद्रेण विरचिता वीतरागस्तुतिः ॥



॥ अथ श्री पांसठा यंत्र उद्धारमय श्री चोविशजिन स्तोत्र. ॥

(अनुष्टुप् छंद.)

आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथा नमिम् ॥ अजितं जितमोहारिं पार्श्वं वंदे गुणागरम् ॥ १ ॥
नेमिनाथं त्रिलोकीशं शांतिंच सुविधिं तथा ॥ अनंतनतदेवेंद्रं स्तुवेहमभिनंदनम् ॥ २ ॥
सुव्रतं सुव्रतं नौमि श्रेयांसं सुखदायकम् ॥ विमलं विमलाचारं धर्मं पद्मप्रभंजिनम् ॥ ३ ॥
मल्लिनाथं जिनेशं च वासुपूज्यं जगद्गुरुम् ॥ कुंथुं च शीतलं वंदे सुपार्श्वं परमेश्वरम् ॥ ४ ॥

संभवं जगदानंदं चंद्रप्रभं नमाम्यहम् ॥ सुमतिं वीरमर्हंतं संघंचापि चतुर्विधम् ॥ ५ ॥
यंत्रोयं जिनसंज्ञाभिः पंचषष्ट्यंक निर्म्मितम् ॥ पूज्यते यस्य युक्तास्य मंदिरे सततं खलु ॥ ६ ॥
तद्गृहे कोटि कल्याणं श्रीर्विलसतो लीलया ॥ क्षुद्रोपद्रव भूतादि नश्यते व्याधि वेदनाः ॥ ७ ॥

॥ॐ॥

१	१८	२१	२	२३	[illegible]
२२	१६	९	१४	४	[illegible]
२०	११	१३	१५	६	[illegible]
१९	१२	१७	१०	७	[illegible]
३	८	५	२४	२५	[illegible]

(मालिनी छंद.)

भवति सुखमनेकं तस्य यो मानवश्च
विमलमतिरनिंद्यं स्तोत्रमेतद्वितंडः ॥
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत्
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाण ॥ ८ ॥

॥ इति महामहोपाध्याय मुनि श्री मेघराजगणिकृतं स्तोत्रम् ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम्. ॥



भजे भजे नाथ तवांघ्रिपद्मं लभे लभे ते न कुतः प्रसादम् ॥ सदैव चिंतामणिपार्श्वदेव विहाय चान्यान् भुवि सर्वदेवान् ॥ १ ॥ नो प्राज्यं राज्यं प्रार्थये प्रार्थयेहं नो गीर्वाणानामाधिपत्यं सदैव ॥ एकांतेनाशुस्तंभनेश प्रसत्तिं, यौष्माकीणां श्रीभुक्तिमुक्तिप्रदां वै ॥ २ ॥ वरीवृत्यते भक्ति शक्तिर्मदीया दनीध्वस्यते चेत्त्वयि व्यूढविघ्नम् ॥ तदा लोढ्वेश त्वमर्थ्योसिनैव परं रीतिरेषा भुजिष्यस्य नाथ्रम् ॥ ३ ॥ सुरनरमधुपालीपीतपादारविंदे, विजयिनिखलविघ्नव्यूहविध्वंसदक्षे भवति भवति नाथे मुक्तिलक्ष्मीसनाथे त्रिभुवनजनतानां सर्वसंपन्निदाने ॥ ४ ॥ यदह ममलभक्त्या सेवमानोपि शश्वत् किमपि न च लभेयं स्वामिनः सैव हेला इति मनसि निधेया कापरेटाख्यपार्श्व तव गुणमणिमाला मालिनी झम्पिरेषा ॥ ५ ॥ घनसिद्धिसमृद्धिदं श्रुतिदं सुरराजसमाजनतं मतिदम् ॥ यदिवांछसि भूतिविभूतिमदं भज रे करहेटकपार्श्वपदम् ॥ ६ ॥

फलवर्द्धिजिनेशसुरशेनतं स्वकसेवककक्षितकल्पतरो ॥ ददतां मम चात्र परत्र भवे निजपाद सरोरुह भक्तिमलम्. ॥ ७ ॥



॥ श्री अनंतनाथजिन स्तवन ॥

सांभलुं जिम जिम स्वामीना गुण, अधिक उत्तमसार; निकलंक ए अति ऊजला, जिणे जीत्यो रे मोतीनो हार के. ॥ १ ॥ जाणुं रे जिन जोवुं, मारे हीअडे रे आणंद अपार के; ते आगल मन ढोवुं, मुज भवो भवे रे श्री अनंत आधार के. जाणुं रे. ॥ २ ॥ आरंभ परिग्रह परिहरी, उपनो केवल नाण; सब इंद्र मिलि महिमा करे, हवे वरते रे त्रिभुवनमांहे आण के. । जा०॥ ३ ॥ प्रभु पायपूजेवाभणी, हवे मिलीय परषदा बार; मधुरी वाणी मोहता, प्रभु बोले रे धुरे धरम विचार के. । जा०॥ ४ ॥ (ढाल २ जी. अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, ए राह.) जिनजी भाखे रे भवियण उलखो, पहेलो जीव प्रकार; पृथिवी पाणी रे पावक पवन शुं, वणसइ त्रसहि

विचार ॥ ५ ॥ आप सरीखा रे सवि जीव जाणजो, हणवो कोइ न होय; दुख अनिलाखी रे दीसे को नही, सुख वांछे सहु कोय। आप०॥ ६ ॥ जो कोइ आपणो एक रोम ऊखणे, तो न गमे मन मांहें; एहवुं जाणी रे परह म पीमजो, इम नाख्युं जगनाहें। आप०॥७॥ परनी पीमाजी दूरे परिहरो, पालो सघला रे जीव; नमरी जेहवी रे हिंसा नवजलें, जीवदया छे रे दीव. आप.॥८॥ (ढाल ३ जी.) जीवदया पालेवा कारण, जीनजी कह्यो उपाय; कूमो बोल किमे मत बोलो, कूमे धरम न थाय॥ ए॥ मुज मनें मानियो रे, एहवो स्वामी तणो उपदेश; अमृतपान रुचे सवि केहने, तृसिया वलिय विशेष। मुज० ॥ १० ॥ परअदत्त कांइ न लीजिये, चोरीकार कलंक; इणे नवे नूपति निग्रह लहिये, परनवे नरक निशंक। मुज०॥ ११ ॥ धन कंचन परिग्रहनी ममता, म करो करो संतोष; अंते शरीर न आवे साथें, परिग्रह पग पग दोष। मुज०॥ १२ ॥ (ढाल ४ थी.) रमणिरंगें म राचजो, जे रूपे होय रंन रे; सुकृत गले इण संगते, जिम अगनिये घृतकुंन रे ॥ १३ ॥ शीलरयण जिम राखजो, जग यश पामो जेम रे; नेट न होवे रूअमो, परनारीनो

प्रेम रे । शील०॥ १४॥ अबला आहेमी सम गणो, वांकी भ्रूहकमाण रे; नरहिरणा पलजो परहा, छूटे छे लोचनबाण रे. शील. ॥ १५ ॥ काने कुंमल ऊलहले, पाये नेवर ऊणकार रे; गजगति चाले कामनी, देखी म धरो विकार रे । शील० ॥ १६ ॥ (ढाल ५ मी.) स्वामी कहे हिंसादिक टालो, मनमांहे क्रोध न राखो; मान माया लोभ किमे म खूचो, मधुर वचन मुख भाखो. शोभागी सुंदर निंदा निवारो, निज सुकृत संयम कांइ हारो । शोभागी० ॥ १७ ॥ अछता दूषण परना म कहो, परयश परहो म नाखो; मूढपणे कोइ धूल उछाले, सूरज न हुए ऊांखो । शो०॥ १८ ॥ तेहवी समता आणो जेहवी, शत्रुमित्र सम लेखो; सिंहसेनराय कुमर इम बोले, जिम तुमे शिवपुर पेखो । शो० ॥ १९ ॥ (ढाल ६ ठी.) स्वामी तुमारी शिक्षा सांभलीजी, जिसी खमगनी धार; चाली न शकुं इण उपरेजी, कायर अछुं अपार. ॥ २० ॥ भोलो रे भागो हिवमां सुगतिनो रे, सिद्धतणी शी आश; तरवो तरवो रे प्राणी तुजने दोहिलोर, विण जिणचरण निवास । भोलो० ॥ २१ ॥ परने पीमा में बहुली करीजी, कूमो कह्यो रे प्रसंग;

चोरी करीने परिग्रह मिलीउ रे, रम्यो विषय रस रंग. ज्ञो. ॥ २२ ॥ रात दिवस हुं क्रोधे घरुहरूयो, मान रह्यो ज्ञरपूर; माया मोहे लोज्ञ घणो कियो, समता मूकी दूर। ज्ञो०॥२३॥ (ढाल७मी.) स्वामीजी तुमारी शिख्या सांज्ञलीजी, पाली हुं न शकुं एहो जगतराय; कह्यो न तुमारो माथे में धर्यो, माथे धरिया बे ताहरा पाय । जगत०॥ २४ ॥ हीयमे में ताहरा रूमा गुण धर्याजी, कंठे में धर्यो ताहरो नाम । ज० कीरती तुमारीजी जीज्ञे में वरीजी, तुम आगल धरी बे जोमी हाथ. जगत. ॥२५॥ ज्ञालें रज धरी में ताहरा पायनीजी, हिवे करजो सेवकनी सार। ज० बापने बालक शुं बहुलो वीनवेजी, हुं ज्ञमियो हुं बहुल संसार। जगत० ॥ २५ ॥ बोरुनी पीमा किम पीहर सांसहेजी, मुजने बे एक ताहरो आधार; ज० साखीने सुजशाना कुंत्र्र तुं अबेजी, देजो मुजने वहिलो ज्ञवनो पार. लेजोने स्वामी तुमे बो जिहांजी । जगत० ॥ २७ ॥

(कलश.)

जिहां जनम मरण न रोग सोग न डुख न कोइ लगार, आदि बे पण अंत नही बे जिहां

सुख अपार; (श्री)पार्श्वचंद्रसूरीश्वर पाय नमी जएयो श्री विजयदेवसूरें, अनंतनाथ चनदमो तीर्थंकर सेव्यो आणंद पूरें. ॥ २८ ॥

॥ श्रीचतुर्विंसातिजिन-स्तुतिः ॥

(आर्या छंद.) श्रीगौतमगणधारं शुन्नतरुराजीप्रतानजलधारम् ॥ त्रिन्नुवनशोन्नाकारं नौमि सदा सुंदराकारम् ॥ १ ॥ (त्रिन्नंगी छंद.) आदीश्वरदेवं सुरकृतसेवं पुण्यविशालं नूपालं, प्रन्नुमजितं ध्येयं सुरनरगेयं ज्ञानामेयं वंदेहम् ॥ संन्नवन्नगवंतं शिवजयवंतं रमावदंतं शुन्नवंतं, संवरनृपनंदन श्री अन्निनंदन मींफे नित्यं जगदीशम् ॥ २ ॥ (आर्या छंद.) मेघमहीपतिपुत्रं सुमतिं पद्मप्रन्नं स्तुवे शुन्नदम् ॥ श्रीमज्जिनं सुपार्श्वं चंद्राज्नं चंद्र समवक्रम् ॥ ३ ॥ (त्रिन्नंगी छंद.) सुविधिं गुणजलधिं वांबितनिधिदं वंदे सततं लब्धमुदं, शीतलजिनमिज्यं नतसुरवर्य्यं कृतवरचर्य्यं सदैर्य्यं; समतां विभ्राणं विश्वत्राणं रुचिरप्राणं श्रेयांसं, जिनंवासुपूज्यं वासवपूज्यं धृतशिवराज्यं शोन्नार्य्यम् ॥ ४ ॥

(आर्या छंद) विमलं विमलज्ञानं जिनाधिराजं प्रभासुरमनंतम् ॥ धर्मं धर्मनिदानं शांतिजिनं नौमि सद्भक्त्या ॥ ५ ॥ (त्रिभंगी छंद.) जनमुदंधरंतं भुविविचरंतं तमोहरंतं गुणवंतं, बहु सिद्धिं दधतं धृतिंवहंतं भवंतरंतं श्रीमंतम् ॥ कुंथुंजिनराजं प्रवरसमाजं स्तौमिमुदारं श्रीमल्लिं, निर्म्मलतरकीर्तिं निरुपममूर्त्तिं सुव्रतजिनपंक्तिं शुद्धनयम् ॥ ६ ॥ (आर्या छंद.) इक्ष्वाकुवंशमानस-हंसं वंदे नमिं जिनाधीशम् ॥ नेमिं हरीवरवंश्यं ख्यातं पार्श्वजिनं वीरंच ॥ ७ ॥

(स्रग्धरा छंद.) इड्डं श्रीतीर्थराजान् सुरवरमहितान् विश्वविश्वप्रतीतान्, गंगागोक्षीरचंद्र-प्रवरतररुचि-प्रख्यकीर्ति-प्रतातान् ॥ श्रीमत्पूर्णेंदुशिष्य-प्रथित-सुहृदयो भक्तितः स्तौतिपूज्यान्, भव्यांभोजालिसूर्यान् श्रितवर-रतिदान् सर्वदानंदचंद्रः ॥ ८ ॥

श्रीजिनेंद्र- स्तुतिः

(इंद्रवज्रा छंद) देवाः प्रभोयंविधिनात्मशुद्ध्यै, भक्त्यासुमेरोः शिखरेऽभ्यषिंचन् ॥ संस्तूयसे त्वं समया समोद-मुन्मूढ्यते ज्ञानदृशा यथा मे ॥ १ ॥

(उपजाती छंद) ध्यानानुकंपाधृतयः प्रधानो-ह्लासिस्थिरा ज्ञानसुखक्रमंच ॥ सुनाथसंति त्वयि सिद्धिसौधाऽधिरूढकर्मोज्झितविश्वरूच्यः ॥२॥ संसारभीतं जगदीशदीनं मांरक्ष रक्षाक्रमरक्षणीयम् ॥ प्रौढ-प्रसादं कुरु सौम्यदृष्ट्या विलोकय स्वीय-वचश्चदेहि ॥३॥ नतेंद्र ! विज्ञावित दोष ! दत्त दानाददरिद्रा अपि वीत दौःस्थ्याः ॥ त्वयिकृता भूरिघना अनंतज्ञानद्विषासक्रममंक्षुमासान् ॥४॥ द्वित्रैर्भवैर्मुक्तिमनाद्विपाद्या-स्तवस्त्रिपूंर्जोविदधत्रिसंध्यम् ॥ कल्याणकानां जिनपंचपर्वी-माराध्य भव्यः क्षपतेऽष्टकर्म ॥५॥ शाम्येनपश्यन् त्रिजगद्विवेकी, श्रयन् प्रभो पंचसमित्युपैति ॥ अपास्यसप्तभ्यधिसिद्धिमध्ये, सिद्धंजवेनोपभवाद्युपेशम् ॥६॥ मुक्त्वाभवं सौख्यमवाप्तुमंगी, धीमांस्त्यजन् मोहमघस्यहंता ॥ योमुच्यमानस्तमसासिवीयेत् त्वत्सेविता काम्यतु सोत्रनेतः ॥७॥ क्रमेषुवृक्तस्सुघनायमानो, हितः पितेवामृतवद्धुरापः ॥ मम प्रभोभव्यतरंस्वभूत्यी, भावं सदानंदमयः प्रदेयात् ॥८॥

॥ श्रीपंचतीर्थि–स्तुतिः ॥

(गीती) श्रीनाभिसंभवविभुं, भवसंभवकलुषकूट–संहरणम् ॥ अज्ञानध्वांतहत्यै, पुरतस्तमसो-
कंमंम्लं वंदे ॥ १ ॥ (छंद भुजंगी.) जगज्जृंभ-चंचच्चिदानंदवासं, निराधार-निर्लेप-रूपावभासम् ॥
विनिक्षेप-निक्षेप-दुर्नयरिक्तं, युगादीश्वरं मूर्द्धलोकाभिषिक्तम् ॥ २ ॥ (आर्या) श्रीजितशत्रुभवमव,
मवनंत्रैलोक्यजंतुराशीनाम् ॥ अभवनमध्याशानां भवोद्भवानां सदा सेवे ॥ ३ ॥ (भुजंगी.)
श्रुतीनामगम्यं स्वतो भिन्नजानां, सुगम्यं स्वयं संविदां नीरजानाम् ॥ मनःकायवाचां निगूढं रहस्यं,
स्वरूपाजितं सिद्धिभाजं सदास्यम् ॥ ४ ॥ (आर्या) श्रीशांते स्वर्णकांते, मद्दिष्टमंदारमूलमङ्तरो ॥
मामुद्धर दुःखाब्धेः सत्त्वाधिकसौख्यसागरंधेहि ॥ ५ ॥ (भुजंगी) जनुर्यस्य लोकोपकारैक हेतु-
र्महातंककक्षक्षये धूमकेतुः ॥ अचिंत्य-प्रभावोद्धरं यस्य नाम, तुलोत्तीर्णधाम्ने तदस्मै नमामः ॥ ६ ॥
(आर्या) यन्नामसिद्धमंत्राः कृतसंकेताश्चसन्निधिंयांति ॥ नागेंद्रमुखादेवा स्तमाश्वसेनिंजिनंस्तुमहे
॥ ७ ॥ (भुजंगी) अहश्यामवश्यामशस्यामरस्या-मपारामहाराम्चारामभाराम् ॥ कलांकांचिदस्त्ये-

करूपां दधानं, निरुल्लेखसद्ब्रह्मणः संविधानम् ॥ ८ ॥ (आर्या) श्रीवीरतीर्थंकृत्तव, दुर्नयमार्गेषु शुद्धपथबुध्या ॥ विभ्रांतैः परसमयै-रबाधितं शासनं जयति ॥ ए ॥ (भुजंगी) निरुद्योग निष्कामिनी राग भाव-प्रसिद्धं समृद्धं प्रसाध्यस्वभावम् ॥ महानंदसौधे सदायः शमास्ते, निरीशाय कस्मैचिद-स्मैनमस्ते ॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडित) इत्थंश्रीजिनपंचकस्तुतिमिषाद्भक्तिर्मयाविष्कृता, सद्दृष्टेः श्रुतिबोधिदः सुविशदो हेतुः सदा दैवतम् ॥ संसारभ्रमभंजने गदमलंकारस्वचित्ते प्रभुः स्वात्मारा मविघूदयाय सततंभूयादियं भाविता ॥ ११ ॥ इतिश्री पंचतीर्थी स्तुतिः ॥

श्री वीशविहरमानजिन नमस्कार.

(ॐ) समरी जिनराय धरी बहु भाय लिनं गुणगाय सदा सुखकारी, विहरमाणवीश लोकत्रय ईश मुदा जगदीश नमुं चितधारी; क्षेत्र विदेह सदा सुखगेह मनोरथरेह भजी शिवसारी, मुनिदशरत्थ पाइ जिन सत्थ सारि बहुअत्थ भजे इकतारी ॥ १ ॥ सिमंधरदेव भजुं नित मेव करुं चित सेव ध्यान करितोरे, जुगमंधरस्वाम अनंतगुणग्राम टारिसब काम भवभ्रम गोरे; जपुं जिन बाहु

लिउं ज्ञव लाहु दूरिकृत दाहु सुधावच्च जोरे, सुबाहु अरिहंत गिणु नितमंत करीमन खंत घणुं मनमोरे ॥ २ ॥ जंबूदीव च्चारि नमे नरनारी ईतज्ञववारि रंग रसरत्तो, धातकीय खंम ज्ञमंग अंग मंमि अठजिन तंमि सबे जग ज्ञत्तो; स्वामि संजात स्वयंप्रभु गात सोवन सम धात महागुन जुत्तो, रिषज्ञानन देव अनंतवारिदेव सूरप्रज्ञ टेव नमुं मणिमत्तो ॥ ३ ॥ विशाल जिननाम वज्रधर साम हुए त्रिसराम ज्ञविकजग केरो. पुष्करदीवअढ गुनमनि सिद्ध चंद्रबाहुदिद्ध श्रेयगुण फेरो, भुजंग जिनराय ईशर सुखदाय नेमि प्रभुपाय रहुं गहि ढेरो, संयम तप काय सदा मन ज्ञाय वीरसेन राय हरे मनमेरो ॥४॥ स्वामि महाज्ञद करे नित ज्ञद सोम्यगुनचंद्र ज्ञजुं चित्त लाई, देवयशाईश सुरानरधीश नामि निज शीश लिउं गुन गाई; जिन अंनतवीर्य मेरु जिम धीर्य अंनत गुण वीर्य टारि कम्मदळ धाई, दशरथ धरि प्रेम अठजिन एम जप्यां जग खेम हुशे तुम्ह ज्ञाई ॥ ५ ॥ इम वीश अरिहंत सोवन तनकांत विदेहपंचसंत जिनेसर राया, त्रासी लख पुव्व गृहवास सव तजी मन गव्व लिये दिखज्ञाया; पूरव इक लाख धरे जिनज्ञाख सिद्धांतकी साख पोषे तप काया, अतिशे

चौत्रिश वाणी पणत्रिश गुणे जगदीश धरो मन भाया ॥ ६ ॥ चौविह संघगण करे सुवखाण योजन लगि वाण महासुख सासे, कुंथुं अर जम्म विचे जिन पम्म मुनिसुव्रत नम्मि मधे दीख जासें; चोसठ मिली इंद नमे नरवृंद दिये सुखकंद मणुन्नववासें, नदेचंद गुरुराय नमी तसु पाय वीश जिनराय दशरथ गुन भासे. ॥ ७ ॥

श्रीजिन नाम रक्षा स्तोत्रं प्रारंभ.

सर्वातिशय संपूर्णान् ध्यात्वा सर्वजिनाधिपान् ॥ पंच वर्णान् पंचरूपविषयद्रुमकुंजरान् ॥१॥ चतुर्गात्रांश्चतुर्वक्त्रान् चतुर्विंशतिसंमितान् जैनीं सर्वांगेषु रक्षां कुर्वे दुःखौघघातिनीं ॥ २ ॥ शिरो मे वृषभः पातु भालं श्री अजितप्रभुः पातां मे श्री जिनौ नेत्रे संभवश्चाभिनंदनः ॥ ३ ॥ सुमतिः पद्मप्रभश्च श्रवणौ ममरक्षताम् ॥ सुपार्श्वो रक्षतु घ्राणं मुखं चंद्रप्रभप्रभुः ॥ ४ ॥ रसनां सुविधिः पातु कंठं श्री शीतलो जिनः ॥ स्कंधं श्रेयांसः श्रीवासुपूज्यश्च विमलो भुजौ ॥ ५ ॥ अनंत श्री धर्मनाथौ पातां मे करपल्लवौ ॥ शांति र्मेहृदयं रक्षान्मध्यं नाभि कुंथ्वरौ ॥ ६ ॥ मल्लिः कटीं

सक्थिनी च रक्षतान्मुनिसुव्रतः ॥ नमिर्जानुद्वयं पायान्नेमिर्जंघाद्वयं पुनः ॥ ७ ॥ श्रीपार्श्वो वर्द्ध-
मानश्च रक्षतान्मे पदद्वयम् ॥ चतुर्विंशतिरूपो ऽव्यादर्हन्मे सकलं वपुः ॥ ८ ॥ एतां जिनबलोपेतां
रक्षां यः सुकृती पठेत् सचिरायुः सुखी पुत्री निर्व्याधिर्विजयी भवेत् ॥ ९ ॥ पातालभूतलव्योम-
चारिण श्छद्मकारिणः ॥ न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं जिननामभिः ॥ १० ॥ जिनेति जिन भद्रेति
जिनचंद्रेति संस्मरन् ॥ नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति ॥ ११ ॥ जगज्जैत्रेण मंत्रेण
जिननाम्नैव रक्षितम् ॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १२ ॥ वज्रपंजरनामेदं यो
जैनकवचं पठेत् ॥ अव्याहतांगः सर्वत्र लभते जयमंगलम् ॥ १३ ॥ ललाटे दक्षिणस्कंधे वाम
स्कंधे करेऽपिच ॥ वामकक्षा वामकट्या जानौ पादतलेपिच ॥ १४ ॥ नाभौ गुह्ये दक्षिणांह्री तले
दक्षिणजानुके ॥ कटीकक्षा हस्ततले स्तनेषु दक्षिणेपिच ॥ १५ ॥ वामस्तने चेतिमंत्र वर्णान्
सप्तदश स्मरेत् ॥ ॐ ह्रीँ ह्रीँ प्रमुखाँ स्तस्य स्युर्मनीषित सिद्धयेः ॥ १६ ॥ यथैनां दृष्टवान् स्वप्ने
जैनरक्षामिह प्रभुः ॥ जिनेंद्राख्य गुरुः प्रातः प्रबुद्धस्तां तथा लिखत् ॥ १७ ॥

॥ श्री ऋषभादिजिन स्तुतिः ॥

(स्रग्धरा छंद.) श्रीनाभेयःप्रदीपःशुचि रुचिर रुचिःसर्वदा सद्दशाढ्यः सस्नेहो ध्वान्तहर्ता जन जनित सुखः कामितार्थ प्रदाता ॥ पूज्यःक्ष्मापालमुख्यैरिह सकलजनैर्मंगलानां निवासः सत्पात्राधारभूतस्त्रिभुवन भुवने दीप्यमानः श्रियेस्तात् ॥ १ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्तम्) अश्रांतं विधृतानि पंच[1] नियतं त्यक्तानि पंचौजसा धैर्यात्पंच[3] जितानि पंचभुवने यैर्भूषया मासिरे ॥ अष्टानां रिपवोष्टभिर्विरहिता भान्तोष्टभिश्चाष्टभि र्युक्तास्तेप्यजितादिका जिनवराः कुर्वन्तु सौख्यं सताम् ॥ २ ॥ सर्वाशावदनं मरीचिनिचयै–रुद्योतयन् संततं सद्वृत्तः सुतरां तमोपहरणे दक्षःसतां सम्मतः ॥ दोषोच्छेदकरः समस्तजनता नेत्राब्जसंजीवनं श्रीवीरो दिवसेश्वरो विजयतां चित्रं न चंद्रःक्वचित् ॥ ३ ॥ (स्रग्धरा वृत्तम्) पाथोदः पंकहेतुर्निधिरपि पयसां सर्वतःक्षारखानि स्तिग्मांशुश्चंद्ररोची रजनिपरिवृढो जाड्यपात्रं नितांतम् ॥ देवाद्रिः कूटगेहं सुरतरुनिकरः स्थावर

---

१ व्रतानि, २ प्रमादानि, ३ इन्द्रियाणि, ४ ज्ञानानि, ५ कर्मणाम्, ६ मदस्थानैः, ७ प्रातिहार्यैः, ८ मंगलैः पूजाभेदैर्वा.

त्वेन स्तुतः स्वामी श्री गौतमस्तन्निखिल गुणनिधिः कीर्त्यते केन तुल्यः ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम् ॥

तीर्थेश्वरं जगन्नाथमर्हंतं बोधिदं प्रभुम् ॥ सत्प्राप्तपरमानंदं योगीशं परमेष्ठिनम् ॥ १ ॥ सारैरमणिरत्नौघकृतप्राकारमध्यगम् ॥ जनोल्हासक–पीठस्थं द्विपक्ष–वरचासरम् ॥ २ ॥ विचित्र रचनो पेतातपत्त्रित्रय भूपितम् ॥ अन्यशासन वादीन्द्रैर्वंदितांह्रीसरोरुहम् ॥ ३ ॥ भव्य मानवगीर्वाण पद्माल्हादन भास्करम् ॥ प्राणि जन्माद्य तापौघ निवारकजलप्रदम् ॥ ४ ॥ त्रैलोक्य ध्येयमह्यंक्रमष्टकर्म्मारिवारकम् ॥ निर्विघ्नमङ्दातारं पार्श्वयक्ष प्रसेवितम् ॥ ५ ॥ द्विपसंगरना-गारि वन्हिवारि भयापहम् ॥ गदनाग–सपत्नानामुपद्रव विघातकम् ॥ ६ ॥ सर्व्वज्ञं सर्व्वगं सार्व्वं वामेयं विश्वपंविभुम् पद्मानागेनसंसेव्यं वारिदानां विभाधरम् ॥ ७ ॥ रमारामादयो रम्या यस्माद-सुवतामहम् ॥ वंदे भवंतितं पार्श्वमाश्वसेनिं मदस्विनम् ॥ ८ ॥ (आर्या वृतम्) इत्यनुजीव्ये-नमया दभ्राद्भूत सिद्धिकारको ज्यायान् शिववृध्यैपार्श्वजिनो भक्तिमता संस्तुतस्तोषात् ॥ ९ ॥

श्री आदिनाथजीनुं स्तवन.

(झांझरिआ मुनिवर धन धन तुम अणगार—एदेशी.)

शत्रुंजयमंडण आदिजिन, वीनतडी अवधार; मुज मन तिम वलगी रह्योजी, जिम न शकुं उतार, मनमोहन जिनवर छे साचो तुम नाम. मन समवडि काया मिलेजी, तो नहि छंडुं ठाम; नित नित उठी प्रहसमेजी, प्रभु तुम करुं प्रणाम. मन. ॥ २ ॥ जे प्रभु मुजने तें कह्योजी, ते तो में नवि थाय; वैरी-कर्म जिहां तिहांजी, विकट ते केडे धाय. मन. ॥ ३ ॥ इणगिरि जे उत्तम चड्याजी, ते न रह्या संसार; जे नीचा नहि उतर्याजी, ते पहोता भवपार. मन. ॥ ४ ॥ जाणुं उत्तम गति लहुंजी, ममता नहुं मूकाय; नें छंडी गुल पण गव्योजी, समरथ विण न लिवाय. मन. ॥ ५ ॥ ते समरथ पण मुज नहीजी, रे मन हजी तुं विमास; वामन ते फल किम लहेजी, जे ऊंचा आकाश. मन. ॥ ६ ॥ रे मन तुज आव्यो अछेजी, मांकडनो वैराग; ए तो थिर तोहिज रहेजी, जे माथे हुए भाग. मन. ॥ ७ ॥ ए प्रभाव प्रभुनो सहीजी, जेतुं खिण थिरथाय; सोनैये (सुवर्णटंक) कोडी

चमेजी, धर देखे तिणि जाय. मन. ॥ ८ ॥ सयल संयोग विना मिळयेजी, काज न चमे प्रमाण; एक चक्रें रथ किम वहेजी, निश्चे इम तुं जाण. मन. ॥ ए ॥ अमतुम बे साथे मिलीजी, पामी अवसर नाव; करिशुं प्रनुसेवा वळीजी, हिवमां मुऊशुं आव. मन. ॥ १० ॥ घणुं घणीपरे इम कह्युंजी, तोय न मूके पाउ; उर्लन पाम्या प्रभुतणाजी, जे जाए ते जाउ. मन. ॥ ११ ॥ काया आवी मुज्ज-शुंजी, चित्त रह्युं तुम पास; ते प्रनु थिर करी राखजोजी, तुमचे चरणे निवास. मन. ॥ १२ ॥ मनअलि तुम पयपंकजेजी, रमण करुं निशदीश; परमानंदी परिमलेजी, पूजुं तास जगीश. मन. ॥ १३ ॥ शत्रुंजयमंमन तुम्हशुंजी, में मांमी अधुआर; चित्त तिहां काया इहांजी, मति मूकेजो विसार. मन. ॥ १४ ॥ दूर बतां प्रभु ढूकमाजी, कीधा एणे उपाय; ए मन तुम मुज बिचे करेजी, गति आगति खिणमांय. मन. ॥ १५ ॥ मनने गति बे जेहवीजी, तेहवी तनने थाय; तो प्रभु दंसण बाहरीजी, वेळा ओमी जाय. मन. ॥ १६ ॥ स्वामी अहनिशि उलमेजी, चित्त चपल पण वारी; मुज पण ए फल संपजेजी, अनुमतिने आधारि. मन. ॥ १७ ॥ आलोची कायाशुं सहीजी, हुं वेहलो

आवीश; पार्श्वचंद्रसूरी विनवेजी, वंछित फल पामीश. मन. ॥ १८ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन. ॥

(देशी झांझरीआमुनिनी.)

श्री मुनिसुव्रत वीनवुंजी, त्रिभुवनतिलक समान; सुरतरु गो चिंतामणि अधिको, गुणमणि रयणनिधान, जगतगुरु तुमसम अवर न देव, जगनायक जगतारक मिलियो, अहनिशि करशुं सेव. जगत. ॥ १ ॥ प्राणत देवलोकथी चविया, वीशसागर जिहां आयु; राजगृहि नयरें अतिसुंदर, सुमित्र नामे तिहां राय. ज. ॥ २ ॥ पद्मारराणी रंभासमाणी, तासकुखे अवतार; श्रावणशुदी पूनम दिन पाम्यो, जगजीवन आधार. ज. ॥ ३ ॥ श्रवण नक्षत्रे चंद्रने योगें, जतपति अवसर होय; जनम जेठ वदि आठम दिवसें, पाम्यो रिख वली सोय. ज. ॥ ४ ॥ मकरराशि कुर्मलंछन प्रभु, शामल वर्ण शरीर; धनुष वीश वीशमो जिनेश्वर, सायर जिम गंभीर. ज. ॥ ५ ॥ (ढाल राग भैरव.) प्रभुगर्भथकी दिनरात, मुनिनीपरे सुव्रत मात; तिणे मुनिसुव्रत विख्यात. ॥ ६ ॥ ए

नाम सजन मांही दीधो, सुरनरवरि अंगीकार कीधो; निजजनम तणो फल लीधो. ॥ ७ ॥ प्रभु दिन दिन क्रमे क्रमे वाधे, रायलब्धिन्नोग समाधे; लूखे पारिणामें साधे. ॥ ८ ॥ राजरिद्धि रमणी ज्रंमार, ए जाणी सहुए असार; ठेमी ल्ये संयमन्नार. ॥ ए ॥ उपन्नो तिहां मणनाण, राजगृह दिक्षाठाण; तप छठ कर्यो परिमाण ॥ १० ॥ फागण शूदि बारसे जाणो, हिव पारणुं प्रथम वियाणो; ब्रह्मदत्त गृहि सुवखाणो ॥ ११ ॥ प्रन्नु डुःकर संयम पाली, तप सबल करी कर्म टाली; ज्ञान केवल अति अजुआली ॥ १२ ॥ फागण वदी बारसे जाणी, केवल महिमा ति वखाणी; तिहां करे विबुध तियनाणी ॥ १३ ॥ चंपक तरुतले छठ कीधो, उपदेश अमृतसम दीधो; न्नवियणजण कारिज सीधो ॥ १४ ॥ अढार थया गणधार, सहसत्रीश हुवा मुनि सार; तप-संयम-शीलन्नंमार ॥ १५ ॥

(ढाल राग वसंत.) पचास सहस साहुणीये जास, परिवहिये संयमनो निवास; मुनिसुव्रत स्वामी नमुं न्नाय, पाय प्रणमे नरपति अमरराय ॥ १६ ॥ सहस सतर एक लख अधिक जाणी, श्रावकव्रत बार सहित वखाणी ॥ मु० ॥ १७ ॥ त्रिण लाख अधिक सहस चउतीश, श्राविय

गुणगावें निशिदीश ॥ मु० ॥ १८ ॥ वरुणान्निहाण यक्ष करे सेव, नरदत्ता नामि तास देवि ॥ मु० ॥ १९ ॥ आयु पाली वर्ष सहसत्रीश, सम्मतशिखरि आव्या जगीश ॥ मु० ॥ २० ॥ संथारो करी प्रभु सिद्ध पत्त, जेठ वदि नवमी दिनि नमुं नित्त ॥ मु० ॥ २१ ॥

(कलश) इम वीशम जिणवर भवियण सुखकर जंबूनयरिॐ ध्याइये ए, श्रीपार्श्वचंद्रसूरिवर शिष्य समरचंद्र एकवीश ठाणे गाइये ए; सोलसय नवुत्तर वरषें पोष वदि आठम दिनि आराधिये ए, प्रभुपय सेवा फल वंछित लहिये अनुक्रमि शिवसुख साधिये ए ॥ २२ ॥

॥ श्री उपदेशरहस्य सझाय ॥

" गुरु आरे गुण तुम तणा " ए देशी.

विनय करीने गुरुगम सांभली, आगम अरथ विचारुं रे ॥ विणु परमारथ जाण्या पाखे, किम पामीस भवपारु रे ॥ १ ॥ बापडला जीवडला एह, मरम मन राखे रे, विधि उपदेश जे हिंसा जाणे, तेह प्रत्यें तुं भाखे रे ॥ बापडला ॥ ए आंकणी ॥ धर्मकथा उववाइ

उवंगे, एह यथास्थित वाणी रे ॥ प्रथम अंगे अध्ययन चोथे, जिनउपदेश ते जाणी रे ॥ बापमला० ॥ २ ॥ साधु गृही अधिकारे जिणवर, सहुए जीव रखावे रे ॥ तिणहीज वचने थूल रखावी, सूखिम केम हणावे रे ॥ बापमला० ॥ ३ ॥ अलिय अदत्त अबंभ परिग्रह, जिन उपदेशे म जोइ रे ॥ सूखिम बादर मांहोमांहे, श्रुत विपरीत न होइ रे ॥ बापमला० ॥ ४ ॥ जे गीतारथ नाम कहावे, आदि ए नदी उतारु रे ॥ सावद्य कारणे आम्हो मंके, ते कहीये अविचारु रे ॥बापमला० ॥ ५ ॥ आचारांगे दशाश्रुतखंधे, साधुतणे अधिकारे रे ॥ एक जले एक थले पाउ करीने, जयणा जले उतारे रे ॥ बापमला० ॥ ६ ॥ जे जले पद ते लोकाचारे, जे थले ते उपदेशे रे ॥ इण विणु मोहत मोहत मोडे, हींमे नदीय प्रवेशे रे ॥ बापमला० ॥ ७ ॥ केवली उन्नमथ जल उतरतां, इरियावही संपराई रे ॥ अनुक्रमे बेउने किरिया लागे, एह रहस्य ल्यो न्याई रे ॥ बापमला० ॥८॥ अकषायीने इरियावहीया, सकषायी संपराई रे ॥ एक उपदेशे विणु उपदेशे, बीजो आगमे थाई रे ॥ बापमला० ॥ ए ॥ सरखी जयणा करतो रागी, निरागी पण चाले रे ॥ एक उत्सूत्रे बीजो

सूत्रे, अंतर नरिये ठाले रे ॥ बापरूला० ॥ १० ॥ राग दोष परहरवे जयणा, निश्चय नय व्यवहारे रे ॥ केवल नाणी एह ज नाखे, अवर यथास्थित वारे रे ॥ बापरूला० ॥ ११ ॥ पंचम अंगे सप्तम दशमे, अढारमे शत बोले रे ॥ एह नाव जे निरता जाणे, तसु मति किमे न रोले रे ॥ बापरूला० ॥ १२ ॥ सावद्य लव जे इरियावहिया, ते निश्चय सद्दहीये रे ॥ कहत विचाले संख न लागे, व्यवहारे केम कहीये रे ॥ बापरूला० ॥ १३ ॥ पंचय चारित्र चार यथास्थित, पंचम जिन विधि वादे रे ॥ एह सद्दहणा डुल्लह लहीने, नोला म पम प्रमादे रे ॥ बापरूला० ॥ १४ ॥ एह रहस्य जग वीरलो कोइ, जिन नाखित चित्त राखे रे ॥ श्री साहुरयण गुरु चरण प्रसादे, श्री पार्श्वचंद्र-सूरि दाखे रे ॥ बापरूला० ॥ १५ ॥

॥ श्री मेघकुमार सज्झाय ॥ समकितहार गनारे पेसताजी ए देशी. ॥

वीरजिणेशर वंदु विगतशुंजी, प्रणमी गोयम पायरे; थविश हरखे हुं ऋषिराजियोजी, मेघकुमर नले नायरे ॥ १ ॥ सहज सोनागी साधु शिरोमणीजी, जेहनुं चरित्र विस्ताररे; स्वामी

सुधर्म जंबूप्रते कहेजी, छठा अंग मझाररे ॥ सहज० ॥ २ ॥ नयरी राजगृही अति रलियामणीजी, श्रेणिक तिहां नृप साररे; धारणीदेवी तसु घरि सुंदरुजी, मंत्री अन्नयकुमाररे ॥ सहज० ॥ ३ ॥ धारणीदेवी गज सुपन लहेजी, पूछ्या पंम्तिराजरे; पुत्र होशे नृप तुम घर राजियोजी, सिध्यां सघलां काजरे ॥ सहज० ॥ ४ ॥ धारणीने मन मोहलो ऊपनोजी, त्रीजा मास मझाररे; पंचवरण जो जलधर ऊनवेजी, वरसे मोटी धाररे ॥ सहज० ॥ ५ ॥ देव आराधी मोहलो पूरवेजी, मंत्री अन्नयकुमाररे; नवमे मासे पुत्ररतन जएयोजी, नामे मेघकुमाररे ॥ सहज० ॥ ६ ॥ कला बहुत्तर तेणे न्नणीजी, परणी रमणी आठरे; देव दोगंडुकनी पेरे न्नोगवेजी, विलसे लक्ष्मीगाठरे॥ सहज० ॥ ७ ॥ तेणे काले वीर समोसर्याजी, वंदे मेघकुमाररे; समजावीने माता पिताजी, लीधो संयम न्नाररे ॥ सहज० ॥ ८ ॥ न्नार विन्नागे सूतो साथरेजी, बहुला साधु संचाररे; पग संघटे साधु तणे करीजी, नावी निंद लगाररे ॥ सहज० ॥ ९ ॥ मनमां चिंते ए दीक्षा दोहिलीजी, थाय प्रन्नात जिवाररे; वीरजिणेसरने वंदी करीजी, मांमुं घरव्यापाररे ॥ सहज० ॥ १० ॥

(ढाल बीजी) रवि उगमते आवियो रे, वीरजिणेशर पास; वीर बोलावे श्रीमुखें रे, आणी मन उल्लास रे मेहा, सांभल माहरी वाण, तुं तो गुणमणि केरी खाण, तुं तो शुभ मति हियडे आण, जिनवचने भ्रांति म आण रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १ ॥ इहांथकी भव पाछले रे, त्रीजे गिरिवैताढय; छ दंत मेरुप्रभ हाथियो रे, सहसगमे करी आढय रे मेहा ॥ सांभल० ॥ २ ॥ ग्रिष्म-काल दावानले रे, दाधो ते गजराज; पहोतो एक सर एकलो रे, पाणी पीवा काज रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ३ ॥ पाणी थोडो कचरो घणो रे, खूतो ते अंतराल; पूरव वैरी हाथियो रे, पीडे ते ततकाल रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ४ ॥ सात दिवस वेदन सही रे, वीसासो वरसांज; काल करी विंध्याचले रे, पुनरपि थयो गजराज रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ५ ॥ बे दंत मेरुप्रभ रातडोजी, सात सयां परिवार; वन दव देखी ऊपनो रे, जातिसमरण सार रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ६ ॥ वन दव ऊगरवा करे रे; हाथी अति उतकंठ; जोयण प्रमाणे मंडलो रे, गंगाने उपकंठ रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ७ ॥ उन्हाले दव परजले रे, खोडया सघला प्राण; सिंह गजादिक जीवडे रे, मंडल कीधो ठाण रे मेहा ॥

सांभल० ॥ ८ ॥ ससलो एक भमतो रहेवारे, पामे नही जरी लाग; तें पण कान खुजालवारे, उपाड्यो एक पाग रे मेहा ॥ सांभल० ॥ ९ ॥ गज पग हेठें ससलो रह्यो रे, लाग्यो अति सुकमाल; जीवदया मन लेखवी रे, राख्यो पग अंतराल रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १० ॥ रात अढी वन दव दह्यो रे, ससलो पहोतो गाम; हाथी पण तूटी पड्यो रे, मूल शुभ परिणाम रे मेहा ॥ सांभल० ११ ॥ जीव दया मन लेखवी रे, श्रेणिक घरि अवतार; गज भवे जे दुख तें सह्यो रे, तुं कां नहि संभार रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १२ ॥ वचन सुणी जगगुरुतणारे, चेत्यो मेघकुमार; जातिसमरण ते लहे रे, बिहु नयणां झरे सार रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १३ ॥ पुनरपि दिक्षा आदरीरे, जप तप कीधा अपार; विपुलगिरिकरे मेघजी रे, संथारो मनोहार रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १४ ॥ काल करी सुरपति थयो रे, विजय विमान मझार; एकण भवने अंतरे रे, लहेशे भवनो पार रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १५ ॥ इम शिष्य ठामे आणीउरे, सद्गुरुए ततकाल; रायचंद्रसूरी जयोरे, पभणे मुनि मेघराज रे मेहा ॥ सांभल० ॥ १६ ॥

॥ श्री वीशस्थानकतपनी सज्झाय. ॥

(वीर सुणो मोरी वीनती. ए देशी.)

वीश थानक तप सेविये, भव्य प्राणी रे आणी मन भाव; श्री अरिहंत इम उपदिशे, ए तपना रे मोटा परभाव ॥ वीश० ॥ १ ॥ नमो अरिहंताणं गुणो, पद पहिले रे मन हरख अपार; ऊयत भावत भेदशुं, जिन पूजा रे करे आठ प्रकार ॥ वीश० ॥ २ ॥ नमो सिद्धाणं एहवो, शुद्ध चित्तें रे गुणो बीजे ठाण; आराधो सिद्धचक्रनुं, जिम थाए रे निज जनम प्रमाण ॥ वीश० ॥ ३ ॥ पवयणस्स नमो गुणो, त्रीजे ठाणे रे करो नाण अभ्यास; भगति करो सिद्धांतनी, जिम पावो रे तुमे लीलविलास ॥ वीश० ॥ ४ ॥ आयरियाणं नमो गुणो, चोथे बोले रे पूजो गुरुजीना पाय; नमो थेराणं पंचमे, गुणो सेवो रे धरमी मुनिराय ॥ वीश० ॥ ५ ॥ पंडित गुरुने पूजिये, छठे गुणिये रे नमो उवज्झाय; नमो सवसाहूणं सातमें, वलि सेवो रे तपसी सुखदाय ॥ वीश० ॥ ६ ॥ नमो नाणीणं आठमे, गुणिये भणिये रे नवा स्तवन सज्झाय; नमो दंसणधारी गुणो, पाले नवमे रे

समकित सुखदाय ॥ वीश० ॥ ७ ॥ विनयसंपन्न नमो इसो, पद दशमे रे गुणिये शुभ ध्यान; विनय करो गुणवंतनो, इण रीते हो लहिये शिवस्थान ॥ वीश० ॥ ८ ॥ इग्यारम थानक गुणो, पडिक्कमणां रे बे सांझ सवार; चारित्तस्स नमो इसो, पद ध्यावो रे शिवसुखदातार ॥वीश०॥ ९॥ गुणो बंभयारीणं नमो, आठ पहोरी रे करो पोषह लील; बारमें ठाणे पालिये, शुभ भावे रे निरमल गुण शील ॥ वीश० ॥ १० ॥ नमो क्रियाधारी भणी, मन गुणिये रे नित तेरमें ठाण; सामायिक पण लीजिये, दोष टालो रे बत्तिश प्रमाण ॥ वीश० ॥ ११ ॥ तप अधिको करो चउदमे, नमो तपसी रे गुणिये मन रंग; तपसी सेवा कीजिये, वलि रहिये रे तपसीने संग ॥ वीश० ॥ १२ ॥

(ढाल बीजी—देशी भंभणपुरनी.) अतिथिदान बहु भावे दीजे, नमो गोयमाइणं गुणीजे; पनरमी किरिया एह; प्रतिमाने भूषण पहिरावो, नमो जिणाणं ए पद ध्यावो, सोलमे धरी सनेह ॥ १ ॥ आठ पहोरी पोसह विधि करिये, ध्यान नमो चारित्तस्स धरिये, ए विधि सतरम ठाण; नमो नाण भणरंगे भणिये, नमो नाण ए गुणणो गुणिये, अठारमे परिमाण ॥ २ ॥ नमो सुअस्स

गुणो मन चंगें, पुस्तक पूज करो बहु नंगें, ए नगणीसमे रात; नमो तीत्थ ए ध्यान धरावो, संघ चतुर्विध नक्ति करावो, वीशमे शास्त्र विदीत ॥ ३ ॥

(ढाल त्रीजी.) दोय दोय सहस्त्र प्रत्येके करेरे, गुणिये गुणणो सुविशेषें; चारसो नपवास पूरीजे रे, समकित गुण शुद्ध धरीजे ॥ १ ॥ ए वीश स्थानक विधि जाणी रे, सेवो मन नलट आणी; विधिशुं जो ए तप वहिये रे, तो तीर्थंकर पद लहिये ॥ २ ॥ नावे स्तव चारित्र धारी रे, द्रव्य नावे विधि सागारी; सेवे जे नर ने नारी रे, ते मोक्षतणां अधिकारी ॥ ३ ॥

(कलश.) इम वीशथानक तपतणी विधि शास्त्रने अनुसार ए, जे वहे नर ने नारी विधिशुं धन्य तसु अवतार ए; श्री रतनपुरवर संघ सुखकर जगतनाथ जिणेसरो, तसु चरणपंकज नमे नावे वखतचंद मुनिवरो ॥ १ ॥ इति श्रीपद्मचन्द्रसूरि संतानीयोपाध्यायेन कृतम् ॥

॥ श्री अवंतिसुकमालनां चौढालियां. ॥

सोना रुपाके शोगठे सइयां खेलत बाजी—ए देशी.

गोयम गणधर पाय नमी सरसती संभारी, श्री अवंतिसुकुमालनो कहुं चरित्र विचारी; मालवदेश सोहामणो उज्जेणी नयरी, धण कण कंचण रयण भरी नवि गंजे वैरी ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर अति भला वर पोल पगार, वाव्य सरोवर वन वली सोहे घणा फार; सारथवाही तिहां वसे भद्रा इणि नामें, आर्यसुहस्तीसूरीजी आव्या तिणे ठामे ॥ २ ॥ प्रतिमा जीवितस्वामीनी वंदेवा काजें, समोसर्या वनमांहिअछे पूरण गुण गाजें; नगरमांहि बिहु साधुने गुरु दे आदेश, जोवो उपाश्रय सूझतो यती योग विशेष ॥ ३ ॥ भद्राघरि मुनिवर गया भावें ते वंदे, किण कारण तुमे आविया पूछे आणंदे; लाभ उपाश्रयना घणा बोल्या सिद्धांतें, तिण हेतें गुरु मोकल्या आपो एकांतें ॥ ४ ॥ वाहनशाला मोकली रहेवा देखाडे, सपरिवार गुरु तिहां रहे मन धर्म रमाडे; नलिनीगुल्म विमाननो अध्ययन संभारे, श्री गुरुभाषित तिहां भला ते सयल विचारे. ५ गोखे बेठो भूमि सातमी बत्रीशे नारी, रूप लावण्य कला भरी यौवनवय सारी; सोल शिणगार सजी भला रंभा रतिरूपें, नाटिक गीत रसें रमें जिम अमर सरूपें ॥ ६ ॥ सांभलवा अध्ययन ते कुंवर दे

कान, अमियरसायण जेहवो सांभलिता ज्ञान; प्रासाद हुंती ऊतरी गुरु पासें आवे, अति रूडी परि सांभली मन भावना भावे ॥ ७ ॥ गुरुजी एह विमाननो जिशो कहियो विचार, ते दीठो पूरव भवें भोगव्यो अपार; जातिसमरणने बलें संभारे साचुं, आवी श्रीगुरुने कहे ए वयणडुं जाचुं ॥ ८ ॥ भगवन् हुं भद्रातणो नंदन अवधारो, इणि विमान पूरव भवें थयो अमर विचारो; हिव पुण तिम करुं तेहथी लहुं एह विमान, मुजने चारित्र द्यो तुम्हे सर्व सौख्यनिधान ॥ ए ॥

(ढाल बीजी) प्रभुजी सुखकर समकित दिजे—ए देशी. सुगुरु कहे सांभल रे कुंवर दुःकर चारित्रभार; लोहतणा जव केम चवाये, किम वहिये लोहभार ॥ १० ॥ कुंवरजी कोमल अंग तुमारो, ए व्रत दुःकर अम्हारो (आंकणी.) अगनिझाल किणि परे पीवाय, अगनिमांहि किम चाले ? तुला तुले मेरु कहो किम, फणिमणी किणि परे झाले ? ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥ बांहे रतनागर किम तरिये, खडगधार किम चांपे; सिंहतणे मुखें किम रहिये मंडी, मरण भये जे कांपे ॥ कुंवर० ॥ १२ ॥ भद्रानंदन वलतुं जंपे, साची वाणी

अवंतिसु कमाल नांचोढा लियां ॥८१॥

तुमारी; हुं पिण दुक्कर जाणि चारित्र, पालीश सामाचारी ॥ कुंवर० ॥ १३ ॥ श्रीगुरुजी मुज ऊपरे, सुपरे दया आणो; सिंहतणीपरि आदरी पालुं, एह वचन शुद्ध जाणो ॥ श्री गुरुजी०॥ १४॥ चारित्र आदरि अणसण पालुं, साहस सत्व संभालुं; थोड्ने कालें कारिज साधुं, पापतणा मल टालुं ॥ श्री गुरुजी० ॥ १५ ॥ गुरु कहे मात अंतेउरी अनुमति, लेइ संयम मागो; मोहतणी निद्र मूकीने, ज्ञान विवेके जागो ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥ अनुमति मांगी कोइ न आपे, करे आपणपें लोच; पोते वेष यतीनो आदरी, करी कषाय संकोच ॥ श्री गुरुजी० ॥ १७ ॥ तिणि वेषे गयो गुरु पासे, श्री गुरु व्रत उचरावें; गुरु आदेशे अणसण लेइ, स्मशान थानकें आवे ॥ श्री गुरुजी० ॥ १८ ॥

(ढाल त्रिजी–गुरु गोतम गणधर चरणे शीश लगाउं–ए देशी.) कंथेरीतणे वने काउसग करवा जाय, नवकार जपंतो काउसग तिहांकण ठाय; सुकुमालपणे पगलाथी रुधिर झरंती, नूंपराती तेणे कुंकुवरणा करंतो० (त्रूटक.) तिणे गंधे तिहांथी शियाली, निज बालकशुं आवे, झरू झरू करती चर्मज तोडे, तरू तरू करती रिबिने पामी पाय रगत घणु, रसलोभे पग चावे; चरूचरू करती

मंस; धगधग मेद कटकी, कस बे पग कर्या निर्मंस ॥ १९ ॥ एक पहर गम्यो इम रुअडे धर्मह ध्यानें; जाणे करे निमासण एहवो समता माने, इम बीजे पहोरे जांघमांस आहारें, त्रिपता थाउ प्राणी इम कही तेह न वारे; त्रीजे पहोरे उदर नक्क करतां कर्मतणो क्षय जाणें, चोथे काल करीने पुहता नलिनीगुल्म विमाने; पूज्य पुरुष ए धर्म आराधक इम कही उच्छव मंडे, देवी देव तणो गण तिहांकण नक्तिनाव नवि खंडे ॥ २० ॥ बत्रीशे रमणी गुरुने कहे तिवार, कहो नगवन किहां बे अम्हतणो नरतार, उपयोगें जोई परि सघली संनलावी, गुरु नाषित बोल्युं नहा आगल आवी, (त्रूटक.) आवी माता अने अंतेउरी, कंथेरी वन दीठो; नुइ सींचे तिहां रुदन करंती, कां थयो पुत्र अपूठो. एक वार चारित्र लइने, अम्ह अंगण कां नाव्यो; हिव तुम्ह दरसण कहिंये होशे, इम मनमांहि नाव्यो ॥ २१ ॥ (ढाल चोथी.) वैदरनी वनमां वलवले. ए राग. रमणी कहे सुण नाथजी, अम्ह ऊपर तज्यो मोह; पुण कां मूक्यां मातजी, ते साथे शो डोह ॥ २२ ॥ वली वली कहे रे अंतेउरी, स्वामी सुणो अम वात; इम ऊतावल कां

करी, इम कां दुहव्यां मात ॥ वली० ॥ २३ ॥ सिप्रा पासे कुंवरनें. कीधो अग्निसंस्कार; भद्रा भावे भली चर्मी, भावे अनित्य संसार ॥ वली० ॥ २४ ॥ पुत्रशोक अग्निये करी, दाधी अति अपार; भद्रा टाढक पामवा, वांछे चारित्र भार ॥ वली० ॥ २५ ॥ सात क्षेत्रे वावरी, धण कण कंचन कोडि; एक वधू आधान छे, घरभार ति जोडि ॥ वली० ॥ २६ ॥ अवर अंतेउरशुं तिहां, भद्रा चारित्र लेइ; तप संयम सूधा करी, सुर पदवि पामेइ ॥ वली० ॥ २७ ॥ पुत्र अवंतीसुकुमालनो, थयो कलानिधान; चिता ठामे निज तातने, जोइ भूमि प्रधान ॥ वली० ॥ २८ ॥ एक प्रासाद कराविये, ते छे इण काले; श्री सिद्धसेनदिवाकरे, दीपाव्यो चाले ॥ वली० ॥ २९ ॥ एहवा रिषि गुण गावतां, जाय पातिक दूरि; एक मना आराधिये, कहे श्री विनयदेवसूरि ॥ ३० ॥

॥ बावन यमक गर्भित रहनेमीजीनी सज्झाय. ॥

राग मारुणी. (सांभलजो मुनि संजमरागी—ए देशी.)

पावस ऋतु वरसे घनमाली, भीनी पहेरण फाली रे; चीर भगावतें तन

ऊधालि, रहनेमि मति चाली रे ॥ १ ॥ ममकर ममकर देवर आली, अम्हेअ नही ते वाली रे; सतीअ शिरोमणि राजुल बाली, वचन बोले टंकशाली रे ॥ मम० ॥ २ ॥ दिवस घणा दीक्षा तें पाली; इणि कारणि विटाली रे; सुकुल जात बांधव वनमाली, हीयरू जोय निहाली रे ॥ मम०॥ ३ ॥ मम काया पेखी सुंवाली, भ्रम भूलो दंदाली रे; मलमूत्रे भरी विकराली, तोही न चेते हाली रे ॥ मम० ॥ ४ ॥ एहवी आल करे रे पींझाली, अम्हेअ नही गोवाली रे; वाघ गाय चीतर जिम गाली, बिहे मेघ मराली रे ॥ मम० ॥ ५ ॥ इणे आले जो अरे कपाली! मन्मथ देही बाली रे; इंडं काया कीधी भिड़ाली, रावणे डुरगति भाली रे ॥ मम० ॥ ६ ॥ इण आले उत्तम गति टाली, दे डुरगति कंटाली रे; शोभा सुयश लिये उदाली, अयशतणी परनाली रे ॥ मम०॥ ७ ॥ इण आले वाधे रे भवाली, कांय तें लज्जा राली रे; महीमां कीरती होशे काली, अवर केही देउं गाली रे ॥ मम० ॥ ८ ॥ सुणि मुनि मेरी शीष विशाली, तिज किन फाकममाली रे; कां घाले रज कंचन थाली, चतुर चेतो मनवाली रे ॥ मम० ॥ ९ ॥ शीलें शिवमंदिर पटशाली, जनम

लगे दीवाली रे; वैरी फोज टले अणीआली, सुखसंपति ज्ञणशाली रे ॥ मम० ॥ १० ॥ शीलें ज्ञवसंतती परजाली, मणि कंचन परवाली रे; नेमिनाथ जपुं जपमाली, करे शील रखवाली रे ॥ मम० ॥ ११ ॥ सतीअतणे वचने अजुआली, आलोयण पखाली रे; यतन करी दीक्षा संज्ञाली, शुद्ध लगाइ ताली रे ॥ मम० ॥ १२ ॥ कीरति कविजन करे रसाली, वयण नीका संज्ञाली रे; तप करीय करी काया चोखाली, गुण गावे अमरालीरे ॥ मम० ॥ १३ ॥ ऊमक बावनी नित हितकारी, जे ज्ञणशे नरनारी रे; शील सदा व्रत पालो ज्ञवियण, शीख नीको कहे सारी रे ॥ मम० ॥ १४ ॥

॥ श्रावक बार व्रतनी सज्झाय. ॥

(ज्ञेखरे ऊतारो राजा ज्ञरथरी ए राह.) गोयम गणहर पाय नमुं, सरसति लागुं पायजी; अणुव्रत गुणव्रत शिक्षाव्रतो, ज्ञणिये एह सज्झायजी ॥ १ ॥ श्रीबारहव्रत ज्ञवि पालियें, टालियें तस अतिचारजी; समकित दृढ चित्त धारियें, वारियें ज्ञव-संसारजी ॥ बारह० ॥ २ ॥ थूलग त्रस जीव राखियें, जाणियें आप समानजी; सूक्ष्म जयणा कीजियें, जिनवर आण प्रमाणजी ॥ श्रीबारह० ॥ ३ ॥

थूलग मोसा परिहरो, परिहरो कूमा आलजी; मृषावाद नवि बोलतां, पमियें बहु जंजालजी ॥ श्रीबारह० ॥ ४ ॥ अदत्त परायो न लीजियें, ए उत्तम व्रत सारजी; जीवयकी धन वालहो, लेतां दुःख अपारजी ॥ श्रीबारह० ॥ ५ ॥ चोथुं व्रत उत्तम कह्युं, नरनारी शृंगारजी; स्वदारा संतोषी हुवो, अथवा सर्व प्रकारजी ॥ श्रीबारह० ॥ ६ ॥ पंचमव्रत जिनें नाखियो, इच्छातणो प्रमाणजी; नवविध परिग्रह मर्यादनो, कीजे हियमे नाणजी ॥ श्रीबारह० ॥ ७ ॥ वसीए तिहांथी कीजिये, चिहु दिशिनुं आखेपजी; सगसय कोषज मोकला, अवरतणो संखेपजी ॥ श्रीबारह० ॥ ८ ॥ उपभोगपरिभोग सातमुं, न्हावण पान आभर्णजी; व्यापारतणी संख्या करो, हरीकाय अरु अन्नजी ॥ श्रीबारह० ॥ ९ ॥ अनरथदंम निवारिये, सात व्यसन अरु कोकजी; सती चोर वध देखतां, धर्म गमावे फोकजी ॥ श्रीबारह० ॥ १० ॥ नवियण सामायिक करो, नवमुं व्रत परमाणजी; दोय घमी लाभज कह्यो, लख खांमी दिये दानजी ॥ श्रीबारह० ॥ ११ ॥ देशावगासी कीजिये, दशमुं व्रत ए सारजी, अथवा नियम संभारियें, श्रावकनो आचारजी ॥ श्रीबारह० ॥ १२ ॥ इग्यारम व्रत पोषह करो, दिन विण

रुग्यां सूरजी; सज्झायध्यान भवि कीजिये, तजिये विकथा दूरजी ॥ श्रीबारह० ॥ १३ ॥ समकित दृढ धर्म बांधिये, अग्यारे व्रत परसादजी; कलश रूप बारम व्रत, दीजे दान सुसाधजी ॥ श्रीबारह० ॥ १४ ॥ मुनि सागर इम शीखवे, श्रावक श्राविका सारजी; बारह व्रत ए धारियें, देवलोक अवतारजी ॥ श्रीबारह० ॥ १५ ॥ देवलोक सुख भोगवी, पछे जन्मे महाविदेहजी; संयम लेइ जाय शिवपुरें, एहमां नही संदेहजी ॥ श्रीबारह० ॥ १६ ॥

॥ सती सुभद्रानी सज्झाय ॥

जिन गुरु गौतम पाय नमी, कहीशुं सतीअ चरित्रो; जिन धर्मी चंपापुरे, जिनदत्त शेठ पवित्रो. (त्रुटक) पवित्र बेटी रुपें रंभा, सुभद्रा नामे सती, बुधदास बोधें कपट श्रावक थइ, परणी गुणवती; पोषह सामायिक जैनधर्में, देव गुरु राती रहे; महा मिथ्यातणी नणंद सासू, अहोनिश मत्सरवहे ॥ १ ॥ एहवुं जाणी जोइ कही, बुधदासें निज नारी; मुनि जब आवे व्होरवा, उंदर जिम मंजारी. (त्रुटक) भिड ताके तेम सासू, पुत्रने माता कहे, यतीय साथे वहू विलसे, एम शोभा किम रहे; पुत्र

बोले मात म कहो कनक मल कुण नाख ए, सतीअमांहे ए शिरोमणि दोषी दूषण दाख ए ॥ २ ॥ पारण काजे सती घरें, को मुनि आवे तप गाढे; आहार देतां ऋषि लोचनें, तृण जीभे करी काढे (त्रुटक) काढतां तृण शीश, सिंदूर लागे ऋषि निलाम्ह ए, ते देखी सासु वहूकरणी पुत्रने देखाम्ह ए; व्यभिचारिणी निज नारी जाणी प्रेम पतिनो ऊतरे, सासुए दीध कलंक जाणी सुभद्रा बहु दुख धरे ॥ ३ ॥ देहरासरें काउसग रहे, शासनदेव तिहां आवे; पुत्री खेद कांइ मत करो, इम कहीने बोलावे. (त्रुटक) सुभद्रा कहे मात वेगें जिनशासन शोभा चम्हे, तिम कीजे देवि ततक्षण चंपापोळ चिहु जम्हे; मांहे बाहिर पशु पंखी बहु नरनारी मिली, नगरसेहें सकळ चंपा हुइ आकुळ व्याकुळी ॥ ४ ॥ गयण रही कहे देवता, को सती ऊभी कुवा कांठे; तंतु काचे बांधी चालणी, जळ काढी पोळे छांटे. (त्रुटक) पोले छांटे तोज उघम्हे एहवें उत्सुक थई, घणी नारी बहु खप करि विलखाणी लाजी गई; इम सुणिने ते सुभद्रा सासुने जइ वीनवे, मा तुमारी आज्ञा पासुं पोळ ऊघारुं हवे ॥५॥ मुंह मचकोम्ही इम सासु कहे, हुं तुज चरित्र सवि जाणु; लोक जणाव्यामां छे

किशुं, तुज सत केहुं वखाणुं (त्रुटक) वखाणुं हवे कहे सुन्नडा मात मुज सत जोईयें, इम कही चाली कूप कंठे चंद्रवदनी सोहिये; चालणी जळ काढी तीने पोळ गंटी ऊघमे, कुसुम वरसे जय जयारव करे सहु आदरवमे ॥ ६ ॥ चोथी पोळ ऊघामिये, कर जोमी नूप नाखे; बीजी सतीअ ऊघामशे, इम सुन्नडा दाखे (त्रुटक) सुन्नडा परिवारशुंरे राय राणी परिवरी, घरे आवी कुटुंब बोधी वेहमे संयम वरी; लही सद्गति शील समकित कीरति बाधी अन्निनवी, मुनि मेघराज आणी उल्लट सती पहेली वर्णवी ॥ ७ ॥

॥ श्री सती अंजनासुंदरीनी सज्झाय. ॥

(अन्निनंदन जिन दरिसण तरसियें—ए देशी.) गिरिवैताढये रे प्रह्लादन पुरें, प्रल्हादन तिहां राय; राणी रुमीरे तस पदमावती, पवनंजय सुत थाय ॥ १ ॥ शील सदा फल साजन सेविये, जग जस पसरे रे जेम; जिणीपरें पाळ्युंरे आगे अंजना, शील धरो तन तेम ॥ शील० ॥ २ ॥ अंजनकेते हे अंजनी निजसुता, पवनंजयने रे दीध; शील सुन्नागिणी अंजना सुंदरी, जुगताजुगतुं

रे कीध ॥ शील० ॥ ३ ॥ एक दिन पवनंजय निज मित्रशुं, कन्या जोवारे जाय; देवदत्तकुंवर गुण सांभळि करी, क्रोधे पवन भराय ॥ शील० ॥ ४ ॥ मन पाखे ते कन्या परणिओ, छांडी बार वरीष; रावण साथे हे चाल्यो कटकीये, जननी दीध आशीष ॥ शील० ॥ ५ ॥ घरमां बेठीरे झूरे अंजना, पवने पंखी वियोग; देखी आव्यो रे रागभर्यो निशि, मिलीने बिहुं संयोग ॥ शील० ॥ ॥ ६ ॥ कटके पहोतोरे माता विण कह्ये, पेट सहित ते नार; देखी काढे रे सासु घर थकी, पहुती वनह मझार ॥ शील० ॥ ७ ॥ पाले सतीअरे शील सोहामणुं, हनुमंतसुत तिहां थाय; सूरजकेते रे देखी भाणेजी, निज नगरे लेइ जाय ॥ शील० ॥ ८ ॥ पवनंजय पण जीती आवियो, सती न दीठी रे जाम; करिवा लाग्यो रे आप हत्या घणी, मित्र निवारे रे ताम ॥ शील० ॥ ९ ॥ पवनंजय मित्र जोतो युवतीने, सूरजकेत आवास; पामी तिहांथीरे लेई निजपुरें, आव्यो मन उल्लास ॥ शील० ॥ १० ॥ बहुपरे विलसीरे राज्य सोहामणुं, साधी संयम काज; स्वर्गे पहोतीरे चौथी अंजना, पभणे मुनि मेघराज ॥ शील० ॥ ११ ॥

॥ श्री दशारणभद्रनी सज्झाय. ॥

(भेखरे उतारो राजा भरथरी—ए देशी.)

वीरजिणंद समोसर्या, दशनपुरे मुनिरायरे; सुर नर इंद सेवा करे, हरष धरी मुनिराय रे ॥ १ ॥ दशारणभद्र राजा चिंतवे, आणी मन अभिमानरे; किणेरे न वांद्या तिम हुं वांदशुं, महारो जनम करीश परमाण रे ॥ दशा० ॥ २ ॥ चतुरंग सैन्यशुं परिवर्यो, साथे सवि परिवाररे; त्रिभुवन तृण सम मानतो, वीर वंदिया हर्ष अपार रे ॥ दशा० ॥ ३ ॥ सोहमपति अवधियें करी, जाणियो अति अभिमानरे; इंद एरावण आविया, दीपता मेरु समान रे ॥ दशा० ॥ ४ ॥ पंच सय बार मुख शोभता, मुख मुख आठ आठ दंत रे; दंत दंत आठ आठ वावमी, वाव्यें वाव्यें आठ कमल हुंतरे ॥ दशा० ॥ ५ ॥ कमळ कमळ लाख पंखमी, पत्रें पत्रें नाटक होय रे; पदम पदम विच करणीका, तिहां जिनमंदिर जोय रे ॥ दशा० ॥ ६ ॥ इंद इंद्राणी आठशुं, पूजे जिनबिंब भावरे; चोसठ सहस गज एहवा, आव्या वंदवा जिन सुरराव रे ॥ दशा० ॥ ७ ॥ इंद देखी भूप इम भणे,

मान जीपत्रा कर्यो उपाय रे; सिंह शियाळ न होय सही, लेइ संयम लगारुं पाय रे ॥ दशा० ॥ ॥ ८ ॥ दानेश्री शांति जिणेशरु, माने श्रीदशारणभद्र रे; भोगे श्रीशालिभद्र गुणनीलो, शीले श्रीथूलिभद्र रे ॥ दशा० ॥ ९ ॥ तपबलें करम क्षय करी, पामियो मुक्ति निस्तंद रे, आचार्य (श्री) शिवचंद पाय नमी, विनवे मुनि रामचंद रे ॥ दशा० ॥ १० ॥

॥ श्रीगुरुगुणनी सज्झाय. ॥

" देखो गति दैवनी रे " त्रीश वरष घरमां वस्या रे सुखभरवामानंद—ए देशी.

वीरजिणेश्वर पय प्रणमी रे, गुरु गुण कहिशुं उदार; नामे नवनिधि संपजे रे, पामे भवनो पार ॥ १ ॥ सद्गुरु राजियो रे, श्रीराजचंद्र सूरींद; वडतपगछ जगमंडणो रे, दीपे तेजें दिणंद ॥ सद्गुरु० ॥ २ ॥ जंबूनयरे दीपतो रे, जावडशाह सुतन्न; मात कमळादे उरे धर्यो रे, जन्म्यो पुरुष रतन्न ॥ सद्० ॥ ३ ॥ वैरागें संयम लियो रे, श्रीसमरचंद्रसूरि पास; शास्त्र घणा पूज्ये भण्या रे, पूरे वांछित आश ॥ सद्० ॥ ४ ॥ आचारिज पदवी हुई रे,पंच महाव्रत धार; छकायनी

रक्षा करे रे, पाले पंचाचार ॥ सद्० ॥ ५ ॥ चिरंजीवो सूरीसरु रे, ज्यां लगी शशियर ज्ञाण; रतन त्रिणे जिणे आदर्या रे, चारित्र दंसण नाण ॥ सद्० ॥ ६ ॥ रिषि जगचंद्र इम विनवे रे, मनमांहे हरष अपार; सोज्ञागीगुरु वंदशे रे, ते तरशे संसार० सद्० ॥ ७ ॥

॥ श्रीप्रसन्नचंद्र राजर्षिनी सज्झाय. ॥

प्रभु वीरजिणंद पधारे, राजगृही नयर मझारे. वीर प्रकाशे ॥ १ ॥ श्रेणिक भूपति तिहां आया, बेग वंदी प्रभु पाया ॥ वीर० ॥ २ ॥ एक प्रश्न करे प्रभुवंदी, श्रेणिक तिहां परमाणंदी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कहुं प्रसन्नचंद्र रिषिराया, जिणका वंद्या अब पाया ॥ वीर० ॥ ४ ॥ शुद्ध संयम धरे सदाई, करि काल किहां सोइ जाई ॥ वीर० ॥ ५ ॥ श्रेणिक सुण निर्मल वाणी, करी काल सातमी जाणी ॥ वीर० ॥ ६ ॥ धरी जीव संदेह विचारे, खिण प्रश्न करे सोइ सारे ॥ वीर० ॥ ॥ ७ ॥ कहे वीरजिणंद सुणीजे, सरवारथ सिद्धि जाणीजे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ खिण अंतरे दुंदुभि गाजी, कहो वीर किहां ए वाजी ॥ वीर० ॥ ९ ॥ रिषि प्रसन्नचंद्र वर वाणी, सोई हुत्त केवल

नाणी ॥ वीर० ॥ १० ॥ करे प्रश्न तीन फिरि राया, पूछे श्री वीर पसाया ॥ वीर० ॥ ११ ॥ जिन एह नरम मुज आवे, ए साधु नरके किम जावे ॥ वीर० ॥ १२ ॥ तुज सेवक सुमुख कहाई, तिणि वंद्या ते रिषिराई ॥ वीर० ॥ १३ ॥ तसु पीछे डुरमुख आया, डुरवचने चित्त चलाया ॥ वीर० ॥ १४ ॥ रिषि चूकी करियो संग्राम, मनशुं दृढपातिक ठाम ॥ वीर० ॥ १५ ॥ तिणि अवसरे काल जो करतो, सातमी नरके अवतरतो ॥ वीर० ॥ १६ ॥ रिपुमारण टोप कर घालियो, शिरमुंम तिहां संज्ञालियो ॥ १७ ॥ वलते सरवारथसिद्धे, दल मेल्या योग प्रसिद्धे ॥ वीर० ॥ १८ ॥ हिव पाम्या केवलज्ञान, सुणि श्रेणिक प्रश्ननिदान ॥ वीर० ॥ १९ ॥ श्रेणिक वंदी घरे आवे, रिषि अनुक्रमें शिवसुख पावे ॥ वीर० ॥ २० ॥ इम प्रसन्नचंद रिपि केरा, गुण गाया मानचंदें नलेरा ॥ वीर० ॥ २१ ॥ इम साधु गुणे गुण होइ, तिणे गुण संग्रहो सहु कोइ ॥ वीर० ॥ २२ ॥

श्रीशत्रुंजयमंमन आदिनाथ स्तोत्राष्टक.

(शार्दूलविक्रीमित वृत्तं.) पूर्णानंदमयं महोदयमयं कैवल्य चिद्दृग्मयं, रूपातीतमयं स्वरूप-

रमणं स्वाभाविकी श्रीमयम्; ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं, श्री सिद्धाचल-तीर्थराजमनघं वंदेहमादीश्वरम् ॥ १ ॥ (इंद्रवज्रा वृत्तं) श्रीमद्युगादीश्वर–मात्म–रूपं योगींद्र गम्यं विमलाद्रि–संस्थम्; सद्ज्ञानसद्दृष्टि–सुदृष्ट लोकं, श्रीनाभिसूनुं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥ (उपजाति वृत्तं.) राजादनाधस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोज पीठम्; देवेंद्रवंद्यं नरराज-पूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सहस्रकूटे जिनराज-मूर्तीः सौम्याकृतीःसिद्धतती निभाश्च, शत्रुंजयस्थाः परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाच्च, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य; योद्वादशांगी विदधे गणेशः सपुंडरीको जयतात् शिवाद्रौ॥ ५ ॥ चउद्दशाणं सयसंखगाणं; बावन्नलद्धियाण गणाहिवाणम्॥ सुपाउआ जत्थ विराजमाणा, सत्तुंजयं तं पणमामि निच्चम् ॥ ६ ॥ चत्तठकम्मा परिणामरम्मा, लद्धप्पधम्मा सुगुणेहिं पुन्ना; चत्तारिअठ्ठादस दुन्नि देवा, अठाव एताइं जिणाइं वंदे ॥ ७ ॥ अणंत नाणी अणंत दंसिणो, अणंत सुख्खाण अणंत वीरिणो; वीसंजिणा जत्थ सिवंपवन्ना, सम्मेयसेलं तमहं थुणामि ॥ ८ ॥ जत्थेव सिद्धो पढमो

मुणिंदो, गणाहिवो पुंमरीयो विसिठो; अणेग साहू परिवार संजुओ, तं पुंमरीयाचलमंचयामि ॥ए॥
॥ कलश. (मालिनी वृत्तं.) विमलगिरिवतंसः सिद्धिगंगांबुहंसः सकलसुखविधाता दर्शनज्ञानदाता; प्रणतसुरनरेंद्रः केवलज्ञानचंद्रः सृजतु मुदमुदारं नाभिजन्मा जिनेंद्रः ॥ १० ॥

॥ विषयविकार त्यागनी सज्झाय. ॥

राग केदारो.(कर मन भजननो व्यापार. ए राग)जियकों विषयविषमविकार,विषयविषम अपार, जगमें विषय विषम अपार; लही भजत नर मरपिया ते, तउ तजत न लार, जगमें विषय० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र दिणंद नरपति, जगतजंतु अपार; नीच ऊंच अयान श्याने, सब किये एक हार ॥ जग० ॥ २ ॥ जंत्र मंत्र न यंत्र याकुं, मूल मणि उपचार; कला बुद्धि विनाण विद्या, सबहिसें अनिवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ श्रवण चिंतन ध्यान पूजा, कहत तत्त्व विचार; करत तप जप सुकृत किरिया, तोड जरत नही मार ॥ ज० ॥ ४ ॥ जदपि मुनिव्रत सबे डुद्धर, मेरुगिरिसम भार; तदपि सबतें

महाव्रत अति, विकट खांमाधार ॥ ज० ॥ ५ ॥ नंदिषेण अषाढभूति, आइसे अणगार; शुद्ध तन मन वचन याको, शुद्ध व्रत आचार ॥ ज० ॥ ६ ॥ इन्हों आदि अनेक मुनि व्रत, तजी भज्यो आगार; जिन चतुरनर भले अैसे, तो कहा और गँवार! ॥ ज० ॥ ७ ॥ धन्य तासु अनंग ग्रीषम, ताप मेटि पसार, जनित समता शीतलाइ, वरसि श्रुतजलधार ॥ ज० ॥ ८ ॥ वरजी वामा काम वामी, पामी संयम सार; तरी भवोदधि पार पाए, करी सफल अवतार ॥ ज० ॥ ए ॥ त्रिविध त्रिविधें कनककामिनी, जिन किए परिहार; कर्मसिंह मुनि तासु पद जुग, नमत वारंवार॥ ज० ॥ १० ॥

श्रीजिनेश्वर दंमकस्तुतिः

(श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजश्रीराजचन्द्रसूरीन्द्रपादांबुजनिवासिना श्रीजयचन्द्रसूरिणा कृता)

(दंमक छंद.) रचितरुचिरचंदनागेंद्रलेखेंद्रमर्त्येंद्रसद्भक्तिसंसक्तनम्रीभवन्मौलिनीलंद्रसंजात रोचिश्श्रयालिस्रजासंकुलं निर्म्मलं यस्य ते भक्तसत्प्राणिसम्मोदकिंजल्कसारं पदाब्जं भवासार-

संतापतापापहं तं स्तुवेहं सदा श्रीजिनं शोभनं विमलसलिलहारमंदारकुंदेन्दुपुष्पोपहारालसत्-
कौमुदीसारविस्तारकर्प्पूरपूरामलस्फाररूप्याडिंडिंरविस्फूर्त्ति संकाशकीर्त्यमृतापारकाष्ठांतकल्लोल-
मालाविराजिष्णुसिंधुं समासाद्य भव्या महानंदभाजो भवंति द्रुतं; सकलविमलसुंदराकारसच्चक्र-
वर्त्तीशविद्याधरस्फारनागामराहारकादिप्रजामोहनागाररूपस्वरूपैरनंतत्त्वगोदेशलेशोपिरूपस्य लोको-
दरोदारसन्निर्म्मलस्फाररागाद्यलेशाणुपुंजोपजातस्य दृष्टोऽपि नो निष्टुरं शंकरं, सबलमदनकंस-
कालादिब्रह्मामराधीशमार्त्तण्डसच्चण्डषाण्मातुराद्यर्थचित्तोन्नतिध्वंसविश्वैकमल्लत्वविख्यातितामानमातं-
गनिर्धाटने ते वराशापराः सज्जनास्त्वत्प्रभावाच्च सारंगनाथाधिका यस्य भांतीह वै नाभिराजांगजं
सज्जयं ॥ १ ॥ प्रगटविकटसंकटालिप्रदानक्रमानेकदुर्वादिनैयायिकासारसांख्याक्रमालापवाचाल-
नैयायिकामर्त्यवश्यत्व वैशेषिका शेषदोषाश्रया तारचार्वाकसंकल्पनामात्रसंभूतिताजैमनीया-
दिदुर्वोधिसध्वांतविध्वंसमार्त्तण्डकल्पं सदा, प्रशमरसजलक्षालितानेकसंसारकांतारमार्गभ्रमाने-
कनीचोच्चवैषम्यदुःस्थानसंस्थानसंचारदुर्ध्यानतावायुवेगांगसंलग्नदुःपापमालं दयोदारसुध्यानताभो-

ष्टसंकष्टपसंसाधनातो मुदा सिद्धतासंगतं, विमलसकलसौम्यनेत्रोत्सवासेव्वलसच्चक्रसच्चंद्रसंभूतवाणी-
सुपीयूष सम्यग्विषासारकामांगभोगांगतृष्णादिसंतापसंतापितानेकभव्यव्रजातापहृःस्वस्थतानाशकं
भीमसंसारिदुर्वारमोहादिभावारिसंचारनिर्व्वारकं, विशदमनुजभोगसंयोगसद्यागलक्ष्मी सुखारोग्य-
सौभाग्यसुश्लोकसौराज्यसंतानविश्वंभराभोगसंयोगिहृर्षृद्धतोदारतास्फारतारूपस्वर्लोकदिव्यप्रभाभा-
सुरांगादिदिव्यानुभावैकसत्सौख्यसिद्ध्यादिदानक्षमं चाजितं स्तौम्यहं श्रीयुतं ॥ २ ॥ भजत भजत
नेमिनाथं सदा निर्विकारं प्रिया येन मुक्ता परं सा च राजीमती सुंदरी निर्भरं नूनमेवं च यस्याः
सुरूपं मुखं पूर्णबिंबस्य चंद्रस्य धत्ते श्रियं दंतपंक्तिश्च कुंदप्रसूनावले र्दर्पखड्गस्यधम्मिल्लसद्वल्लरी
कज्जलश्यामला, नयनयुगलकं मिलद्भृंगभोग्योदरश्यामलश्वेतपंकोद्भवस्याधरःपल्लवस्पर्द्धी मां-
जिष्टतासंगतो नासिका कीरचंचूपमा बाहुयुग्मंकजाभं सौवर्णकुंभोपमं–सत्कुचद्वंद्वमाभाति यस्याः
सदास्तित्व–नास्तित्त्वशंकास्पदं तुदमानंददं अतिविपुलनितंबदेशः स्फुटं शोभते मन्मथाकारविस्तार-
चक्रातिगः सक्थि रंभामृदुस्तंभसाम्यं क्रमद्वंद्वमद्वंद्वमुच्चैस्तुलां याति रक्तोत्पलस्यामलस्यानु यस्या

श्रवाणी सुधासारधारातिमाधुर्य्यसंभेदिनी क्षीररत्नाकरालोलरंगत्तरंगानुगा सत्कटाक्षावली,मदकलक-
लहंसलीलागतिर्या तिविस्मेरशुक्लाम्बुजाभस्मितागण्यलावण्यपुंजांकिता रामलाष्टापदालेपसंशोभितां-
गा। न वक्तुं क्षमं शीलमिंदुप्रकाशातिरेकं नवप्रेमरम्या मनोवृत्तिरस्याःकिमन्यत्पुराणैर्ज्जनैर्नाकिरामाधिकं
वर्णिता ॥३॥ असितनलिनकज्जलश्यामलांगाश्वसेने ! वचोतीतमहात्म्ययस्यानुभावात्तवेहस्फुटंदेहि-
नः कासशूलज्वरातंकविस्फोटकोद्भेदवातप्ररोधैंडलुप्तकतश्लीपदार्शप्रथाराजयक्ष्मादिरोगव्रजाद्दष्टदेहा
भवंति ध्रुवं,गहनतरकानने भीषणे शैलसंघेतिदुर्गे च मार्गे रणे दूरदेशांगणे भीमवारांनिधौ दुस्तटीसन्नि-
धौ शत्रुवर्गे वटे संकटे विस्तरद्देतिदुर्द्दश्यदावानलेन्येषु वैषम्ययुक्तेष्वयुक्तेषु कल्याणमालावृता निर्वृता।
विषमविषधरापदाव्याल शार्दूलहर्यक्षकोलोत्पतद्भूतवेतालनागग्रहोत्पातयक्षामरोद्दंरुचंडाधिवीरामरी-
शाकिनीडाकिनीमारिहृष्टातिभीव्यंतरक्षोभमुख्या अनेके न बाधां विधातुं समर्थाःसदोपद्रवाभिद्रवा,
विशदविमलसिद्धिभाजो यदीयप्रसादाज्जनाःसद्यशोभीष्टसंकल्पनाशामरक्ष्मारुहाधारदीनप्रजानाम-
हं दीनभूतस्त्वदद्भूतपादांबुजसंश्रितस्तन्महाशोकरोगाद्यनेकाकुलाद्रक्ष मां कष्टतः पार्श्वनाथ!प्रभो!॥४

परमममलमुत्तरं मोहमं मेरुमेसंकितं मारमानेभकामेषु वज्रं महानंदचूडामणिमुक्तिमार्गैकमार्तंडकल्पं
मदादिप्रमादांकुरे मत्तमातंगमाभावरं मंगलोन्मीलनं मौनसारं मुनिं भद्रभूतं प्रमामाश्रयं सन्मतं सन्मतं,
प्रशमरसविशालं सदाभासमानं समानं विमानं निरीशं महेशं विहासं नरुद्दं कदा सत्करं निस्तुलं कोमलं
निर्म्मलं कर्ममुक्तं विमुक्तिं गतं सद्गतिं निर्गतिं नीरसं सहसं साकरं वर्णनातीतमावर्णितं सज्जनैश्चाप्य
वर्ण्यं मतं; कनकनिकषदेहभं पुंडरीकोज्वलं निर्म्मलं लोकसुस्वामिनं निर्ज्जरं निर्ज्जरोपासितं शत्रु
मित्रेषु न द्वेषरागांकितं भक्तसौख्यप्रदं चेतरासंगनिर्व्वारकं निश्चलं नैकदेशे स्थितं संकलांकाधिशून्यं
कलंकालयं निःशरण्यं शरण्यं सतां, अकलसकलसच्चरित्रं पवित्रं विपत्रं विशिष्टं गरिष्टं महेष्टं
नदीनं नहीनं भवीनं महांतं सुकांतं सुशांतं महामुत्पुरितं नितांतं भजे वर्द्धमानं जिनं दीप्तिवीनं
नवीनं समासन्नतीर्थाधिपं सकृपं प्रणिपं पुण्यपुष्पार्द्धिसत्पादपं ॥ ५ ॥ श्रीराजचंद्रसूरींद्रपादांबुज-
मित्रासिना; जयचंद्रेण कृतं हृत्स्थं, चापल्यं प्रकटं मया ॥६॥ इतिश्रीजिनेंद्रदंडकस्तुतयः ॥

॥ सासुवहूना झगडानी सज्झाय. ॥

सुण वोटल हे तुंरे वटावण, रतन परायो कांई हर्योजी; मे गर्भधर्या हे सब रस भोजन नव मासांए उदरे धर्योजी ॥ १ ॥ उदरे धर्यारी नव मास कारण, जनमवेदन में सही, काढा तो काढया फोक पाणी, एक दिन पिण सुख नही ॥ २ ॥ पोतडारी पल पल में पखाल्या, हाथ मल करी खोइया; पाउरे अंचल ग्रही नीचोया, मूत्र मल इम धोइया ॥ ३ ॥ सुण सासु हो सीख सयाणी, वात इसीपरे कांइ कहोजी; अत्र मांको पूरव भवको; साचो संबंध ए सहीजी ॥ ४ ॥ साचोरी संबंध हुओ पुराणो, लेख बांध्या नवि टले; जब आय हमशुं हुओ भेलो, कांइ सासु तुं लडे ॥ ५ ॥ म्हें दियोथो तो आणी पायो, वावसो सो चाखसी; दिन दश उधारो मांगी लीओ, सदा तुं क्युं राखसी ॥ ६ ॥ सुण वोटल हे तुं रे बओकडी, बाथां पडि पडि मारो नग लियोजी; तें बांध्या हे करगट जोडा कामणी, कामण ढोमण तें कियाजी ॥ ७ ॥ तें कियारी कामण मांहि राख्यो, मो दिशि नही देखहे; हुं पुत्त पुत्त बोलाय रहेती, पुत्त किमही न देखहे ॥ ८ ॥ बहु भूखी

रही रही ग्रास देती, वार वार जिमाइयो; खेलणारी पल पल रिसाय रहेतो, गरथ दे दे मनाइयो ॥ ९ ॥ सुण सासु हो सीख सयाणी, वात इसी परे कांई कहोजी; जब जपनो हो लाल हमारो मांगी भीख न से लह्योजी ॥ १० ॥ न लह्योरी सासु भीख मांगी, जूठ राफ न कीज हे; जब पांच मिलि करी हाथ जोरूया, दोष किणही न दीज ए ॥ ११ ॥ तें चोक बेसी वेष पहेर्यो, पिता मारो नामियो; चाहोरी मांग्यो हरष करी करी, तें घणोई पाइयो ॥ १२ ॥ सुण वोटल हे उभा रंहे तुने, कांइ लियो थारा बापरोजी; मेंतो आपणो हे कवडी साटे, रतनज बेच्यो लाखरोजी ॥ १३ ॥ लाखरो रतनज कियो परायो, में तुने दियो घणो; लुगडा बीदमी वेष वागा, भलेच्यो घर आपणो ॥ १४ ॥ चीरमा मोरा लाग दापा, रीतभांत घणी लही; नगराय बेटो तें गरथ लियो, कूदी तुं जूदी हुइ ॥ १५ ॥ सुण सासु हो सीख सयाणी, रतन परायो कांइ कियोजी; किणे थांकाहो किया नहोरा, जूठ राफ थे कांइ लमोजी ॥ १६ ॥ जूठी राड न लमो सासु, लाल में आपणो कियो; जपनो थांकी कुखमांहि, आपणो करी में लियो ॥ १७ ॥ जब घणी आयां मांग राख्यो, जूल जन

पस्तावए; आग आगेरे रीत हुंती, हुत हुंती आवए ॥ १८ ॥ सुण वोटल हे पुत्तां हे जाया, माय मनोरथ सहु फलेजी; एकज हे आदिजिणेसर, मरुदेवी माता उदरे धर्योजी ॥ १९ ॥ उदर धर्योरी मरुदेवी माता, रायजादा रंजणा; जिणे आप पहेली माय तारी, दोष भवभयभंजणा ॥ २० ॥ हुं और केताइक कही वखाणुं, हाथकी जिम आंगली; सुकुल वहू सपूत जाया, माय मन पुंगी रली ॥ २१ ॥ सुण सासुइ माने रे आयां कांइ, बुरो भलो हुय पम्र्योजी; मै थांका दो पुत्त सरीखा, पुत्त जण जण घर भर्योजी ॥ २२ ॥ में पूत्त जाया हुआ पोता, आगे हुंती तुं एकली; सो माणसोकी हुइ धणीआणी, ग्यानमें गिणती चली ॥ २३ ॥ श्री आदिनाथ त्रिलोकनायक, दोय वहू परणाव ए, श्री भरत सरीखा मोक्षगामी, पुत्त सो एक जाय ए ॥ २४ ॥ सुण वोटल हे आदिसर, मरुदेवी माता ते भलीजी; भतो जादव हो नाथ नेमिसर, शिवादेवी माता ते भलीजी ॥ २५ ॥ संभलीअ वांमादे मनोहर, पारसनाथनी ते हुइ; अवर केताइक कहुं वखाणी हाथकी जिम आंगली ॥ २६ ॥ सामानाम लाया प्रगट किया, नाथ ने त्रिभुवनधणी; श्रीहरषकीर्ति

कहे मोक्षगामी, जगतमें महीमा घणी ॥ १७ ॥

॥ श्रीवर्द्धमानजिनस्तुतिः ॥

(उपजाति वृत्तं.) श्रीवर्द्धमानं करुणानिधानं, श्रेयोनिदानं कुगतेः पिधानम् ॥ शिवैकयानं सुगुणैः प्रधानं, गताभिमानं स्तुतिसावधानम् ॥ १ ॥ (स्रग्धरा वृत्तं.) वीरं जावारिवीरं प्रणत जयहरं हेमरोचिःशरीरं, धीरं कामाग्निनीरं परमपदगतं प्राप्त संसारतीरम् ॥ ज्ञातं सिद्धार्थजातं विबुधबुधनतं जूपसिद्धार्थजातं, सिद्धं बुद्धं प्रबुद्धा नमत नमत तं सिद्धये बुद्धये च ॥ २ ॥ कुंमे ग्रामेऽभिरामे त्रिजुवनजनता पावके पावके वा, मोढेरे हस्तिकुंम्नी प्रवरतरपुरे वायम्मे नाणके च ॥ नंदिग्रामे च मुंम्स्थलगजपदयो स्तुंगवैज्ञारशैले, देवं श्रीवर्द्धमानं विपुलगुणगणै र्वर्द्धमानं नतोस्मि ॥३॥

अध्यात्मनीसज्झाय अथवा गीत.

अध्यातम बिनु क्युं पाइ हो मेरे ललनां, परम पुरुषको रूप; अघट अंग घट मिलि रह्यो हो, महिमा अगम अनूप ॥ अ० ॥ १ ॥ विषम वरष पूरो जयो हो, आयो सहज वसंत; प्रगटी

सुरूपचि सुगंधता हो, मनमधुकरमय मंच ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमत कोकिला गहगही हो, वही अपूरव चाव; भरम कुहिर वाहर फटे हो, घटि जाम्राजम भाव ॥ अ० ॥ ३ ॥ माया रजनी लघु भई हो, सम रस दिवस सजीत; मोह कंपको थिति घटी हो, संसम शिशिर व्यतीत ॥ अ०॥४॥ शुभ दल पल्लव लहलहे हो, होहि अशुभ पत भार; मलिन विषय रति मालती हो, विरति वेली विस्तार ॥ अ० ॥ ५ ॥ शशि विवेक निर्मल भयो हो, थिरता अमिय भकोर; फैली समकित सुचंद्रिका हो, समुदित नयनचकोर ॥ अ० ॥ ६ ॥ सुरति अग्निज्वाला जगी हो, समकित भाव अमंद; हृदयकमल विकशित भयो हो, प्रकट सुजश मकरंद ॥ अ० ॥ ७ ॥ दिढ कषाय हिमगिरि गवले हो, नदी निरफरा जोर; धार धार नावह चली हो, शिवसागर सुख भर ॥ अ० ॥ ८ ॥ वितथवात प्रभुता मिटी हो जग्यो जथारथ काज ॥ जंगल भूमि सुहानि हो नृपवसंतकोराज ॥ अ० ॥ ए ॥ खट भव परिनति वसुधा भइ हो, अष्ट कर्म वन जाल; अलख अमूरति आतमा हो, खेले धर्म धमाल ॥ अ० ॥ १० ॥ नयपंकित चाचर मिली हो, ज्ञान ध्यान मफ ताल; पिचकारी पदसाधनो हो,

संवरभाव गुलाल ॥ अ० ॥ ११ ॥ राग विराग अलापिये हो, भाव भगति बहु तान; रीझ परम रस लीनता हो, दीजे दशविध दान ॥ अ० ॥ १२ ॥ दया मिठाइ रस भरी हो, तप मेवा परधान; शील सलिल अति शीअला हो, संयम नागर पान ॥ अ० ॥ १३ ॥ गुपत अंग परगालिये हो, यह निलजता रीति; अकथ कथा मुख भाखि हो, यह गारी निरनीति ॥ अ० ॥ १४ ॥ उद्धव गुण रसिया मिले हो, अमल विमल रस एम; सुखतरंग मांहे छकी रहे हो, मनसा वाचा नियम्म ॥ ॥ अ० ॥ १५ ॥ परम जोति परगट भइ हो, लगी होरीकी आग; आठ काठ सब जरी बुझे हो, गइ तताइ भाग ॥ अ० ॥ १६ ॥ प्रकृति पंचासी लगी रही हो, भसम खेल है सोय; न्हाइ धोइ उज्वल भये हो, फिरत नहीं खेलत कोय ॥ अ० ॥ १७ ॥ इति अध्यातम गीत ॥

॥ श्रीवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेंद्रस्तुतिः ॥

(आर्या वृत्तं.) सकलगुणपूरपूरित,–गात्रं प्रणमामि कनकवरकांतिम् ॥ गौतमनामसुसाधुं, तारकमहमंगसुधर्म्मम् ॥ १ ॥ (त्रिभंगी वृत्तं.) वंदेहं वृषभं लांछन वृषभं कांचनकांतिं सुदेहं,

गुममणिगणपात्रं निर्म्मलगात्रं जिनमजितं सदेहम् ॥ त्यक्त्वा भवसंभव वर्जित संभव मादरतःसस्नेहं, अभिनंदन सुजिनं तर्जितमदनं स्तौमिसहनवरगेहम् ॥ २ ॥ (आर्या वृत्तं) सुमतिं सुमतिनिदानं, पद्मप्रभपारगं सदावंदे ॥ निर्जितमोहसुपार्श्वं, चंद्रप्रभमंगचंद्रप्रभम ॥ ३ ॥ (त्रिभंगी वृत्तं.) सुविधिकृतसुविधिं मंगलसुनिधिं नौमि सदागततंद्रं, शीतलजिनमसमं जितमदविषमं वदनतिरस्कृतचंद्रम् ॥ श्रेयांससुधीरं समुद्रगंभीरं प्रापितशिवपदमद्रं, श्रीजिनवासुपूज्यं वासवपूज्यं सेवाद्रसुरचंद्रम् ॥ ४ ॥ (आर्या वृत्तं) विमलं विमलं स्तौमि, मिथ्यासंतापवारणसुमेघम् ॥ जिनमनंतमहमंतं, कृत्वा भवसंततेर्यातम् ॥ ५ ॥ (त्रिभंगी वृत्तं) धर्म्मं कृतधर्म्मं निर्गतमर्म्मं वंदेहं रिपुवीरं, शांतिं युतशांतिं निर्म्मलकांतिं मेरुसमानसुधीरम ॥ कुंथुं जिननाथं विशदसुगाथं कर्म्मभूमिघनसीरं, श्रीअरजिनपादं मेघसुनादं प्राप्तभवाब्धिसुतीरं ॥ ६ ॥ (आर्या वृत्तं) मल्लिं सुरासुरेंद्र, स्तुत्यं लब्धलब्धिसंगतं वंदे; मुनिसुव्रतमतिसुव्रत क्षालितघनपापमलनिचयम् ॥ ७ ॥ (त्रिभंगी वृत्तं) नमिनाथं शांतं मदनसुकांतं मुक्तिनारीवरहारं, नेमिं वरशीलं भृंगसुनीलं

सादरधृतसंयमभारम् ॥ शुभ्रकांतिविशालं द्विरदसुचालं पार्श्वजिनं जितमारं, श्रीवीरं वीरं कर्मणि-
नीरं पापमलेशमसारम् ॥ ८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्तं) इत्थं सर्वसुरासुरेश्वरगणैःसंस्तूयमानाः
सदा, प्रत्यूहव्रजसंतमोदिनकरा योगींद्रचित्तस्थिराः ॥ संतु श्रीधृतितुष्टिमंगलप्रदाः श्रीराजचंद्रैर्नुताः
श्रीसूरिश्वरचक्रमौलिमुकुटैरानंदसंदोहकम् ॥ ९ ॥

॥ श्री जिनपालितजिनरक्षित स्वाध्यायः ॥

("राग आसावरी" भेखरे उतारो राजा भरथरीनी अने त्रूटकनी हरीगीतनी.)

ढाल—नयरी चंपावति जाणिये, माकंदी सुत दोयजी; जिनरक्षित जिनपालित, अतिह विचक्षण होयजी ॥ न० ॥ त्रूटक—हुयि ड्रुन्नि सम्मति लइ कियाणो चढ्या प्रवहण पूरिया, भर समुद्रमांहे गया जेतले उतपात अनेक उदीरिया; अकालें अंबर गाजवीजें वाय वाजे अति घणो, वरसात वरसे अति अंधारो थयो तिहां बीहामणो ॥ १ ॥ ढाल—तट तटक तटके बंधणा, फट फट फाटे नावजी; घन बूडे बेन्हि मांहेलो, जे संसारे सद्भावजी ॥ तट० ॥ त्रूटक—सद्भाव ए

संसार केरो आथनो कुण मद करे, पाटियो लाधो बिहु बंधव सुखे ते सायर तरे; रतन दीप ति लही वापी वात वेसी तिह करे, तेतले रतनदीप देवी आवी वचन ति उचरे ॥ २ ॥ ढाल–करवाल कर तीखो ग्रही, सुणज्यो हे नर दोयजी; अम्ह वचन प्रतिपालजो, तो तुम्हने सुख होयजी ॥ क० ॥ त्रूटक–इम शीख देइ लेइ आवे कुंवर दोय निजमंदिरे, अवसर अनेरे इंद्र आदेशें समुद्र शोधन संचरे; तव शीख दीधी बिहु नरने सुखे रहेजो घर तुमे, रामति क्रीडा सदा करजो घरे नावुं जा अमे ॥ ३ ॥ ढाल–कबही रति नहु उपजे, तो पूरव वनखंडजी; उत्तर पश्चिम जाइजो, लहेशो सौख्य अखंडजी ॥ क० ॥ त्रूटक–अखंड सौख्य नवि लहो कबही घरे पाछा आवजो, पण रखे दक्षण वनमझारें वारुंछुं मत जाइजो; तिहां छे भुजंगम काल दारुण तुम्ह जीव विपति करे, इम कही चाली अतिय वेगें पाछे नर वन संचरे ॥ ४ ॥ ढाल–त्रिहुं मांहे सुख नवि लह्यो, चिंते चित्त मझारजी; दक्षण वार्यो किण कारणे, वीससीये नही नारजी ॥ त्रि० ॥ त्रूटक–परनारीनो विश्वास केहो दुःखदायक ए सदा, चित विमासि दुन्नि बांधव दक्षिण वन जाये

मुदा; दुर्गंध आवे मृतक केरी अस्थि ढगला पेख ए, भयभीत हुंता चढ्या आघा शूलिविंघनर देख ए ॥ ५ ॥ ढाल–पूछयुं तुं कोण नर अछे ? काकंदीनो वासिजी; लघु अपराधे इम कर्युं, रतनद्वीप निवासीजी ॥ पू० ॥ त्रूटक–वासि इहांनी अछे पापिणी पुरुषने शूली दिये, स्वारथे हीणो जाणी करी अपराध पुण थोडे किये; माकंदीसुत तसुपास पूछे कहो किम अमे निस्तरुं, उपकार हेते कह्युं तिणे सेलग यख सेवा करो ॥ ६ ॥ ढाल–आवी तिहां पूजा करी, सेलग आसरूप धारीजी; तारुं पालुं केहने ?! निसुणी पभणे कुमारजी ॥ आ० ॥ त्रूटक–अमने तारो अने पालो अमोने तमे उद्धरो, सेलगें वलतुं कह्युं जो नर रखे नारी हिये धरो; करी वचन अंगी चढिय पुंठे समुद्रमांहे चालिया, तेतले आवी देवी बोले जिनरक्षित जिनपालिया ॥ ७ ॥ ढाल–अरेरे नाथ ! तुम्हे कां गया, माहरो कुण अपराधजी; विण अवगुण कांइ परिहरो, मुजथी किसो आबाधजी ॥ अ० ॥ त्रूटक–एवमादि कपट करी डिगाव्यो जिनरखित इम चिंतवे, पूरव भोग चरी संभारे सेलग पूंठथी खेसवे; एटले त्रिशूले ग्रह्यो खडगें खंड करी जव बलि कर्यो, जिनपालि

मन दृढ कर्यो तव सेलगि वेग उद्धर्यो ॥ ८ ॥ ढाल—गुरु थाने सेलग कह्यो, समुद्र ते भवजल पूरतेज नारी वचन जे वीससे, रूलशे ते भवन्नूरजी ॥ गु० ॥ त्रूटक—भवभूरी रूलशे जिनरक्षित जिम विषयरागें मुंझशे, भवपार लहेशे जिनपालित जिम विषय अशुभा बूझशे; भणे आचारिज (श्री) समरचंद्रसूरि विषय राग निवारीए, भवसमुद्र संयम पोते बेसी आप पार ऊतारिये ॥ ए ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीयवृद्दत्तपागछाधिराजश्रीसमरचन्द्रसूरीन्द्रेणकृतः श्रीज्ञाताधर्मकथांगनवमाध्ययनस्य (जिनपालितजिनरक्षितनाम्नः) स्वाध्यायः ॥

॥ श्रीजीरावल्लापार्श्वजिनस्तोत्र. ॥

(स्रग्धरा वृत्तं.) श्रीवामेयं विधुमधुसुधासारसारस्वभावं, न्यायापेतोद्धतमतिचमत्कार-कारिप्रभावम् ॥ जीरापल्लीपदमविपदं वारिदाभ्रायदेहं, निःसंदेहं विमलकमलाकेलिगेहं स्तुवेहम् ॥ ॥ १ ॥ स्फाराकारा ननु जिनपते! दृश्यते ते च मूर्त्तिः । स्फूर्तिस्तस्याःपुनरनुपमा विश्वविश्वप्रसिद्धा ॥ श्रीमीराणां न खलु महिमा मूर्त्तिमात्रानुयायी, यद्बालोपि प्रबलकरटिध्वंसघोरो मृगारिः ॥ २ ॥ चौरा-

चारप्रचुरचरद्व्यालमालाकराले, प्रायो यस्मिन्नलभत पुरा न प्रवेशं मनोपि ॥ तं लंघंते गुरुगिरिपथा-
सांप्रतं वीतशंका, स्तंकागेहां गुणमिव भवद्भक्तिदीक्षामनुष्याः ॥३॥ येषां क्रीडापरधनपरप्राणसं-
हाररूपा, भूपाःसर्वेपि हि बहुबला येषु कुंठस्वरूपाः॥ जीरापल्ल्याःपथि विचरतां सोदरंत्येव तेपि, स्ते-
ना येनानुपमितबलो रक्षकस्त्वं जिनेश ! ॥ ४ ॥ स्वार्थप्रार्थो न च नवबलं क्वापि कस्याप्यपेक्षं, भूयोभूयो
गहनगहनोगाहनीयस्तु पंथाः ॥ एकैकस्यापथिविचरतस्त्वत् प्रसादेन मार्गे, जीरापल्ल्याःपरपरिभवो-
नैवभूतो न भावी ॥ ५ ॥ ये त्वद्ध्यानोपगतमतयो दूरदेशेपि तेषां, स्वस्थानस्थस्थगयसरिजःप्राणिनां-
प्राणतोपि, नासंभाव्यो भवति भवतो भावितोयं प्रभावः सूरोदूरोपि हि न सहितो लोकमध्यंधकारम् ॥
॥ ६ ॥ मुक्तावैद्यैरपि बहुविधैरौषधैरप्यसाध्या विध्यापाद्यौश्चिरविरचितैर्नापि मंत्रादियोगैः ॥ तेप्या-
तंकागतभवभवन्नामधेयाभिराम,ध्यानादेनांबुनयवदना नाम निर्नाममेयुः ॥ ७ ॥ कासश्वास
ज्वरकरशिरःकुक्षिचक्षुर्विकाराः शोषश्लेष्माक्षतमबलता वातपित्तप्रकोपाः कंडूकुष्टस्वयथुदवथुगुल्म-
दुर्नामपामा, रक्षा दक्षे त्वयि विदधति व्याधयो नैवबाधाम् ॥८॥ रोगाभोगा गहनवहनव्यालदुर्मंत्रयोगा,

ध्याते तात! त्वयि तनुमतां नो भवेयुः पुरोगाः॥ बाह्योप्येषु श्रुतिपथगतः कस्य चित्ते विधत्ते, नैवाश्चर्यं जगति महिमा तावकीनो नवीनः ॥९॥ यस्मिन्नन्ये जनिषत सुरा निःप्रभा निःप्रभावाः काले तस्मिन्नपि च वसति त्वत् प्रतापप्रभावः॥ यद्ग्रीष्मर्तुर्नयति सलिलोल्लासमस्तं समस्तं, तस्मिन् काले किलयति किल प्रत्युतांभोधिऋद्धिम् ॥१०॥ विश्वाधारामतरलतरत्तारतारामुदारा, मीश स्वीयां! क्षिप मयि दृशं देव ते सेवकोस्मि ॥ उँ कुर्वाणे भवति च तदा स्वार्थसिद्धिः समस्ता तन्मा स्वाहाशनपतिनतोपेक्षितुं ते न युक्तम् ॥११॥ किं कल्पद्रुः किमममरगवी कामकुंभोपि किं वा, दत्ते चिंतामणिरपि च किं किं च धन्वंतरिर्वा॥ श्रीवामेय! त्वयि विदधतोऽहरधन्ये प्रसन्ने, वश्यं वश्याभवतिभविनां लीलयासर्वसिद्धिः॥१२॥ धीरा भीराउलिवरपुरीसारशृंगारभूतं, ये श्रीपार्श्वप्रभुमभिनवप्रीतिभाजस्तुवंति॥ दुस्थावस्थास्फुलविषलतां यातितेषामशेषा, संपद्यंते हृदयदयताश्रेयलक्ष्मीविशेषाः ॥ १३ ॥ इप्सितफलदातायंस्तवः संपूर्णः ॥

॥ श्रावकव्रतशिक्षानी सज्झाय. ॥

वंदी गोयम शक्तिये सीम, गुरु उपदेशे लेशुं नीम; विरतितणी मति हियडे धरी, न शकुं

पूरा व्रत ऊचरी ॥ १ ॥ श्रावक कामदेव आणंद, धन्य जे पाम्या परमाणंद; पूरां व्रत पाली सुर थया, एक भव सिद्धि हुशे नीरया ॥ २ ॥ इव हुं तेहतणे अनुसार, खप करशुं प्रवचन चित धार; चौदराजनी अविरति टले, जाणुं मुज मन वांछित फले ॥ ३ ॥ पहिलो भणिये समकित सार, ते दुःकर पालतां अपार; इण विणु अवर नथी आधार, तिण कारण मन करुं विचार ॥४॥ मुजमन देव एक अरिहंत, गुरु सुसाधु जे जग गुणवंत; जिणवर भाख्यो तेहज तत्त, इणिपेरें सद्दहणा समकित्त ॥ ५ ॥ जेह वस्तु त्रिहुं भुवन मझार, तेह तणा निक्षेपा च्यार; जघन्यतो अनुयोगडुवार, भाख्या नाम ठवण विचार ॥ ६ ॥ द्रव्यभाव ए भावो भेद, ते जाणे जे हुए सभेद; चिहुं निक्षेपे अरिहंत जाण, वंद्य पूज्य ए विगति वखाण ॥ ७ ॥ मूलसूत्रें श्रावक अधिकार, नाम श्रवण जिनने अवधार; महाफल इम भाख्युं तिहां, विहरत अरिहंत आव्या जिहां ॥ आणंद श्रावक सप्तम अंग, अंबड उववाइयें उवंग; जिनप्रतिमा वंदेवी कही, शंसय म करिश प्रवचन लही ॥ ए ॥ दशमे अंगे साधु विधिवाद, सांभलिरे मन म पम विवाद; वेयावच्च जिन

प्रतिमा काज, त्रीजे वृत भाख्युं जिनराज ॥ १० ॥ जे वंदनीय ते पूज्य प्रमाण, यथाजुगल जाणे जे जाण; समकितधारी नर सुर भणया, वंदत पूजत सूत्रें सुणया ॥ ११ ॥ सूरियाभ विजया-दिक च्यार, सोहमपति डोपतिकुमार; पूजी प्रतिमा विविध प्रकार, वंदि थवथुइ चित्त विचार ॥ ॥ १२ ॥ त्रीजे निक्षेपे अरिहंत, वंद्या पूज्या श्री भगवंत; गर्भबालवयछउमथपणे, सुर नर घणे भाव मन तणे ॥ १३ ॥ चउथे निक्षेपे जिन जोय, तिह जिन संशय न करे कोय; तोपण तिहां भाव जे नहीं, वंद्याविण वंद्याहुए सही. ॥ १४ ॥ इणि कारण इक भाव प्रमाण, चिहु निक्षेपे निश्चे जाण; एह भणी ठवणा जिन नाम, पंचम काल भगतिनो ठाम ॥ १५ ॥ जिन प्रतिमा व्यवहारे वंदी, निश्चे अरिहंत हियरू वंदी; मणुअजनम इम सफल करेशुं, आशातन जिणहर टालेशुं ॥ १६ ॥ ("गाथा—तंबोल १, पाण २, भोयण ३, वाहण ४, मेहुन्न ५, सुअण ६, निठुवणं ७, मुत्तु ८, चारं ९, जूअं १०, वज्जे जिणमंदिरस्संतो.१॥) " प्रतिमा योग न मिले किवार, चेइवंदण करिशुं तिणिवार; पूरव अथ उत्तर दिशि थई, शक्रस्तव भणिवो में सही ॥ १७ ॥

दिनप्रति करिशुं इक पचखाण, गुणिशुं सो नवकार प्रमाण; पहिले व्रत हवे करिशुं विचार, जीव दया जिनशासन सार ॥ १८ ॥ निरपराध संकल्पी करी, निर्दय भावण हियमे धरी; थूल प्राण हिंसा नहुं करुं, आरंभें जयणा आदरुं ॥ १९ ॥ कन्या भूमि गायनुं सही, ए कूडुं बोलेवुं नहीं; थापण मोसो न करिश साख, कूड न भाखिश पंच समक्ष ॥ २० ॥ जिण लीधे हुए चोरीकार, तेह तणो करिशुं परिहार; पडिय वस्तु लही जाणी धणी, संभाली देशुं तिह तणी, ॥ २१ ॥ तास धणी जो न मले कोय, निज निश्रा नहु राखिशुं तोय; वरसियें टका वीशनो दाण,—चोरी अधिक तणो पचखाण ॥ २२ ॥ व्रत चउथे जे बे घरनार, ते टाली परणवो निवार; पालिशुं पनर दीह इक मास, अवसर बंभ धरेशुं निमास ॥ २३ ॥ बालपणा लगी थया ब्रह्मचारि, मल्लि नेमि पहुता भवपारि; धन अइमत्तो जंबुकुमार, गजसुकुमाल महाव्रत धार ॥ २४ ॥ मेघकुमार वंतिसुकुमाल, निश्चल जीवदया प्रतिपाल; महकुळो तसु समरी नाम, त्रिकरण शुद्धे करुं प्रणाम ॥ ॥ २५ ॥ (दुहा.) पंचमाव्रति परिग्रह तणो, हवे हुं करिश प्रमाण; भवसागर तरवा भणी, ए

प्रवहण समान ॥ २६ ॥ (पद्धरी छंद.) गुजराती माणे धन प्रमाण, दशसहस आधक मुज पच्चखाण, धनमांहे पोते जे धान, करसण बहु दूषण तासु मान ॥ २७ ॥ मण आठ वाप वीघा चियारि, बहु पाप जाणि अधिको निवारि; लांबी ने पहुली भूमि जाण, भूमि गज सयपनरह चित्त आण ॥ २८ ॥ घरहट्ट काजि ए अधिक नीम, हवे रूपा सोवन तणिय सीम; गदियाणा शत चउ भुंनि गेह, राखेवा अध्रुव गिणुं बेह ॥ २९ ॥ टंकाशय च्यार मोती जम्हात्, ए अधिक न कीजे चित्त भ्रात; घरवाखर सहु धनमांहि गिणेशुं, गोवसह महिसि मिलि पनर लेशुं ॥ ॥ ३० ॥ पोते ए चोपद तणीय जाति, राखिशुं इक दासी दासजाति; ए नवविध परिग्रहनो प्रमाण, पंचमव्रत जाणुं विरति ठाण ॥ ३१ ॥ व्रत छठे चिहुदिशि गमण सीम, इक सो सो जोयण अधिक नीम; अहअद्ध भुजोयण छढ जाण, हिव सत्तम व्रत निय हिये आण ॥ ३२ ॥ तसु कह्यो नाम भोगोवभोग, तिह विरति करिशुं लहि सुगुरु जोग; वलि वलि नहु आवे भोग काज, ते कह्या भोग जिनेंदराज ॥ ३३ ॥ उवभोग वली वलि भोगजोग, आभरण चीर जे बहु

संजोग; उवभोग भोग कीधा अनंत, तोपण नवि आव्यो किमे अंत ॥ ३४ ॥ तिणकारण आणि मन संतोष, विरति करि निरति टालिये दोष; जेअ छे अभक्ष अनंतकाय, तसु नीम धरुं ज्यां एह काय ॥ ३५ ॥ (ढाल.) हरियकाय इव जाति अन्न केलो नालियर, कारणि बीभ्रा चारि पान लींबु बीजोर; खरबूजा चीभडा जाति खेजडिया कयर, कुन्नि जाति नीलुआ तणी चिणियाने भालर ॥ ३६ ॥ कालिंगड ओडवा जाण तिडूरा मिलिय, अवर जिअ छे इरियकाय ते सहुए टलिय; सूका तिमण तणिय जाति इव चित्ति संभारुं, काल विशेषे जे सदोष ते जाणी वारुं ॥३७॥ करपद खेजडि कयर शुंठि आमल खाखटिय, सेलर झोमी वाभलिया कारिलंविलिय; मतीराने कोठवडी वोलिशुं जे धान, तसु तिमण इव धान तणुं संभालुं मान ॥३८॥ चोखा जाति जुवारि अडद मग मठ जव भालर, गोहुं चोला चणय तुयरि बरटी ने बाजर; चीणो जे जगि अवरधान तिहनो पचखाण, घेवर जलेबी नीम इव खादिम परिमाण ॥ ३९ ॥ साकर साकरदल विशेष खारिक गुल खंड, सिंघोडा टोपर खजूर बाभलियो गुंद, खेरी बीजो गुंदवडा इव चौदे नीम,

दिनप्रति अविरति टालीवा मंमीजे सीम ॥ ४० ॥ इच्य वीश सचित्त पंच दिन्न विगइ चियार, जूती डुइ तंबोल जाति नियचित्त विचार; सोपारी सुरकुसुम चंद एला खरवम्रिय, पहिरेवाने काज वस्त्र नंग वीशज गणिय ॥४१॥ कुसुम नीम हय करइ सगरू वाहिणी नरवाइण, कोटीबो ए जाव जीव दोदिन चन सयण; आसण जयणा तन विलेप उड कोठ वलि टीलो, दिवसे पालशुं बंभ्र थंभ्र नहु करिये ढीलो ॥ ४२ ॥ जो कोइ उपजे काज तो दिन उद जोयण, अधिक न चालु एह नीम बहु पाव विमोयण; इक अंगोहल दिवस वरष प्रति अठय न्हाण, पीवाशुं मुज कुंभ्र तिन्नि ए नीर प्रमाण ॥ ४३ ॥ पनरशेर दिन असनमान चोपरू इक शेर, खाइम पंचहशेर मिली साइम अधशेर; दिवस प्रते सालणा पंचहिव कर्मदान, श्रमणोपासक करे नही बहु दोष निधान ॥ ॥ ४४ ॥ टाली न शकुं सर्व थकी हुं विरति करेशुं, वरस वरस ए सहुअ निरति हियरे समरेशुं; बाणे घोवण एक एकसो नंग प्रमाण, त्रिसय रुप्प सोवन्न एकसो गिणि गदियाण ॥ ४५ ॥ (ढाल.) अवर इंगालिया कर्म हुं टाळीशुं, उचर्युं गुरु तणी शाख व्रत पालीशुं; बिसयमण वरसि सवि

दाल आठो मिली, एह करेवा तणी नथिय मुज मन रली ॥४६॥ रायण दशमण अंबफल ववहरुं, सहस चियार तसु अधिक सवि परिहरुं; साम्निय ज्ञाम्निय कर्म नहु किज्जए, चार वीघा तणुं क्षेत्र बोलिज्जए ॥ ४७ ॥ फोम्निय कर्म परिमाण ए जाणियें, आगरदंतनो जलप नहु माणियें; इक्कीक मण लोइ पम्वास ने फिटकम्नी, त्रीश मजीठ मण अवर लख आखम्नी ॥४८॥ ढलय मण घीय रस वणिज पइ वरसयं, तेलनी जाति मण बिसय गुलमण सयं; खंम्न चालीशमण एकमण सक्करं, सर्वथी ढंम्नतां मुझए डुक्करं ॥ ४९ ॥ डुपद व्यापारं मुज नीम चउ चउ पयं, वरस विषवणिज अहिफण मण पंचयं; यंत्र पीलण नही कर्म निछ्लंछणं, दव तणो दाण न करेमि सरशोषणं ॥५०॥ असइ जण पोष ए दोष में टालिये, अवर व्यापारनी जयणा बहु पालियें; चउविह अनरथ दंम्न अष्टमव्रतें, तासु वेरमण करि समरियें दिनप्रतें ॥ ५१ ॥ न शकीए सर्वथी ढंम्नीए दोहिलुं, जयणा करतां हुइये सर्व मुज सोहिलुं; राजमंत्रीपद आरति नहुं करुं, नगरजनदाहनुं रौड मन नहु धरुं ॥ ५२ ॥ होम्न हीचणजलें झीलणं खेलणं, टालिशुं न्हाणि खल बहुल जलखेलणं;

हिंसक वस्तु दाखिन्य विणु नापिये, पाव उवएस बहु जयणा मन थापियें ॥ ५३ ॥ दिवसप्रति इक सामायियं पूरिशुं, नवमव्रति मन तणी आश इम पूरिशुं; दशमव्रति दिशिदि संखेपमें किज्जए, इणि परे मणुअभव सफल जाणिज्जए ॥ ५४ ॥ वरस प्रति पोषहा बार हुं पालिशुं, सकतिनी सीम अतिचार पुण टालिशुं, दिशि अवलोइशुं भोजन अवसरें, साधु संयोगव्रति बारमें मन धरे ॥ ५५ ॥ दुहा ॥ इणि परि पाली बार व्रत, शुद्ध करी समकित सार, (श्री) पार्श्वचंद गुरुध्यायिने, जेम पामुं भवपार ॥ इतिश्री श्रावकव्रतविचार स्वाध्यायः

॥ श्रीयुगादिदेवस्तुतिः ॥

श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचन्द्रसूरिचरणसरसीरुह-
चंचरीकेण वाचकमुनिवरवरदराजेन कृता ॥

॥ भुजंगी छंदः ॥ शरच्चर्वरीशांशुराढावलक्षं लसद्ध्यानवन्मानसश्वेतपक्षं ॥ जिनं नाभिजं

ध्वस्तमोहान्धकारं स्तवीमि प्रभुं प्राप्तसंसारपारम् ॥ १ ॥ अगाधे भवाम्भोनिधौ संपतद्भिर्जनैर्यस्य ते सातदात्राङ्घ्रियानम् ॥ समाश्रित्य वेगाद्वितीर्णः स तस्मै नमस्तुभ्यमस्वप्नवृन्दार्चिताङ्ग ! ॥ २ ॥ महायोघदुर्बोधतापात्रमार ! क्रुधादीभसेनावधे सिंहसार ! ॥ नवीनोल्लसद्भासुरस्वर्णदेह ! जय त्वं प्रभो ! केवलज्ञानगेह ! ॥ ३ ॥ भवत्प्रोक्तसद्वाक्यपीयूषधारां पिबन्ति न हि प्राणिनो ये तुषाराम् ॥ कथंकारमिष्टं भवेदत्र तेषां सरोषान्यवागाऽऽविलानां विशिष्टम् ॥४॥ वचस्तावकं रागभृद्वाचया यः समं वक्ति कालुष्यवत्या विशुद्धम् ॥ अघस्त्र त्रियामा स्वरूपाङ्ग ईश ! स जन्मांध उक्तः खलुबुद्धिमद्भिः ॥ ५ ॥ सरागोक्तशास्त्रव्रजेभ्यो नमोऽस्तु मिथःसांप्रतं संविरोधं भजद्भ्यः ॥ अधीताजनं मादृशं ये प्रकामं भवद्गीर्षु बह्वादृतिं चर्क्रतीश ! ॥ ६ ॥ वचो वेत्त्यवद्याधरंश्रद्दधाति विभो ! वक्ति यस्तावकं भव्यजातिः ॥ क्रमस्तं न जेतुं प्रपाणिभवर्ग इवोन्मत्तसारङ्गसङ्घःशरास्यम् ॥ ७ ॥ द्रुतंसत्पदप्राप्तये प्रोच्यमानं समौनस्य पाथेयमानन्ददानम् ॥ अघच्छेदकं श्रेयसां यन्निधानं तदास्तां मम स्वान्तके तेऽभिधानम् ॥ ८ ॥ समत्वापजं बालकासारसंस्थं भवारक्तहृत्कैरवोल्लासनेन्दुं ॥ अहानीश ! मे

निर्जितक्षीरजातं सुखं त्वन्मुखं पश्यतो यातु कालः ॥ ९ ॥ अनन्तैः समालिङ्गिता या जिनेश !
मनोमोहिनी मुक्तिवामा विकामा ॥ तयाऽहर्निशं क्रीडमानोऽपि चित्रमिदं गीयसे त्वं बुधैः शुद्ध-
शीलः ॥१०॥ सुरा आसते कोटिशःसहितएणा भवान्रत्नमन्ये हि ते काचखण्डाः ॥ न ते तेऽम्बरे
जाग्रतीह ग्रहाः किं जगच्चक्षुषः कस्तुलास्ते तु नाथ ! ॥ ११ ॥ कति त्वद्गुणान्काशहासेन्दुगौरा ।
नणौहृद्यहं कुर्व आप्तत्रिविश्वान् स्वचीरे कियन्नह्यति स्वर्णमत्रा–धिगत्येश ! निःस्वो हिरण्यक्षितिभ्रम्
॥ १२ ॥ स्रग्धरा वृत्तं ॥ इत्थं श्रीआदिनाथस्तवनमतिमतिप्राप्तसिद्धान्तसारैः कालेऽस्मिन् दुःखमारे
प्रबलमठपतौ भूरिपाखण्डजाले ॥ यैर्जैनं शासनं सत् प्रकटितममलं सम्यगुद्भासितं च श्रद्धालूनां
हितार्थं परमशिविपृथक्कृत्य पार्श्वस्थमार्गम् ॥ १३ ॥ तेषां विद्याविदग्रेसरविबुधशिरोलङ्कियापा-
र्श्वचन्द्रो-पाध्यायानांप्रवादिप्रततततरुगणोन्मूलनेभप्रभाणाम् ॥ चञ्चच्चारित्रभाजां भवजलनिपतत्प्राण-
भृत्तारकाणाम् स्वर्गङ्गानीरहारोज्वलतरलयशःपावितक्ष्मातलानाम् ॥ १४ ॥ गीतिः ॥ चरणार-
विन्दसेवन–मधुपः शिष्याणुवरदराजाख्यः॥ जन्ममतिरपिनिजहर्षा–च्चकार चित्तार्चितापदहरम् ॥१५॥

॥ इतिश्रीवाचकवरमुनिवरवरदराजेनकृताश्रीयुगादिदेवस्तुतिः संपूर्णा ॥

॥ श्रीआचारंगसूत्रना लोकविजयाध्ययननी सज्झाय ॥

" इडर आंबा आंबलीरे दीठी दाडम द्राख " ए-राग. (अथवा) जेम तरुपाकुं पांदडुंजी, पडतां न लागे वार-ए देशी.

श्री आचारंग सूत्रनोजी, अध्ययन बीजो एह ॥ लोकविजय नामे करीजी, ज्ञाषे अरिहंत तेह ॥ १ ॥ (सुण सीख) रे प्राणी परिहर विषय कषाय, जेम अनुपम सुख थाय रे प्राणी. ॥ ए आंकणी ॥ लोक शब्दे इहां जाणीयेंजी, विषय कषाय प्रसंग ॥ विजय केहेतां ते जीतवाजी, जेथी थाय दुःख ज्ञंग ॥ रे प्राणी० ॥ २ ॥ बीजांकूर न्याये करीजी, विषय कषाय संबंध ॥ चतुरगति ज्रमवा तणोजी, तेहथी थाय छे बंध ॥ रे प्राणी० ॥ ३ ॥ नरक तिर्यंचगतें दुःख लहेजी, वलि वलि गरज्ञावास ॥ कर्म तापे तप्यो जीवडोजी, जन्म जराने नास ॥ रे प्राणी० ॥ ४ ॥ आधि उपाधिने व्याधियेंजी, ते अति दुःखीओ होय ॥ मदा मोह आदे अह्योजी, कण एक सुखित्त म

जोय ॥ रे प्राणी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक ते अनर्थनाजी, कारण कारज ज्ञाव ॥ जाणी तजोने लीजीयेजी, सु अवसरनो लाव ॥ रे प्राणी० ॥ ६ ॥ आर्यक्षेत्र उत्तम कुलेजी, पामी नर अवतार ॥ धर्म श्रवण रुचि उद्यमेजी, अप्रमत्तताने धार ॥ रे प्राणी० ॥ ७ ॥ ज्ञव शतकोटी दोहिलोजी, जाणी अवसर एह ॥ संयम अनुष्ठाने रमेजी, समय दरशी मुनि तेह ॥ रे प्राणी० ॥ ८ ॥ चित्र जीवे वली जंबुयेंजी, गजसुकुमार मुनीश ॥ विषय कषाय वेलि छेदिनेजी, पाम्या मुक्ति जगीश ॥ ॥ रे प्राणी० ॥ ए ॥ विषयादिकमां जे फस्याजी, ब्रह्मदत्तादिक तेह ॥ नरकगते दुःख ज्ञोगवेजी, हजी सुधी नाव्यो छेह ॥ रे प्राणी० ॥१०॥ इम जाणी ज्ञवि परिहरोजी, म करो एहशुं रंग ॥ जेथी वेगे तुमे पामशोजी, मुक्तिवधुनो संग ॥ रे प्राणी० ॥ ११ ॥ नागपुरीय तपागच्छेजी, श्रीज्ञातृचन्द्रसूरीन्द्र, तासचरणकजसेवतांजी, कहे मुनि सागरचन्द्र ॥ रे प्राणी० ॥ १२ ॥

॥ इतिश्री लोकविजयाध्ययनस्वाध्यायः संपूर्णः ॥

॥ अथश्री शास्त्रपूजाष्टकम् ॥

(मालिनी छंदः) प्रकटितपरमार्थे शुद्धसिद्धांतसारे, जिनपति समयेस्मिन्शारदासन्निधाने॥ जगति समयसारःकीर्त्तितःश्रीमुनींद्रैःस वसतु मम चित्ते श्रीश्रुतज्ञानरूपः॥१॥ (श्रुत पूजन प्रतिज्ञा) (द्रुतविलंबित छंदः) अतुलसौख्यनिधानमनायकं, शिवपदं विपदंतकरं परम् ॥ जिगमिषुर्जिननाथ मुखोद्गतं, समयसारमहं सलिलैर्यजे ॥२॥ " ॐह्रींमतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा" विषमया खलु सप्तमविद्यया,त्रिभुवनं प्रतिबोधमयं भवन् ॥ हृदयमात्रगतोवरचंदनैः समयसारसहस्रकरोर्च्यते ॥ ३ ॥ (चंदनम्) भवविषकृतचेतनमुत्सकं, मदनमुज्वरसंशमनौषधम्॥ शुभनिधिप्रतिबोधितसद्बुधःसमयसारमिमैःसदकैर्यजे ॥ ४ ॥ (अक्षतम्) शुभ्रपदार्थमणिद्युतिभिद्रुत, प्रहतदुर्धरमोहतमोभरम् ॥ समयसारनिधिं स्वदरिद्रता, प्रशमनाय महामि सरोरुहैः ॥५॥ (पुष्पम्) प्रसनरामरनाथमुखोद्गतं, स्तुतिवचःकुसुमोत्करपूजितम् ॥ समयसारमपाररसांचितै, श्चरुवरैः प्रयजे शिवशर्मणे ॥ ६ ॥ (चरुः) दृगवबोधसुवृत्तमहौषधैः शमितजन्मजरामरणाय-

यम् ॥ अगुरुभिर्गुरुधूपभरादहं, समयसारमुपायमहं यजे ॥ ७ ॥ विमलकेवल बोधविधायिनी, समयसारमयी किलदेवता ॥ हततमः प्रसरैर्मणिदीपकैर्भगवती महती परिपूज्यते ॥ ८ ॥ समयसारमयी त्रिदशापगा, परमहंसकलोद्भवसूचिका ॥ त्रिभुवनेकलुषक्षय कारिणी, शुभफलैः पुनती परिपूज्यते ॥ ए ॥ (फलम्) इतिश्रीशास्त्रपूजाष्टकस्तुतिः ॥

॥ त्रेशठशलाका पुरुषरत्न स्तवन. ॥

(धर्म महारथ सारथ सारं ए देशी.)

सद्गुरु चरणकमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं; भणिशुं श्रुत अनुसारं, जेहनो नाम लिये निस्तारं. आपण सफल हुवे अवतारं, पामीजे भवपारं ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन; सत्तम तेम सुपास; चंद्रप्रभु ने सुविधि शीतल जिन, श्रेयांस वासपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणे कर वास ॥ २ ॥ अनंत धरम श्री शांति जिणेसर,

कुंथुनाथ अरि मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम; पार्श्व वीर ए जिन चोवीश, जगवत्सल जगगुरु जगदीश, प्रणमीजे धरी प्रेम ॥ ३ ॥ (ढाल २ जी. प्रथम सुपन गज निरख्यो—ए देशी.) प्रथम भरत नरेंद, बीजो सगर सुरिंद, मघवा त्रीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शान्ति चक्रीश, छठो कुंथु गणीश, सातमो अरि नरनाथ, अठम सुभूम सनाथ ॥५ ॥ नवमो पदमसरेश, हरिषेण दशमो कहेश; इग्यारम जय ताम, बारमो ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर बार, क्षेत्र भरत शिणगार; मघवा सनतकुमार, पहुंता सरग मझार ॥ ७ ॥ सुभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तमी नरय निरत्त; आठ थया शिवगामी, ते प्रणमुं शिर नामी ॥ ८ ॥ (ढाल ३ जी. मुनिवर आर्य सुहस्ती—ए देशी.) पहिलो त्रिपृष्ठ जाण, द्विपृष्ठ दूसरो, तीजो स्वयंप्रभ जाणिये ए; पुरुषोत्तम चोथ, पंचम परगडो, पुरषसिंह प्रमाणिये ए ॥ ए ॥ छठो पुरष पुंडरीक, दत्त तीम सातमो, लखमण नामे आठमो ए; नवमो कृष्ण नरेश, ए नव केशव, प्रह ऊठी ए पण नमो ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच छठी गया ए; सातमो पंचम नैर, चोथी

आठमो, नवमो तीजी नारया ए ॥११॥ अचल विजय ने भद्र, सुप्रभ सुदर्शन, आनंदन शुभमति ए; रामचंद्र बलभद्र, बलदेव ए नव, आठे थया शिवगति ए ॥ १२ ॥ बलभद्र ब्रह्मलोक, काल उसप्पणी, जाशे शिव कृष्ण सासणे ए; अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होशे, चउदमो इम बहु श्रुत भणे ए ॥ १३ ॥ (ढाल ४ थी. कुमरपणे प्रभु रहेतां काल सुखे गमे ए देशी.) अश्वग्रीव ने तारक, मेरुक बलिमधु तिसा ए, निशुंभ अने प्रह्लाद, रावण जरासिंध जसा ए; ए नव प्रति. वासुदेव नरकगति गामिया ए, तोपण भाविजिनेश केइ प्रणमुं सया ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५ मी. सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं ए देशी.) शांति ने कुंथु अर एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही, वीर वासुदेव अरिहंत भव जुजुआ, देह त्रिणसाठ पण जीव गुण सठ हुआ ॥ १५ ॥ वासुदेव वलिय बलदेव केरा पिता, एकहीज थाय नव एण लेखे छता; तीन चक्रधरतणा मिलिय बारे टल्या, एम त्रेसठना तात इगवन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाली दीजे जिशे, माय सहुनी थइ साठ लेखे इशे; एह नररयणनो ध्यान जे नित धरे, तेह सुरपद लही

मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥ (कलश.) इम थुएयो तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करे सुर नर सेव ए; तेसठशिलाका पुरुष उत्तम जयवँता वरतो सदा, अह समय तेहनां चरणपंकज " वखतचंद " नमे मुदा ॥१८॥ इतिश्री युगप्रधानकनकचन्द्रसूरीश्वर संतानीय मुनिराजश्री वक्तचन्द्रेणकृतं स्तवनम् ॥

॥ निंदापरिहारनी सज्झाय. ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान.—ए राग ॥

चेतनशुं मन लाइयेरे, परिहरि पापप्रमाद; वलि विशेषे टालवोरे, विरुवो परपरिवादो रे ॥ १ ॥ समता मन धरो. परनिंदा बहु दोषो रे, गुण प्रकट करो ॥ जिम पामो भव मोखो रे, समता मन धरो. ए आंकणी ॥ खिणमांहि संयम सहु गमेरे, जे संच्यो चिरकाल; परनिंदा करतो जतीरे, बोले उपदेश मालोरे ॥ स० २ ॥ जेहने जे दूषण दियेरे, तेहिज पामे आप; पंचम अंगे जाणजोरे, भव भव जिणे संतापो रे ॥स०॥ ३ ॥ परनिंदा पातिक

कह्योरे, बीजे अंगे विचार; नरकादिक डुख अनुज्नवेरे, करि तेहनो परिहारो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ आप वखाणे अधिकतारे, आठ मदें अति लीण; जिणे दूषणे पर दूखियेरे, ते परज्नवे लहीए हीणोरे॥स० ५ ॥ लोकिक ग्रंथे इम कह्योरे, परनिंदक सोवाग, जिहां ते जाये जखें करीरे, तें सींचीजे मागोरे॥ स०॥६॥ परनिंदक पर पूठनोरे; मंस करे आहार; दशवैकालिके इम ज्नएयोरे, पंम्ति लहशे सारो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु धर्म संघनीरे, सुरनिंदा मिछ्यात; समकित होय प्रशंसतारे, त्रीजे अंगे विख्यातो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ परगुण हिये संज्नारियेरे, अवगुण परिहरि दूर; श्रीपार्श्वचंद्र पाये नमी कहेरे; मुनि ब्रह्मो आणंद पूर रे ॥ समता मन धरो ॥ ९ ॥ इति स्वाध्यायः ॥

॥ श्रीजीरापल्लिपाटक आदिश्वरजिनस्तुतिः ॥

अनुष्टुप् वृत्तं.॥ देवेंद्रैर्वंदितं देवं, नाज्निनूपतिनंदनम् ॥ वृषज्नांकेन संयुक्तं, तं सार्वं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ मरुदेवांगजन्मानं, साधुवृंदसुसेवितम् ॥ केवलज्ञानज्नास्वंतं, तं देवं स्तोमि ज्नावतः ॥ २ ॥ सुरासुरनरेंद्राणां, पूज्यं गुणगणैर्वृतम् ॥ तृतीयारनज्नोदीप्त; दीपं वंदे मुदा सदा

॥ ३ ॥ चतुर्ग्गतिविनिर्मुक्तं, चतुर्ग्गतिनिवारकम् ॥ स्वर्ग्गापवर्ग्गदं शांतं, मारुदेवं जिनं स्तुवे ॥४॥
त्रिषष्टिपूर्वलक्षाणी, भुक्त्वा राज्यश्रियं वराम् ॥ त्यक्त्वा भोगान् वरान् देवः, प्राप्तो गतिमनुत्तराम्
॥ ५ ॥ विनीतायाः परिकरे, उद्याने शकटाभिधे ॥ अधः सुवटवृक्षस्य, संप्राप्तो ज्ञानमुज्ज्वलं ॥ ६ ॥
देशनावसरे रम्ये, सुरासुरनरेश्वराः ॥ यस्य वाचामृतंपीत्वा, ते ययुः परमां मुदं ॥ ७ ॥ तं वंदे
देवदेवेशं, भक्तिसंभृतमानसः ॥ भव्यांगिभवसंताप, पापवारनिवारकं॥ ८ ॥ माता मे त्वं पिता मे त्वं,
बांधवः परमो मम ॥ त्वं त्राता नायको नूनं, जिनाधीश दयानिधे ॥९॥ आर्या वृत्तं.॥ स्वस्तिश्रीदं
वृषभं, ऋषभजिनं वृषविराजितं भक्त्या ॥ स्तौमि मुदा नौमि सदा, नाभिभवं मुनिपतिं सार्व्वं ॥
॥ १० ॥ द्रुतविलंबित वृत्तं.॥ भविकवृंदसुसेवितपत्कजं, विबुधसंघविराजितसत्सदम् ॥ इषुसुसख्य
मदघ्नतसंयुतं, शमदमादिगुणाव्रजपूरितम् ॥ ११ ॥ विकचवारिजपत्रसुलोचनं, सुजनतापत्रपाप
सुमोचनम् ॥ तव नभाजि पदद्वयपंकजं, सुनयनायकराजिसुसेवितम् ॥ १२ ॥ शमरसामृतवारि
सुवर्षणाद्, घनघनाघनवृंदसुराजिवत् ॥ त्वमसिनाश्रमदाजनतापहृत्, वरसुवर्णसुवर्णसुशोभितः

॥ १३ ॥ नविकवारिजवृंदसुबोधने, दिनमणिप्रतिमस्त्वमसि प्रनो ॥ वृजिनवारविदारणकारकः सुजिनराजनवांबुधितारकः ॥ १४ ॥ नवमहोदधिमग्नजगज्जनं, त्रिनुवनाधिप तारय दुःखितम् ॥ करणपंचतुरंगमपीमितं, तमपि पाहि हितेप्सितदायक ॥१५॥ (वसंततिलकावृत्तं.) इत्थं स्तुतः सुरनतांह्वियुगो मयेहा–मुष्मिन् परत्र च विनो नुवि जन्मनाजाम् ॥ स्वर्गापवर्गसुखपूरसुदायकस्त्वं, मां पाहि देव करुणाकर नाग्यदस्त्वम् ॥१५॥ शार्दूलविक्रीमित वृत्तं. ॥ जीरापल्ल्यनिधान पाटकवरे श्री स्तंनतीर्थे मुदा, वर्षेबाहुननोरसैक (१६०२) सहिते नक्त्या स्तुत स्तीर्थपः ॥ श्रीकर्णेन महेन चारु मनसा ध्यातः स्तुतो वाग्नरैः, सोऽव्यान्मां नववारकाद्धघुवरां बोधिं प्रदेयाः सदा ॥१७॥

इतिश्रीयुगप्रधानपद्मचन्द्रसूरि संतानीयमुनिराजश्री श्रीकर्णेनकृतं स्तोत्रम् ॥

॥ अस्वाध्यायविचार सज्झाय. ॥

(चोपाइ छंद.) पवयण देवी समरी मात, कहीशुं शासन मधुरी वात; धर्म आशातना वर्जो करो, पुण्यखजानो पोते नरो ॥ १ ॥ आशातना कहीये मिथ्यात, तस वरजन

समकित अवदात ॥ आशातना करतो भव करे, दीरघ भव दुःख पोते वरे ॥ २ ॥ अपवित्र आशातना मूल, तस घर स्त्री ऋतु प्रतिकूल; ते ऋतुवंती राखो दूर, जो तुमे वंछो सुख भरपूर ॥ ३ ॥ दर्शन पूजा अनुक्रमें घटे, ज्यारे साते दिवसे वटे; पर शासन पण इम सद्दहे, ज्यारे शुद्ध हुए ते कहे ॥ ४ ॥ पहिले दिन चांडालिनी कही, बीजे ब्रह्मघातिनी सही; त्रीजे दिन धोबण सम जाण, चोथे शुद्ध होय गुणखाण ॥ ५ ॥ ऋतुवंति करे घरनुं काम, खांडण पीसण रांधण ठाम; तिणे अन्ने प्रतिलाभे गुणी, सद्गुणी सघली पोते हणी ॥ ६ ॥ तिणे अन्ने भक्तादि जमे, तिणे पापे धन दूरे गमे; अन्ने स्वाद न होय लवलेश, शुभ करणी जाए परदेश ॥ ७ ॥ पापड वडि खेरादिक स्वाद, ऋतुवंती संगतिथी लाद; लुंडणी भुंडणी ने सापणी, परभव थाय ते पापणी ॥ ८ ॥ ऋतुवंती घर पाणी भरे, ते जल देहरासरें पण वरे; बोध बीज नवि पामे किमे, तिणे पापे ते बहु भव भमे ॥ ९ ॥ असज्झायमां जिमवा धशे, वचमां बेशे मनमांहे हसे; पंक्ति सवि अभडावी जमे, तिण पापें दुर्गति दुःख खमे ॥ १० ॥ सामायिक पडि-

कमणुं ध्यान, असज्झाइयें नवि सूझे दान; असज्झाइयें पुरुष न आक्रमे, तिणे फरसे रोगादिक नमे ॥ ११ ॥ ऋतुवंती एक जिनवर नमी, तिण करमे ते बहु भव भमी; अने चांडालिनी थइ वली; जिन आशातना तेने फली ॥ १२ ॥ इम जाणी चोखाइ भजो, अविधि आशातन दूरे तजो; जिनशासन किरिया अनुसरो, जिम भवसायर हेले तरो ॥ १३ ॥ श्रद्धालु सेवे विधि सार, अनुष्ठान निज शक्ति अपार; इत्यादिक दूषण परिहरे, पक्षपात पण तेहनो करे ॥ १४ ॥ धन्य पुरुषने हुए विधि योग, विधि पक्षाराधन शिव भोग; विधि बहु मानी धन्यज नरा, तिम विधि पक्ष अदूसग खरा ॥ १५ ॥ आसन सिद्ध होय जे जीव, विधि परिणाम होय तस पीव; अविधि आशातन परिहरे, न्याये "शीव" लच्छी ते वरे ॥ १६ ॥ इतिश्रीवाचकवरशिवचन्द्रमुनिकृतः स्वाध्यायः ॥

प्रीति छत्रीशीनी सज्झाय.

॥ पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी, जेम पामो निरमल ज्ञानजी—ए राग ॥

प्रीति न किणही जीती जाय, एकण विण अरिहंतजी; भावे कोडि उपाय करो कोइ, लागे

मंत्र न तंत्रजी ॥ प्रीति० ॥ १ ॥ नाण भणो कोइ सहस वरस लगी, किरिया करो अनंतजी; करो तपस्या कोडि वरस लगी, भावे भजो भगवंतजी ॥ प्रीति० ॥ २ ॥ संयम पालो कोडि वरस लगी, ध्यावो ध्यान असमानजी; मुनिपणो भजी रहो वनवासि, करो बहु धूमरपानजी ॥ प्रीति० ॥ ३ ॥ मुंड मुंडावो लोच करावो, नगन रहो गृह वेशजी; जटा वधारो तिलक बणावो, भावे हुवो दरवेशजी ॥ प्रीति० ॥ ४ ॥ जोगी जंगम यति संन्यासी, वेष अनेक प्रकारजी; लै लै मूक्या वार अनंती, न हुवो को निस्तारजी ॥ प्रीति० ॥ ५ ॥ प्रीति न तोडी अधिकी कोडी, सकलगुणे प्रधानजी; गौतम गणधर सघले चावो, न लहे केवलज्ञानजी ॥ प्रीति० ॥ ६ ॥ सिजंभव चउदह पूरवधर, नंदण देखी मनाकजी; आंसु नाख्या नयण थकी जिन, सबल प्रितीनो ढाकजी ॥प्री० ॥ ७ ॥ कृष्ण कलेवर कंधे लीधो, बलभद्र आप छ मासजी; रीसाणो भाइ नवि बोले, भमियो बहु वनवासजी ॥ प्रीति० ॥ ८ ॥ बापभणी हुं बंधी राखिश, काचे तांतण तारजी; बार वरस लगी नीठ ते तोड्या, मुनिवर आर्द्रकुमारजी ॥ प्रति० ॥ ए ॥ असुचपति बहु उपसर्ग कीधा, प्रीते

हुवो अंधजी; रामचंद सीता मन साचो, वांचो एह संबंधजी ॥ प्रीति० ॥ १० ॥ जीव संभूततणो मरी हुओ, ब्रह्मदत्त चक्रधारजी; हा कुरमति कुरमति करंतो, पहुतो नरक मझारजी ॥प्रीति०॥११॥ बार वरस लगी चारित पाळ्यो, नारि नागिला ध्यानजी; भावदेवें ए संयम बोळ्यो, जोम्यो प्रीतिशुं मानजी ॥ प्रति० ॥ १२ ॥ घर परिवार तजी नाट कियो, कंधे उपाड्यो वंसजी; इलापुत्र अति प्रीते नम्यो, शिवगामी सुप्रशंसजी ॥ प्रीति० ॥ १३ ॥ शिवगामी रहनेमि रुषीश्वर, राजिमतीनुं रूपजी; देखी ध्यान थकी जे चलियो, प्रीति अलख स्वरूपजी ॥ प्रीति० ॥ १४ ॥ लाकुमांहि लट थई मरीने, प्रीतें चारे नारजी; एह अचंबो देखी हुओ, वैराग्यो भरतारजी ॥ प्रीति० ॥१५॥ बालक मारी मंस भखे ए, दीसे ए अणगारजी; प्रीति बेटा इम सीखिया, भृगु भृगुनी वलि नारजी ॥प्री. ॥ १६ ॥ दही मांहि उषध बहु घाली, प्रीते मुनिने दीधजी, हरसपक्षि मुनि अणसण कीनो, एह अकारिज कीधजी ॥ प्रीति० ॥ १७ ॥ गौतमने केसी मुनि पूछे, संसारमांहि कुण पाशजी; प्रीति पाश बे अति भयंकर, उत्तराध्ययन सुभाषजी ॥ प्रीति० ॥ १८ ॥ रातें उठ्यो दासी प्रीतें, लेवा

दो मास कनकजी; कपिल ज्ञणी झाल्यो कोटवालें, आएयो राजा पासजी ॥ प्रीति० ॥ १९ ॥
मदनमंजरी प्रीते राता, अरूगदत्त सुप्रवीणजी; कष्ट अनेक सह्या मुनि वचन, हुंते ते व्रत लीणजी
॥ प्रीति० ॥ २० ॥ हरिहर ब्रह्मादिक लोकमां, वरुा देव कहेवायजी; ते पण लपटाणा नारीशुं,
प्रीति न जीती जायजी ॥ प्रीति० ॥ २१ ॥ पंचेंडी मरी हुआ एकेंडी, गेहमूता जेमजी; मत को
प्रीतितणे फंदे परूजो, कूरू कहुं तो नेमजी ॥ प्रीति० ॥ २२ ॥ इंड चंड नागेंड विविध जे, विबुध
हुआ इण ठामजी; बीजा कुण लेखामां गीणीए, प्रीति गमावे मामजी ॥ प्रीति० ॥२३॥ आटानो
कूकमो विणसारूयो, प्रीति यशोधररायजी; सात ज्ञवांतर माता साथे, दुख दीठा न कहायजी
॥ प्रीति० ॥ २४ ॥ साख ज्ञरी कूरूी वसुराजा, प्रीति अधिक चित लायजी; नरग पहुतो अधिक
विगूतो, साचो बिरुद गमायजी ॥ प्रीति० ॥ २५ ॥ चोर करे चोरी बहु रागें, पोखे सकल कुटुंबजी;
एकलमो जे दीजे शूली, जाय नरक अवलंबजी ॥ प्रीति० ॥ २६ ॥ राज गमायो लोढी पायो, मंस
खवायो अपंजी; राजाए अति नेह धरीने, चित्त नवि जाएयो कोइ पासजी ॥ प्रीति० ॥ २७ ॥

नारी गीत सुणी निश आसु, प्रीते मृगवन झोझीजी; सर वींधो मृग धर पझियो, प्रीते लागे बहु खोझिजी ॥ प्रीति० ॥ २८ ॥ विम्फसे विंध्यो मंझारी प्रीते, मीन मरे ततकालजी; इम जाणी प्राणी अन्निमानी, आपणपो संन्नारजी ॥ प्रीति० ॥ २९ ॥ कागलनी हथणी देखीने, प्रीति अधिक चित लायंजी; खारू खणे हथणीने हाथी, माथे अंकुश आयजी ॥ प्रीति० ॥ ३० ॥ जाण प्रवीण अने जे मूरख, प्रीते जिता सर्वजी; राग अधिक संसारमें बंधन, न रह्यो केहनो गर्वजी ॥प्रीति०॥३१॥ परम पुरुष जे परम जोगीसर, सबल जास अवतारजी; जीते प्रीति जिके पुरुषोत्तम, तेहने हुं बलिहारजी ॥ प्रीति०॥ ३२ ॥ कोइ डुख पावत नही प्राणी, सहुको शिवगति जातजी; प्रीति न होवत्त जो जगमांहे, ए सद्गुरुनी वातजी ॥ प्रीति० ॥ ३३ ॥ सार विचार जाणी ए साचो, मन आणी वैरागजी; मानवन्नव ए लहतां दोहिलो, जागि शके तो जागजी ॥प्रीति०॥३४॥ संवत सोल अठयासी (१६८८) वरषें, जिहां हुवो सबल सुगालजी; विजयदशमी संगानयरी पुरवर, एह विचार रसालजी ॥ प्रीति०॥ ३५ ॥ प्रीति छत्रीशी ए वैरागनी, न्नविक न्नणी हितकारजी; वाचक

" सहज कीरत " इम जाखे, श्री संघने जयजयकारजी ॥ प्रीति० ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयबृहत्तापगच्छीयवाचकवरश्रीसहजकीरतमुनिनाकृतः स्वाध्यायः ॥

अथ श्रीराजर्षि सुकोसलजीनी सज्झाय.

(ढाल) गोयम गोयम गणहर पाये नमी ए, गाइशुं गाइशुं श्री मुनिराय के; नामे सुकोसल गुणनिलो ए, सुंदर सुंदर कोमल काय के. गोयम. (त्रू०) पाए नमी साधु सुजाण केरा कहु कवित सोहामणुं, एक लाख जोयण द्वीप जंबू जरतक्षेत्र तिहां जणुं; साकेत नामे नगर मोटुं कीर्तिधर तिहां राजियो, जिनधर्मी पूरो सदा शूरो दान ने गुण गाजियो ॥ १ ॥ (ढाल) तसु घर तसु घर नारी सोहामणि ए, रूपें ए रूपें ए रंजसमाण के; राणी सहदेवी जली ए, सुकोसल सुकोसल तास कुमार के. तसु. (त्रू०) जाणीए गुणवंत शीले राग रंगे नवि रमे, ललितांग सुर जिम सुखे रमतो जोग योगे उख दमे; इक दिवस कीर्तिधर नरेसर अलंकार जला करी, परिवारशुं

परवर्यो बेठो राजनीति धरे खरी ॥ २ ॥ (ढाल) नरपति नरपति निरखे नयणके ए, सूरज सूरज ग्रहण आकाश के; चतुर पणे इम चिंतवे ए, रवि किम रवि किम पमियो पास के. नर. (त्रूटक) वयणडां रूडां राज जंपे अहो अथिर संसार ए, शशि सूर सरीखा ग्रहण पामे कर्म विषम अपार ए; पुत्र परिजन पशु पराक्रम कोइ न आमो आव ए, संवेग रंगे राय चडियो भावना इम भाव ए॥३॥

(ढाल २ जी गीता छंदानी) (चालती) तव राजा रे कहे कुटुंबी पुरुषने, सझाइरे करो बोलावो सज्जनने; नृप पदवी रे कुमर सुकोशलने दिये, कीर्तिधर रे भूपति चारित्र तव लिये. (त्रू०) तव लिये चारित्र खरो पाले दोष टाले तेहना, तप करे दुःकर साधु सुंदर लाभ ल्ये निज देहना; ग्रामानुग्रामे विहार करतां तप चोमासी पारणे, साकेतपुर मुनिराय आवे भमे घर घर बारणे ॥ ४ ॥ (चालती) इण अवसर रे सहदेवी गोखे चमी, ऋषि देखी रे राणी घण क्रोधे नडी; तेमावी रे चरबादार प्रते भणे, इण मुनिवर रे शुं करिवो छे आपणे (त्रू०) आपणे नगरे म आववा द्यो जाइ वरजो एहने, तव नफर आवे साधु पासे भलखे ऋषिरायने; ते वचन राणीतणा

नफर साधुजी आगल कह्या, विण अन्न पाणी वढ्या ततखिण जाइ वनमांहे रह्या ॥५॥ (चालती) जागी जुत्ते रे सगपण स्वारथना सहू, स्वारथ विण रे कोइ न पुत्र पिता वहू; जिम फल विण रे पंखियडा तरुवर तजे, जल पाखे रे सरवर सारस नवि भजे; (त्रूटक) नवि भजे भमरा फूल रस विण भ्रष्ट भूपति सेवका, धनहीन नरने तजे गणिका वचन जाणो देवका; ऋषि इशो भावे इणि अवसर धावि ए परि सांभली, अति रुदन करती नयण झरती टलवले तिहां वलि वलि ॥६॥

(ढाल ३ जी—देशी पृथिवीचंद कुंवरना रासनी) इण अवसर कुमर सुकोसल पूछे वात, कहो शुं दुख तुमने कांइ रोवो छो मात ? ते वात कुंवरने धाविं सवि संभलावी, कुंवर ने सांभली वंदे ऋषिने आवी; भाविभाव कुंवर तव बेठो ऋषि आगल सुविचार, धर्म कहे ऋषिराय कुंवरने ए संसार असार; धन तन योवन सजन सब इंद्रजाल जिम जाण, फाभअणी जिम जल लव चंचल तिम ए चंचल प्राण ॥ ७ ॥ नरभव पुण वलि वलि लहतां नहिय सुलंभ, समकित चारित गुण वारंवार दुलंभ; इम सांभली कुंवर दे निज सुतने राज, गुरु साथे विचरे साधे उत्तम काज;

राजतणी परि सुणि सहदेवी गोखथकी झंपावे, आरतध्याने मरिय तिहांथी वाघिणनी गति पावे; इण अवसर मुनिराय तिहांथी करता त्रिविध विहार, नवप्रसूत वाघिण जिहां छे तिहां पहुता वनह मझार ॥ ८ ॥ वाघिणी विकराली भूखी अति सपराणी, मुनिवरने देखी ते सनमुख ऊजाणी; ऋषि वाघिण देखी हियडामांहि विमासे, ए परिसह सहिशुं शूरपणे उल्हासे; उल्हासे कीरतिधर ऋषि जंपे रहो सुकोसल पूंठे, कोमल शरीर तुमारो आगल भूखी वाघिणी ऊठे; कहे सुकोसल सांभल भगवन सिंहतणो होय सिंह, वाघिणीतणो परिसह सहिशुं मने न धरिशुं बीह ॥ ए ॥

(ढाल ४ थी) (चालती) ध्यान धरे तव श्री जिनवरतणो, गिरुआ सहगुरु संभारे घणो; (त्रु०) जिनतणो भाखित मने चित्ते तजे च्यारे आहार ए, चउशरण आदरि थयो आगल शूर सम अवतार ए; वाघिणी विराणी तव ऊजाणी पुहवी पाड्यो मुनिवरु, आराधना द्ये कीरतिधर ऋषिराज सारे सुंदरु ॥१०॥ (चालती) ध्यान धरे मुनि सकल सोहामणुं, केवल पामे विमल न खापणुं. (त्रू०) आपणुं कारज साधु सारे अंतगड शिवपुर लहे, तव चरी वाघिण हृदय उपर

सुखं वलूरवा त्रहे; दंत देखे रेख सोवंन विमासे वाघिण इशो, ए वदन दीसे अति सलूणो पुत्र माहरानो जिशो ॥ ११ ॥ (चालती) जाति संज्ञारे पूरव आपणी, अति पछितावो आणी वाघिणी. (त्रू०) पापणी में पाप मोटो कर्यो बूटिश किणिपरें, निज पुत्रनी में करी हत्या झूरती वनमांहि फरे; आंप गति चिंतवे वाघिण खिण ऋषि वचन कहे धर्मतणो, वाघिण न कीजे खेद मनमांहि फले कृत कर्म आपणो ॥१२॥ (चालती) इम प्रतिबोधी ऋषिपाय लाग ए, विनय करीने अणसण माग ए. (त्रू०) लागे ए ध्याने धर्मकेरे थाय देवी ततखणे, शुन्न ध्यान रंगे साधु संगे काज सीझे ऋषि "ब्रह्म" न्नणे, एह्वा ऋषिना चरण नमतां पापपंक सहु टले, पामिये अविचल मुगतिना सुख मनतणा वांछित फले ॥ १३ ॥

श्रीजिनआज्ञानी सज्झाय.

जिणवर देव सुसाहु गुरु, श्री केवलीनो न्नाख्यो धर्म; सदा प्रतिपालो ए. हियडे जेहने वसे, तिणि जाण्या हो जिन मतनो मर्म, सदा प्रतिपालो. मन केरो हो चतुर सुजाण, कदाग्रह टालो,

प्रभु सरिखो हो किशो पराण के हियमें संभालो, एक चित्ते हो श्री जिनवर आण ॥ सदा ॥ १ ॥ जे जिन आण विराधशे, ते लहेशे हो दुर्गतिनो दंड ॥ सदा ॥ मस्तके धरी जे पालशे, तसु महिमा हो जगमांहे अखंड ॥ सदा ॥ २ ॥ कोइ प्रवाहे वाहिया, कोइ माने हो कुलक्रम आचार ॥ सदा ॥ विणु जिण आगम उलखे, किम लहिये हो दुत्तर भवपार ॥ सदा ॥ ३ ॥ विधि मारग मूकी करी, जे राचे हो कुल लोकप्रवाहि ॥ सदा ॥ लोहशिला ऊपर चडी, किम तरशे हो ते बूडी नाव ॥ सदा ॥ ४ ॥ सुगुरु वचन साचो सही, मत राचो हो तुमे कुगुरु कुबोल ॥ सदा ॥ विधि प्रवाह सम मा गणो, मत तोलो हो खल गुल सम तोल ॥ सदा ॥ ५ ॥ काच रतन जग भ्रम नड्यो, हीरागर हो छे विरले ठाण ॥ सदा ॥ जे नर होशे पारखु, ते लेहशे हो जगमांहि पिछाण ॥ सदा ॥ ६ ॥ आगम में भाख्यो खरो, इम जाणो हो तुमे हियडा मांहि ॥ सदा ॥ तहत करीने आदरो, मत भूलो हो गाडरी प्रवाह ॥ सदा ॥७॥ सोनो सुरभि हो जाणीए, जिणि कुल क्रम हो श्री जिनवर आण ॥ सदा ॥ आगममति जसु चित वसे, त्रिहुं काले हो ते संघ

प्रमाण ॥ सदा ॥ ८ ॥ मुज मने हठ कोइ नहीं, नवि मंड्यो हो कोइ नवो विनाण ॥ सदा ॥ श्री पार्श्वचंद्र इम वीनवे, मुज भव भव हो जिन आण प्रमाण ॥ सदा ॥ ए ॥

अथश्री सनतकुमारजीनो रासो.

(हुं वालिहारी जादवा—ए राहनी ढब.)

सुखकर शांतिजिन नमुं, सदगुरु सेव करुं निशि दीस तो; तास पसाए अनुसरुं, सीझे मननी सकल जगीश तो ॥ १ ॥ सनतकुमार सोहामणो, उत्तम गुणमणिनो अहिठाण तो; चक्रीश्वर चोथो सही, चतुरपणे सोहे सपराण तो ॥ सनत० ॥ २ ॥ जंबुद्वीप भरते अछे, कुरुदेशे दक्षिणा भर सार तो; आससेन राजा घरे, सहदेवी सुत सतन कुमार तो ॥ शन०॥ ३ ॥ सकल कला लक्षण भला, वाघे जिम द्वितीया चंद तो; तास सधुर लघुवयथकी, मित्र सुगुण ते सिंहमहींद तो ॥ स० ॥ ४ ॥ एक दिन रमवा वन गयो, मित्र सहित मेली समुदाय तो, अवलि परिने घोडले, चड्यो

कुमर वही अटवी जाय तो ॥ स० ॥ ५ ॥ इम सांभली नृप दुख धरे, मित्र गयो लघु तेहनी लार तो; अटवी मांहि भमंतडां, वरष एक हुवो तिणिवार तो ॥ स० ॥ ६ ॥ एक प्रस्तावे जोवतां, सार सरवर परिमल अरविंद तो; जाणी सरोवर ते गयो, दीठो कुमर करतो आणंद तो ॥ स० ॥ ७ ॥ बहु नरनारी परवर्यो, नाटक गीत विनोदे लीण तो; मित्रे कुंमरने ओलख्यो, अंगोअंगे मिले सुप्रवीण तो ॥ स० ॥ ८ ॥ हरखी पूछे कुंवरने, ए संपद किम लाधी देव तो; विपुलमति ततखिण कहे, सांभलो चरित्र कुंवरनो देव तो ॥ स० ॥ ए ॥ जिण अवसर तुमथी टली, हयवर जाय महावन मांह्य तो; भूख तृषाथी पीडियो, मरण लहे घोडो तिणि ठाय तो ॥ स० ॥ १० ॥ आतप योगे कुंवरने, लागी तृषा पण न लहे वारि तो; गयो ते आंबा छांयडी, मूर्च्छागत हुवो तिणि वार तो ॥ स० ॥ ११ ॥ वृक्षनो वासि देवता, मान सरोवरथी आणी नीर तो; छांटे सरीर कुमारनो, सज्जथयो पीवे जल धीर तो ॥ स० ॥ १२ ॥ अमर प्रते कुंवर भणे, वपु दाझे दवनी परें धारतो; मुजने तिण सरोवर धरो, जिम शीतलतन करुं अपारतो

॥ स० ॥ १३ ॥ तिणे ते परे कीधो सही, खेद टले कुंवरनो जामतो; क्रोध कलित वैताढीनो, जक्ष असंख पहुतो ताम तो ॥ स० ॥ १४ ॥ देखी आपदमांहि पडयो, वैरसंभारे पुरव जेह तो; रूप करे बीहामणो, तो पिण कुंवर न बीहे तेह तो ॥ स० ॥ १५ ॥ वाय विकुर्वे अति घणो, हणे कुंवरने मोगर घाय तो; वलतो कुंवरे ताडियो, जक्ष हुवो तन खेद अगाह तो ॥ स० ॥ १६ ॥ कोप्यो सुर तिण ऊपरे, आणी नाखे गिरि परचंम तो; थयो सचेतन कोपशुं, जक्ष कियो कुंवरे शत खंड तो ॥ स० ॥ १७ ॥ गयणांगणे जोवा भणी, आवे सुर विद्याधर कोडि तो; वृष्टि करे कुसुमां तणी, जय जयकार करे करजोमी तो ॥ स० ॥ १८ ॥ इम जश लेइ चालियो, देखे नंदन वनह मझार तो; आठ रमणि रंभासमी, तेज जिशो दामिनी ऊबकार तो ॥ स० ॥ १९ ॥ निरखी हरखी माननी, विकश्वर वदन करे अति फार तो; कुंवर कहे तुमे कोणछो, जिणे ए वन कीधो शिणगार तो ॥ स० ॥ २० ॥ दिन थोडो कुंवरी भणे, प्रियसंगमपुरि छयो विश्राम तो अछे इहांथी आसनो, कुंचिक पुरुष देखाडे गाम तो ॥ स० ॥ २१ ॥ राय भवने लेइ गयो, भवन

वेगे तस दीधो मान तो; ऋषिनो वचन मिळ्यो सही; जिणें कहियो एहवो अहिनाणतो ॥ २२ ॥ मानससर जे आवसी, जक्ष तणो जय करसी जेह तो; ए कन्या आठे तणो, होसी वर तेहीज निःसंदेह तो ॥ स० ॥ २३ ॥ इम कहि ते परणाविया, वासभवन सूतो सुविचार तो; सेज थकी धरणी पडयो, जागतां देखे एह प्रकार तो ॥ स० ॥ २४ ॥ मनही विमासी चालियो, एकलमल्ल अटवीने संग तो; गिरिशिखरे जिहां घर अछे, देखि गयो तिहां मन रंग तो ॥ स० ॥ २५ ॥ करुणास्वरे एक कामिनी, करत जपे मुखे सनतकुमार तो; तिणे ते पूछी एम कहे, मनने मेल तेहज भरतार तो ॥ स० ॥ २६ ॥ सांभली पुर साकेतनो, सुरभिचंद राजा घर नारि तो; चंद्र जसा मुज मायडी, दूत एक आव्यो सुविचार तो ॥ स० ॥ २७ ॥ रूप देखाडयो कुमरनो, तिणि मुजने तस ऊपर नेह तो; बीजे ठामे मागणों, तात कियो सुणी मादरो तेह तो ॥ स० ॥ २८ ॥ गोखें चढी हुं तिणसमे, विद्याधर अपहरी तिवार तो; इण थानक मूकी गयो, इम कहेतां वलि हुइ ते वार तो ॥ स० ॥ २९ ॥ असनवेग खेरींदनो, सुतवज्रवेग उपाडे नारि तो; ततखिण कुव-

रे ते हण्यो, धरणी पड्यो मुष्टिप्रहार तो ॥ स० ॥ ३० ॥ सनतकुमारे ते वरी, अस्त्रीरत्न सुनंदा नाम तो; रूपगुणे अति आगली, चक्रीश्वर सुखनो अतिधाम तो ॥ स० ॥ ३१ ॥ तस भगनी संध्या वली, आवी बंधव मुओ देखी तो; कोपे चडी वली उपसमे, निमित्तवचन संभारे विशेष तो ॥ स० ॥ ३२ ॥ जे तुज बांधवने हणे, ते ताहरो होसी भरतार तो; इशो कहीने कुमरशुं, पाणी-ग्रहण करे तिणि वार तो ॥ सु० ॥ ३३ ॥ तिण अवसर दोय आविया, विद्याधर बोले विख्यात तो; तुम ऊपर आवे चढी, जे तुम पुरुष हण्यो तस तात तो ॥ स० ॥ ३४ ॥ भवनवेग नरपति थकी, चंद्रवेग वली मेली साथ तो; आया तुम सेवाभणी, करो कृपा अम ऊपर नाथ तो ॥ स० ॥ ॥ ३५ ॥ तिण अवसर संध्यावली, विद्या खचर संबंधी जेह तो; कुवरने आपे सही, असनवेगशुं झूझे तेह तो ॥ स० ॥ ३६ ॥ वढतां वार घणी थइ, असनवेगनो कीधो घात तो; राज लियो सवि तेहनो, पाले सनतकुमार विख्यात तो ॥ स० ॥ ३७ ॥ विद्याधर सवि ओलगे, सुख विलसे सुर जेम उदार तो; चंडवेग इम वीनवे, सोकन्या परणो सुजसार तो ॥ स० ॥ ३८ ॥ एक दिन

मुजने दाखव्यो, पाणिग्रहण तणो अहीनाण तो; आठ रमणि जे परणशे, भवनवेग राजानी जाण तो ॥ स० ॥ ३९ ॥ पूरभवना वैरथी, जकें अस्ताक मनाव्यो हारि तो; ते कारण वली पूछियो वैर किसीपरे हुओ तिवार तो ॥ स० ॥ ४० ॥ ऋषि बोले तिहां ज्ञानशुं, सांभल एहनी पूरव वात तो; कंचणपुर राजाभलो, विक्रम जश भुवने विख्यात तो ॥ स० ॥ ४१ ॥ सारथवाह तिहां वसे, नागदत्त घरे अपछर नारि तो; विस्नुसिरी नामे सही, नृपनी दृष्टि पडी इक वार तो ॥ स० ॥ ४२ ॥ अंतेउर मांहे धरी, रक्त हुओ राजा तिण साथ तो; बीजी नारि न सांभरे, न्याय तणो तेन गणे काथ तो ॥ स० ॥ ४३ ॥ तिण दुखे ते गहेलो थयो, नागदत्त तेहनो भरतार तो; तेह वचन मुखें ऊचरे, भमे नगरे तेहिज संभार तो ॥ स० ॥ ४४ ॥ भूपति लज्जा अवगणी, अवगण्यो अंतेउर सार तो; विस्नुसिरि इक मन वसी, राजतणी छंमी कणवार तो ॥ स० ॥ ४५ ॥ राणी सवि एकठी मिली, पंचसयां मिलि कीधो मंत तो; कामण जोगे ते हणी, विश्नुसिरिनो एह वृत्तांत तो ॥ स. ॥ ४६ ॥ शोगकलित राजा हुवो, विकलपणे इम बोले बोल तो; एहनो साथ न म्हेलशुं,

मोह न छंडे तेह निटोल तो ॥ स. ॥ ४७ ॥ पासे नित बेठो रहे, मंत्रीसर कीधो परपंच तो; प्रछन पणे अटवी घरे, मृतक तणो ए जाणे संच तो ॥स. ॥ ४८ ॥ तस अणदीठे परिहरे, नृपति असनादिक सवि जोग तो; जइने देखाडे जेतले, मृतक तणो थयो नूंडो जोग तो ॥ स. ॥ ४९ ॥ तव नृप संवेगे चड्यो, दीक्षा ले मोटे मंडाण तो; चरण करण पाली करी, त्रीजे कलपे लह्यो शुभ ठाण तो ॥ स. ॥ ५० ॥ चविय रत्नपुरें ऊपनो, शेठ कुले जिनधर्मी नाम तो; समणोपासक जाणीये, जेहवो नाम तिशो परिणाम तो ॥ स.॥ ५१ ॥ सारथवाह मरण लहे, विकलपणे रमणिने राग तो; बंभण कुले ते ऊपनो, अनुक्रमे हुओ त्रिदंडी माग तो ॥ स. ॥ ५२ ॥ तप छइ मासी आचरे, रतनपुरी आव्यो इक वारतो; राय घरे पारण भणी, तेड्यो तापस अविचार तो ॥ स. ॥ ॥ ५३ ॥ जिनधर्मीने तिणे समे, पेखत सबल भराणो रीस तो; पूरव वैर तणा उदे, रायप्रते बोले सुजगीश तो ॥ स. ॥ ५४ ॥ एहनी पुंठे पारणो, मुजने छे करवानो भाव तो; राय वचन अंगी करे, तिणे तेहवो मांड्यो प्रस्ताव तो ॥ स. ॥ ५५ ॥ श्रावकनी पुंठे धरे, त्रांबानो भाजन

भरी खीर तो; दुष्टपणे जीमे तिहां, प्रगथ पलट्यो ने रुधिर शरीर तो ॥ स. ॥ ५६ ॥ वेदन शुं निज घर गयो, श्रावक मन आणे वैराग तो; दीख ग्रही काउसग्गे रह्यो, पनर पनर दिन दीसने भाग तो ॥ स. ॥ ५७ ॥ मांस भखे ते पंखीआ, इम छुइ मास तणे अवसाण तो; आराधी सुरपति हुवो, पहिले कल्प थइ तस आण तो ॥ स. ॥ ५८ ॥ तापस ते वाहन थयो, इंद तणो एरावण जाण तो; कठीन हिये तप आचर्यो, तेहनो फल एहवो निरवाण तो ॥ स. ॥ ५९ ॥ तिहांथी तिरि नरना भवे, भमत थयो अस्ताषि विमान तो; इंद चवीने तुमे थया, सहदेवी उररयणनिधान तो ॥ स. ॥ ६० ॥ ऋषिनो कहण निवेदियो, चंद्रवेगे नरवर तिणि ठाण तो; सनतकुमारे ते सुण्यो सो कन्या परणी तस जाण तो ॥ स. ॥ ६१ ॥ एवंकारें एकसो, दश अधिकी रमणिनो जोग तो; भमर रमे जिम मालती, विविध परें तिम विलसे भोग तो ॥ स. ॥ ६२ ॥ अन्य दिने इच्छा उपनी, मानससर जोवाने काज तो; इण थानक आवी रह्या, मिलन हुवो ए तुम्हशुं आज तो ॥ स. ॥ ६३ ॥ अवसर जोइ वीनवे, मित्र कुंवरने बे कर जोडी तो; चाल तुं हथिणापुर भणी, जननी पिताना

पहोंचे कोम्म तो ॥ स. ॥ ६४ ॥ इमनिसुणीने चालियो, चतुरंग दल मेली समवाय तो; वहिलो हथिणापुर गयो, जननी पिताने लागे पाय तो ॥ स. ॥ ६५ ॥ नृपति सुतने सोंपियो, राज शीयल कीधो अन्निषेक तो; आपणपे संयम लियो, कर्मखपी शिवपहुत्तो वेक तो ॥ स. ॥ ६६ ॥ पाले राज न्नली परे, अनुक्रमे ते साधे खटखंड तो; चनद रयण नवनिधि सही, पामे जश जगमांहि अखंम तो ॥ स. ॥ ६७ ॥ पूरव न्नव मुज सारीखो, इम जाणी शक्रे तिण काल तो; न्नेट विविध परे मोकली, चक्रीश्वरने अतिह विशाल तो ॥ स. ॥ ६८ ॥ एक अवसरि इसाणो, आव्यो संगम देव सुजाण तो; शक्र सन्नाए शोन्नतो, तेज तपे जिम बारह न्नाण तो ॥ स. ॥ ६९ ॥ वहुसुर पूछे इंडने, ए सरीखो रूपे वली काय तो; इंड् कहे हथिणान्नरे, सनतकुमार अधिक परे जोय तो ॥ स. ॥ ७० ॥ बंन्नण थइ सुर आविया, पेखे चक्रीश्वरनुं रूप तो; तिणि अवसरें मार्जन करे, इंड कह्यो ते तिशो सरूपतो ॥ स. ॥ ७१ ॥ न्नूप न्नणे किम आविया, मननी वात कही तिणे सार तो; राय कहे अन्निमानशुं, जो जो करी आवुं शिणगार तो ॥ स. ॥ ७२ ॥ नरपति तेहज परे

करी, सभामांहे बोलाव्या तेह तो; देखी मस्तक धूणीउं, राय कहे भंजो संदेह तो ॥ स. ॥ ७३ ॥ प्रथम थकी हीणो पडयो, तुमचो रूप निहाली जोय तो; ते परि देखी ऊपन्यो, वर वैराग धरे मन जोय तो ॥ स. ॥ ७४ ॥ चारित्र लीधो भावशुं, सुतने सोंपी सकलो राज तो; शम दम संयम आदरे, निर्मलपणे करे निज काज तो ॥ स. ॥ ७५ ॥ ऋद्धि सकल केम्हे फरे, इम करतां वोल्या खट मास तो; मुनिवर बहुलो तप करे, सात लब्धि ऊपनी तास तो ॥ स. ॥ ७६ ॥ अरस विरस आहारथी, शरीरे थया तस सोल रोग तो; इंद्र प्रशंसा सांभली, आव्या देव परीखण जोग तो ॥ स. ॥ ७७ ॥ वैद्यपणे थइ बोलिया, औषध करी टालुं तुम व्याध तो; साध कहे टालो किशी, द्रव्यत के भावत आबोध तो ? ॥ स. ॥ ७८ ॥ द्रव्यत टालुं ते कहे, भावतनी नवि जाणुं सार तो; ऋषि निज थूंके आंगली, करे भली जिम सोवन सार तो ॥ स. ॥ ७९ ॥ ए आबाधा टालवा, मुजने पण छे शक्ति विशेष तो; कर्मतणो भय टालिये, तो होय सफलो जन्म अशेष तो ॥ स. ॥ ॥ ८० ॥ दृढता दीठी तेहनी, हरखी देव गया निज ठाम तो; चारित्र पाले आकरो, सनतकुमार

उले परिणाम तो ॥ स. ॥ ८१ ॥ कुंवर पणे मंमलिक पणे, सहस पंचास वरीस तो; लाख वरष चक्रीपणे, तिम चारित्र पाल्युं सुजगीश तो ॥ स. ॥ ८२ ॥ अणसण संमेते करी, मासदिवस पाले निरतिचार तो; कर्मखपी सिद्धे गयो, नामे दुर्गति दूर पलाय तो ॥ स. ॥ ८३ ॥ सोलहसें सित्तोतरे, श्रावण सुदि तेरसे अवधार तो; उत्तराध्ययन संक्षेपथी, वृत्ति थकी कीधो उद्धार तो ॥ स. ॥ ८४ ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि पाय नमी, हरख धरी ए रचियो रास तो; मुनि उदय कहे जे जणे, तिह घर मंगल लच्छि निवास तो ॥ स. ॥ ८५ ॥ इतिश्रीमन्नापुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरशिष्यमुनिश्रीउदयचन्द्रेणकृतःश्रीसनतकुमाररासःसंपूर्णः ॥

॥ श्रीवीरप्रभुना अग्यार गणधरनी स्तुतिः ॥

(उपजाति वृत्तं)—श्रीइंद्रभूतिं पृथवीसुपुत्रं, साक्षीणलब्धादिगुणैः पवित्रम् ॥ जगज्जयद्गौतमगोत्ररत्नं, श्रीगौतमस्तौमि धृतप्रयत्नम् ॥ १ ॥ सुधासुधाकारिवचोविलासं, संपूरितानंतमनोभिलासम् ॥

विश्वैकविश्वाविलसद्विभूतिं, श्रिये श्रये श्रीमुनिमग्निभूतिम् ॥ २ ॥ श्रीवीरदत्तत्रिपदीनिधानं, सुरासुरैः संश्रितसन्निधानम् ॥ संस्तुत्य सत्यं प्रभवानुभूतिं, सेवे मुनिं संप्रति वायुभूतिम् ॥ ३ ॥ निजान्वयांभोधिविशुद्धचंद्रं, सत्यंविनिक्षिप्तसनिद्रतंद्रम् ॥ व्यक्तीकृताव्यक्तसुयुक्तिसूत्रं, व्यक्तंश्रयेश्रीधनमित्रपुत्रम् ॥ ४ ॥ श्रीभद्दिलाकुक्षिदरीहरीशं, मीनध्वजध्वंसनसद्गिरीशम् ॥ व्याख्यातविख्यातदयाख्यधर्मं, स्तुवे सुधर्माणमनंतधर्मम् ॥ ५ ॥ धनाधिपश्रीधनदेववंशे, मुक्तोपमां यः प्रवरीधरीति ॥ श्रीमंडितः सद्गुणमंडितः स्व, निर्वाणसौख्यंच चरीकरीति ॥ ६ ॥ सामौर्यजाया विजयासुधन्या, यया सुतो यो जनितो जनन्या ॥ तं मौर्यपुत्रं त्रिपदिसुपात्रं, स्तवीमि चामीकरचारुगात्रम् ॥ ७ ॥ श्रीदेवभूदेवसदेवनंदनं, देवीजयंतीसुपुनः सुनंदनम् ॥ भूमींद्रभौगींद्रगणैरकंपितं, श्रीवीरशिष्यं कथयाम्यकंपितम् ॥ ८ ॥ (उपजातिवृत्तं.) सद्वर्णलावण्यवरेण्यदेहं, सौभाग्य भाग्यासुदयैकगेहम् ॥ श्रीपारिजांतोत्तमपूरितेहं, मुदाचलभ्रातरमाश्रयेहम् ॥ ए ॥ दीनार्थिसाखीकृतनामधेयं, श्रीदत्तवंशाद्भुतभागधेयम् ॥ चातुर्यगांभीर्यगुणैरहार्यं, मेतार्यजीयाज्ञनितांगकार्यम् ॥ १० ॥ शिष्टोपदि-

ष्टाष्टमसर्वज्ञक, मानंदतासंनतज्ञव्यज्ञकम् ॥ विदग्धतासंमुदितानिज्ञकं, सदातिज्ञं ज्ञजतातिज्ञकम् ॥ ११ ॥ गेहे चरित्रेपिचसूत्रकंगाः, श्रीद्वादसांगी रचना स्वकंठाः ॥ चतुर्दशापूर्वसुपूर्वपूर्णा, जीयासुरेकादशतेसुवर्णाः ॥ १२ ॥ वपुः पवित्रीकरणैकतानाः, श्रीजैनगीर्विश्वलतद्वितानाः ॥ श्रीगौतमादिप्रवरप्रयत्नाः, गंगापगेवास्तुशिवप्रपन्नाः ॥ १३ ॥ वैमानिकव्यंतरकिन्नरेंद्राः, सुरासुरेंद्राः किलपन्नगेंद्राः ॥ सुदृष्टिदेवाः कृतसार्वदेवाः, संतु श्रिये सत्वज्ञृतां सुदेवाः ॥ १४ ॥ इति स्तुतिः ॥

श्रीगौतमस्वामीनी स्तुतिः

(उपजाति वृत्तं.) श्रीइंद्रज्ञूतिं वसुज्ञूतिपुत्रं, पृथ्वीज्ञवं गौतमगोत्ररत्नम् ॥ स्तुवंति देवाः सुरमानवेंद्राः, स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ १ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मंत्रं महानंद सुखाय यस्य ॥ ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ २ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्त-

मात्रेण कृतानि येन ॥ अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौतमो०॥ ३ ॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवंदनाय ॥ निशम्य तीर्थातिशयं सुरेन्यः स गौ० ॥ ४ ॥ त्रिपंचसंख्याशत-तापसानां, तपः कृशानामपुनर्भवाय ॥ अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ॥ ५ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्म्मिकं संघसपर्ययेति ॥ कैवल्यवस्त्रंप्रददौ मुनीनां, स गौ० ॥ ६ ॥ यस्याभिधानं मुनयोपि सर्वे, गृह्णंति भिक्षाभ्रमणस्य काले ॥ मिष्टान्नपानांबरपूर्णकामाः स गौ० ॥ ७ ॥ शिवंगते भर्त्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमिहैवमत्वा ॥ पट्टाभिषेको विदधे सुरेंद्रैः, स गौ० ॥ ८ ॥ श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये ॥ पठंति ते सूरिपदं च देवा-नंदं लभंते नितरां क्रमेण ॥ ९ ॥

श्रीफलवधिमंमण पार्श्वजिन स्तवन.

मोहन मूरति जिनतणी ए, दीठी नयणे आज; दुख दोहग दूरे टळ्या ए, सीध्यां वांछित काज. ॥ फल. ॥ १ ॥ फलवधिपुरि श्रीपासजी ए, त्रेवीशमो जिनराय, आणंद अति घणो उपजे

ए, प्रहे प्रणमंतां पाय ॥ फल. ॥ २ ॥ नयरिवाणारसी राजियो ए, आससेन नाम नरिंद; वामाराणी जनमियो ए, पोषवदि दशम जिणंद. ॥ फल. ॥ ३ ॥ देव देवी उत्सव करी ए, भरिया सवि भंमार; घण कण कंचण तेह तणो ए, नवी दीसे तिहां पार. ॥ फल. ॥ ४ ॥ बाळपणे जिण जीपियो ए, कमठतणो अभिमान, भुजंग जळतो उध्दर्यो ए, पसर्यो जग जसमान ॥ फल. ॥ ५ ॥ मेघतणी परे वरसता ए, देइ संवत्सरि दान; पोषवदि इग्यारसि वरी ए, संयमश्रीय प्रधान ॥ फल. ॥ ६ ॥ चैत्रवदि चोथें दिन एं, पाम्यो केवलनाण; भविक जीव प्रतिबूझवेए, कर्यो अभिनव भाण ॥ फल. ॥ ७ ॥ चौत्रीश अतिशयशुं सदा ए, सोहे श्री जिन पास; श्रावण आठमि उजली ए, पाम्यो शिवपुरि वास ॥ फल. ॥ ८ ॥ आशापूरण सुरतरु ए, चिंतामणि सम देव; नर सुर शिवसंपद लहे ए, जे करे तुमची सेव ॥ फल. ॥ ९ ॥ मुनि रामचंद रंगे भणे ए, वाचक श्रीशिवचंद शिष; अहनिशि सेवा तुमतणी ए, देजो श्री जगदीश ॥ फल. ॥ १० ॥ इति ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन.

सुंदर भाव आणीने नमशुं, अरीहंतपयअरविंद; विनय करी वलि वलि वीनवशुं, स्वामी सुमति जिणंद. ॥ १ ॥ स्वामी शुभमति दीजे हो, अम अवर न को आधार; नाथजो करुणाकीजे हो, तुम गिरुआ गुणभंमार. ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ श्रीजिन गर्भे थकां जननीए, नपनी सुमति अपार; सुमतिनाम दीधो तिणकारण, सिद्धारथ नरदार ॥ स्वा०॥३॥ ए शिक्षा आपी तुमे अमने, छंमो चारे कषाय; इंद्रिय पंच दमी वश वरतो, दुःख सहु जिम जाय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ ममता मोह सवि छंमीजे, लीजे मुनिनो वेष; राग रोष बे वैरी टालीजे, ए जिननो नपदेश ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ तुम सिद्धांत सुणयो सहगुरु मुखे, जाणयो विमल विचार; धन यौवननो गर्व न कीजे, एह अथिर संसार. ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ (ढाल बीजी.) स्वामी यौवन धन में जाणयो कारिमो काचो, केतेक दिवस मांहे जाणजो साचो. मोराराजाको वचन मोरे हियमे लागो, आरंभ परिग्रह छंमी जागोरे जागो ॥ मोरा० ॥ ७ ॥ जीव मेरीरे मेरी काहेको

ममता कीजे, साथे तो न कांइ आवे आउखो छीजे. ॥ ८ ॥ जीव स्वारथें सहुवे सगो सनेह दाखे, परन्नवे जातां प्राणीने न कोइ राखे ॥ मोरा० ॥ ९ ॥ जीव चेतीने जाणे कां नही जीवित जातो, मोहमय मदिरा पीने मत हुए मातो ॥मोरा०॥ १० ॥ स्वामी तपतो न शकुं करी कोमल काया, न जाणुं किमे तूटशे मोहनी माया ॥ मोरा० ॥ ११ ॥ जीव आतम शकति संजम विलंबारे, शील मय सन्नाह सजी अपणतारे ॥मोरा०॥ १२ ॥ स्वामी तुमेज माता तुमेज न्नाया, आणशुं संजम देजो श्रीजिनराया ॥ मोरा० ॥ १३ ॥ जागो आरंन्न परिग्रह छंमी श्रीजिनमारगें लागो, आगे इणन्नावे अनंता जीवनो न्नवसागर न्नय न्नागो ॥ मोरा० ॥ १४ ॥ श्रीविजयदेवसूरीश्वर पन्नणे नरन्नवसफल करीजे, डुंगारुा मंरूण सुमतिजिणेसर चरण सदा सेवीजे ॥ मोरा० ॥ १५ ॥ इति॥

श्रीसिमंधर जिनवर स्तवन.

श्रीसिमंधर गुणमणिआकर, नमिये निज शिरनामीरे; न्नवन्नयन्नंजन मनमथगंजन, जग

जीवन शिवगामी रे. ॥ १ ॥ दयालराय त्रिभुवनतारक जाएयो रे, भव भव चरण शरण मोहितोरे ऐसो मारो मन मान्यो रे. ॥ दया० ॥ २ ॥ क्षेत्र विदेह विजय पुखलावती, पुंमरीकनि पुरी रायारे; श्रेयांश घरे सत्यकी पटराणी, तास उयरे प्रभु आयारे ॥ दया० ॥ ३ ॥ वृषभलंबन मिशि सेवतो जिनपाय, तजि करि मनको मान रे; सहस अढार शीलंगरथधारक, केवलज्ञान जगे भानुरे ॥ दया० ॥ ४ ॥ विहरमानतीर्थंकर पेखे, सोवन वन्न शरीर रे; अनंतीरथ ठवणा आकारे, मंदरगिरि जिम धीररे. ॥ दया० ॥ ५ ॥ धनधन ते नरनारी जाणो, जे तुम सेवे पायरे; देशना सुणे निरंतर अहनिशि, आणी मनशुं भाव रे ॥ दया० ॥ ६ ॥ नि-शिदिन नाम जपुं तुमचो, आणी मन आणंदरे; श्री समरचंद्र पभणे इम साहिब, मधुकर जिम अरविंदरे ॥ दया० ॥ ७ ॥ इति ॥

वर्त्तमानचौवीशजिन चैत्यवंदनम्.

जय प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, जय अजित सुरासुर विहिय सेव; जय संभव मिलियो नमं

देव, जय अभिनंदन जित अरिय वेव ॥ १ ॥ जय सुमति कमल सम सुराभासास, जय पदम प्रभ जनसुखनिवास; जय सत्तम जिणेश्वर श्री सुपास, जय चंद्रप्रभ शशि धवल भास. ॥२॥ जय सुविधि दुरितदुखदावपाथ, जय शीतल शिवपुरिमाग साथ; जय त्रिभुवन जन श्रेयांश नाथ, जय वासुपूज्य वंदो सहाथ ॥ ३ ॥ जय विमल विमलगुण कणय कंति, जय सुरतरु अधिको जिन अनंत; जय धर्म जिणह भव हरे भ्रांति, जय चिंतामणिथी अधिक शांति ॥ ४ ॥ जय कुंथु केवलनाण भाण, जय अरजिणवर महिमानिहाण; जय मल्लि सुगुणमणि तणिय खाणि जय मुनिसुव्रत जसु मधुरि वाणि ॥ ५ ॥ जय नमि नमिये मन करी उल्लास, जय नेमि तज्यो रमणिविलास; जय पुरिपादाणी जगह पास, जय वीर वचन करियो प्रकाश ॥ ६ ॥

(कलश.) इम जिन चउवीश नम्यो जगीश, शीशें कर जोडी करोय; दुखदुरगति टालो सेवकपालो, समर चंद इम उच्चरीय ॥ ७ ॥

श्रीसमेतशिखरजीनु स्तवन.

(देशी अलबेलानी.)

संमेतशिखर जुहारियेरेलाल, आणी अधिक उत्साह भविप्राणीरे; संघ भगति करतां थकांरेलाल; मनमां धरि उच्छाह ॥ भ. ॥ समेत० ॥ १ ॥ तीरथ ए सुरतरु समोरेलाल, वांछितफलदातार । भ. भावें भवियण जे नमेरेलाल, ते पावे भवपार । भ. ॥ समेत० ॥ २ ॥ शुभफल चिंतवतां हुवेरेलाल, पंथें पाप पलाय; । भ. । दरिसण करतां तेहनुंरेलाल; भरमतिमिर मिट जाय । भ.॥समेत०॥ ३॥ पंथ सुगम सोहामणोरेलाल, जात्रीजन सुखठाम; । भ. । अति घण गाम नदी जिहांरेलाल, वन वाडी आराम । भ. ॥ स० ॥ ४ ॥ चाले जिन गुणगावतारे लाल; वाजे ताल मृदंग । भ. । रास रचन जिन सन्मुखेरे लाल, पावन करी निज काय । भ. ॥ स०॥ ५ ॥ हरखित चित्त उछरंगशुंरे लाल, भविजन केलि करंत; । भ. । आवें भावें भावनारे लाल, सुकृत भंडार भरंत. ॥ स० ॥ ६ ॥ सुमन थइ शिखरे चडेरे लाल, भविजन चडते भाय; ।भ.। मूरती वीश जिणंदनीरे लाल, विधि चरचे चित्तलाय ।भ.।

॥ स० ॥ ७ ॥ प्रणम अजित जिन पूजियेरे लाल, बीजा संभव जाण; ।भ.। अभिनंदन जिन तीसरारे लाल, चोथा सुमति वखाण ।भ.॥ स०॥ ८ ॥ पद्मप्रभु जिनपंचमारे लाल, छट्ठा जिन सुपास; ।भ.। सप्तम चंद्रप्रभु आठमारे लाल, सुविधि सुविधि सुविलास ॥भ.॥ स० ९॥ नवमा शीतल सेवियेरे लाल, दशम श्रेयांस जिणंद; ।भ.। विमल जिणंद अग्यारमारे लाल, सुंदर शिवसुखकंद ।भ.॥ स० ॥ १० ॥ वंदो अनंतजिन बारमारे लाल, तेरमा धरम जिनेश; ।भ.। चउदमा शांति प्रभु भणोरे लाल, शांति करण सुविशेष ।भ.॥ स०॥ ११॥ कुंथुजिणेसर पनरमारे लाल, सोलम अरजिन जाण; ।भ.। मल्लि सत्तरमा ध्याइयेरे लाल, जाणी गुणमखिखाण । भ. ॥ स० ॥ १२ ॥ मुनिसुव्रत अढारमारे लाल, नमि इगणीसमा सार; ।भ.। पार्श्व जिणेसर बीशमारे लाल, सेवो सुखदातार ।भ. ॥ स०॥ १३ ॥ बीश तीर्थंकर इणगिरिरे लाल, सिध्या कर्म खपाय; ।भ.। जगमें डुंगर परवडोरे लाल. सकल गिरां गिरिराय । भ. ॥ स० ॥ १४ ॥ लोचनरतिमुनिचंद्रशुरे लाल (१७१२) दोलीदिन शुभ जाण; । भ. । यात्रा करीमुनि कर्मसीरे लाल, हुवो जन्म प्रमाण ॥ भ. ॥ स० ॥ १५ ॥ इति ॥

श्रीवासुपूज्यजिनराज स्तवन.

सकल मनोरथ पूरवे ए, जगजीवन आधार; वासुपूज्य नित वंदिये ए, सेवकजनसाधार ॥ १ ॥ देव लोक दशमा थकीए, चंपापुरि अवतरीय; वसुपूज्य नूप वखाणिये ए, जयादेवी उर धरीय. २ फागण वदि चनदशदिने ए, जन्म्या पूरे मास; दिशाकुमरी उपन्न मिलिए, सूइकम करे उल्लास. ॥ ३ ॥ चनसठ सुरपति आविया ए, मेरु शिखर लेइ जाय; सुरवर गुण गावे घणा ए, उल्लट अंग न माय ॥ ४ ॥ न्हवण करीने आणीआ ए, मूक्या जननी पास; नरपति तव उत्सव करे, पुगीय मननी आश ॥ ५ ॥ महिष लंछन मिस उलगे ए; सित्तर धनुष देहमान; हिंगलो प्रवालां जाणीए ए, शरीरतणो ए वान ॥ ६ ॥ समतारससागर जिशो ए, मंदर गिरिजिम धीर; सोमवदन सोहे सदा ए, मनमथगंजण वीर. ॥ ७ ॥ वरष लाख अढार लगी ए, कुंवर पणे जगदीश; मायताय सज्जन तणी ए, पूरे सर्व जगीश ॥ ८ ॥ राजतणी मति मन नहि ए, लोकांतिक सुर आवे, मधुर वचन करि वीनवे ए, जीनवरने चित त्रावे. ॥ ए ॥ दान देइ एक वरष लगी ए, त्रिण शत कोडी

अठयाशि; भविय जीव उपकार करी, लाख अधिक वली अस्सी.॥१०॥ चौथ तप चारित्र लेइए, सह-
संबक वन मांहे; छशय पुरुष संयम वरीय, हीएमे अतिहि उछाहे ॥ ११ ॥ परमान्न पारणुं प्रथम,
सुनंदराय घरि कीध; भाव धरी ते एम कहे ए, मानवनो फल लीध. ॥ १२ ॥ मास एक छद्मस्थ
पणे ए, शुकल ध्यान प्रभु ध्यावे; तरबर्ले कर्म खपी करिय, केवलज्ञान ते पावे ॥ १३ ॥ सुरनर
बहु महिमा करे ए, चौत्रीश अतिशय गाजे; वाणि अमृत वरसताए, गुणपांत्रीश बिराजे ॥१४॥ छाशठ
गणधर थापिया ए, महिमा गुणह निधान; सहस बहुत्तर मुनिवरुए, किया अतिहिं प्रधान ॥१५॥ लाख
एक साहुणी मिलि ए, तप संयमनी खाण; सुमति गुपतिनीखप करे ए, पाले जिननी आण. ॥१६॥
श्रावक व्रत पाले खरा ए, पन्नर सहस दुइ लाख; श्राविय सहस छत्रीय अधिक, चार लाख जिन भाख.
॥१७॥ इण परिवारे परिवर्या ए, पहुवी करे विहार; चोपन लाख वरष लगी, पूरो संयम धार. ॥१८॥
साधु छशय साथ लइ ए, चंपानयरी आवे; मास दिवस उपवास करी, पछे शिवगति पावे. ॥१९॥
नाम ठवे द्रव्य भाव भण्या, श्री अनुयोगदुवार; अरिहंत भावे वंदिये ए, लहिये भवनो पार. ॥ २० ॥

(कलश.) इम विक्रमनयरें महिमा सुंदर बारमो, जिनवर मुज मिळ्यो ए, जगसंकट चूरे वांछित पूरे, सुरतरु मुज आंगणे फळ्यो ए; (श्री.) समरचंद्र सूरींद्र शिष्य, श्रीशिवचंद्र मुनिइम कहे ए, शिवसुख आपे मुगति थापे हेजें शिवरमणि लहे ए. ॥ ११ ॥ इति ॥

श्रीपार्श्वनाथजिनवर स्तवन.

जयनिरुपमगुणि निकलंक देव, जय अमरनारासुर विहित सेव; जय जगजंतुजण स्वामी हेव, जय दुरितपणासण लग्न छेव. ॥ १ ॥ जय केवलजच्छी नाणनाण, जय सोम गुणिहिं चंद्रह समाण; जय त्रिभुवन वर्त्ते जास आण, जय कमठ हठीनो मोम्योमाण. ॥ २ ॥ जय मोहवल्ली कापणकुठार, जय कर्म्म हणीने लह्यो पार; जय नीलकमल सम काय जास, जय जवियण जण मण पूरि आश. ॥ ३ ॥

(ढाल बीजी) उत्तम मनोरथ सहुए मुज फळ्या, जो जेट्यो श्रीपास; मनोहर मूरति नयणे

निरखतां, हियडे थाय उल्लास. ॥४॥ में प्रनु पेख्योरे पास सोहामणो, सेवकजनसाधार; दंसण देखीरे वलि वलि वीनवुं, श्री आससेणमल्हार. ॥ में०॥ ५ ॥जिण दिन वेलारे सफली ते घडी, वंदुं श्री जिनराज; परषद पूरीरे द्ये जिन देशना, सारे नवियण काज ॥ में० ॥ ६ ॥ परषद बारे रे कहिशुं विगतशुरे, ते श्री गुरुमुखें धारो; वैमानिकदेव आवें उत्तरे, वेसे इशान मझार ॥ में०॥ ७ ॥ बीजी परषद रायराणा जके, धर्म सुणे मन नावि; त्रीजी परषद नारी मनुष्यनी, सुणे नन्नी तिहां आवि ॥ में०॥ ८ ॥ पूर्व दिशिथीरे आवी हुतथ, बेसे बहुला साध; जिनने प्रणमेरे हर्ष हिये घणो, टाली मन आबाध ॥ में० ॥ ए ॥ बीजी परषद साहुणी गुणनरी, वैमानिकनी रंन; त्रीजी परषद नावे नावना, मनमांहे न धरे दंन ॥ में० ॥ १० ॥ दक्षिण दिशिथीरे आवी नैऋतें, जगगुरु प्रणमें जोइ; ज्योतिकचक्रनीरे देवी इहां, पहिली परषद होइ ॥ में० ॥ ११ ॥ नवनपतिनीरे देवी परषद, बीजी बेसे रंगि; त्रीजी परषद आवे व्यंतरी, वचन सुणे मनरंगि. ॥ में० ॥ १२ पश्चिम दिशिथीरे आवी वायवें, पहिली परषद हेव; चंदा सूरा निज परिवारशुं, सेव करे नितमेव ॥ में०॥

॥ १३ ॥ बीजी परषद भवनपति सहु, अहनिशि सारे सेव; जिनगुण गावे उल्लट अति घणे, त्रीजी व्यंतर देव. ॥ मैं० ॥ १४ ॥ (ढाल त्रीजी.) परषद प्रति जिनजी कहे, तुमे सुणजोरे भवियण लोय; मणुअ जन्म छे दोहिलो, एतो लाधोरे हवे आलें म खोय. ॥ १५ ॥ धनवाणी जिनवरतणी, जिणे सुणतां हुए परमाणंद; पाप टले पोतातणां, जव जोउं वामानोनंद. ॥ धन० ॥ ॥ १६ ॥ हिंसा मृषा निवारीए, नविलीजे अदत्तादान; ब्रह्मव्रत रुडुं पालिये, टालिये अंगथी अभिमान ॥ धन० ॥ १७ ॥ केवल पामी सिद्धि गया, तार्या तिहां सघला लोक; षट कायाना पीहरु, न उपाव्यो केहने मन शोक ॥ धन० ॥ १८ ॥ (कलश.) जगि भीमभंजण कर्म गंजण जिण त्रेवीशम वंदिये, तसु नाम जपिये कर्म खपिये नेहवल्लि निकंदिये; नयणोर नयरे वछराज शाह घरि देहरासरि जिन संथव्यो, सूरींद श्री पार्श्वचंद शिष्य मुनि हापराजें वीनव्यो. ॥ १९ ॥

॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजश्रीपार्श्वचंन्द्रसूरीश्वरशिष्यमुनिराजहापराजेनकृतं स्तवनं. ॥

———०———

आत्मशीक्षानी सज्झाय.

श्री यति मारग आदर्यो, परिहरि घर जंजाल प्राणीजी; राग ने दोष न छंडिया, किम वंचीजे काल ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ चतुरपणे चित्त चिंतजे, भवजलनिधि उत्तार प्राणीजी; पसर्यो पहट परा लगें, किम पामिश तस पार ॥ प्राणी० चतु० ॥२॥ पहिलो जाणी सोहेलडो, अब कांइ दोहिलो माग; प्रा० चपल तुरंगम छे चम्यो, थिर करि कर ग्रहि वाग. ॥ प्रा० च० ॥ ३ ॥ नयणे निरखि श्रवण सुण्यां, खिण खिण आणिश रोष; प्रा० विरस कहीश रसनारसें, कर्मतणो ए दोष ॥ प्रा० च० ॥ ४ ॥ शुरपणो तुज त्यां लगी, नहु देखे करवाल; प्रा० देखी देखि महारणी, भाजशि जिम शिशुपाल ॥ प्रा० च० ॥ ५ ॥ भाव घणे थयो संयमी, कायरपणो करीश; प्रा० परिसह सहेवा अवसरे, बेंभव कांइ गमीश. ॥ प्रा० च० ॥ ६ ॥ विण जोखम लखमी नही, सुखे न उघमे बार; प्रा० स्वर्ग तणो इम सविकहे, ए संसार असार ॥ प्रा० च० ॥ ७ ॥ नयण अंजण काने कुंडल नाशा मुकताधार; प्रा० कायर वीर पटंतरो. परतख देखो विचार ॥ प्रा० च० ॥ ८ ॥ अण पाम्युं कांई नथी, दुख सुख वार अनंत

प्रा० तोही तुं थाके नहीं, चउगति मांहि भमंत ॥ प्रा० च० ॥ ए ॥ जब कांई तुज ऊपजे, खिण मन अनुभवरीस; प्रा० अमरस वीसारी करी, समर समर जगदीश ॥ प्रा० च० ॥ १० ॥ वलि वलि नरभव दोहिलो, लाधो आलीम हार; प्रा० राग दोष बे परिहरि, आवागमण निवार ॥ प्रा०च० ॥ ११ ॥ गुरु मुखें प्रवचन तें सुण्या, भण्या गुण्या बहु वार; प्रा० तिहां कषाय सवि टालवा; पदे पदे एहिज सार ॥ प्रा०च० ॥ १२ ॥ इम जाणी व्रत पम्विज्या, दशविध यतिनो धर्म; प्रा० प्रथम तिहां करवी क्षमा, एहिज मूल मरम्म ॥ प्रा० च० ॥ १३ ॥ बोलि वचन पलटिये, ए गिरि गुरुत्त दोष; प्रा० इम गिणि दोष निवारिये, आणी मन संतोष ॥ प्रा०च० ॥ १४ ॥ अग्नि पवन जिम साथिया, क्रोध मान तिम होय; प्रा० दहतां भगरशे किशुं ? इशो विमासि जोय ॥ प्रा०च० ॥ १५ ॥ क्रोधें परदुख ऊपजे, क्रोधें मृषा बोलाय; प्रा० अदत्त असभ्य संभाषणे, सहुए व्रत डुखाय ॥ प्रा० च० ॥ १६ ॥ पच्चक्खाण करी परिहर्या, परिग्रह ने आरंभ; प्रा० हुं जाणुं ते भंम्यिा, माया लोभ भगंभ. ॥ प्रा. च० ॥ १७ ॥ बकुश कुशील जे जिण कह्या, सकशाई श्रुत

मांह; प्रा० ते छदमस्थ न जाणीए, जाणया श्री जगनाह ॥ प्रा० च० ॥ १८ ॥ भमतां त्रिभुवन जोवतां, आनक किहां न लाध; प्रा० क्षीमा रमणिवर पामिया, शरणाइ श्री साध ॥ प्रा० च० ॥१९॥ मुक्तिरमणि एहनी सखी, इहशुं थिर घरवास; प्रा० करतां तेहने मेलिशे, थाशे मन उल्लास ॥प्रा० ॥ च० ॥ २० ॥ श्रीपार्श्वचंद्र सुरी शीखवे, आपे आप संभाल; प्रा० सुगुरु साखें जे भाखियो, तेह वचन प्रति पाल ॥ प्रा० च० ॥ २१ ॥ इतिश्रीयुगप्रधानाचार्यश्रीपार्श्वचंन्द्रसूरीणाकृतः स्वाध्यायः

श्रीरिषभदत्त ने देवानंदाजीनी सज्झाय.

(देशी झांझरिया मुनीनी.)

वीरजिणेसर आवियाजी, माहणकुंम निवेश; चेई बहुसाले रह्याजी, देता धर्म उपदेश. जगजीवन विरजी तुम सम अवर न कोय, मातपिता जिणे पाठव्याजी, आप पहेलां सुरलोय. ॥ जगजीवन, ॥ १ ॥ रिषभदत्त सुणी ए कथाजी, उल्लट अंग न माय, देवानंदाप्रति भणेजी, जिन

वंदन पातिक जाय. ॥ ज० ॥ २ ॥ नाणे ज्ञाणसम दीपताजी, हरे अनाण अंधार; सो जिन वीर पधारियाजी, साथे श्रमण परिवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ महालाभ नामे सुणयाजी, अभिगम अधिक विशेष; किंबहु वंदण पूजयेजी, सांभलवो उपदेश. ॥ ज० ॥ ४ ॥ चालि प्रिय तसु वंदवाजी, इह परभव सुखकार; तहत्त करी हरखे कहेजी, बेकर जोडी नार ॥ ज० ॥ ५ ॥ कौटुंबिक नर तेडि याजी, देइ तेहने आदेश; धर्म यांन तुम सज करोजी, चाले ते सविशेष ॥ ज० ॥ ६ ॥ शमखुर सोवन मेखलाजी, रुप्यासिंग सुचंग; नाथ राशि सविरुपमेंजी, नीलकमल करि रंग ॥ ज० ॥ ७ ॥ इश्या वृषभ जोत्री करीजी, घंटारव अभिराम; तहत्त करी ते तिम कर्युंजी, सेवक सार्यो काम ॥ज० ॥ ८ ॥ न्हाण विलेवण तत्र करेजी, पहिरे बहु शिणगार; धर्म यांन आवी चडेजी, नारी ने भरतार ॥ज०॥ ९ ॥ निज परिवाररे परिवर्याजी, आवे जिनवर पास; पंच अभिगम साचवेजी, वंदे मन उल्लास ॥ज०॥१०॥ पंच अंगें नमि वीरनेजी, उभी देवाणंद; वदन कमल जिनवीरनोजी, निरखे मन आणंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खीर अमीसम घन झरेजी, विकसे नयन विशेष; रोमराय सवि उल्लसेजी, कंचुक

तणे विशेष. ॥ ज० ॥ १२ ॥ अनिमिष दृष्टिये जोवतांजी, दीठी गौतमस्वामि; वंदी पूछे वीरनेजी, ए नारी कुण नामि ॥ ज० ॥ १३ ॥ सुण गोयम जिनवर कहेजी, ए मुज पूरव मात; रिषभदत्त निश्चे पिताजी, ए सुण निरती वात ॥ ज० ॥ १४ ॥ पूरवपुत्र नेहें करीजी, आणे अति अनुराग; अनिमिष दृष्टिये जोवतांजी, सुणि धर्म धरे वैराग ॥ ज० ॥ १५ ॥ समतारस चित्तपूरियोजी, कीधो मस्तकें लोच; यथाविधि चारित्र लियोजी, करे कषाय संकोच ॥ ज० ॥ १६ ॥ अंग इग्यार त्रणे गुणेजी, चारित्र पालें सोय; संलेखणा रिषभदत्त करेजी, करम खपाव्यां दोय ॥ज०॥ १७ ॥ इणि परे चारित्र पालियोजी, देवाणंदा माय; चंदणबाला गुरुणी कनेजी, पाले निरतिचार ॥ ज० ॥ १८ ॥ खपी कर्म केवल लहीजी, पाम्यां अविचल ठाण; तेहना गुण हिये धरेजी, ब्रह्म करे प्रणाम. ॥ ज० ॥ १९ ॥ इति ॥

श्री मेघकुमारमुनिनी सज्झाय.

चारित्र लइ चित्त चिंतवेरे हां, मनमें मेघकुमार; दीक्षा दोहिली, शिरतांइ पगरी लगीरेहां,

कदि आवे करतार, दीक्षा दोहिली. पाली जावे केम, साधु संताप एम, नही मुज उपर प्रेम, कूड कहु तो नेम. ॥ दी० ॥ १ ॥ रात हुइ खटमासनीरेहां, वेदन वधती थाय; ॥ दी० ॥ दुखरां दाधां माणसांरेहां, जनमारो किम जाय ॥ दी० ॥ २ ॥ आवे जावे उपरेरेहां, अर यतियांरी भीड; ॥ दी० ॥ ए सहु आप सवारथी रेहां, कुण जाणे परपीड ॥ दी० ॥ ३ ॥ आगें देखी आवतां रेहां. हस मिलता सहुकोय; ॥दी०॥ हिव साथी हुवा पछी रेहां, सार न पूछे कोय ॥ दी० ॥ ४ ॥ दीक्षालघु नीचे सुवेरेहां, काढण लागा कैद; ॥दी०॥ साचो काम सर्यां पछे रेहां, वैरी हुवा वैद ॥दी०॥ ॥५॥ जो हुं पहिली जाणतो रेहां, तो न करतो ए काज; ॥दी०॥ हिव हुं पिण परवश पड्योरे हां मुष्टिझली वडराज. ॥ दी० ॥ ६ ॥ अथवा कयुं न गयो अजेरे हां, शरम न कीधी जाय; ॥ दी० ॥ आपणे हाथे आपणोरे हां, पग कहो केम कपाय ॥ दी० ॥ ७ ॥ ए उघो ए मुहपति रेहां, वीनवशुं महावीर; ॥दी०॥ मे म्हांरे थें थांहेरे रेहां, सस्यो वस्यो (सर्योवर्यो) इणसीर. ॥दी०॥८॥ इम चितवीने आवियारे हां, महसमें जिणवर पास; ॥ दी० ॥ वीर कहे किम साधुजीरे हां, दीसो आज उदास

॥ दी० ॥ ए ॥ हाथीरे नव तुं हुवोरे हां; पर उपकार प्रधान; ॥दी०॥ सार करी शशलातणीरे हां, दीधो अन्नयादान ॥ दी० ॥ १० ॥ सात दिवस वेदन सहीरे हां, बीजें नव बहु न्नांत; ॥ दी० ॥ तिण दुख आगे ए किशुं रेहां, न करे केम निरांत ॥ दी० ॥ ११ ॥ वचन सुणया महावीरना रेहां, श्रवण अमृत समान; ॥दी०॥ ईहापोहें उपनो रेहां, जातीसमरण ज्ञान ॥ दी० ॥ १२ ॥ दीधो मिछा डुक्करुं रेहां, अन्निग्रह लीधो एह; ॥दी०॥ नयणपखे न करुं कदे रेहां, उषध हुं इण देह. ॥ दी० ॥ १३ ॥ चतुरपणे चारित्र लियो रेहां, सूधे मन परिणाम; ॥दी०॥ मुनि श्रीसार नमे सदारे हां; त्रिविध त्रिविध शिर नाम. ॥ दी० ॥ १४ ॥ इतिश्रीवादीन्द्रश्रीपार्श्वचंद्रसूरीन्द्र विनेयश्री सारमुनिराजेनकृतः स्वाध्यायः ॥

रात्रिन्नोजन निवारक सज्झाय.

माडी, खिण लाखीणोरे जाय. (एदेशी)

अवनी तल वारु वसेजी, कुंरूळ पुर अवतार; शेठ यशोधर जाणीएजी, तेहना बहु कुमार

रे मानव, रात्री भोजन वार. दोष अनंता भाखयोजी; ज्युं न पमो संसार रे ॥ मान० ॥ १ ॥ रंभाजननी रूयमीजी, पुत्र सलूणारे दोय; हंसकुमर भाइ वमोजी, केशव लहुडो होयरे. ॥ मा० ॥ ॥ रा० ॥ २ ॥ एकदिन रमतां भेटियोजी, साधु शिरोमणि शूर; धर्मघोष नामे मुनिजी, आया आणंद पूररे. ॥मा०॥रा०॥४॥ साधु भणे रयणी तणाजी, भोजन बांमे जेह; तेहनी सुर सेवा करे जी, मुक्ति नही संदेहरे ॥मा०रा०॥ ५ ॥ राते रांध्यो रात जिमेजी, ए उतकृष्टो दोष; दीहां रांध्यो रात जिमेजी, पापतणो बहु पोषरे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ रात्रे रांधी म्हेलियोजी, दिवस करे आहार; ते नर पापें बांधियाजी, अति बहु जीवसंहार रे ॥ मा० रा० ॥ ७ ॥ दिवसें रांध्यो दिने जमेजी घमी तजे दोय दोय; पुन्यवंत ते नर पूजियेजी, जेनर एहवा होयरे ॥ मा०रा०॥ ८ ॥ साधु समीपें सांभलीजी, रात्री भोजन दोष; बे बांधव व्रत आदरेजी, आणी मन संतोषरे ॥ मा०रा० ॥९॥ घरआवी माता कनेजी, वालु मागे दीस; च्यार घडी दिन पाछलेजी, पिता करे बहु रीसरे ॥मा०रा०॥ ॥ १० ॥ बिहतो माता नवि दियेजी, मौन्य करीने जाय; लंघण करतां दीहडाजी, पांच इणीपरे

धायरे ॥मा०रा० ॥ ११ ॥ छठे दिवस सहोदराजी, मिलिया एकण चित्त; रातें जीमो के बाहिर रमोजी, अमघर एहवी रीतरे ॥ मा०रा० ॥ १२ ॥ हंस कुंवर तिहां खोजियोजी बालु कीधो जेह; विषहर गरलत्यांनाखियोजी, मांहिजीमाणो तेहरे ॥ मा०रा० ॥ १३ ॥ केशव कुमर वनमें गयोजी, तिहां लीधा विश्राम; यक्षदेवता आवियाजी, मति निहाले ताम रे ॥ मा०॥रा० ॥१४ ॥ ए कोइ मोटो अछेजी; व्रत न भंजे जेह; हुं भजाउं एहनेजी, माया मांडी तेहरे ॥ मा०॥रा० ॥ ॥ १५ ॥ नव जोयण नगरी रचीजी, चिहु दिशि पोल पगार; मंरूप रचिया मोकलाजी, घर घर तोरण बाररे ॥ मा०॥रा० ॥ १६ ॥ सूरज रचियो कारिमोजी, माणस रचिया बहु; केशवकुंवर जगावियोजी, ऊठो जीमे सहुरे ॥ मा०॥रा० ॥ १७ ॥ केशव कुंवर मन चिंतवेजी, हजी न थयुं परभात; ए कोइ कौतिक अछेजी, अमे न जीमुं रातरे ॥ मा०॥रा० ॥ १८ ॥ तीन प्रदक्षिणा जक्ष दियेजी, लागे केशव पाय; मांग मांग तूठो तुम्हांजी, कांइ करुं पशायरे ॥ मा०॥रा० ॥ १९ ॥ अमभाई व्रत भांजियोजी, बालु कीधो रात; हुं तुमने इम वीनवुंजी, जइ जीवाडो तातरे

॥ मा०॥रा०॥२०॥ जंकूदेवता आवियोजी, लेई मानवरूप; नमण करीने गांटियोजी, हाकी उगयो नूप रे ॥ मा०रा ॥ २१ ॥ रात्रो नाजन परिहरिजी, हुन उजेणी राज; ते पछे संयम आदरीजी, सार्या आतम काजरे ॥ मा०॥रा० ॥ १३ ॥ इतिश्रीराजचन्द्रसूरीन्द्रकृतः स्वाध्यायः ॥

श्रीनंदिषेणमुनिनी सज्झाय.

(थांरा महेलां ऊपर मेहझबुके वीजरी ए राह.)

नंदिषेण नयर मझार आव्यो तप पारणे, होलाल आव्यो० नमतां साधु सुजाण कोश्या घर बारणे, होलाल, कोश्या० विहरणारो धर्म लान्न दियो तिहां थोन्नीने, हो लाल दियोति० इहांकण अर्थनो लान्न हुए जो तो कने, होलाल हुए० ॥ १ ॥ वेश्यानो सुण बोल वळ्यो मुनि चिंतवे, हो लाल ॥वळ्यो०॥ निर्धन जाणी मुज जिम तिम ए लवे, होलाल जिम० आणी मन अहंकार लियो तिणे ताणीने, होलाल लियो० नाखे तृण करी खंरू तिहां किणजाणीने, हो लाल तिहां० ॥ २ ॥

वरषे सोवन कोडि बार तिहां तप बले, होलाल बार० लालच लागी कोश्यानमे मुनि पाय तले, हो लाल नमे० आवो मंदिर मांजी रहो घर म्हालीये, होलाल रहो० तुं पिउडो हुं नारि मिल्यां दिन गालिये, हो लाल मिल्यां० ॥ ३ ॥ मीठा वयण मलक सुणि मन पीगल्यो, होलाल सुणि० कर्म लिख्यानो दोष न जाए किण कल्यो, हो लाल न जाए० वदे इम शासन देव अछे फल भोगनो, हो लाल अछे० भमर परे रस लियो तजो दिन योगनो हो लाल तजो० ॥ ४ ॥ वेश्या गेह निवास रह्यो नंदिषेणजी, हो लाल रह्यो० न पडे नारी पासे अछे कुण तेहजी, होलाल अछे० मांगवी घर घर भीख सहु मन राखवो, होलाल सहु० श्रावक श्राविका मिष्ट वयणनो भाखवो, हो लाल वयण० ॥ ५ ॥ इणि परे भावठ भीख तजी धर्म बुझवे, हो लाल तजी० राखी आपण वेष दीक्षामग सुझवे होलाल दीक्षा० दशदश दिन प्रतिबोधी मूके श्रीजिनकने, होलाल मूके० वीत्यां वर्ष इम बार न बुझे इम किमे होलाल न बुझे० ॥ ६ ॥ जाय न सासरे आप डरां दे शीखडी, होलाल डरां० जाणी कहो मुजधर्म रहो कां तुम पडी हो लाल रहो ० वांकाजडश्रु वाद कार्यो नवि किम

पचे होलाल कर्यां० भोजन आथ अवार शीतल अन्न किम रुचे हो लाल शीत० ॥ ७ ॥ आसंगाइत नारी कहे इम आकुली हो लाल कहे० दशमे ठामे तुम ऊगो तिहां कचटली हो लाल ऊगो० नर विण बुझ्यां एह हुं न ऊठुं हवे हो लाल न ऊठुं० महारो भाजे नेम कोश्याप्रति इम चवे हो लाल कोश्या० ॥ ८ ॥ सांभली ऊठयो धीर आव्यो दिन दीक्खनो हो लाल आव्यो. हसतां बोल्यो बोल थयो मुज शीखनो हो लाल थयो० रहो रहो व्हाला पिउजी कह्यो में हास्यमें हो लाल कह्यो० मांखण टाली मान न होवे गाशमें हो लाल न होवे० ॥ ९ ॥ चोल विणठो खास किमे रंग ना चमे हो लाल किमे० बोले भाग्या मन तिको जमतां ना जमे हो लाल तिको० ततखिण तूटो नेह तिहांकिण कारिमो हो लाल तिहां० जिणरे त्रियाशुं नेह तिहां शनि बारमो हो लाल तिहां० ॥ १० ॥ वीर कने लही दीक्ख करे तप कष्टनो हो लाल करे० नरककुंमथी ऊठी कियो मन श्रेष्ठनो हो लाल कियो० संयम पालिय देव थया गुण गाइये हो लाल थया० मुनि दशरथ कहे एम शीले धर्यां सुख पाइये हो लाल धर्यां० ॥ ११ ॥

पाक्षिक प्रतिक्रमणनी स्वाध्याय.

पक्खिय प्रतिक्रमणो कहीशुं श्रुत अनुसारे, इरिया पडिकमि पडिलेहण सयल विचारे; सामायिक लेइ वंदण देइ पचखाण, करि चैत्यवंदण वलि विधिशुं करे सुजाण ॥ १ ॥ आचारिज आदे वांदिने वलि ठावे, पडिक्कमणुं काउसग्ग अतिचार चित्त ध्यावे; पारी इक लोगस कही वंदण गुरु पाय, देइ आलोइ सूत्र कही मनभाय ॥ १ ॥ पछी देइय खमासण पक्खि पडिक्कमणो ठावी, काउसग्गे अतिचार पूरवली परे भावी; एक लोगस पभणी वंदण देइ आलोवे, अतिचार सविस्तर तप पडिवजि शुद्ध होवे ॥ ३ ॥ पाखी पडिकमणासूत्र कहे वली बेसी, नकचइ इच्छा निज सूत्रे चित्त निवेसी; इह पाठ कहीने वंदण देइ विधियुत्त, पछे गुरुने नमिये सवि परिवार संजुत्त.॥ ४ ॥ उभा थइ साहमी जीवराशि खामेवी, नकइ तसउत्तर पंचपाठ समरेवी; काउसग्ग कहीने लोगस बार संभावे, पुवत्त विहिए वंदण देइ मन भावे. ॥ ५ ॥ ए पाठ भणीने वंदण गुरुपय देवा, देवसिय निमित्त वलि गुरुने खामेवा; ऊभा थइ गाथा त्रिणे एह कहीजे, आयरिय उवज्झाय आदिक

काउसग्ग कीजे ॥ ६ ॥ चारित्त दंसण वंदण सूत्रि प्रसिद्ध, बेसी स्तुति स्तव कहे अति शुद्ध; आचारिज आदे वांदी दिवसि पडित्त; निमित्ते काउसग्ग लोगस्स च्यारे जुत्त ॥ बेसणादिक च्यारे खमासण देइ सज्झाय, कर्म निर्जर अरथे काउसग्ग करि मन भाय; इणिपरे चोमासी संवछरी करीजे, तप चउथ छठ्ठम काउसग्ग विगति धरीजे. ॥ ७ ॥ लोगस जिहां बारह तिहां चउमासें वीश, नवकार एकशुं संवत्सरी चालीश; ए विधि आवश्यकनिर्युक्ति संभारे, पांच पडिकमणे त्रिणत्रणइ गमा अनुसारे ॥ ए ॥ गछाचरणाए जुइ जुइ विधि जे दीसे, छउमथ्य मनकल्पित जाणवी विश्वावीशे; सूरिंद श्री पार्श्वचंद तास श्री समरचंद शिष, पभणे आवश्यक करवा विधि निशदीश. ॥ १० ॥

श्रीधर्मनाथजिन स्तवन.

श्रीधर्म जिणवर सांभल्या, मेडतानयर मझार; चउगति केरा भय टल्या, तुम दरिसण हो हरष अपार० दीठाहो दीठा सोहग सुंदरुए, आज धन दिन हो मुज सफल विहाण, साहिब हो साहिब मोरा सुरतरुए. ॥ १ ॥ कल्याणकंद जलधरु, आलस पंकजि नाग; प्रभु मोह तिमिर

निरा कर्यो, देखाडी हो सूधो माग ॥ दीठा ॥ २ ॥ सव्वठसिद्धि विमाणथी, तेत्रीश सागर आय; पालीअ सुरसुख भोगवी, पछी लीधी हो तीर्थंकर काय. ॥ दीठा ॥ ३ ॥ जिन भरतक्षेत्रे रतन पुरियें, भानुराय सुव्रतानारि; तसु उयरे आवी ऊपना, मात पालेहो व्रत सुविचारि ॥ दीठा० ॥ ॥ ४ ॥ सुव्रता धरमें दृढ थइ, ए पुत्र कारण जाणि; नृप धर्म कुंवर कह्यो तिहां, सुत होशे हो गुण मणि खाणि ॥ दी० ॥ ५ ॥ पणयाल धनुष सोहामणो, सोवन्नवन्न शरीर; करमदल भंजे मुदा, वज्रलंछन हो साहसधीर ॥ दी० ॥ ६ ॥ चारित्र पाली केवल लही, देशना दीधी सार; निरवद्य साची सद्दहे, प्रभु आगल हो परषद बार ॥ दी० ॥ ७ ॥ धन साहु साहुणि सावया, श्राविय जे व्रतधार; जिण ताहरी सेवा करी, ते पहुता हो भवजल पार. ॥ दी० ॥ ८ ॥ सम्यग दृष्टि अविरती, सुणि ताहरा सुवचन्न; सद्दहे मन आणंद धरे, ते जाणुं हुं पुरुष रतन्न ॥ दी० ॥ धन दिवस महूरत सा घडी, जिणे पेखिये तुम पाय; उल्लासे प्रभुगुण जे स्तवे, तिणे लाधो हो सुगति उपाय. ॥ दी० ॥ १० ॥ इम मेदिनीपुरे मुज मिल्यो, पनरमो धर्म जिणंद; समरचंदें

संघव्यो, जस सद्गुरुहो सूरि श्री पार्श्वचंद्र. ॥ दी० ॥ ११ ॥

श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवन.

(राग मल्हार–सांभलजो मुनि संजमरागी उपसमश्रेणि चडियारे ए देशी.)

पासजिणेसर अति अलवेसर, भुवणदिणेसररायारे; भवभयभंजण मनमथगंजण जनमनरंजण पायारे ॥ १ ॥ जय जय जगजीवन जगनायक, दायक शिवसुख स्वामीरे; कमठमतंगजि केसरी समवड, चरण नमुं शिरनामीरे. ॥ जय० ॥ २ ॥ भवजलतारक कुगति निवारक, कारक हित जगमांहिरे; चउसठि सुरपति बहुला, सेवा करे उगाहिरे. ॥ जय० ॥ ३ ॥ क्रोध विना वैरि बहु जीत्या, अठावन सो जाणुंरे; उत्तर आठ मूलने सबला, जूय जूय करिय वखाणुं रे. ॥ जय० ॥ ४ ॥ नाण दंसण आवरण वेदनिया, मोहनीय नाम वलि गोयरे; आयु अने अंतराय मूलुत्तर, पयडि खिवी घन सोयरे. ॥जय०॥ ५ ॥ नाणी पंच दंसण नव जाणी, वेदनीय दुन्नि प्रकाशीरे; मोह अठाविश नाम तिहुत्तर, सयइक अधिक विमासिरे. ॥ जय० ॥ ६ ॥ गोत्र दु भेदे

आयु करम चउ, अंतराय पण पंच रे; संयम तप बलें ए सवि मरदि, टाळ्यो भ्रमण प्रपंचरे ॥ ज०॥७ ॥ धन धन जणणी वंमादेवी, जनम्या पुरुष रतन्नरे ॥ राजरिद्धि लीला सवि परिहरी, धर्मे कर्यो यतन्नरे. ॥ जय० ॥ ८ ॥ अश्वसेन राजाकुलमंडन, दुरितविहंडण नाहरे; नीलकमलदल घन जिम शामल, देह ते आजानुबाहुरे ॥ जय० ॥ ए ॥ नवरयणी प्रभु उंचो राजति, फणिपति सारे सेवरे; शामल पास प्रगट भुवि महिमा, सोइ हमारो देवरे. ॥ जय० ॥ १० ॥ (कलश) मेडतानयरे पास जिणवर कृपासागर मुज मिळ्यो, मनरंगि थवियो नयणे दीठो कर्म वैरी भय टळ्यो; बहु दिवस केरो मन मनोरथ स्वामी भेटये ते फल्यो, समरचंदे मन आणंदे सुखाकर इम अटकल्यो.॥११॥

श्रीमहावीरस्वामी स्तवन.

(छंद भुजंगी जेवी देशी.)

सदा शीश नामी नमुं वीरस्वामी, खपी कर्म तप संजमे सिद्धि पामी; अनते सुखे लीन सादि

अनंत, इशा सिद्ध छे जविकना दुह हरंत ॥ १ ॥ वसी त्रिशलउर सारघनवयमास, लही जनम सवि पूरवी चित्त आश; महाराय सिद्धत्थ सिद्धत्थ कीधो, तिणे तेहनो नाम वर्द्धमान दीधो. ॥ २ ॥ मही मोहए सत्त कर देहमान, घणुं लोहए स्वामी सोवन्नवान ॥ नही कोइ जगमांहि जिहना समान, तिणे कारणे जाणीए निरूपमान. ॥ ३ ॥ अछे सूर शशि कमल हरिहय गयंद, मणि काम गो कुंज सुरसाल इंद; इशा जग जलाजाव जणिये अनेक, जिणंदे किशो तासु उपमा विवेक. ॥ ४ ॥ जिम वनचर नगरना गुण न जाणे, जिम्या लाडुआ घेबर शुं वखाणे; करी बूझवे सजनने पंशुरेह, तिम स्वामीने एह उपमान एह. ॥ ५ ॥ जिनाधीश श्रीवीर त्रिहुं जुवनि वीर, जिणें जीतला मूलथी कर्मवीर; अइ केवली मनिरली लोक केरी, करी तेम जिम वाणी न गमे अनेरी. ॥ ६ ॥ करुं वीनती वीरजिण तुम्ह आगें, तुम्ह दंसणि निर्मल बुद्धि जागे; प्रज्ञो कर्मनेयोग में जनम पाम्यो, इहां जारहे जूरि पाखंड जाम्यो. ॥ ७ ॥ घणा नवनवा जुजूआ धर्म जासे, सहु वासि आपापणे लोक वासे; अनेरा तणी दृष्टि निंदे निशंक, हुउं हुं हिये हरगही इम सशंक. ॥ ८ ॥

प्रभो जे न मानंति प्रतिमा तुम्हारी, तिणे हीलि अरिहंत जिन आण हारी; वली जे जगे साधुनी नास्ती बोले, तिके विण कही पारकी गांठ खोले. ॥ ए ॥ करे व्याप व्यापारनो मूल पाखे, प्रभो ते किमे तादृशी आण राखे ? जिके धर्म आरंभ आरंभ जाणें, नही परखदे तिहज संवर वखाणे. ॥ १० ॥ सही थाय छे तेहने समिति भंग, तुम्ह साखि भाषा तणो मूल अंग; हिवं पन्नवो जे तुम्हे तेह साचुं, मन वचन तन स्वामि तुम्ह वचन राचुं. ॥ ११ ॥ प्रभु मूरतें भावि तुम्हने जुहारुं, अरी पंचमासीम मन सुगुरु धारुं; दया आणशुं धर्म करिशुं प्रमाणं, महावीरजी हीन नमोमेजिणाणं. ॥ १२ ॥ (कलश.) इम नयरी वगडी, जगेछे पगडी, तिणि गामें श्रीवीर जिण; प्रह ऊठी वंडु मन आणंडु; भवभव मांगुं तुम्ह शरण. ॥ १३ ॥

श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवन.

(उपजातिछंद.) कंटाल कंडः प्रभुपार्श्वनाथः सुरासुरैः सेवितपादपद्म ॥ विख्यातकीर्त्तिः प्रकटप्रभावो, ददातु मे सर्व्वसमीहितानि. ॥ १ ॥ (प्रभातीगोडी) गाम गुण गाम श्री

पासकंटालिये, नमिये सवि संकट कंटकं टालिये; हियफले प्राण जिन आण तसु पालिये, भावजल पापमलपंक पखालिये. ॥ २ ॥ प्रहसमे स्वामि तुम्ह नाम समरे सदा, जेह नर नारि ते लहे सुख संपदा; एक चित्त प्रणमशे मूरति ताहरी, त्रासीसे तेहने आपदा परिहरी ॥ ३ ॥ जेहना मांहिला नयन छे आवर्यां, सुद्दढ भर दंसणावरण गुण अणुसर्यां; तेह तुम्ह नामने थापना किम लहे, सूत्रि प्रकटी भणी तहत्ति नहु सद्दहे ॥ ४ ॥ पेखतां रूप सरूप प्रभु तुम्हतणो, ऊपजे हियफले हरख मुज अतिघणो; चंद चकोर रवि चक्रपंखी अली, कमल पेखेवि जिम तेहने मन रली. ॥ ५ ॥ एम प्रभु पायनी सेव नितु वंछिये, भवतणा पापसंताप सवि वंचीये; एहवी आश अम पासजी पूरजो, सेवक चित्त चिंता सवि चूरजो. ॥ ६ ॥ (इंद्रवज्रा छंद.) कंटालिकस्थान विभूषणाय, विश्वेश्वराय च्युतदूषणाय; कल्याणवल्लीवनवारिदाय, श्रीपार्श्वनाथाय नमोस्तु नित्यम् ॥ ७ ॥ इति सूरीश्वर कृतम् ॥

श्रीविमलजिन वासुपूज्यजिन स्तवन.

(चोपाइ) हरियामाली विमलजिणंद, वासुपूज्य बीजो जिणचंद; बेये वंदु मन उल्लास, सयलरिद्धि आवे जिम पास. ॥ १ ॥ लंछन सोहे जास वराह, धन धन त्रिभुवन करे सलाह, म्हाले महिष सबल शामलो, जंजे जविकतणो आमलो. ॥ २ ॥ कनकवर्ण विद्रुम तन कंति, बेय जिणेसर एके पंति; बेठा पदमासणे सोहंत, निरुपम रूपें जन मोहंत. ॥ ३ ॥ साठि अने सित्तर धनु माण, बिहुतणा किम करुं वखाण; एक जीह गुण कह्या न जाय, लाजे शिवपद स्वामि पसाय ॥ ४ ॥ वंश इखाग तणो शिणगार, केवललच्छी उरवर हार, नृप कृतवर्म अने वसुपूज्य, कुलदीपक सुरनरवरपूज्य. ॥ ५ ॥ श्यामा जया नामि जसु माय, उरसरिहंस सरिस जिणराय; महिमावंत सदा जयवंत, बेए हुवा शिवरमणीकंत. ॥ ६ ॥ गिरि संमेते चंपा नाम, नगरी पहुता शिवपुर ठाम; प्रह ऊठी तसु समरी नाम, जाव जगतिशुं करुं प्रणाम. ॥ ७ ॥

श्रीशत्रुंजयमंमणआदिजिन स्तवन.

(ढाल चालती) शत्रुंजय गिरिवर रिसह जिणेसरु, विश्वप्रकाशक निरमल दिणयरु; ज्ञवियण जणमण नयनानंद करु, सुरसंसेवित सयरंज्ञयद्दरु (त्रूटक) ज्ञयद्दरु ज्ञवना ज्ञगत केरा उत्तम गुणमणि आगरु, ठदमस्थ कोइ पार न लहे तुम्ह गुणगण जलसागरु; इंद्रादि सुर गण मिले एकठ सहु जे महामति धरु, पण लिखो न शके जिणि अनंता, वंछित दायक सुरतरु. ॥ १ ॥ (ढाल.) नाज्ञिराया तनु महिमा अति घणो, पंचसय धनु तनु अतिहि सोहामणो; प्रज्ञुनी जामलि देव न कोइ ज्ञणुं, सहु कोइ ध्यावे दरसण जिह तणुं. (त्रूटक.) जिहतणो ध्यावे नाम नितु नितु एक चित्ते प्रहसमे, ब्रह्मादि विष्णु महेश हरिहर अलखनाथ कहि नमे; जे तत्व रुचिना धणी ते जिन जाणी प्रज्ञु पय ध्यावए, रागादि वैरी जेणि जीत्या तेह शिवसुख पावए. ॥ २ ॥ (ढाल) अदबुद मुरति दीठी अति ज्ञली, एकलमल्ल प्रज्ञु पुगो मनरली; अजित जिणेसर अरिदल जीतला, सोलम जिणवर सनमुख अति ज्ञला. (त्रू.) अतिज्ञला पांमव पंच दीठा

सिद्धिपामी इणि गिरें, बिहु मास केरी करी संलेहण केवल पाम्यो सेहरें; केवल दंसण नाण सहिया सौख्य विलसे जे सदा, तसु पद नमीजे पाप खपीजे मुरति निरखीजे मुदा. ॥ ३ ॥ (ढाल) इण गिरि दीठे मन उल्लास ए, होवे निरमल बुद्धि प्रकाश ए; पूजे ततखिण वंछित आश ए, हेलें त्रूटे नव डुख पास ए. (त्रू०) नव डुःख जावे सुख पावे शुद्ध आणे नाव ए, चउकुगति केरा न हुए फेरा टले सवि संताप ए; इण ठाणि आगे जेह आव्या तासु मनवांछित फळ्या, सिद्धांत साखें सुगुरु नाखे घणा नर ते सांनळ्या ॥ ४ ॥ (चा.) श्रीथावच्चासुत सुवखाणीए, ज्ञाता धर्म्मि अंगे जाणीए; सहस पुरुषशुं इहां समोसर्या, काज विशेषे सही तेहना सर्या. (त्रू.) सर्या काज तसुद्दि रिषिश्वर सहस साथें सीधला, पंचसयशुं सेलग आरिय मुगति पहुता ते नला; जालिमयाली प्रमुख इणि गिरि अनंता मुगतें गया, एकेक कहेतां विस्तर होवे तिणि संखेपे संथुआ ॥ ५ ॥ (ढाल २ जी) सहज पाले निरुपम ते जिणवर पय वंदे, मात कहतें ऊत्तर हामा करे ते नंदे; दो दो धर्म नाख्या श्रुत चारित्र प्रकारें, कृष्णादिक वासुदेव मस्तकि

आणा धारे ॥ ६ ॥ ते वीर कही जे तप बलि कर्म खपाव्यो, जिनधर्म प्रकाश्यो धर्मसिंह तिणि भाव्यो; अरजुन आदें पंच पांडव कीधी सेव, हरपालें लीधी रूडी जिणवरदेव ॥ ७ ॥ वलि रतन चारित ते पाळ्यो प्रभु धन धन्न, जयराज लियो शिवनगरीनो अनुदिन्न; माधवनी पदवी पामे जे तुम्ह दास, हंसराज तणी परि गमन कर्युं सुप्रकाश ॥ ८ ॥ पुण्यवती प्रभु वाणी सहु भवियण आराधे, ते लीला करतां हेलां शिवसुख साधे; संपूरे मनह मनोरथ सघलां स्वामी, जीवी जे चिरमिह लीधे प्रभुने नामि ॥ ए ॥ रुजादि भवनी नासे जे ध्यान कीजे, नवकार गुणंतां नव पद माहि थवीजे; राखी मति रूडी कूडी बुद्धि सवि टाली, चंद्र जिम शीतल जीवदया व्रत पाली ॥ १० ॥ गुण पूरा जिनवर शूरा विविध प्रकार, अज्जाए दीधो ऋषभ नाम सुविचार; में गाइ ए स्तुति निज मतिने अनुसारि. वनराजी सेवे लक्ष्मी ऋद्धि विस्तारि ॥ ११ ॥ इणि गुणि प्रभु राजे चंद्रत्रिश अतिशय गाजे, जिनदंसण दीठे भवसंकट सवि भाजे; एणे परिवारे परिवरिया सूरिंद, प्रभुयात्रा कारण आव्या श्रीपासचंद ॥ १२ ॥ (कलश) शेत्रुंजगिरि श्री ऋस-

हस्वामी सिद्धि गामी संथुणयो, मरूदेवीनंदन त्रिजगवंदन जुवननायक में सुणयो, श्री पार्श्वचंद्र सूरिंद शिष्य समरचंद्र संवत्सरे, माघ मासें शुकल अष्टमि सोलसे छिहुत्तरे. ॥ १३ ॥

श्रीमहावीर जिनवर स्तवन.

(ढाल १ ली-देशी विवाहलानी-रिषभ घेरे आवे.)

श्री त्रिशलानंदन गुण जर्या, श्री वर्द्धमान जिनराय; जिणेसर पय नमु. आज मुज मन हरष अपार, जिणेसर पय नमुं ॥ १ ॥ जसु दंसणि पातक टले, वलि मन वांछित सुख थाय ॥ जि० ॥ २ ॥ त्रीश वरष घरि संवस्या, तिहां दे विविध परि दान ॥ जि० ॥ ३ ॥ आहि चारित लेवा अवसरें, छंमी राज जंमार ॥ जि० ॥ ४ ॥ बार वरष छद्मस्थ पणे, चरि तप बलि कर्म खपेइ ॥ जि० ॥ ५ ॥ आहि केवलन्यान जब पामियो. प्रजु धर्मदेशना देइ ॥ जि० ॥ ६ ॥ आही बहुल जीव प्रति बूझवी, देखाम्मे शिवमाग ॥ जि० ॥ ७ ॥ आदि साधु श्रावकना व्रत धुरें, प्रजु उलखावे समकित्त ॥ जि० ॥ ८ ॥ (ढाल बीजी-देशी विवाहलानी-मात सरसति) गोयम गण-

हर पाय पणमेविय, समकित शुद्ध गुण संथवुं ए, जासु सुपसाउले भवजलनिधितरे हेलि प्रवहण लही अभिनवोए, (त्रूटक) अभिनवो प्रवहण एह पामी जीव शिवसुख पालए, गति चार केरा टले फेरा गर्भवासि न आवए; अरिहंत देव सुसाधु गुरु वलि धर्म केवलि भाखियो, ए तत्त्व त्रिणि-ज शुद्ध जाणे तासु समकित दाखियो ॥ ए ॥ (ढाल) जीव अजीव पुण्य पाप, आश्रव वली संवर निरजरा जाणियेए; बंध ने मोक्ष ए नवे पदारथ, सासती भावमति आणीएए (त्रू०) आणीए मनशुं भाव निर्मळ जेह जगमांहि जेहवा, सद्दहिनिजथी गुरूवएसें तेह साचा तेहवा; समकित्त दृष्टि तेह बोल्या सूत्र उत्तरऊयणिए, दृष्टिराग जे दूर छंडे वंदनीय जिणवयणिए ॥ १० ॥ (समकिताधिकार) (ढाल त्रीजी—राग मल्हार) उपदेशना छे त्रिण प्रकारा विधिचरितानु यथास्थिति सारा; विधिवादें जिन द्ये उपदेश, तिहां नही हिंसा लवलेश विधि० ॥ ११ ॥ चरितवाद छे विविध प्रकारें, धर्माधर्म ने मिश्र विचारे विधि० ॥ १२ ॥ भगवते जेह यथास्थित भाख्यो, त्रिहुं प्रकारें ते पुण दाख्यो ॥ वि० ॥ १३ ॥ तेय उपदेश त्रिहुं भेदे कहियो, ज्ञेय हेय आदेये लहियो

॥ वि० ॥ १४ ॥ बिंहु नयमांहि सवि अवतरिया, निश्चयनय व्यवहारि किरिया ॥ वि० ॥ १५ ॥ (उपदेशाधिकार--ढाल चोथी--फागनी देशी.) ज्ञाषा च्यार जिनागमें ज्ञाखी जिणवर देव, इक सत्य बीजी असत्य वली त्रीजी मिश्र ज्ञेव, चउथी हिव व्यवहार जे सत्य असत्य न होइ, ए च्यारे ज्ञाषातणा ज्ञेद बेतालिश जोइ ॥ १६ ॥ च्यार ज्ञाषा ए जाणिये बिहुनो करे विवेक, सत्य अने व्यवहार जे अवसरि ज्ञाखे बेक; असत्य अने मिश्र ज्ञाषा एहतणो परिहार, करो एम जिणवर कहे जाणपणानो सार ॥ १७ ॥ पर पीमा जिहां उपजे सावद्यनो लवलेश, ते ज्ञाषा नवि ज्ञाखे कर्म खपे अशेष; केवली इम उपदेशे सत्य अने विवहार, एह मर्म उपदेशनो जाणे ते सुविचार ॥ १८ ॥ (ज्ञाषाधिकार) (ढाल पांचमी--देशी मेघकुमारना गीतनी) ज्ञगवंत ज्ञाखी जे दयाजी, ते शुद्धि संसार; सर्व जीव हितकारणीजी, पालक लहे ज्ञवपाररे जीवमा उलखे साचि तेह; बारह परषदमांहि कहीजी, पढम अंगें तसु ज्ञेयरे ॥ जी० ॥ १९ ॥ सर्व जीव हणीए नहीजी, त्रस थावर जग जेह; एहज धर्म बे शाश्वतोजी, साधु श्रावकने आदेयरे ॥ जी० ॥ २० ॥ विवहारे

छठे सातमेजी, गुण ठाणे पालंत; निश्चय ठाणे चौदमेजी, पाली कर्म टालंतरे ॥ जी० ॥ २१ ॥ जिनशासनमांहि वागरेजी, मुखे दया धर्म एक; पण सूधुं ते नवि लहेजी, तेहनो एह विवेकरे. ॥ जी० ॥ २२ ॥ अल्पवृष्टि यति गोचरीजी, नदी उतरणो गाम; मृषा वचन धर्म कारणेंजी, निद्रा त्रीजे जामरे ॥ जी० ॥ २३ ॥ किंबहुना केई पनवेजी, पाप अढारह ठाण; आचिरवा ने गांन्दवाजी, कहावे अम्हे सुजाणरे ॥ जी० ॥ २४ ॥ जिन विधिवादे जे कहेजी, न लहे ते जिन धर्म; हिंसा धर्मींति जाणीएजी, नहु पामे शिवशर्मरे ॥ जी० ॥ २५ ॥ (दयाधिकार) (ढाल छठी—मुनिवर गोचरी करी वल्या ए देशी) कालें अनंते दोहिलां, लहतां एयअंगगजी; ज्यारे ए जिणवरे भाखिया, उत्तरज्झयणि चउरंगिजी ॥ चेतन० ॥ २६ ॥ चेतन करि लही आतमा, धरि वैराग मनमांहिजी; विषय कषाय सवि परिहरी, करिवो धर्म उछाहिजी ॥ चेतन० ॥ २७ ॥ लाख चोराशी जीव योनि भमी, त्रिभुवन नव नव वेषजी; पुण्य संयोगें पामियो, जनम ते आरिज देशजी ॥ चे० ॥ ॥ २८ ॥ जाइ कुल बल रूवया, इत्यादिक गुण जुत्तजी; माणसनो भव दोहिलो, सावय कुल

संजुत्तजी ॥ चे० ॥ २ए ॥ सांभलवा श्री जिनतणां, वचन उल्लटां जाणिजी; सुगुरु मुखें साची सद्दी, विधिपूर्वक मति आणिजी ॥ चे० ॥ ३० ॥ सद्दहणा साची सद्दी, तत्त्वातत्त्व विचारजी; जेहवां जिणवर वागर्यां, एहिज समकित सारजी ॥ चे० ॥ ३१ ॥ वीरिय तप संयम विषें, मन तनु वचने शुद्धजी; नरवर नारी पाली थया, शिवनगरी मांहि सिद्धजी ॥ चे० ॥ ३२ ॥ (परमात्मा-धिकार) (ढाल ७ मी–विषयें न गंजिए ए देशी) श्रावक धर्मने योगिजे, तेहना गुण इकवीश; स्वाभाविक अंगे वसेजी, जाणीजे निशिदीसोरे ॥ ३३ ॥ गुणनिधि संसीये, ते श्रावक सुविचारोरे; समकित शुद्ध धरे, पाले ते व्रत बारोरे ॥ गुण० ॥ ३४ ॥ अक्षुद्र इंद्रिय पंच पडवडां, प्रकृतियें शशि सम सोम; सर्व लोकने प्रिय करे, अक्रूरपणो मनि प्रेमोरे ॥ गुण० ॥ ३५ ॥ पापथकी बीहे सदा, अशठ सदाऽखिस होय; लज्जा दया गुण मनि वसे, अवगुणि मध्यस्थ सोयरे ॥ गुण० ॥ ३६ ॥ सोमदृष्टि सहिजे सदा, गुणना रागी जाणि; धर्मकथा अहनिशि करे, सुपक्षग्राहक मनि आणिरे ॥ गुण० ॥ ३७ ॥ दीरघदरशी अहनिशें, विशेषतणा वलि नाण; थिवर केडें चालें सदा,

विनीत भाव सुवखाणरे ॥ गु० ॥ ३८ ॥ उपगार कियो नहु उलवे, पर हित चिंते जेह; एवमादि गुण सहितशुं, विचरे श्रावक तेहोरे ॥ गु० ॥ ३९ ॥ (श्रावक गुणाधिकार) (ढाल ८ मी. देशी उलालानी) पंच महाव्रत पाले, विषय कषाय जे टाले; पंचाचार न लोपे, समकित तरु दृढ रोपे ॥ ४० ॥ पंच सुमतिशुं विचरे, त्रिण गुपतिनी खप करे; एक विध असंयम वरजे, राग दोष दोय तरजे ॥ ४१ ॥ त्रिविध त्रिविध षटकाय, राखे रखावण भाय; राखतां अनुमोदे, आपणपे परनोदे. ॥ ४२ ॥ आरंभ परिग्रह उंभी, ब्रह्मचर्य प्रीति मंभी; सही परिसह बावीश, नव कल्पे सुजगीश. ॥ ४३ ॥ दश विध यति धर्म सूधो, पाले न करे ए गूधो; बारह भावण भावे, तप बलें कर्म खपावे ॥ ४४ ॥ चारित दंसण नाण, त्रिणि रयण गुण खाण; सूधां जेह आराधे, तसु दंसणे प्रीति वाधे ॥ ४५ ॥ वीरजिन तीरथें वरते, वरस एकवीश सहस निरते; एहवा साधु आराधुं, अहनिशि शिवसुख साधुं ॥ ४६ ॥ (साधु गुणाधिकार) (ढाल ९ मी. राग धनाश्री) हवे सद्दहणा सूधी करूंरे, श्रीश्रुतने अनुसार; दृष्टिराग सवि दूरे परिहरीरे, करी परीक्षा सार ॥ ४७ ॥ जिनवरे इम

कह्योरे, किरिया मांहे मिथ्यात; सद्दहणा मांहि सावद्य जिहां हुवेरे, न हुवे जिन मत वात. ॥जि०॥ ॥ ४८ ॥ त्रिणे पक्ष विस्तारे कह्याजी, सूयगंग बीय खंध; धर्म अधर्म ने मिश्र विच रियेजी, किरिया ठाण संबंधि ॥ जि० ॥ ४९ ॥ धर्म पक्षमांहि मुनिवर कह्याजी, अरधमि मिथ्यादृष्टि; मिश्र पक्षमज्झ श्रावक सवि लह्याजी, जेहनी सूधी दृष्टि ॥ जि० ॥ ५० ॥ अधर्म उथापे धर्म थापे यतीजी, मिश्रे मिश्र रहंति; थापन उथापन तेहनी नवि करेजी, पुण्य पाप न कहंति ॥ जि० ॥ ॥ ५१ ॥ धर्म मिश्र आरंभ देखे जिहांरे, मुनिवर रहे उदास; बीअ अंगे अध्ययन इग्यारमेंजी, एह भाव सुप्रकाश ॥ जि० ॥ ५२ ॥ मिश्र गमि जे पुण कहे यतीजी, खटकाय पातिक सोय; ए हवे थानक पाप जिको कहेजी, आजीविका छेदक होय ॥जि०॥ ५३॥ एहवी सद्दहणा सूधी जेहनीजी तेहिज सुगुरु सुसाधु; एहवा गुरुने श्रावक जे भजेजी, पामे सुख निरबाध ॥ जि० ॥ ५४ ॥ (सद्दहणाधिकार. ढाल १० मी देशी विवाहलानी. इडकण) राग द्वेष तुम्हे टालो, जिनवर ये उपदेश; रागादिक वश जे थया, पाम्या तिणे क्लेश. रमणी रागे नरके गयो, ब्रह्मदत्त खटखंड

स्वामी; राजतणो लोज्नी थयो, कोणिके ढठी पामी ॥ ५५ ॥ घेबरक्षिपक ऋषीश्वर, द्वेषें नरके पहुतो; इम जाणी द्वेष परिहरो, मुनिवर मांहि महंतो; राग द्वेष दोय पाकुवा, पाप करम जाणी टाले; ते सवि कर्म खपाविय, ज्ञानकला अजुआले ॥ ५६ ॥ (राग द्वेषाधिकार. ढाल ११ मी देशी विवाहलानी. तुं तिहां पं.) संयम तप शुध आदरो ए, जिम तुम्हे लहो ज्नवपार तो; ५७ जिणवर इम कहे ए, संयमि तपि सुख होय तो, मुक्तिपद जीव लहे ए ॥ ५८ ॥ बारह ज्नेदे तप तपो ए, संयम सत्तर प्रकार तो ॥ जि० ॥ ५९ ॥ संजमे करम आश्रव टले ए, तप कर्ये निर्जरा होय तो. ॥ जि० ॥ ६० ॥ सराग संयम जे करे ए, ते लहे शिवसुख वासतो ॥ जि० ॥ ६१ ॥ वीतराग ज्नाव जे निरवहे ए, माणे शिवपुरि वास तो ॥ जि० ॥ ६२ ॥ (तप संयमाधिकार. ढाल १२ मी. माइ धन सु.) जिनप्रतिमा वंदिये, जिन वंदन फल होय; शाश्वती अशाश्वती बिहु प्रकारे जोय; शासय चिहुं नाम, ऋसह चंदाणण नाम, वर्द्धमान वारिषेण ति वंदो मन अज्निराम ॥ ६३ ॥ धन धन जिनशासन वीतराग जिहां देव; सुर असुर विद्याधर जेहनी सारे सेव. राग दोष क्षय

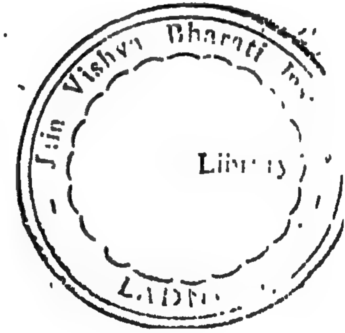
कीधा, सिद्ध सासय ठाणि; ते नमीये नितु नितु, केवल दंसण नाणी ॥ धन० ॥ ६४ ॥ अशाश्वती प्रतिमा अनेक गामागर गण, ते विविध प्रकारे रिषभादिकनी जाण; सासतीअ भवणवण जोइस विमाणिय देव, सविहुने जाणिये ते वंदु संखेव ॥ धन० ॥ ६५ ॥ अध उरध तिरछी दिशियें असंख प्रसादि, असंख जिनप्रतिमा वंदनीय जाण अनादि; चारणमुनि वंदवा जाय रुचकवर दीव, इम जाणे आराधे समकितधारी जीव ॥ धन० ॥ ६६ ॥ पहेले बीय त्रीजे पंचम नवंगे जाणो, अंग पंचमे छठे सत्तम दशमें वखाणयो; सम्यक्दृष्टि साधु श्रावकने अधिकार; जिनप्रतिमाराधन दीठो सूत्र मझार ॥ धन० ॥ ६७ ॥ (श्री जिनप्रतिमाधिकार) (ढाल १३ मी. दोढी राहनी.) अरिहंतना गुण सार अहनिशि मन धरुं, हेलें भवजलनिधि तरुं ए, जसु मांहे नहिय अनाण, क्रोध मान माया लोभ रति अरति रूपे सुंदरु ए; निद्रा शोक अलीक वचन चोरी भय जीववध अवगुण ए नही ए, प्रेमक्रीडा ने प्रसंगमय हासादिक दोष रहित वंदु सही ए ॥ ६८ ॥ जसु अतिशय चउतीश, सहज शरीरना कर्म क्षय सुरना कर्या ए, चार इग्यार उगणीश, वलि भाषागुण पांत्रीश

ते हियमे धर्या ए; अष्टमहा प्रातिहारि सहित सदा जिन त्रिभुवनतारक मन धरुं ए, भगति करुं अनुदिन नाम ठवण करी आराधुं भवभय हृह ए ॥ ६९ ॥ पूरे गुणे अरिहंत केवल नाणिय, केवल दरसीये जगे ए, नाण दंसण चारित्त पूरण प्रभु कने छाशा छदमछ जां लगि ए; तार्यां जीव अनेक साहु साहुणी श्रावक श्राविका श्रुति कह्यारे, ते संख्या सुप्रसिद्ध वीरजिणेसरे कर्म खपी शिवसुख लह्या ए ॥ ७० ॥ (अरिहंत गुणाधिकार.) (ढाल १४ मी राग मेवाडो) सिद्धतणा गुण गातां मन रमे ए, सुणतां हर्ष अपार; कर्म खपावीने पहुता शिवपुरी, निरुपम गुणभंडार ॥ ७१ ॥ पनर प्रकारेजी सिद्ध सवे नमुं, केवल दंसणनाण; सहित सदा वे क्षायिक भावशुं, परिणामिक जीव ठाण ॥ पन० ॥ ७२ ॥ वर्णय पंचय पंच रसा नहीं, आठे फास दुगंध; पंच संठाणय वेदन कोइ तिहां, तनुसंग भव न संबंध ॥ पन० ॥ ७३ ॥ सवठसिद्धथीजी बारह जोजने, मुक्तिशिला अभिराम; एक योजनेजी भाग चोवीशमें, सिद्ध अनंतनो ठाम ॥ पन० ॥ ७३ ॥ असल अरोगीजी ठाणं सासयं, बाधा रहित अनंत; एक एक भेदेजी सिद्ध अनंत छे, नमतां थाए दुख अंत ॥ पन०॥

॥७४॥ (कलश) इम वीरजिणवर तेजि दिणयर भवियमणहर संथुण्यो, श्रीसमरचंदे मन आणंदे चवदछंदे संजुत्त; वडतपागछ श्रीसूरि शिरोमणि श्रीपार्श्वचंद्र पसाउले, नरनारी इक चित्ते भणे भावे आणंद पामे संभले ॥७५॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागछाधिराजश्रीसमरचंद्रसूरिणाविरचितः







॥ श्री ऋषभ स्तुति प्रारम्भः ॥

सुखकारणमुत्तमभंऋषभं॥ऋषभाङ्कितपादपयोजयुगम् ॥ युगमानभुजं नृपनाभिभवं॥ भव-
सागरतारण पोतनिभम् ॥ १ ॥ निभभूधरभेदनजम्भरिपुं रिपुरोगरणादिकभीतिहरम् । हरमुत्कट-
मारनिराकरणे ॥करणेन्दु कलातमसं सकलम् ॥२॥ कलकाञ्चनदेहरुचिंरुचिरं ॥ चिरसंचित पापवि-
नाशकरम् । करपादविनिर्जितकोकनदं ॥ नदतुछयगुणोदकचूर्णमलम् ॥३॥ मलयानिलशीतलशान्त
रसं ॥ रसनागुणरंञ्जितसर्वजनम् । जननीजनकोपमितं जगतो ॥ जगतोधिकमाधिवनेसततम् ॥ ४ ॥
सततावचतुर्विधतूर्यलवं ॥लवसप्तमदेवमनोभमनम् नमनोत्तरतुछविहितफलं ॥ लयलीलालीलमनःप-
वनम्॥५॥पवनाम्बुशिखिक्षितिचारिदयो ॥ दयभाजनमेजनतारहितम् । हितहेतुसुदर्शितभावशतं ॥
शतपञ्चधनुस्तनुमानधरम् ॥ ६ ॥ धरणिसमसर्वसहेछगुणं ॥ गुणभूमिकलाशशिनं शमिनम् ।
शमिनन्दिकरंनरनाथसुरा सुरवद्यमहंसुभजामिजिनम् ॥ ७ ॥
इत्थंप्रथमजिनेन्द्रोजालोरपुरप्रतिष्ठितस्तमितः शंविदधातुजनानां सदास्तुतःपार्श्वचन्द्रेण ॥ ८ ॥

इतिश्रीऋषभजिनस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्री पार्श्वनाथचैत्यवन्दनम् ॥

पार्श्वनाथनमस्तुभ्यं विघ्नविध्वंसकारिणे ॥ निर्मलसत्प्रज्ञानन्द ॥ परमानन्ददायिने ॥१॥ अश्वसेनावनीपाल ॥ कूलचुडामणे प्रभो ॥ वामासूनो नमस्तुभ्यं ॥ श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वर ॥२॥ क्षितिमण्डलमुकुटं धार्मिकनिकटं विश्वप्रकटं चाप्रभटं भवरेणुसमीरं जलनिधितीरं सुरगिरिधीरं गम्भीरम् । जगत्त्रयशरणं दुर्मतिहरणं दुर्धरचरणं सुखकरणं श्रीपार्श्वजिनेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रम् ॥ ३ ॥ कमठे धरणेन्द्रेच स्वोचितं कर्मकुर्वत्तु यः प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेस्तुवः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जिनेन्द्र स्तुतिः ॥

प्राचीमेकां पुनाना मिह सुरसरितं वीक्ष्य कारुण्य धाम्ना ॥ धृत्वा मूर्तीश्चतस्त्रः परम हिमवता येन गङ्गाचतुष्कम् । आविश्चक्रे चतुर्दिक् समुदितजनता शुद्धये शुद्धवर्णो ॥ व्याख्या वाणीविलासैः स दिशतु कुशलं श्रीयुगादीश देवः ॥ १ ॥ सम्यक्पश्यन्त मन्तःसमवसृतिजुषो यस्य रूपस्वरूपं ॥

शक्रं लेखा अशेषा दशशतनयनं नान्वमन्यन्त धन्यम् । इष्टुं दृष्टिद्वयेनाखिलमपि युगपन्नैव तत्पा-
रमन्तः ॥ स श्रीमान् शान्तिनाथः प्रथयतु मम तां भूयसीं सौख्यलक्ष्मीम् ॥ २ ॥ स ध्यानज्वलने
ज्वलत्यविकलं यस्येन्द्रनीलछवे ॥ देहस्य द्युत एव केवलवधूपाणिग्रहं कुर्वतः । तन्वन्तिस्म समंततः
प्रसृमरा आकृष्य दुर्वाङ्कुर श्रेणीकार्यमसौ मुदं वितनुतां श्रीपार्श्वनाथः प्रभुः ॥ ३ ॥ सिध्यङ्गनोद्वाह
विधौ सतृष्णो निष्णातचेतास्तुरगाधिरूढः ॥ प्रौढाप्सरःसंहतिगीयमानगुणःश्रिये वीरवरो जिनोऽस्तु
॥ ४ ॥ भवाब्धिजाताः सुगुणावदातवृत्तस्वभावा हृदि पुण्यभाजाम् । येहारमुक्ताइव संवसन्ति
दिशन्तु तेऽन्येपि जिनाः सुखानि ॥५॥ ये बीजमात्रां त्रिपदीं निधाय मनोवनौ बुद्धिजलेन सिक्ताम् ॥
चित्रं क्षणात्कोटिगुणामकार्षुस्तन्वन्तुतोषं गणधारिणस्ते ॥ ६ ॥

॥ श्री वासुपूज्य स्तुतिः ॥

श्रीमन्तं वासुपूज्यं प्रबलबलजराज्ञीरुकुम्भीन सिंहं ॥ शश्वल्लीलाविलासं त्रिभुवनपतिभि र्वन्द्य-
पादारविन्दम् । विन्दन्तं विश्वलोकं तदनु विगणनातीत मेवाप्यलोकं शुद्धात्मानं निरेनोमलममलम-

तिं वीतरागं पणाय ॥ १ ॥ जनकोनामवरिष्ठो वसुपूज्यः पूज्यगुणनिधिः श्रीमान् । जननीजयेति
विदिता तयोः सुतो जयति जिनराजः ॥ २ ॥ राजोपमवक्त्रं ख्यात चरित्रं सुगुणपवित्रं सन्मित्रं-
तेजोजितमित्रं त्रस्यदमित्रं त्यक्तकलत्रं जीवत्रम् । सुखतरुजीमूतं भगवन्तं रिपुजयवन्तं धीमन्तं
विद्रुम समदेहं गरिमागेहं विगतस्नेहं वन्देहम् ॥ ३ ॥ श्रीमन् वासुपूज्य जिननायक नितिविनीति
भृतां सुखदायक । संसाराम्बुनिधौ मां तारय मज्जन्तं किल दुरितं वारय ॥ ४ ॥ तारय जनतारक
दुःखनिवारक दर्शनलालस मेनमलं तव नाम जपन्तं मनसि धरन्तं मधुकर माश्रित पदकमलम् ।
ये ये तव सेवा देवाज्ञाजो राजंस्तेते परम पदं लघुलीना दीनानाथ निलीना कृत्वादीनं मदनमदम्
॥ ५ ॥ श्रीजिनजन्मावसरे ऽध्येषु मितासु दिक्कुमारीषु आयातासुचन्नवनं विमानतिस्मेति सुरियु-
क्तम् ॥ ६ ॥ भक्तामरनाथ कृतस्मरमाथ दुरितदवपाथ इहोन्नतधारी जितादितपक्ष दमोत्तमदक्ष
नताखिलयक्ष सदान्नयहारी । जिनागमसार सुदर्शितपार विदितसुविचारजगत्सुखकारी ममार्क-
मदेव सुदर्शनदेव सुलब्नपदसेव भवारि निवारी ॥ ७ ॥ श्रीजिनशासन गुरवे चित्तेष्टदान सुरतरवे

श्रीवासुपूज्यनाम्ने नमोऽर्हतेऽहर्निशं कुर्वे ॥ ७ ॥ वज्रर्षन्ननाराचनाम संहनन विज्ञायुत समचतु स्रविशाल देहसंस्थानविराजित । अष्टादशशतसुमानलक्षणगुणधारक सप्ततिचापाङ्गमजिनेश बहु दोषनिवारक । सद्दामश्रृङ्गलाञ्छनवचनरचनारञ्जितसर्वजन श्रीवासुपूज्य पूज्याङ्घ्रियुगजयजीनाखि-लवृजिन ॥ ए ॥ इत्थं श्री द्वादशोऽर्हन् विगतमललसत्केवलज्ञानन्नानु र्न्नव्याम्नोजप्रकाशप्रवण करन्नरोद्योतिताशेषविश्वः । वंशोक्ष्वाकूदयाद्रिस्फुटमुकुटसमो डुस्तमस्तोमहारी न्नत्त्यासौ पार्श्व-चन्द्रस्तुत इह न्नवतान्नूरिन्नूत्यै जिनेन्द्रः ॥ १० ॥

॥ अथ परमात्मस्तवः ॥

(उपजाति छंदः) सत्वेषुमैत्रीं गुणिषु प्रमोदं क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् ॥ मध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ सदा ममात्मा विदधातु देव ॥ १ ॥ शरीरतः कर्तु मनन्तशक्तिं विन्निन्न मात्मान म-पास्त दोषम् ॥ जिनेन्द्र कोशादिव खड्गयष्टिं तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥ २ ॥ डुःखे सुखे वै-रिणि बन्धुवर्गे योगे वियोगे न्नवने वने वा ॥ निराकृताशेषममत्वबुधेः समं मनो मेऽस्तु सदा-

पि नाथ ॥ ३ ॥ मुनीश लीनाविव कीलिताविव स्थिरौ निखाता विव बिंबिता विव ॥ पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा तमोधुनानौ हृदि दीपिका विव ॥ ४ ॥ एकेन्द्रियाद्या यदि देव देहिनः प्रमादतः संचरता यतस्ततः क्षता विभिन्ना मिलिता निपीलिता ममास्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा ॥ ॥ ५ ॥ विमुक्तिमार्गप्रतिकूल वर्तिना मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया ॥ चरित्रशुद्धे र्यदकारि लोपनं तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ॥ ६ ॥ विनिन्दनालोचनगर्हणै रहं मनोवचः काय कषाय निर्मितम् ॥ निहन्मि पापं भवदुःख कारणं भिषग् विषं मन्त्रगुणै रिवाखिलम् ॥ ७ ॥ अतिक्रमं यं यमपि व्यतिक्रमं जिनातिचारं स्वचरित्र कर्मणः ॥ व्यधा मनाचार मपि प्रमादतः प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥ ८ ॥ क्षतिं मनः शुद्धिविधे रतिक्रमं व्यतिक्रमं शीलवृते र्विलङ्घनम् ॥ प्रभोतिचारं विषयेच वर्तनं वदन्त्यनाचारमिहातिशक्तिताम् ॥ ९ ॥ यदत्र मात्रा पदवाक्य हीनं मयाप्रमादादिह किञ्चनोक्तम् ॥ तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी सरस्वती केवल बोधिलब्धिम् ॥ ॥ १० ॥ बोधिः समाधिः परिणाम बुद्धिः स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः चिन्तामणिं चिन्तित

वस्तुदाने त्वां वन्द्यमानस्य ममास्तु देव: ॥ ११ ॥ यः स्मर्यते सर्व मुनीन्द्रवृन्दै र्यस्तूयते सर्व नरा
मरेन्द्रैः यो गीयते वेदपुराण शास्त्रैः सदेवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १२ ॥ यो दर्शन ज्ञान सुख स्व-
भावः समस्त संसार विकार बाह्यः । समाधि गम्यः परमात्मसंज्ञः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥
॥ १३ ॥ निसूदते यो भवदुःखजालं निरीक्षते यो जगदन्तरालम् अन्तर्गतो योगिन्निरीक्षणीय
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १४ ॥ विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो यो जन्ममृत्युव्यसनव्यतीतः
त्रिलोकलोकी विकलो कलङ्कः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १५ ॥ क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गा
रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः निरीन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १६ ॥
यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तिः शुद्धो विशुद्धो धुतकर्मबन्धः ॥ ध्यातो धुनीते सकलं विकारं स देव
देवो हृदये ममास्ताम् ॥ १७ ॥ नस्पृश्यते कर्म कलङ्कदोषै र्योध्वान्तसंघै रिव तिग्मरश्मिः निर-
ञ्जनं नित्यमनेकमेकं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥ विभासते यत्र मरीचिमाली न विद्यमाने
भुवनावभासी स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १९ ॥ विलोक्यमाने स-

ति यत्र विश्वं विलोक्यते स्पष्ट मिदं विविक्तम् शुद्धं शिवं शान्त मनाद्यनन्तं तंदेवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २० ॥ येन कृता मन्मथमानमूर्छाविषादनिद्राभयशोकचिन्ताः क्षयानलेनेव तरुप्रपञ्चस्तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २१ ॥ नसंस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी विधानतो नो फलकं विनिर्मितम् यते निरस्ताक्षकषायविद्विषः सुधीभि रात्मैवसुनिर्मलो मतः ॥ २२ ॥ नसंस्तरो भद्र समाधि साधनं न लोकपूजा नच संघमेलनम् यत स्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं विमुच्य सर्वा मपि बाह्य वासनाम् ॥ २३ ॥ नसन्ति बाह्या ममकेचनार्था भवामितेषां न कदाचनाहम् इत्थं विनिश्चित्य वि-मुच्य बाह्यं स्वस्थः सदा त्वं भवभद्र मुक्त्यै ॥ २४ ॥ आत्मान मात्मन्यवलोक मानस्त्वं दर्शनज्ञान मयं विशुद्धः एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र स्थितोऽपिसाधो लभसे समाधिम् ॥ २५ ॥ एकः सदा शाश्वतिकोपमात्मा विनिर्मलेक्षाधिगमस्वभावः । बहिर्भवा सन्त्यथरे समस्ता न शाश्वताः कर्म भवाः स्वकीयाः ॥ २६ ॥ यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्धं तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥ २७ ॥ संयोगतो दुःख मनेकभेदं यतोश्नुते

जन्मवने शरीरी ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो यियासुना निर्वृति मात्मनीनाम् ॥ २८ ॥ सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं संसारकान्तारनिपातहेतुम् । विविक्त मात्मान मवेक्षमाणो निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥ २९ ॥ स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ ३० ॥ निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो नकोपि कस्यापि ददाति किञ्चन विचारयन्नेवमनन्यमानसः परो ददातीति विमुंचसे मुधा ॥ ॥ ३१ ॥ इति द्वात्रिंशतावृत्तैः परमात्मान मीक्षते अनन्यगतचेतस्को यात्यसौ पदमव्ययम् ॥ ३२ ॥ यैः परमात्मा मितगतिवन्द्यः सर्वविविक्तो भृश मनवद्यः शश्वदधीतो मनसि लभन्ते मुक्तिनिकेतं विभवजरं ते ॥ ३३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

यो देवमर्त्यासुरनागवृन्दै र्नमस्कृतो न्यक्कृतभावशत्रुः अनल्पसंकल्पित कल्पवृक्षः श्रीपार्श्वनाथं तमहं नमामि ॥ १ ॥ इक्ष्वाकुवंशविमलाचर्यशिरोवतंसः श्रीअश्वसेननृपमानसराज

हंसः श्रीपार्श्वसंज्ञमरुता वरिवस्यमानः श्रीपार्श्व एष जयति प्रभुताप्रधानः ॥ २ ॥ सत्यष मासस्य सितौ दशम्यां प्रासूत वामेशसुतं भवन्तम् निशातमोवद्भुतमीदृयनेशु स्तमांसि सर्वाणि तदान्तराणि ॥ ३ ॥ अवाप्ततीर्थाधिपजन्मरत्ना दीनानि तेनासुमतां दितेन संजातहर्षा इति खेदवन्ति वृद्धिं निशा हानि महानि चापुः ॥ ४ ॥

॥ श्री धरणोरगेन्द्रस्तोत्रम् ॥

धरणोरगेन्द्रसुरपतिविद्याधरपूजितं जिनं नत्वा क्षुद्रोपद्रवशमनं तस्यैव महास्तवं वक्ष्ये ॥ १ ॥ सुरलोकनाथपूजित हर हर हरहाररोषजुष्ट मपि पन्नग विषं महाबलशुक्लध्यानान लाक्षेपात् ॥ २ ॥ विद्या सहस्रषोडश गणनायक वीर वर्धितानन्द पन्नगकुलं कुलोत्तम निर्विषतां नय नयान्निमस्मात् ॥ ३ ॥ सर्वेऽपि महानागा नागाधिपकृतफणातपत्रायाः कलिकुण्ड दण्ड निहता नश्यन्ति विषापहारेण ॥ ४ ॥ ॐकार संपुटगतं वामकरे दण्डरूपकं ध्यानम् ज्वालाभिः परिस्फुरन्तं कलिकुण्डाज्ञा मिवामोघम् ॥ ५ ॥ नाशयति सर्व नागान् भूतान् व्यालग्रहांश्च वि-

स्फोटान् ज्वालागर्दभि शाकिनि विषवेगांश्चापि रोगांश्च ॥ ६ ॥ मारणं स्तम्भनं चैव शत्रोरुच्चाट-
नं तथा । मोहनं द्वेषितं चापि क्रियाभेदात् करोति तत् ॥ ७ ॥ दैत्यामरेन्द्रपूजित निर्नाशितदु-
ष्टकर्ममलपटल क्षपयति जिन हुं फुटत्वं पन्नगकुल विषमविषदर्पम् ॥ ८ ॥ निर्मथितभव
भयोल्बण षोडशविद्याधिपत्यमुपपन्नः श्रीपार्श्वनाथविषहर हलि २ मातङ्गिनी स्वाहा ॥ ९ ॥
श्रीपार्श्वनाथ सुरपतिमुकुटतटोद्घृष्ट पादनलिनयुगम् नागाष्टककुलविषापह हाह्री हे है
ह्रौ ह्रौ हं हः ॥ १० ॥ सकलभुवनाभिनन्दित गुरुस्त्वं पन्नगेन्द्रकृतपूजः विषमविषानलश-
मनो जलद इव जलप्लुता लोकाः ॥ ११ ॥ दैत्योपसर्गभूषण जलधरधारानिपातधौतमल स-
र्वज्ञ नागवन्दित सर्वविषाक्षेपणेनमस्ते ॥ १२ ॥ ॐहन २ दह २ पच २ मथ २ संहर २ क्षप
हुं चचालि कुण्ड धम २ पूरय २ विषोद्भवणं हुं फुट स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐचुरु २ मुरु २ फुरु २ फर
फार २ पलदः त्वं किलि २ किलि २ कलितैः कालिकुण्डकलाकलापज्ञः ॥ १४ ॥ ॐ यः यः सः
सः हः हः ठः ठः उर रिल्लिरु हरुहन्त शान्तस्त्वम् विषवन्हे विध्ययनं कुरु शीघ्रमुरु ह्वाख्या-

नात् ॥ १५ ॥ दंष्ट्राकरालभीषण कुपिता सरजलदजलधरापोतः अग्न्यस्तानलज्वाले तदह दुष्ट
नाग विषम् ॥ १६ ॥ कमलदल स्थितदिवस्पति मध्ये भुजगावृतं जिनं नत्वा षोडशदेव्योपगतं
बीजाक्षरसंयुतं तद्धि ॥ १७ ॥ वन्ध्यानां सुतजननं म्रियमाणापत्यरक्षणं परमम् पद्ममिदं रोगहरं
ग्रहशाकिनि भूत निर्नाशम ॥ १८ ॥ दष्टक सर्वाङ्गगतं पद्ममिदं ध्यातामृत प्लवदम् ॥ कुर्याद्विषाप-
हारं प्रणवाद्यैः पञ्चभिर्वर्णैः ॥ १९ ॥ व्यस्तसमस्तविपात्तिं बहुधा परिकल्प्य पञ्चपञ्चभिर्वर्णैः ॥
जिननामाक्षरसहितैः पदंपदं सर्वविषमथनम् ॥ २० ॥ क्षिपर्त्तं स्वाहापञ्चक मानन्दितं पञ्चभूत
कृत कल्पम् ॥ नागाष्ट कुलोपेतं सत्वरज स्तम कलानु गतम् ॥ २१ ॥ रेफ संपुट मध्यस्थं ककारं
वन्हिमण्डले आक्रान्त दीपवर्णाभं स्तम्भये त्रिदशानपि ॥ २२ ॥ नीलोत्पल दलश्यामं ककार
संपुटे स्थितम् । वकारावेष्टितं शुद्धं पर्वतानपि चालयेत् ॥ २३ ॥ ललद्वज्रद्वयाक्रान्त मिन्द्रगोपरम-
ध्यगं पद्मकिंजल्कसंकाशं स्तम्भयेत्त्रिपुरान्तकम् ॥ २४ ॥ कुन्देन्दुशंखवर्णाभं निर्वाहं यस्तु चिन्त-
येत् निर्विषं कुरुते क्षिप्रं विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ २५ ॥ हरहारशंखगौरं वकारकलशाकृतम्

वकारावेष्टितंशुद्धं स्रवन्तंविषनाशनम् ॥ २६ ॥ हस्ताङ्गुलीषुविन्यस्तं वामकरेऽभूतपञ्चकंसकलम् । अ-
पहरत समस्तविषं साधकमुष्टिक्रमाबन्धात् ॥ २७ ॥ धरणोरगेन्द्रसुरपतिविद्याधरपूजितंदैत्यदेवता
भिनुतम् । जिनगुरूमप्रमेयं चतुर्वर्णविभूषितं स्मरयेत् ॥ २८ ॥ आजानुकनकगौरं आनाभेःशंखकु-
न्दहरधवलम् । आकण्ठतोमवदिवाकरकान्तितुल्य मामूर्धतोंजननिभंगुरुडस्यरूपम् ॥ २९ ॥ ॐस्व-
र्णपक्षंपक्षराजं वैनतेयंमहाबलम् । नागान्तकं जितारिंच अजितंविश्वरूपिणम् ॥ ३० ॥ विनतायाः
सुतंदैत्यं विहङ्गंपन्नगोत्तमम् । गुरुन्मन्तंखगेशंच काश्यंकाश्यपनन्दनम् ॥ ३१ ॥ द्वादशैतानिनामानि
गुरुडस्य महात्मनः । यःस्मरेत्प्रातरुत्थाय स्नातोवायदिवाशुचिः ॥ ३२ ॥ विषंनक्रमतेतस्य नचाहिं-
सन्तिपन्नगाः । नइष्टाडापयन्त्येव सर्वकार्याणिसाधयेत् ॥ ३३ ॥ एवंभूतैस्स्मरेद्यस्तु श्रीपार्श्वनाम-
भिर्जिनम् । तस्यदोषाःप्रणश्यन्ति विषंचप्रलयंव्रजेत् ॥ ३४ ॥ भद्रकुलसुम्यजननं सर्वभेदनंप्रशा-
न्तिकरम् । प्रध्वस्तदुरितनिचयं पार्श्वयोगीश्वरंवन्दे ॥ ३५ ॥ इतिमालामंत्रपदैरभिष्टुतयःस्मरेत्-
त्रिसन्ध्यमपि । सकरोतिनागक्रीडां विषइवविषवेदनानीतः ॥ ३६ ॥ भक्तिर्जिनेश्वरेयस्य गन्धमा-

ध्यविलपनैः । सपूजयतियश्चैनं तस्यैतत्सकलंभवेत् ॥ ३७ ॥ इतिश्रीधरणोरगेन्द्रस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्री महावीर गुणस्थान सूचिका विज्ञप्तिः ॥

(उपजाति छंदः) प्रणम्य सम्यक् चरणारविन्दं श्रीमन्महावीरजिनेश्वरस्य । सदाफल स्याश्रित वत्सलस्य दधामि विज्ञप्ति मदं सुभक्त्या ॥ १ ॥ (आर्याछंदः) स्वामिन्ननादि कालेऽनादि निगोदेषु सार्धसप्तदश प्राणेऽणुभवान् कुर्वन्ननादिमिथ्यात्ववानभवम् ॥२॥ तत्रजननादिदुःखं यदनन्तानन्तपुद्गलावर्तान् अज्ञानवशादसहं त्वमेवजानासितन्मानम् ॥ ३ ॥ सादिनिगोदवनस्पतिकायेऽनन्तानि कालचक्राणि भूजलशिखिवायुषु तु प्रत्येकंतान्यसंख्यानि ॥४॥ उत्कृष्टतनुस्थित्याभ्युत्पत्तिविपत्तिशीततापभवम् स्थावरकर्मविपाका दसुखमिता ज्ञानिना सेहे ॥ ५ ॥ प्रत्येकं विकलेषुच वर्षसहस्राणि संमितानिविभो असहं क्षुत्तृट्शीतातपादिदुःखंमहत्सोढुम् ॥ ६ ॥ पञ्चेंद्रियेषुतिर्यक्काये सप्ताष्टवा विकृष्टभवान् भगवन्नहमन्वभवं दुःखमसंख्यं पराधीनः ॥ ७ ॥ कथमपिसप्ताष्टभवान्नृत्वं साम-

भ्यज्ञावतो विगुणम् काशकुसुममिवविफलं मिथ्यात्वविमोहितोऽगमयम् ॥ ८ ॥ एकद्वित्र्यादि-भवान्तरेण देवेषुनारकेषुतथा सुखदुःखविवशमनसा कदापिनत्वन्मतंलेभे ॥ ९ ॥ सामग्रीसंयोगेभावेन विनाप्यनन्तशोलिङ्गम् जगृहे मुमुचे च मया सम्यक्त्वलवोऽपिनस्पृष्टः ॥ १० ॥ सप्तप्रकृतिक किञ्चिदूनांतरकोटिकोटिकस्थितिकं दलिकंमुक्त्वाशेषं यथाप्रवृत्तेन करणेन ॥ ११ ॥ क्षिप्त्वागिरिसरिदुपल न्यायेनगुणिस्नापूर्वकरणेन शुद्धिविशेषेण कदाग्रंथिन्निदाया विघाताहम् ॥ १२ ॥ अन्तर्मुहूर्तवेद्यंदलिकंमुक्त्वानिवृत्तिकरणेन कदिनेमोहप्रकृतेरंतरकरणस्यकर्ताहम् ॥ १३ ॥ अन्तरकरणाभ्युदये-मोहापोहेनदेवगुरुत्वेन नवतत्त्वेषुचबुद्धिं सम्यक्त्व महंकदाप्राप्स्ये ॥ १४ ॥ मम यत्रमुहूर्तस्थेप्यनादि-मिथ्यात्वकृष्णपाक्षिकता यात्यायाति च शकलितपुञ्जशिवशुक्लपाक्षिकता ॥ १५ ॥ अमुनौपशमिकलाभेनौषधकल्पेन मदनकोद्रववत् संशोध्यमोहनीयप्रकृतिं कर्तात्रिधास्मि कदा ॥ १६ ॥ तत्रत्यव-श्योयतः कुतत्वधीरनुपशातिका भविनाम् तदहं मिथ्यास्थानं प्रथमं क्षेप्स्ये कदा देव ॥ १७ ॥ अस्मिन्नुदयाभिमुखे सम्यग्वांतौ चयःषडावलिका तत्वावभासएतत् सास्वादनमादिदेश भवान् ॥१८॥

यस्योदयेजनानां तत्वातत्वेषु जायते समता मिश्रं स्थानं तदहं संक्षिपयिष्यामि देव कदा ॥ १९ ॥
उदिते क्षिप्तेनुदिते शान्ते च विशुद्धमोहपुञ्जेमे क्षायोपशमिकसम्यग् लाभोभवति कदाधीश ॥२०॥
विजयाद्यच्युतगमने नरभवसहितानियस्पषष्ठिः इतराण्युत्कृष्टतया प्रमाणमुपजायते परमम् ॥२१॥
अविरतगुणं चतुर्थं तदेवदेशेनसर्वतोविरतेः विरताविरतं पञ्चममदेशविरतिं स्तुवे षष्ठम् ॥ २२ ॥
प्रथमद्वितृतीयानां शान्तौ क्षान्तौचमे कषायाणाम् एतेषां निर्मलता कदा भवित्री जनाधीश.
॥ २३ ॥ षष्ठं प्रमदवराणां प्रमत्तकंच प्रमद्वराणांतत् स्यादप्रमत्तसंज्ञं मुहूर्तमात्रं च सप्तमकम्
॥ २४ ॥ त्रिविधदर्शनमोहे प्रथमचतुष्केचमेकषायाणाम् क्षीणेक्षायिकलाभो भविष्यति कदा सदा
भावी ॥ २५ ॥ अनुसमयसंख्यगुणा कर्मक्षपणातुभवतियत्रयतेः तदपूर्वकरणमष्टमगुणं अयिष्या-
मिनाथ कदा ॥ २६ ॥ द्विघटीस्थितिरस्यस्यादनिवृत्याख्यंघटीद्वयंनवमम् विशतांयतिनामेकाध्यवसा-
यनिबन्धनं स्तौमि ॥ २७ ॥ संज्वलनलोभपुद्गल किट्टीसंवेदनात्मकं दशमम् तनुसंपरायसंज्ञं घटिका-
द्वयंकदादास्ये ॥ २८ ॥ शान्तेसमस्तमोहे घटिकाद्वयवीतरागतारूपम् उपशान्तमोहमेकादशमं

विरचामिजिनरचितम् ॥ २९ ॥ सकलेमोहेक्षीणेद्विघटीप्रक्षीणमोहतारूपम् वन्देक्षीणविमोहं द्वादशगुणमीशते विमलम् ॥ ३० ॥ घातिचतुष्केक्षीणे लोकालोकावलोकिकेवलतः वन्देसयोगिकेवलिगुणं त्रयोदशमर्हतेऽत्र ॥ ३१ ॥ योगनिरोधनरूपं पञ्चाक्षरगणनकालपरिमाणम् ध्यायाम्ययोगिकेवलिगुणचतुर्दशमिनंप्राप्तुम् ॥ ३२ ॥ मिथ्या१ सास्वाद२ मिश्रा३ विरति४ देश५ प्रमत्ता६ प्रमत्तादि७ द्वैतसूक्ष्मो१० पशमित११ हतमोह१२ द्व्यीयोग्य१३ योगि१४ हेयोपादेयवेदाविक दशगुणसोपानपङ्क्त्या ध्यारूढेमोक्षसौधेदिशतुममहर्शंश्रीमहावीरदेवः ॥ ३३ ॥ इत्थंसर्वसुरासुरेश्वरशिरः कोटीरहीरच्छविक्षीरक्षालितपादपद्मयमलस्त्रैलोक्यलोकाननः । श्रेयः श्रेणिचतुर्दशाननुगुणस्थानस्तवेनस्तुतःश्रीवीरः करुणाकरः सकरुणानन्दंशिवं रातुवः ॥ ३४ ॥ इति श्री महावीर गुणस्थान सूचिका विज्ञप्तिः ॥

सामान्य नीति श्लोकमाला

मङ्गलाचरणम्.

कस्तूरीतिलकं भुवः परित्रवत्राणैककल्पद्रुमः, श्रेयस्कंदनवांबुद स्त्रिजगतीवैडूर्यरत्नांगदः । वि-

भ्रांभोजमतंगजः कुवलयोत्तंसःस्ववंशश्रियाः, नेत्राणाममृतांजनं विजयते श्रीपार्श्वनाथप्रभुः ॥

सर्वथा संत्यजेद्वादं न कंचिन्मर्मणि स्पृशेत् । सर्वान्परित्यजेदर्थान्स्वाध्यायस्य विरोधिनः ॥ ॥ १ ॥ अञ्जनस्य क्षयं दृष्ट्वा वल्मीकस्य तु संचयम् । अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्दानाध्ययनकर्मसु ॥ २ ॥ परदारपरद्रव्यपरद्रोहपराङ्मुखः । गङ्गा ब्रूते कदागत्य मामयं पावयिष्यति ॥ ३ ॥ नहीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते । दयामैत्रीच भूतेषु दानं चमधुरा च वाक् ॥४॥ खरं श्वानं गजं मत्तं रण्डा च बहुभाषिणीम् । राजपुत्रं कुमित्रं च दुरतः परिवर्जयेत् ॥ ५ ॥ पिपीलिकार्जितंधान्यं मक्षिकासंचितं मधु । लुब्धेन संचितं द्रव्यं समूलं च विनश्यति ॥६॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके सुखिनौ न कदाचन । यश्चाधनः कामयते यश्च कुप्यत्यनीश्वरः ॥७॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके शिरःशूलकरावुभौ । गृहस्थश्च निरारम्भो यतिश्च सपरिग्रहः ॥ ८ ॥ वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः । स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥ ९ ॥ कृतार्थः स्वामिनं द्वेष्टि कृतदारस्तु मातरम् । जातापत्या पतिं द्वेष्टि गतरोगश्चिकित्सकम् ॥ १० ॥ अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम् । अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः

॥ ११ ॥ यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा । परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय ॥ १२ ॥ माता यदि विषं दद्याद्विक्रीणाति पिता सुतम् । राजा हरति सर्वस्वं तत्र का परिदेवना ॥१३॥ श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम् । श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षं च विन्दति ॥१४॥ इच्छेच्चेद्विपुलां मैत्रीं त्रीणितत्रनकारयेत् । वाग्वादमर्थसंबन्धं तत्पत्नीपरिभाषणम् ॥ १५ ॥ अभ्रच्छाया तृणाग्निश्च खलप्रीतिः स्थले जलम् वेश्यासक्तिः कुमित्रं च षडेते बुद्बुदोपमाः ॥ १६ ॥ संतोषस्त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने त्रिषु चैव न कर्तव्यो दाने तपसि पाठने ॥ १७ ॥ सिंहादेकं बकादेकं षट्शुनस्त्रीणि गर्दभात् । वायसात्पञ्च शिक्षेच्च चत्वारि कुक्कुटादपि ॥ १८ ॥ अवशेन्द्रियचित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया । दुर्भगाभरणप्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना ॥१९॥ जलमग्निर्विषं शस्त्रं क्षुद्व्याधिः पतनं गिरेः । निमित्तं किंचिदासाद्य देहीप्राणान्विमुञ्चति ॥ २० ॥ आरोप्यते शिलाशैले यत्नेन महता यथा । निपात्यते क्षणेनाध स्तथात्मा गुणदोषयोः ॥२१॥ क्षन्तव्यो मन्दबुद्धीनामपराधो मनीषिणा नहि सर्वत्रपाण्डित्यं सुलभं पुरुषे क्वचित् ॥ २२ ॥ अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दशवर्षाणि तिष्ठति । प्राप्ते चै-

कादशे वर्षे समूलं च विनश्यति॥२३॥ क्षमा तुल्यं तपो नास्ति न संतोषात्परं सुखं। न च तृष्णा परोव्या-
धिर्न च धर्मो दयापरः ॥ २४ ॥ दानेन भोगी भवति मेधावी वृद्धसेवया । अहिंसया च दीर्घायुरितिप्रा-
हुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥ यत्कर्मकुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः। तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीत तु व-
र्जयेत् ॥ २६ ॥ सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्। योऽर्थे शुचिः सहिशुचिर्नमृद्वारिशुचिः शुचिः
॥ २७ ॥ सछिद्रनिकटे वासो नकर्तव्यःकदाचन । घटी पिबति पानीयं ताड्यते झल्लरी यथा ॥२८॥ दानं
वित्ताद्दृतं वाचः कीर्तिधर्मौ तथायुषः । परोपकरणं कायादसारात्सारमाहरेत् ॥ २९ ॥ न माता शपते
पुत्रं न दोषं लभते मही। न हिंसां कुरुते साधु र्नदेवः सृष्टिनाशकः ॥३०॥ स्वाधीनेऽपि कलत्रे नीचः प-
रदारलम्पटो भवति । संपूर्णेऽपि तडागे काकः कुम्भोदकं पिबति ॥ ३१ ॥ काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः। क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥३२॥ दानं
दरिद्रस्य प्रभोश्च शान्ति र्यूनां तपो ज्ञानवतां च मौनम् । इच्छानिवृत्तिश्च सुखान्वितानां दया च भू-
तेषु दिवं नयन्ति ॥३३॥ आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् । दिनस्य पूर्वार्ध

परार्वञ्जिन्ना बायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३४ ॥ सुपात्रदानाच्च जवेद्धनाढयो धनमप्रजावेण करोति पुण्यम् । पुण्यप्रजावात्सुरलोकवासी पुनर्धनाढयः पुनरेव जोगी ॥ ३५ ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीय युगप्रवराचार्य श्रीसहजकलानिधिसूरिवरचरणाब्जचंचरीकेण मुनिनीरधिशशांकेन संग्रहीता सामान्यनीतिश्लोकमालिका ॥

॥ श्री सिद्धाचल चैत्यवंदनम् ॥

॥ धरणेंद्रमुखानागाः पातालस्थानवासिनः सेवंते यं सदातीर्थराजं तस्मै नमोनमः ॥ १ ॥ चमरेंद्रवलींद्राद्याः सर्वे भुवनवासिनः । से० । २ । किंनरकिंपुरुषाद्याः किन्नराणां च वासवाः । से० ॥ ३ ॥ राक्षसानामधीशाश्च यक्षेशाः सपरिच्छदाः । से० । ४ । अणपन्नीपणपन्नीमुख्याऽव्यंतरनायकाः । से० । ५ । ज्योतिषां वासवौ चंद्रासूर्यावन्येपि खेचराः । से० । ६ । मनुष्यलोकसंस्थाना वासुदेवाश्च-चक्रिणः । से० । ७ । इन्द्रोपेन्द्रादयोप्येते सिद्धा विद्याधराधिपाः । से० । ८ । ग्रैवेयकानुत्तरस्था मनसा-

त्रिदिवौकसः । से० । ९ । एवं त्रैलोक्यसंस्थाना स्त्रिधोरगनरामराः । से० । १० । अनंतमक्षयं नित्य, मनंतफलदायकं । अनादिकालजं यच्च तीर्थं तस्मै नमो नमः ॥११॥ सिद्धातीर्थकृतोऽनंता यत्रसेत्स्यंति चापरे मुक्तेर्लीलागृहं यच्च तीर्थं तस्मै नमो नमः ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ युगादिदेवचैत्यवंदनम् ॥

प्रगे युगादौ देवेश सूरस्त्वमुदितो नवः तमोध्वंसं वितन्वानो दर्शयन्नर्थसंपदः ॥१॥ नमस्ते विश्वनाथाय, विश्वहर्षप्रदायिने, विश्वोत्तरचरित्राय, विश्वताताय हेप्रभो ॥ २ ॥ तवावतारे न्भरतक्षेत्रंस्वर्गाद्विशिष्यते, पावित्र्यं चाद्यसंजातं, सनाथं च जगद्गुरो ॥ ३ ॥ इति ॥

। महावीरस्वामिचैत्यवंदनम् ।

जयइनवनलिणकुवलय, वियसियसयवत्तपत्तलदलच्छो, वीरो गइंदमयगल, सुललिअगइ विक्कमोन्भयवं ॥ १ ॥ अञ्जाविवहइसुतिथं, अखंडिअं जस्स न्भरहवासंमि, सोवद्धमाणसामि, तिलुक्कदिवायरो जयउ ॥ २ ॥ गाहाजुअलेणजिणं, मयमोहविवज्जिअं जिआणंगं । थोसामितिसंघाएण, तिणसंगं

महावीरं ॥ ३ ॥ सुकमालधीरसोमा रत्ताकिसणपंकुरा सिरिनिकेआ । सीअंकुसग्गहत्नीरू, जलथल-नहमंम्रणातिन्नो ॥ ४ ॥ नचयंति वीरलीलं, हाउं जइ सुरहिमत्तपम्हिपुसा, पंकयगइंदचंदा, लोअण-चकमिअमुहाणं ॥ ५ ॥ एवं वीरजिणंदो, अछरगणासंघसंथुओ भयवं । पालित्तयमइ महिओ । दिसउ खयं सवडुरिआणं ॥ ६ ॥ इति ॥

। गिरनारमंम्रनश्री नेमिनाथचैत्यवंदनम् ।

श्रीशैवेय ? जयाऽमेयगुणरत्नमहोदधे ! जयापार कृपाधार स्फारसंसारतारक ! ॥ १ ॥ श्रीमन्नेमिजिन ! स्वामिन् ! सहजेनाऽऽत्मतेजसा, तमोमग्नं नवोद्विग्नं मामुद्धर कृपापर ! ॥ २ ॥ रागादयोऽरयो देव ! ये पुरा निर्जितास्त्वया, त एव तद्विरोधेन, बाधन्ते मां त्वदाश्रयम् ॥ ३ ॥ सर्व नावैकसामान्य, मौदासीन्यमिहाश्रयन्, त्वं चेडुपेक्षसे तत्ते, कुतः सुस्वामिताऽमिता ॥ ४ ॥ उदेति न मुदे यावत्त्वन्मयं चिन्मयं महः स्वामिन् ! मोहतमस्तावच्चित्तांतजायतेऽगिनां ॥ ५ ॥ संसार सागरस्यांत मोहावर्त्तगतः प्रनो ? कदामात्रनवदूध्यानयानपात्रं महं श्रये ॥ ६ ॥ अदो मदोद्धतं

चित्तं सदाकृतकदाग्रहं तथा प्रसीद विश्वेश ! यथासीदति न क्वचित् ॥ ७ ॥ तृष्णयातरलं स्वामिन् ! विह्वलं स्मरतापतः शांतिमेति यदि स्वांतं, त्वद्ध्यानामृतमज्जनात् ॥ ८ ॥ जातु किं जंतवो यांति क्रोधक्रूराध्वना विभो शमैकसारं त्वन्मार्गं, मार्गयंते यदि क्षणं ॥ ९ ॥ पापकर्मकृतोन्माथ नाथ ! तत्कुरु येन मे स्वल्पीभवंति संकल्पा, विषयग्रहगोचराः ॥ १० ॥ परानंदह्रदे मेऽस्तु निमग्नस्य जगत्प्रभो ! वेद्यवेदकभेदैकशून्यता त्वत्प्रसादतः ॥ ११ ॥ नार्थयेऽन्यद्विभो ! किंचिद्याचे त्वामेतदेवहि, समुल्लसतु मच्चित्ते, त्वत्प्रसादात्परं महः ॥ १२ ॥ इतिश्री नेमिनाथ चैत्यवंदनम् ॥

॥ श्रीपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते ॥ ह्रींधरणेंद्र वैरुट्या । पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥ शान्तितुष्टिमहापुष्टिधृतिकीर्त्तिविधायिने ॥ ॐ ह्रीं द्विड्व्यालवैतालसर्वाधिव्याधिनाशिने ॥ २ ॥ जयाजिताख्याविजया, ख्यापराजितयान्वितः ॥ दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षै विद्यादेवीभिरन्वितः ॥ ३ ॥ ॐ असिआउसा नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम् ॥ चतुःषष्टि सुरेन्द्रास्ते । भासन्ते छत्र चामरैः ॥ ४ ॥

श्री संखेश्वर मंडन ! पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरु कल्प ! ॥ चूरय दुष्टव्रातं । पूरय मे वांछितं नाथ !
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंद सरोराज । मरालायार्हते नमः ॥१॥ सर्वेषां वेधसामाद्य । मादिमं परमेष्ठिनाम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं । श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ २ ॥ कल्याण पादपारामं । श्रुतगङ्गा हिमाचलम् ॥ विश्वाम्भोजरविं देवं । वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् । ३ ।

॥ अथ कर्मना पंदर बंध विचार ॥

प्रश्न–पन्नर बंधननो अर्थ स्पष्ट रीते समजाओ.

उत्तर–आ नीचे प्रमाणे व्याख्या शास्त्रकारोये आपेल छे.

१–चक्रवर्ती भोग निमित्ते बीजुं औदारिक शरीर करे त्यारे औदारिक औदारिक बंधन कहिये.

२—औदारिक शरीर सहित साधु जेवारे तेजसनुं पूतलुं करे तेवारे औदारिक तेजस बंधन कहिये.

३—जेवारे मरण समयें आत्म प्रदेश नीकले बीजि गतिनें स्पर्शवानें पोताना उदारिक पुद्गल ग्रहे हुतें तिवारे उदारिक कार्मण बंधन कहिये.

४—औदारिक शरीर सहित साधुनें तेजस शरीर नीकालतां साथें कार्मण शरीर नीकले तिवारे उदारिक तेजस कार्मण बंधन कहिये.

५—देवता नारकी क्रीडा निमित्त तथा शत्रु हनन निमित्त बीजुं वैक्रिय शरीर करै तिवारे वैक्रिय वैक्रिय बंधन कहिये.

६—देवता नारकी घणा क्रोधथी तेजसरूप आत्म प्रदेश बाहिर काढे तिवारे वैक्रिय तेजस बंधन कहिये.

७—देवता नारकी मरण समय बीजी गति स्पर्शवानें आत्म प्रदेश काढे वैक्रिय शरीर ग्रहे

हुंते तिवारे वैक्रिय कार्मण बंधन कहिये.

८–देवता नारकी घणा क्रोधथी तेजस कार्मणरूप आत्म प्रदेश संयुक्त नीकले तिवारे वैक्रिय तेजस कार्मण बंधन कहिये.

९–चौद पूर्वधारी संदेह पूछवानें आहारक तनु करी केवली पासे जाय ते भूमि केवली न हुवे तो बीजुं आहारकथी आहारक करे इम करी केवली पासें जइनें निःसंदेहथी निवर्त्ते तिवारे तेहनें आहारक आहारक बंधन कहिये.

१०–आहारक शरीर संदेह पूछिवा निमित्तें नीकल्यो मार्गें मुनिनें उपसर्ग थतो देखि तेहनें सुखि करवा निमित्तें शुभ्र तेजस करे ते आहारक तेजस बंधन कहिये.

११–जिहां मुनिनें आहारक रूप आत्म प्रदेश साथें कार्मण रूप आत्म प्रदेश निकले ते आहारक कार्मण बंधन कहियें.

१२–जिहां साधुने आहारक रूप आत्म प्रदेश साथे कार्मण रूप आत्म प्रदेश निकले ते

आहारक तेजस कार्मण बंधन कहियें.

१३–शत्रु मित्रने मारण सुखी करण निमित्तें तेजस करी जाय तिहां जो शत्रु मित्र न पामे तो वीजुं तेजस करे तेहने तेजस तेजस बंधन कहिये.

१४--साधुना मुखथी नीकळ्ये जे तेजस ते साथें कार्मण रूप आत्म प्रदेश निकले तेहनें तेजस कार्मण बंधन कहिये.

१५--साधु कार्मण प्रदेश संयुक्त आहारकथी आहारक करे तेजसथी तेजस करे तिवारे कार्मण बंधन कहिये. इति १५ बंधन विचार संपूर्ण.

॥ अथ श्रीकायोत्सर्गना (१९) दोष ॥

प्रश्न–कायोत्सर्गना दोष केटला अने तेनो अर्थ शुं. उत्तर--१९ दोष, तेनो अर्थ आ प्रमाणे.

१ घोटक दोष–घोडानी परे एक पग ऊंचो राखे, वांको पग राखे ते.

२ लता दोष–जेम वायराथी वेलडी हाले तेम शरीरने धुणावे ते.

३ स्थंभादि दोष--थांभला प्रमुखने ओठींगण दइ रहे ते.

४ माल दोष--उपर मेडी तथा मेहेल होय तेने मस्तक टेकावि रहे ते.

५ उधि दोष--गाडानी उधिनी परे अंगुठा तथा पानी मेलवीने पग राखे ते.

६ निगड दोष--निगडमां पग नांख्यानी परे पग पहोला राखे ते.

७ शबरि दोष--नग्न भिलडीनी परे गुह्य स्थानके हाथ राखे ते.

८ खलिण दोष--घोडाना चोकडानी परे हाथ रजोहरण युक्त आगल राखे ते.

ए वधू दोष--नव परणीत वधूनी परे माथुं नीचुं राखे ते.

१० लंबोत्तर दोष--नाभिनी उपर अने ढींचणथी नीचे जानु उपर लांबु वस्त्र राखे ते.

११ स्तन दोष--डांस मसाना भयथी, अज्ञानथी अथवा लज्जाथी हृदयने आच्छादन करी स्त्रीनीं परे ढांकी राखे ते.

१२ संयति दोष--शीतादिकना भयथी साध्वीनी जेम बंन्ने स्कंध ढांकी राखे एटले समग्र

कायोत्सर्गना १९ दोष ।१६२।

शरीर आच्छादित राखे ते.

१३ भ्रमुइंगुलि दोष--आलावो गणवाने अर्थे अथवा कायोत्सर्गनी संख्या गणवाने अंगुलि तथा पांपणना चाला करे ते.

१४ वायस दोष--कागडानी परे डोला फेरवे ते.

१५ कपित्थ दोष--पहेरेला वस्त्र यूका अथवा प्रस्वेदे करी मलिन थवाना भयथी कोठनी परे लुगडुं गोपवि राखे ते.

१६ शिरकंप दोष--यक्षावेशितनी परे माथूं धुणावे ते.

१७ मूक दोष--मुंगानी परे हुं हुं करे ते.

१८ मदिरा दोष--आलावो गणता मदिरानी परे बडबडाट करे ते.

१९ प्रेक्ष्य दोष--वानरनी परे आसपास जोया करे, ओष्ठ पुट चलावे ते.

आ दोषोथी थती अविधि जाणीने तेनो त्याग करी काउसग्ग करवो.

॥ प्रश्नोत्तर ॥

प्रश्न–गुरु महाराजने वांदणा देवामां पचवीश आवश्यक साचववा जोइयेते किया ?

उत्तर–२–अवनत, १–यथाजात, १२–आवर्त्त, ४–शिरनमन, ३–गुप्ति, २–प्रवेश, १–निष्क्रमण, यदुक्तम्—

दोवणयं महाजायं, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं ।
दुपवेसिगनिखमणं, पण वीसावसय किइकम्मे ॥ १ ॥

ए प्रमाणेना पच्चीस आवश्यक कृतिकर्म एटले वांदणाने विषे थाय. वांदणा देनारे आ पच्चीस आवष्यक साचववा बराबर उपयोग राखवो जोइये. कारण के तेथी विपरीत रीते वर्त्ततां एटले आवश्यक साचव्या शिवाय वांदणां देतां तेथी थवानुं जे फल ते प्राप्त थतुं नथी. यदुक्तम्—

किइकम्मंपि कुणंतो, नहोइ किइकम्म निज्जरा भागी ।

पणवीसा मन्नयरं, साहुठाणं विराहंतो ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ—ए पचवीश आवश्यकमांथी अनेरुं एक पण स्थानक विराधतो साधु तेमज साध्वी, श्रावक अने श्राविका होय ते, कृतिकर्मने करे छे, अर्थात् वांदणा देके तोपण तेथी जे कर्मपरिशाटनरूप निर्जरा थाय तेनो संविज्ञागी न होय, अर्थात् ते वांदणा देवानुं जे निर्जरारूप फल ते न पामे.

प्रश्न—ए पचवीश आवश्यकनो अर्थ बतावो.

उत्तर—वांदणाने विषे बे अवनत एटले बेवार शरीरनो उपरीतन ज्ञाग नमाववो. ज्यारे प्रथम ' इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ' एम कही गुरुने वांदवानी इछा बतावी अवग्रहमां प्रवेश करवानी आज्ञा मांगतो एटले " अणुजाणह मेमिउग्गहं ' ए पद बोलतो शरीरनो उपरनो ज्ञाग नमावे—ते एक अवनत जाणवुं. बीजीवार वांदणा देतां बीजुं थाय, ए बे अवनतरूप बे आवश्यक जाणवा.

यथा जात एटले प्रसव पामतो बालक जेम रचित करसंपुट वालो होय तेम कर संपुट करेला हाथने ललाटे लगाम्हे ते यथाजात आवश्यक कहिये.

बार आवर्त्त—एटले शरीरनां व्यापर रूप सूत्राभिधान गर्भित काय व्यापार विशेष जाणवा. ते बे वांदणामां थइने बार आवर्त्त जाणवा. एक वांदणे छ आवर्त्त थाय ते आ प्रमाणे-प्रथम त्रण आवर्त्त "अहो" "कायं" "काय" ए बे बे अक्षरे थाय, एटले पोताना हाथना बे तलां गुरुचरणे लगाम्हे तथा उत्तान हाथे पोतानो ललाट देश स्पर्शे. गुरुचरणे हस्त लगाम्हता पहेलो अक्षर अने ललाटे हाथ लगाम्हतां बीजो अक्षर बोलवो एम ए त्रण पद बोलतां त्रण आवर्त्त. पछी हाथ जोम्ही "वइक्कंतो" पर्यंत बोले अने त्यांथी बीजा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरनां जाणवा. तेमां एक अक्षर गुरु चरणे लगाम्हतां, बीजो अक्षर उत्तान हाथे, वच्चे विश्रामरूप कहे अने त्रीजो अक्षर ललाट देशे हाथ लगाम्हतां बोले, जेम "जत्ताभे" "जवणि" "ज्जंचभे" एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना जाणवा. ए प्रमथ वांदणे छ अने बीजे वांदणे छ कुल बार

आवर्त्त जाणवा.

चतुः शिरः--एटले चार वार शिर नमाववुं. ते पहेला त्रण आवर्त्त थया पछी एकवार अने बीजा त्रण आवर्त्त थया पछी एकवार एम एक वांदणामां बे वखत अने बेमां थईने चार वखत मस्तक नमाव्वुं ते.

त्रिगुप्त--एटले मन, वचन, अने काया, ए त्रणने वांदणा देता अन्य व्यापारथी गोपवी राखवा ए त्रण गुप्ति. बे प्रवेश--एटले बे वार गुरुनी आज्ञा मांगी अवग्रहमां प्रवेश करवो ते.

एक निष्क्रमण--एटले एकवार निकलवुं. ते आ प्रमाणे प्रथम वांदणे आज्ञा मागी " निसीहि " कही संडासा अने जमीन पूंजी अवग्रहमां प्रवेश करे, अने पछी " आवस्सिआए " कही पाछल पूंजी अवग्रहथी बहार निकले, बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण बहार निकले नहिं गुरु महाराजना चरणमांज रह्यो छतो बीजो वांदणो समाप्त करे त्र्यो पण थाय नहिं एटले बे वार प्रवेश करवो अने एकवार बहार निकळवुं एम त्रण आवश्यक कहिये. ए सर्व मळीने पच्चीस

आवश्यक थाय छे, ते जवजयजीरु जीवोये तेनी रमणता करवी जेथी करेल अनुष्ठान सफल थाय. विशेष खुलासो गुरुगमथी जाणवो.

प्रश्न—क्रिया जेने प्रिय होय ते जीवनुं कल्याण थाय के नहि.

उत्तर--ते जीवनुं कल्याण थाय केमके जे क्रियावादि छे, क्रिया जेने प्रिय छे, क्रियाना उपर बहु आदर छे, ते जीव जव्य छे, अने नियमथी अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी अंदरज मोक्ष पामे. ॥ यदुक्तम् दशाश्रुतस्कंधचूर्णौ.

जो किरियावाइ सो जव्वो णियमा सुक्कपखिउ।
अंतपुग्गल परिअट्टस्स सिज्झइ नियमा ॥ १ ॥

प्रश्न--शुक्लपक्षि जीव कोने कहिये ?

उत्तर--अर्द्ध पुद्गल परावर्तमां कांईक न्यून संसार जेनो बाकी छे, निश्चे करी ते शुक्लपक्षी, एटले शुक्ल पक्षना चंद्रमानी माफक सुज्ञान वैराग्य क्षमादि गुणे करी ते जीव वृद्धि पामे छे, तेथी ते शुक्लपक्षि छे, अने तेथी विपरीत ते जीव कृष्ण पक्षी. ॥ यदुक्तम्. तत्रैव.

जेसिमवढ पुग्गल परिअ्रदृसेसञ्च संसारो ।
ते सुक्कपखिया खलु अवरे पुण कण्ह पखिया ॥ १ ॥

प्रश्न--परमयोगी कोण ?

उत्तर--जेने कोइ मित्र नथी, अने शत्रु पण नथी, आ मारूं छे, आ परनुं छे, आ प्रिय छे, आ अप्रिय छे, एम मानवुं जेनुं नथी, इंद्रियोना विषयोमां जेनुं चित्त फसातुं नथी विषय विरक्त छे, अने कषायोथी जेनुं मन रहित छे, ते परम योगी, ॥ यदुक्तमध्यात्मकल्पद्रुमप्रकरणे--

न यस्य मित्रं न च कोऽपि शत्रुर्निज:परो वापि न कश्चनास्ते ।
नचीन्द्रियार्थेषु रमेत चेतः, कषायमुक्त परमः सयोगी । १ ।

प्रश्न–आ भव परभवमां कया गुणे करीने मनुष्य सुखी थाय छे ?

उत्तर–जे कांइ कार्य करे ते लांबो विचार करीने विवेक पूर्वक करे, अने कोइनाथी ठगाय नही, तेमज सरल स्वभाववान् अने जाति कुल व्रतनी लज्जाने धारण करनार, निर्लज्जता जेनामां नथी, निर्मल आशयथी अढार दोष रहित देव अने शुद्ध भाषक गुरुराजनी पूजाभक्ति बहुमान करनार, अने माता पितादि वडीलोनी उचित भक्तिकारक, वली उत्तम कार्यनी अभिलाषाने धारण करनार, अने परोपकार करनार, वली धर्मनी मूल व्यवहार शुद्धिने धारण करनार, एवो गुणवान् पुरुष आ भवमां अने परभवमां संपदाने पामे छे, तथा चोक्तम्. तत्रैव. ।

दाक्षिण्यलज्जे गुरुदेवपूजा, पित्रादिभक्तिः सुकृताभिलाषः ।
परोपकारव्यवहारशुद्धी, नृणामिहामुत्र च संपदे स्युः । १ ।

प्रश्न–दुर्वचन उच्चारण करवाथी शी हानि थाय छे ?

उत्तर–दुर्वचन उच्चारण करवाथी जीवोनी साथे वेर बंधाय छे, ते आ भवमां अने परभवमां जीवने भोगववुं पडे छे, अने नरक विगेरेना दुःखो पण एनाथी प्राप्त थाय छे, केमके दुर्वचन श्रवण गोचर थवाथी जीवने एटलो बधो दुःख थाय छे, के ते घणा काले पण नाश थतुं नथी, कारण के अग्निना तापवडे करी दग्ध थयेला वृक्षो फरी अंकुरित थइ नूतन पल्लववाला थाय छे, पण दुष्ट वचनथी दुःखित थयेलाने ज्यां सुधि ते वचन याद आवे छे, त्यां सुधि तेने आनंद रूप अंकुराउ उत्पन्न थता नथी. केमके, शरीरमां लागेला बाणादि विगेरेना घा ते तो रुजावाथी मटी जाय छे, पण श्रवण गोचर थयेल वचन बाण ना घा रुजाता नथी. यदुक्तम्. तत्रैव–

इहामुत्र च वैराय, दुर्वाचो नरकाय च ।
अग्निदग्धाः प्ररोहन्ति, दुर्वाग्दग्धाः पुनर्नहि । १ ।

प्रश्न–भवाभिनंदि जीवने ओलखवाना लक्षणो कया ?

उत्तर—जे क्षुद्र—कृपण होय, अने मागवाना स्वभाववालो होय, वली हमेशां अकल्याणने जोनार, परनां सुखमां दुःखियो, वली हमेशा भयवान् मायावी, मूर्ख, वली निष्फल आरंभवालो, अने असत्मां आग्रह करनार ते संसार बहु मानी भवाभिनंदी जाणवो, यदुक्तम्. योगदृष्टिसमुच्चये-

क्षुद्रो लाभरतिर्दीनो मत्सरी भयवान् शठः।
अज्ञो भवाभिनन्दी स्यान्निष्फलारम्भसंगतः॥१॥

प्रश्न—विनयनुं फल शुं छे, अने ते विनय करवाथी स्या स्या लाभ थाय छे?

उत्तर—विनयनुं फल सांभलवानी इच्छारूप छे, एटले—जे गुरुमहाराज उपदेशे ते सांभलवानी इच्छा अने सांभलीने ते मुजब वर्त्तवुं ते विनयनुं फल छे. विनय पूर्वक शास्त्र श्रवण करवाथी श्रुतज्ञानननी प्राप्ति थाय छे. सम्यग्ज्ञान (अने श्रद्धा) वडे देश विरति तथा सर्व विरतिनी प्राप्ति थाय छे, अने विरतिवडे आवता नवां कर्मनो अटकाव थाय छे, एटले संवरनी प्राप्ति थाय छे. संवरथी तपोबल प्राप्त थाय छे. तपयोगे कर्मनो परिशाटन (निर्जरा) थाय छे. निर्जराथी क्रियानी निवृत्ति थाय छे, अने क्रियानी निवृत्तिथी योग निरोधवाला बनी अयोगी थवाय छे. योग

निरोध थकी जन्म जरा, मरण, प्रबन्ध लक्षण नरकादि न्नवसंततिनो आत्यंतिक क्षय थाय छे, अने जन्म मरणनी परंपरानो क्षय थवाथी एकान्तिक अने आत्यन्तिकादिक गुणयुक्त स्वात्म स्थितिरूप मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. तेथी परंपराये सर्व कल्याणोनुं न्नाजन विनय छे. अर्थात् विनय गुणवके उत्तरोत्तर सर्व श्रेय सधाय छे अने समस्त क्लेशनो सर्वथा क्षय करी, अक्षय अनंत अव्याबाध एवुं मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे. यडुक्तम्. प्रशमरति प्रकरणे–

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषा फलं श्रुतज्ञानम् ।
ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥
संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् ।
तस्मात्क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥ २ ॥
योगनिरोधाद्भवसंततिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः ।
तस्मात्कल्याणानां सर्वेषां न्नाजनं विनयः ॥ ३ ॥

सुभाषित व्याख्यान संग्रह.

प्रथम व्याख्यान.

श्रीजिनागमबोहित्थं संसारार्णवतारणम्
ममेदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

(प्रथम मंगलाचरण कर्या बाद व्याख्याननी शरुवात वखते नीचे प्रमाणे वाक्यरचना रचवी.)

श्री अरिहंत भगवंत अनंतगुणवंत, महंत केवलज्ञानधारक, भवभयनिवारक, संसारतारक, सकलपाप संताप तापहारक, सर्व जीव हितकर, प्राणी मात्रना पीहर, तत्त्वज्ञानभास्कर, श्रीदेवाधिदेव वीतरागदेव प्ररुपित सद्ज्ञानोपदेशाधिकार संबंधी तत्त्ववाणी व्याख्यानकार कथन करे छे ते हे भव्यप्राणी ! सकलसुख खाणीरूप वाणीने हैयामां आणी तेनो रहस्य जाणीने पोताना सुवि-

पारंग आचारमां मूकवा आतुर रहो के जेथी भवसमुद्रनो पार जवानो समय सानुकूल थाय अने समस्त संताप जाय !

तत्त्ववाणीमां प्रथम शुं शुं जाणवानी जरूर छे

(शार्दूलविक्रीडित छंद.)

" तत्त्वानि (९) व्रत (५) धर्म (१०) संयम (१७) गति (४) ज्ञानानि (५) सद्भावना (१२),
प्रत्याख्यान (१०) परीषहें (२२) न्द्रिय (५) मद (८) ध्यानानि (४) रत्नत्रयम् (३);
लेश्या (६) वश्यक (६) काय (६) योग (१५) समिति (५) प्राणाः (१०) प्रमादा (८) स्तपः (१२),
संज्ञा (१०) कर्म्म (८) कषाय (२५) गुप्त्य (३) तिशया (३४) ज्ञेयाःसुधीभिः सदा. १ "

दुहो—भणतां भणतां गया निस्तान, सुणतां सुणतां फूट्या कान;
तीरथ फरतां भांग्या गोडा (ढींचण), तत्त्व न जाणे तेहज बूड्या.

एटले के मानव जन्म धरी कथाओ श्रवण करी अने तीर्थ पण फरश्यां; तथापि जो कथानु—

वखाणवुं अने तीर्थ फरवयानुं तत्त्व न जाण्युं तो ते सर्व निष्फलज छे, माटेजे साररूप तत्त्व नव छे ते प्रथम जाणवाज योग्य छे. ए नव तत्त्वादि बोलोनुं निरूपण नीचे मुजब छेः—

नवतत्त्व—१ जीवतत्त्व, २ अजीवतत्त्व, ३ पुन्यतत्त्व, ४ पापतत्त्व, ५ आश्रवतत्त्व, ६ संवरतत्त्व, ७ निर्जरातत्त्व, ८ बंधतत्त्व अने ९ मोक्षतत्त्व आ नव तत्त्व छे.

नव तत्त्व जाण्या समज्या पछी पांच महाव्रत जाणवानी जरूर छे.

पांच महाव्रत—१ प्राणातिपात विरमणव्रत, २ मृषावाद विरमणव्रत, ३ अदत्तादान विरमणव्रत, ४ मैथुन विरमणव्रत अने ५ परिग्रह विरमणव्रत. आ पांच मोटां व्रत छे. ते जाणवां अने आत्महितार्थी तथा धीरवीर पुरुषोयें आदरवां—पालवां के जेथी उपगार थायछे.

धर्मनां दश लक्षण—१ क्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव, ४ मुक्ति, ५ तप, ६ संयम, ७ सत्य, ८ शौच, ९ आकिंचन, अने १० ब्रह्मचर्य आ दश ज्यां पूर्णपणे होय त्यांज धर्म मनाय छे.

संयमना सत्तर भेद—१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन, ५ परिग्रह,

(इंद्रिय ५.) ६ फरसन, ७ रस, ८ घ्राण, ९ चक्षु, १० श्रवण, ११ क्रोध, १२ मान, १३ माया, १४ लोज्ञ, १५ मनोदंम, १६ वचनदंम अने १७ कायदंम. आ सत्तरनो त्याग करे तेज संयमी कहेवाय छे.

चार गति—१ देवगति, २ मानवगति, ३ तिर्यंचगति अने ४ नरकगति आ चार छे.

पांच ज्ञान—१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान अने ५ केवलज्ञान आ पांच ज्ञान छे, ते प्राप्त करवा यत्न आदरवो.

बार न्नावना—१ अनित्य, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचि, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा, १० धर्म, ११ लोकस्वरूप, अने १२ डुर्लज्ञबोध आ १२ न्नावनाउ न्नाववा योग्यज छे.

दश पच्चख्काण—नवकारसी १, पोरसी २, पुरिमड्ढ ३, एकासणुं ४, एकलठाणुं ५, आयंबिल ६, उपवास ७, दिवसचरिमप्रत्याख्यान ८, अज्ञिग्रह ९ अने विगइ १० आ दश पच्चख्काण पैकी गमे ते प्रत्याख्यान पोतानी शक्ति मुजब हमेशां करवुंज जोइये.

बावीश परिषह–भूख परिषह १, तरश परिषह २, ताढ परिषह ३, ताप परिषह ४, डांस परिषह ५, अचेलक (वस्त्र ?) परिषह ६, अरति परिषह ७, स्त्री परिषह ८, चर्या परिषह ९, नैषेधकी परिषह १०, शय्या परिषह ११, आक्रोश परिषह १२, वध परिषह १३, याचना परिषह १४, अलाभ परिषह १५, रोग परिषह १६, तृणफास परिषह १७, मल परिषह १८, सत्कार परिषह १९, प्रज्ञा परिषह २०, अज्ञान परिषह २१ अने सम्यक्त्व परिषह २२ आ बावीश परिषह समयपरत्वे साधु जनने सहन करवाज जोइये.

पांच इन्द्रिय–स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) १, रसनेन्द्रिय (जीभ) २, घ्राणेन्द्रिय (नाक) ३, चक्षुरिन्द्रिय (आंख) ४, अने श्रोतेन्द्रिय (कान) ५ आ पांच इन्द्रियोने पोत पोताना विषयनी अंदर वश्य–कबजे राखवीज जोइये.

आठ मद–जातिमद १, कुलमद २, रूपमद ३, तपमद ४, बलमद ५, श्रुत–ज्ञानमद ६, लाभमद ७, अने ऐश्वर्यमद ८ आ आठ जातना मद कदिपण करवा नहीं.

चार प्रकारनां ध्यान–आर्त्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३ अने शुक्लध्यान ४ आ चार ध्यान पैकी प्रथमनां बे त्यजी दे६ पछीनां बे अवश्य अंगीकार करवां.

रत्नत्रयी–ज्ञान १, दर्शन २ अने चारित्र ३ आ त्रण अमूल्य रत्ननो जरूर संग्रह करवो.

छ लेशाओ–कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६, आ छ लेश्याओ पैकी प्रथमनी ३ लेश्याओ त्यजी पाछलनी ३ भजवी जेथी भव भ्रमणानो अंत समय आधीन थाय छे.

छ आवश्यक–सामायिक १, चौवीसत्थो २, वंदणा ३, प्रतिक्रमण ४, कार्योत्सर्ग ५ अने प्रत्याख्यान ६ आ छ आवश्यक अवश्य करवाज योग्य छे.

छ काय–पृथिवीकाय १, अप्पकाय २, तेउकाय ३, वाउकाय ४, वनस्पतिकाय ५ अने त्रश काय ६ आ छ कायमय संसार छे, एउनी विराधना न थाय तेम पळे पळे खबरदारी राखी वर्त्तवुं.

पंदर योग–सत्यमनोयोग १, असत्यमनोयोग २, सत्यासत्यमनोयोग ३, असत्यामृषामनो-

योग ४, सत्य वचन ५, असत्य वचन ६, सत्यासत्य वचन ७, असत्यामृषावचन ८, औदारिक ९, औदारिकमिश्र १०, वैक्रिय ११ वैक्रियमिश्र १२, आहारक १३, आहारकमिश्र १४, तेजस अने कार्मण १५ आ पंदर योग पैकी तजवा जजवा योग्य जाणीने जीवनव्यवहारने निर्मल राखवो.

पांच समिति—इर्यासमिति १, भाषासमिति २, एषणासमिति ३, आदान भंडमात्र निक्षेपणा समिति ४ अने उच्चारपासवण खेलजल्ल पारिठावणिया समिति ५ आ पांचे समितिनुं सदा सेवन करवुं.

दश प्राण—पांच इंद्रिय ५, मन बल ६, वचन बल ७, काय बल ८, श्वासोश्वास ९ अने आयु १० आ दश प्राण पैकी प्राणी मात्रमां ओछा वधता प्राण होय छे तेनो विचार ध्यानमां लइ दश प्राणधारी ज्ञानवान मानवे जीवन सफळ करवा खंतवंत थवुं.

आठ प्रमाद—अज्ञान १, असंयम २, मिथ्यात्व ३, राग ४, द्वेष ५, मतिभ्रंस ६, धर्मअनादर ७ अने मनवचन काय अप्रशस्त ८ आ आठ प्रकारना प्रमाद त्यजी देवा.

तपना बार भेद–अनशन १, उणोदरी २, वृत्तिसंक्षेप ३, रसत्याग ४, कायक्लेश ५, संलीनता ६, (आ छ बाह्य तपना भेद छे.) प्रायश्चित्त ७, विनय ८, वैयावच्च ९, सज्झाय १० ध्यान ११ अने उत्सर्ग १२ आ (छ अभ्यंतर तपना भेद छे. ए बेउ प्रकारना मलीने) बार भेद वडे तपनी आराधना निरंतर कर्याज करवी.

दश संज्ञा–आहार संज्ञा १, भय संज्ञा २, मैथुन संज्ञा ३, परिग्रह संज्ञा ४, क्रोध संज्ञा ५, मान संज्ञा ६, माया संज्ञा ७, लोभ संज्ञा ८, लोक संज्ञा ९ अने ओघ संज्ञा १० आ दश संज्ञा, सन्निया–संज्ञावंत जीवोमां रहेली होय छे ते पैकी दुष्टसंज्ञानो त्याग करी सुसंज्ञाने आदर आपवो.

आठ कर्म–ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७ अने अंतराय ८ आ आठ कर्म संसारी जीवनी पछवाडे लागेलां छे तेउनो नाश करवा सतत उद्यमी थवुं.

पचीश कषाय–अनंतानुबंधी क्रोध १, अनंतानुबंधी मान २, अनंतानुबंधी माया ३, अनं-

तानुबंधी लोन्न ४, अप्रत्याख्यानि क्रोध ५, अप्रत्याख्यानि मान ६, अप्रत्याख्यानि माया ७, अप्रत्याख्यानि लोन्न ७, प्रत्याख्यानि क्रोध ए, प्रत्याख्यानियो मान १०, प्रत्याख्यानिमाया ११, प्रत्याख्यानियो लोन्न १२, संजलणो क्रोध १३, संजलणी माया १४, संजलणुं मान १५, संजलणो लोन्न १६, हास्य १७, रति १७, अरति १ए, न्नय २०, शोक २१, डुगंबा २२, पुरुषवेद २३, स्त्रीवेद २४, अने नपुंसक वेद २५, आ पचीश कषाय बे ते सर्वथा त्यजवा योग्य बे,

त्रण गुप्ति–मनो गुप्ति १, वचन गुप्ति २, अने काय गुप्ति ३, आ त्रण गुप्तिने निरंतर सेववी योग्य बे.

चोत्रीश अतिशय–तीर्थंकरनुं शरीर अति अद्न्नूत, रोग पशीनाथी रहित होय. १, श्वासोश्वास कमलना सरखो सुगंधवंत होय २, शरीरमानुं लोही मांस सफेद वर्णवंत होय ३; आहार निहार कोइना जोवामां न आवे ४, (आ चार अतिशय जन्मथीज होय बे,) एक यो जननी अंदर देव, मानव पशु पक्षी क्रोमोनी संख्या ए मले बतां तेटलोज सीमामां समाय ५,

परमात्मानी योजनगामिनी वाणी होय ६, परमात्मानी वाणी प्राणी मात्र पोत पोतानी भाषामां समजी शके तेवी परिणमे. ७, पीठ पाछल देदीप्यमान भामंमल विद्यमान होय ८, सवासो योजन लगी वैर भाववालां जीवोनी अंदरनां पण वैर शमीजाय. ९, सात प्रकारनी इतिना भय न होय १०, महामारीनो रोग न थाय. ११, हदथी उपरांत वर्षादि न थाय १२, हदथी उवी वृष्टि पण न थाय १३, काल न पमे १४, स्वचक्र परचक्रनो भय न होय. १५ (आ अग्यार अतिशय कर्मक्षय थइ केवलज्ञान उपजे त्यारे होय छे.) आकाशे धर्मचक्र प्रभुनी आगल आगल चाल्या करे. १६, पादपीठ सहित सिंहासन साथेज चालतुं रहे. १७, रत्नमय त्रण छत्र माथापर विद्यमानज रहे. १८, हजार योजन उंचो ध्वजदंम आगल चाल्या करे. १९, नवकमल ऊपर पगलां मूक्या करे. २०, सोना रुपाना त्रण गढ थाय. २१, परमेश्वर चारे बाजुए सन्मुख रूपथी बिराजेला जणाय. २२, देवता चैत्य वृक्ष हाजर राखे. २३, कांटा मात्र प्रभु पग मुके त्यां उंधा थइ रहे. २४. प्रभुने रस्तामांनां तमाम वृक्ष लताउ नमतां

जणाय २५, दुंदुभी वाग्याज करे २६, अनुकूल पवन वाया करे. २७, शकुन प्रदक्षिणा देता जाय. २८, पांचे रंगनां सुगंधी फूलोनो वर्षाद आकाशमंडलना अंदरथी देवोज कर्या करे २९, दीक्षा लीधा पछी वाल नख न वधे. ३०, हमेशां एक कोडी देवो सेवामां हाजर रहे. ३१, छए ऋतु अनुकूल जणाय. ३२, श्वेत चामर ढळ्यां करे, ३३, अने इंद्रधनुष्य स्रो अगाडी चाल्या करे. ३४, (आ ओगणीश अतिशय देवताना करेला होय छे. ४–११–१९ मली ३४ थया.)

एवा चोत्रीश अतिशयवंत भगवाननी वाणीमां लीन रही आत्म कल्याणनी प्रेरणामां निरंतर मच्या रहेवुं जोइये हे भव्यजीवो ! आ भवनी अंदर सर्व प्रकारनां सुख अने परभवमां शुभगति अथवा मोक्ष लक्ष्मी सहेजमां प्राप्त थाय ए माटे जिनवाणी उपर दृढ सद्दहणा राखी मंगलिकमालाने वरो अने भवभ्रमणाने हरो !

व्याख्यान बीजु.

(शार्दूलविक्रीडित.)

" धर्मः कामगवी यदीयचरणा दानादयो यन्मुखं,
शुद्धा जीवदया विवेकविलसत्पुच्छटालंकृतिः
श्रेयस्तृणचारिणी शुभपयः संपत्तिहेतुश्च या,
आलस्यादिकपश्यतोहरगणात् दक्ष त्वया रक्षताम् ॥ २ ॥

श्री अरिहंत भगवंत अशरण शरण भव भयहरण शिवसुख करण तरणतारण षट् जीवनिकाय वत्सल भव्य जीव प्रते धर्म रुपी कामधेनु संबंधी व्याख्या कही बतावे छे के हे दक्ष चतुर मानवो ! धर्म रुपी कामधेनु भूख दुःखने दूर करी सुखमां स्वाधीन राखनारी छे.

जेम कामधेनु सर्व प्रकारे पवित्र छे, तेम धर्म पण सर्व प्रकारे पवित्र छे. कामधेनु जेम ज्यारे जोइये त्यारे उत्तम दूध आपी सेवन करनारने तुष्टि पुष्टि आपे छे; तेम धर्म पण सर्वोत्तम सुखरूप सुगति आपी सेवन करनारनी भवभ्रमणा टाली स्वर्गापवर्गरूप तुष्टि पुष्टि आपे छे. जेम कामधेनु सर्वमान्य छे, तेम धर्म सर्वमान्य छे. जेम कामधेनु दारिद्र्यने नजीक आववा देती नथी, तेम धर्म पण दुर्गतिरूप दारिद्र्यने नजीक आववा देतुं नथी. जेम कामधेनु उज्वल वर्णवंत छे, तेम धर्म पण उज्वल तत्ववंत छे. जेम कामधेनु थोडा खर्चे महान् लाभनी भेट करावेछे, तेम धर्म पण सहज महेनतमां महान् आनंदनो लाभ बक्षे छे अने जेम कामधेनु मानवंती मंगल रूपछे तेम धर्म पण मानवंत महामंगल रूप छे, तथापि तेने तृप्ति आपवा सारवार करवानी जरूरज छे. जो तेनी सारवार सारी रीतें करवामां आवे तो बेशक अवर्णनीय आनंद आपे, धर्म माटे पण तेवीज रीति अनुसरवामां आवे एटलेके दया दान दक्षता साथ दश लक्षणो पालण करवामां आवे तो बेशक महदानंद अर्पे छे, माटेज जेम कामधेनुने बलवान् चोर हरी न जाय ते माटे आलश त्यजी (तेनुं जेम) संरक्षण करवुं योग्य छे, तेम काम

क्रोधादि अथवा काठिया रूप सबल चोरोथी धर्मधेनुनुं पण रक्षण करवुंज योग्य छे, नहीं तो ते दुष्टो दुष्टाशयने अमलमां आणी धर्मनी हानि करेछे. जेथी सावधानी साथ धर्मधेनुनुं रक्षण करी अनंत सुख प्राप्त करवुं.

काठिया रूपी तेर सबल चोर छे ते एके:—

(गाथा छंद.) आलस्स १, मोहा २, वन्ना ३, थंजा ४, कोहा ५, पमाय ६, किवणत्ता ७, जय ८, शोगा ९, अन्नाणा १०, विखेव ११, कुतूहला १२, रमणा १३.॥१॥

पहेलो काठियो—आलस नामनो छे ते शुन्न धर्म करणी करवा जतां घरमांथी बहार निकलवानी विचारणाज अमलमां न आणवादे. मात्र विविध प्रकारना घरकाममां लुब्ध बनावी देवानी प्रेरणा राखेछे.

बीजो मोह काठियो—ते हेय उपादेयनी अंदर अथवा पुत्र स्त्रीमां निर्विवेकपणे मोह राखवानी ज प्रेरणा करावे छे जेथी धर्म तरफ इच्छा पेदाज न थवा दे.

त्रीजो अवज्ञा काठियो–ते बीज़ा बधा गुणीजनो ज्ञानीओने माटे निंदा कराववानीज वृत्ति पेदा करे, जेथी ते कहेतोज फरेके ए मूर्ख शुं समजे छे! एनामां (ज्ञानादि) कशुं नथी. एवी रीते अनेक अवर्णवाद बोलवामां मस्त रहे, किंवा मलीन वस्त्रपात्रादि सहित तथा सकल संस्कार रहित पाखंडी छे वगेरे निंदा करे जेथी गुणी ज्ञानीना नजीकज जवा न पामे.

चोथो अहंकार काठियो–ते गुरु गुणिजनने देखी मोटाइने लीधे मस्तक न नमावतां स्थंभ बनी रहे, जेथी गुणि गुरुनो समागम थवानो समयज हाथ न लागवा दे.

पांचमो क्रोध काठियो–ते गुरु प्रमुखने विनाकारणे लढे वढे अने रोसाइ रहेतां तेमनी हजूर न जाय, जेथी सदुपदेशना लाभथी बेनसीब (दूर) रहे छे.

छठो प्रमाद काठियो ते–विकथा (राजकथा देशकथा भोजनकथा अने स्त्रीकथा) अने उंघ मद विषय कषायमां लीन बनी जतां गुरुपासे न जाय जेथी ज्ञानोपदेशनो स्वाद अनुभववा भाग्यशालि न थाय.

सातमो कृपणता काठियो—ते देहरे उपासरे जवाथी जरापण चोखा बदाम वगेरेनुं खर्च थाय ए कंजुसाइने लीधे त्यां जाय नही जेथी मंगल कल्याणना मार्गथी दूर रहे छे.

आठमो भय काठियो—ते महान् दुष्टकर्मकर्त्ताने नर्क प्राप्त थाय छे अने त्यां भयंकर त्रासभर्यां दुःखो भोगववां पडे छे वगेरे वगेरे भयानक नर्कभय वर्णनना भयने लीधे डरीने अथवा तो कोइ शत्रुथी डरीने बहार न नीकले जेथी निर्भयतानो रस्तो हाथ चडे नहीं.

नवमो अज्ञान काठियो—ते अज्ञान मार्गमां दोरी एवुंज बोलाव्या करे के मांस भक्षणमां, मदिरा पीवामां अने मैथुन सेववामां कशो दोष नथी.॥ न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये नच मैथुने ॥ प्रवृत्तिरेषाभूतानां, निवृत्तिस्तुमहाफला ॥ १ ॥ स्वर्ग नर्क छेज नहीं, ग्रंथो गपनोज भंडार छे. वगेरे वगेरे मिथ्यात्वना वचनने लीधे गुरु गुणी तरफ श्रद्धा उत्पन्न थायज नही, अने श्रद्धा पेदा थया विना आत्मकल्याण थवानो पंथ हाथ चडेज नहीं.

दशमो आक्षेप काठियो—ते आ हमणां करवुं छे, अने आ पछी करवुं छे, एम घणा कामोनी

जलोजथाथी आकुलव्याकुल थतां निश्चय विचारने ताबे न थइ शके, जेथी विचारमांने विचारमां मानवभव एले गुमावी बेसे छे.

अग्यारमो शोक काठियो—ते व्हालाना मरणथी शोकने स्वाधीन थइ रहेतां धर्मोत्साह आववा न पामे, जेथी गुरुवाणीना वियोगने लीधे सदा शोकमां ग्रस्त बनवानो वखत हाजरी आपे छे; एटलेके दुष्टगति थवाथी शोक मटवानो समय प्राप्तज क्यांथी थवा पामे.

बारमो कुतूहल काठियो—ते नाटक, चेटक, सरकस, गानतान, बाजी, रम्मत, गम्मत, वगेरे खेल तमाशानी अंदर मशगुल रह्या करे जेथी धर्म तरफ अणगमो बतावे, तेना लीधे परिणाममां मनुष्यजन्म अफल थाय छे.

तेरमो रमण काठियो— ते कूकडा, घेटा, तेतर वगेरेनी लडाइ कराववामांज मन आनंद मान्या करे जेथी धर्म तरफनी लागणीज पेदा न थाय.

आ तेर काठियारूपी सबल चोरोथी धर्मरूपी कामधेनुने बचावी लइ तेनाथी मलता लाभ

प्राप्त करी लेवा चूकवुं नहीं.

जेम कामधेनुने चार पग होय छे, तेम धर्मरूपी गायने पण क्षमा, मार्दव, आर्जव अने मुक्ति एवा चार पग छे, अर्थात् क्रोधने जीतवो ते क्षमा, मानने जीतवो ते मार्दव, मायाने जीतवी ते आर्जव अने लोभने जीतवो ते संतोष ए रूपी चार चरण छे जेनावडे ते धर्मकामधेनु चाली रहेल छे. ते धर्मकामधेनुनुं मुख दयामय छे, एटलेके त्रस अने स्थावर जीवोनी यतना करी बचाववां एज तेनो मुख्य स्वभाव छे. विवेक रूप लंबाइवंत जेनुं सुंदर अलंकार रूप पुंछ छे, तथा साधुधर्म अने श्रावकधर्म ए रूपी जेना बे कान छे, निश्चयनय अने व्यवहारनय ए बे नय रूपी सुंदर शिंगडां छे. तथा भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, गम्यागम्य मार्ग अनुमार्ग वगेरेनुं ज्ञान करावनार मतिज्ञान ने श्रुतज्ञान रूपी जे धर्मकामधेनुनां बे लोचन छे, मूलगुण तथा उत्तरगुण ए रूप जेना बे नाकना फरणा छे, नियतकाल निश्चयकाल क्रियानुं करवुं ते रूप जीभ छे. आठ प्रवचन माता (पांच समिति त्रण गुप्ति) रूप जेना आठ दांत छे ते वडे पापरूप तृणने चर्वा करे छे. दान-

शील–तप–ज्ञावना रूपी जेने चार आंचल ठे तेनी मारफत पुन्यरूपी उत्तम दूध प्रकट थाय ठे अने तेना सेवनथी तुष्टिपुष्टि प्राप्त थाय ठे. एवी सर्वांग सुंदर बिराजमान धर्मरूपी कामधेनुना सेवनथी अनेक ज्ञव्य जीवो उन्नतिक्रमने ज्ञेटवा ज्ञाग्यशाली थयाठे, अनेक जीव उन्नति पामी रह्या ठे अने अनेक जीवो ज्ञविष्यमां उन्नति पामी ज्ञवोदधिथी पार थशे, माटे हे ज्ञव्य जीवो ! निरंतर ए तारक धर्मकामधेनुनुं सेवन करो के जेथी आ ज्ञवमां सर्व सुखो हाजरी आपे, अने परज्ञवमां पण मनोवांछित फल मलतां ज्ञवाटवीना ज्ञयरहित थवाय.

व्याख्यान त्रीजुं.

—— ०*० ——

(अनुष्टुप् छंद.)

" सद्द्रव्यं सत्कुले जन्म सिद्धिक्षेत्रं समाधयः
संघःचतुर्विधो लोके सकाराः पंच दुर्लज्ञाः ॥ ३ ॥ "

श्री अरिहंत भगवंत वीतराग देव भविक जीव प्रते प्ररूपणा करे छे के–हे भव्य जीवो ! आ मायामयि संसारचक्रमां बावन अक्षरनी संख्यामां मात्र शास्त्र निर्माण करेल छे अने कहुं छे के

दुहो–बावन्नांसु बांधियो, भारतीको भंडार;
आगे लागे भलीचतां, किणही न लाधो पार !

ए अपार भारतीभंडारना बावन अक्षरो पैकी पांच सकार जीवने प्राप्त थवा महामुश्केल छे, एटले के सद्द्रव्य १, सत्कुलमां जन्म २, सिद्धक्षेत्रनी स्पर्शना ३, समाधि ४ अने संघनी सेवा ५ आ पांच सस्सा दुर्लभ छे.

सद्द्रव्य अर्थात् न्यायवडे पेदा करेलुं धन अने तेने सारा मार्गमां वापरवानी विचारणा राखवी, मतलब के दश क्षेत्रमां धन वावरवुं.

दश क्षेत्र ए कहेवाय छे के–भगवंतना देहरासर निमित्त वापरवुं १, प्रभुनी प्रतिमाओ भरावबी २, तत्ववादनां पुस्तको लखाववां ३, साधुनी सेवामां ४, साध्वीनी परिचर्यामां ५, श्रावकनी भक्तिमां

६, श्राविकानी सारवारमां ७, जीर्णोद्धार करवामां ८, उपासरो सुधराववामां ए अने साधारण खातामां द्रव्य वापरवुं. १० आ दश ठेकाणामां वापरेलुं धन सारी पेठे कुगी सुकुलता प्राप्त करावे छे.

अन्याय वडे एकठुं करेलुं धन कुमति–नठारी बुद्धिने जन्म आपे छे. वेश्यागमनादि व्यभि-चारमां, जुगार खेलवामां, दारु आदि मादक पदार्थना उपभोगमां वापरवानीज इच्छा रहे छे.

अन्यायोपार्जितंद्रव्यं, दशवर्षाणितिष्ठति ॥ प्राप्तेचैकादशेवर्षे, समूलंचविनश्यति ॥ १ ॥

अन्यायथी मेलवेलुं धन कदि विशेष टके तो दश वर्ष लगी टकवा पामे छे; परंतु अगीयारमा वर्षे तो प्रथमना कमाएला धनने साथे लेइने ते धन नाश पामे छे. ए माटेज सुमार्ग–न्यायथी धन मेलववुं के जे लांबी मुदत लगी टकवा पामे छे, अने जेना वडे सारां कामो थवाथी अमर नामना प्राप्त थाय छे. पण एवुं धन मलवुं मुश्केल छे एना लीधेज सद्द्रव्यनी प्राप्ति दुर्लभ छे एम प्रथम सकारथी सिद्ध थाय छे.

बीजो सकार सुकुलमां जन्म मलवो बहु मुश्केल छे–अर्थात् आर्यदेशमां अने श्रावकना

घरमां जन्म मलवो ए घणोज दुर्लभ छे.

श्रावकना कुलमां महामंत्र नवकारनो जाप करवो, दयामूल धर्म पालवो, पाणी पण गलीने पीवुं अने पगले पगले छकायनी रक्षा करवी ए तो नित्यक्रमज होय छे.

जन्म मलीने अनार्यदेशमां मले, अगर आर्यदेशमां जन्म मलीने मिथ्यात्वीना कुलमां जन्मे तो तेथी आत्मकल्याणनी साधना कशी थइ शके नहीं, आत्मकल्याण तो फक्त श्रद्धा. विवेक अने क्रिया ए त्रण अमूल्य रत्नोथी अलंकृत श्रावक (शब्द तेना) कुलमां जन्म मले ए महा पुन्यनी प्रबलताना योगेज बने छे. माटेज बीजो सकार सुकुले जन्म दुःष्कर छे एम कहेवामां आव्युं छे.

त्रीजो सकार सिद्धक्षेत्र एटले सिद्धाचल तीर्थनी यात्रा थवी ए महा मुश्केल छे. शत्रुंजयनी यात्रा करवाथी नरक निगोद तिर्यंचादि दुर्गतियोनी प्राप्ति दूर थइ सद्गति प्राप्त थाय छे. एटलुंज नहि पण अल्पसंसारी थवाय छे माटेज त्रीजो सकार सिद्धक्षेत्रनी प्राप्ति दुर्लभ छे एम कहेवामां आव्युं छे.

चोथो सकार समाधय—संतोष के जे परम सुखनुं कारण छे, ते प्राप्त थवो दुर्लभ छे. कह्युं छे के

जगमें है भूखी दुनी, कबहु आघाइ नांहि; तीन लोककी संपदा, जो आवे घर मांहि. १

घटत घटत ज्यों होत है, ज्युं जिनकों संतोष; वधत वधत ए होय तो, होत घरीमें मोख. २

हाथी घोरे सघन धन, पंच रतनकी खान; जब पायो संतोषधन, सब सुख धूरी समान. ३

माटेज कहेवानी जरूर छे के संतोष सर्वोपरी सुखनुं साधन छे. परंतु ते थवो दुर्लभ छे; केमके तृष्णावैतरणी नदीनुं पूर कदि मंद पणाने पामतुंज नथी जेथी संतोषनां दर्शन थतां नथी. तृष्णानी शांति थाय तोज संतोषनो उदय थाय छे.

आ जगतमां जीव मात्र आशा तृष्णानी ताबेदारी भोगवनारा छे. आशा तृष्णा, लोभीनी कबर छे, कामीजननुं पारणुं छे, दुखियानुं दिलासापत्र छे, जीवोनुं जीवन छे अने संसारयात्रानी सरूक छे. आशातृष्णा एज परम दुखनुं कारण छे अने संतोष ए महान् सुखनो झरो छे; परंतु तृष्णानो अंत आणी संतोषनुं सदा सेवन करवुं ए अति मुश्केल भर्युं छे एथीज चोथो सकार

संतोष पामवो डुर्लज्ञ बे एम कहेवामां आव्युं बे.

पांचमो सकार संघसेवा ए पण अत्यंत डुर्लज्ञ बे. संघ एटले साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका आ चतुर्विध संघनी अनन्य प्रकारे—पूर्ण ज्ञक्तिज्ञाव वमे सेवा करवी. तेमने वस्त्रपात्र ज्ञोजन-औषध-मकान-सन्मान अने स्वामीवत्सल वगेरे वमे संतोषी तेउनी सेवा करवानो ज्ञाव दृढ थवो बहुज मुश्केल बे.

जे श्रावक श्राविका साधु साध्वीने वस्त्रपात्रादिनी मुशीबत वेठतां निहाली अथवा पोताना स्वधर्मी ज्ञाताउने ज्ञूखना डुःखथी रीबाता निहाली मनमां जरा पण अरेकार आणतां नथी अने पोतपोतानी शक्ति मुजब तेउनुं कष्ट कापवाने माटे बनती कोशीष करतां नथी ते पुन्यनां ज्ञागी थतांज नथी. केमके संघ ए पचीशमा तीर्थंकर समान पूज्य बे; माटे ते संघनी सेवा पूजा ज्ञावज्ञक्तिनी अंदर जे उदारचित्त थतां नथी ते खचीत ज्ञाग्यहीनज मनाय बे. परंतु कर्मना कठीन योगना संयोगवमे ते चतुर्विध संघनी सेवा प्राप्त थवा जेवी शकती नथी तेथीज तेने डुर्लज्ञ मानवामां आवे बे.

ऊपर बतावेला पांच सकार सहेलाइथी प्राप्त थइ शकता नथी; तथापि जो ते पांचे सकारने प्राप्त करवा माटे एक सरखो यत्न हाथ धरे तो बेशक डुर्लन्न उतां सुलन्न थइ शके ठे.

पूर्व समयनी अंदर बेसुमार मानवोए पांच सकारोनो सत्कार कर्यो ठे जेथी तेठ सहेलाइथी न्नवसागर तर्या ठे, तेमज हालमां जे पांच सकारनुं सर्व प्रकारे सेवन करे ठे तेठ न्नवोदधि तरवानी तैयारी करी रह्या ठे, अने हवे पठी जेठ आ पांचे सकारनुं निर्मल तन मन वचनथी निरंतर सेवन करशे तेठ न्नवना अंतने न्नली रीते न्नेटी शकशे एमां जरा पण शक नथी. माटे हे न्नवि प्राणियो ! संसारतारक ए पांच सकारोने प्राप्त करवा पुन्यकरणी करो के जेथी पांचे सकारो सुलन्न थतां जन्ममरणना न्नयथी मुक्त थइ सिद्धिपदना न्नागी थवा न्नाग्यशाली थइ शको. एवी जिनवरनी वाणी सांन्नली न्नविप्राणी न्नाव आणी हैये धरो अने अमलमां लावो के जेथी उन्नय न्नव मंगल केली कमला वरी सुगतिना संगी थाठ.

व्याख्यान चोथुं.

—०※०—

(अनुष्टुप् छंद.)

" अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः ॥
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ ४ ॥ "

श्री जगदीश जिनराज गरीबनिवाज जगज्जनहितकाज भवजलनिधि पार थवा पाज रूप सुंदर सुधाथी पण अत्यंत मिष्ट प्ररुपणा आ प्रमाणे करी गयेल छे के,—

दुहा—ऊग्या सो तो आथमे, फूल्या सो करमाय;
चण्या देवल गिर पडे, जन्म्या सो मर जाय.

चंद्रमा सूरज अने तारा आदि जे ऊग्या होय छे ते आखर अस्तज थवाना छे अगर आय

छे, जे वनस्पति–फलझाड वगेरे फूलेल छे ते करमायज छे, जे मकानो-देवलो-कोट-किल्ला वगेरे चणेल छे ते आखर जमीनदोस्त थवा(पडी जवा)नाज छे, अने जे प्राणीमात्र जन्म्यां छे ते आखर मरणने शरण थवानांज छे अथवा थाय छे ज. परंतु कोइ हमेशां एक स्थितिथी कायम रहेनारज नथी ! केमके,–

देखो लोगो माटी फूली, माटी देखी माटी फूली; माटी आवे माटी जाय, हसी रमीने माटी थाय.

हे लोको ! सकर्मा दरेक जीव, चेतन के जड माटीमांथी पेदा थाय छे. माटी एटले मृत्तिका अथवा मांस-चाम एमांथीज दरेकनी उत्पत्ति होय छे. छतां माटीनी पेदाशने निहाली मातापितारूप माटी फूले छे–खुशी थइ मकलाय छे; परंतु तेने खबर नथी के बधी वस्तु माटी अथवा पृथ्वी–योनि-मांथीज प्रकट थाय छे अने पुनः आयु नाश थये तेमांज समाइ जाय छे तथा हसी रमीने माटीज बने छे. एथी मूल श्लोक जाहेरमां लावे छे के प्राणी मात्रनां शरीर अनित्य–नाश थनारां ज छे. ज्यारे जे वस्तु नाशवंत छे त्यारे ते वस्तु उपर ममता राखवी ए केवल घेलछाज छे माटेज

नित्य वस्तु जे धर्म तेनी सदैव भजना करी अनित्य शरीरनी जन्मयात्रा सफल करवी. ए संबंधने लगतुं एक दृष्टांत छे के–

'यथाराज्ञः प्रधानेन सुमित्र त्रितयं कृतम् ॥ तृतीयो हितकृज्जातः स एव सुखदःस्तथा.'

वसंतपुरनी अंदर महाराजा जीतशत्रुनी हजूरमां बुद्धिनिधान नामनो प्रधान नाम प्रमाणे काम करी बतावनार बुद्धिना खजाना रूप हतो, अने ते तमाम राज्यकारोबारनो भार वहन करी राजा तेमज प्रजा एम बेउ पक्षने प्रसन्नता आपतो हतो. एथी राजा प्रजानी पूर्ण ममताने लीधे विशेष मानीतो थयो हतो. ए प्रधानने त्रण मित्र हता, ते पैकी पहेला मित्रनुं नाम नित्यमित्र, बीजो पर्व मित्र अने त्रीजो प्रणाम मित्र हतो. ते प्रधान, नित्यमित्रनी हरहमेशां भोजन वस्त्र वगेरेथी भक्ति साचवतो हतो, तेमज पर्वमित्रनी दशहरा दीवाली हुताशनी वगेरे परबलांने दिवसे भोजनादिथी भक्ति साचवतो हतो, अने प्रणाम मित्रनी फक्त लटक सलाम राखी नमस्कार तथा मीठे वचनेथी ज्यां मले त्यां संतोष आपतो हतो.

राजा कोइना कोइ दिवस मित्र थया नथी अने थशे पण नहीं. ए नियमानुसार एक समय ते राजा, प्रधान ऊपर कोपायमान थइ गयो, जेथी ते प्रधान पहेला नित्यमित्रने घेर जइ पोतानी ऊपर पडेली आफत संबंधी वात कही ऊभो रह्यो; पण तेणे चोखुं कह्युं के–'राजाना शत्रुने सन्मान आपवुं ए खानाखराबीनोज मार्ग छे माटे कृपा करी तमो अहींथी बीजे पधारी जाओ. माराथी राजानी धुंस ऊंचकाशे नहीं.' आम जवाब मलतां प्रधान पर्वमित्रने त्यां गयो अने त्यां पण अथ इति वात कही संभळावी उत्तरनी राह जोवा लाग्यो. ते बीजा मित्रे पण कह्युं के–"तमारी संगतिवडे अमो पण शिक्षाना पात्र थइये माटे महेरबानीनी राहे अन्य स्थले पधारो." आवो जवाब मलतां प्रधान त्रीजा प्रणाममित्रने घेर गयो अने त्यां पण प्रथम प्रमाणे कही ऊभो रह्यो, एटले ते त्रीजा मित्रे पुष्कल दिलासो आपी कह्युं–'जरा पण राजानो भय राखशो नहीं. मारुं घर–धन–कुटुंब अने शरीर नाश पाम्या पछीज तमोने ते जोवा पामशे. पण ते पहेलां तो मगदूर नथी के तमारा भणी नजर पण करी शके.' इत्यादि कही सन्मान सह

संतोष आप्यो, अने पोताना मित्रने निर्भय पूर्वक मकाननी अंदर राख्यो.

ते पछी ते मित्रे राजेंद्र पासे जइ कला केलवी महाराजानी प्रसन्नता मेलवी निवाजसमां प्रधाननो अपराध क्षमावी तेने निर्भययुक्त अभयदाननो भोगी कराव्यो. कहेवानो मतलब एज के धर्म छे ते प्रणाममित्रनी पेठे अभयदानदाता–प्राणरक्षक छे एटले के जीवने त्रण दोस्तदार छे ते ए के पहेलो देहमित्र, बीजो कुटुंबमित्र अने त्रीजो धर्ममित्र छे. पहेला दोस्तदार देहने हमेशां खान पान वस्त्र वगेरेथी साचवतां छतां ते बगमी बेसी करेली ठठमठने विसरी जइ नाश पामे छे, एटले के सेवकनी सेवानी कशी कदर न करतां वियोग आपे छे–पण पोतानो थतो नथी. बीजो कुटुंबमित्र पण दुःख आवी पमतां के काल आवी पहोचतां परब दिवसोए साचवेली सेवा छतां कशी गरज सारतो नथी. सुखनोज संगी रहे छे. ज्यारे जे मित्र–

सुखरी वेला सांगणा, दुखरी वेला दूर; वे सज्जन वोलावियें, वहेती नदियां पूर.

मतलबनाज संगी होय ते मित्रनो त्यागज करवो. त्रीजो धर्ममित्र छे ते प्रणामरूप छे

तथापि कष्टमां पडेला पोताना आराधकने आ भव परभवमां पण मनमानती निर्भयता अने सुखसंपदा आपी अक्षय पद आपे छे. कह्युं पण छे के—वनमां-रणमां-शत्रुदलमां-पाणीमां-आगमां-समुद्रमां अने विषम विपदवाली जगामां फक्त धर्ममित्रज सहायता आपे छे. माटेज कहेवानी जरूर छे के त्रीजा मित्रना समान धर्ममित्र परम उपकारी छे. छेह-दगो न आपे तेवो चोलमजीठना रंगवत् प्राण अने पण साथे छोडनार छे. माटेज कहिये छिये के—

धर्ममित्र विछडे नहीं, बीजा विछडी जाय; इसो जाणी धर्म सेविये, इरत परत सुख थाय!

अर्थात् बीजा बधा मित्रो बदलाइ बेसे, पण धर्मरूप मित्र कदी पण बदलाइ बेसतोज नथी. जेथी हे भविजीवो!

नित्यमित्र सम देह छे, कुटुंब पर्व समान; हितकर जाणो आपणो, धर्म महा सुखदान.

एथीज मूल श्लोकमां कहेलुं छे के अनित्यानिशरीराणि-शरीर अनित्य-नाशवंत छे एम समजी धर्मनो संग्रह करवो.

वलि वैभवो छे ते पण अनित्य छे एटले के लक्ष्मी तो कुलटा स्त्रीना कटाक्ष तथा वीजलीना झबकारा समान चपल छे—छे छे ने नथी. छतां लोको मारी मारी करी ममतामां लुब्ध बन्यां छे. पण हे जीव !

माने छे मारुं मारुं रे जागीने जोने, तलभार नथी कंइ तारुं रे जागीने जोने.
माणक ने मोती केरी दुकानो जेणे मांडी, हींड्या लइ फूटी हांडी रे. जागी. १
भंडार धनना भरिया भूपाले बजवी भाला, चाल्या ते ठालामाला रे जागीने जोने. २
कीर्तियो जेनां नाणानी संभलाती काने, ते सूता जइ समशाने रे. जागी. ३
संचरता हाथी घोडा हजारो जेनी साथे, ते हींड्या खाली हाथे रे. जागी. ४
संसार सर्वे देखी डरतोतो जेनी रहेमां, ते चोटया जैने व्हेमां रे. जागी. ५
कीधां होय हाथे करीने दान पुन्य कोडे, ते जाय जीवनी जोडे रे. जागी. ६
ऋषिराज कहे हृदयमां रहेनारो जेथी रीझे, कामो तो एवां कीजे रे. जागी. ७

श्रोताजनो ! ज्यारे वैभवनी आवी अथिर स्थिति छे त्यारे तेमां मग्न थइ मदांध थवुं ए खचीत भव हार्यानीज निसानी छे छतां—

इही मायाके मामले, भूली रहे हैं भूरि;
गुदिप करी गोते दिये, ज्ञानी बचें न शूरि. १
सहसही कोडि लखिमी जोडी, अरब खरबकों धायाजी;
तृष्णा लोभ पलीता लाया, फिरि फिरि ढूंढे माया. २
एक कंचन अरु कामिनी, जगमें हैं दोइ फंदा;
इनतें न्यारा जो रहे, तिनका में हुं बंदा. ३

वास्ते तेवी लक्ष्मी अने वैभवतानो गर्व त्यजी निराभिमानथी सुमार्गमां धन वावरी धन मळ्यानो छहाव लेवो. जेम तलाव कूवा वगेरेमांथी कादव पथरा आदि कहाडी गालता रहिये तो तेमांनुं पाणी स्वच्छ अने गहेरुं रहे छे, तेम धन वावरता रहेवाथी ते वृद्धि अने शोभा पामे छे.

कूवामांथी पाणी न वापरियें तो ते पाणी निरोगी अने अखूट रहेतुंज नथी; पण उलटुं गंडुं थइ दुःखदाता निवडे छे. एवीज रीते माया—धन पण खर्च्यें वावर्येंज अखूट अने विमल शोभावंत रहे छे. केमके मूल श्लोकना त्रीजा पदमां कहेल छे के—नित्यं सन्निहितो मृत्युः—हमेशां मरण तो म्हों अगाडीज फेरफुंदडी दीधा करे छे. ते जेम चकलानी ऊपर बाज अचिंती झपट मारी प्राणने परलोक पहोचाडे छे तेम काल पण अचिंते आवी दोट देइ कोट मरडी नाखशे के बधी बाजी परवारी जशे अने कशुं जोर चालशे नहीं. कह्युं छे के-

मंत्र तंत्र यंत्र जडी धरीही रहत घरी घरीहुको होत न बचाव कहु प्रानको,
दोरी धाव औषध उपाव कछु चले नाही दीप ज्युं उछ्डाय जाय प्रेर्यो पवमानको;
दूरहीतें देखतही रोय रहें खगकुल परत अचिंत्यो आय दाव ज्युं सीचानको,
छांरी सब आर जार राज माया मोह जार अंतकाल शरण भजन भगवानको. १

माटे पडछायानी पेठे साथेने साथे रहेला कालथी बचवा धर्मनुं शरण ग्रहण करवुं जेथी

शाश्वत सुख स्वाधीन थाय छे. केमके धर्म प्रभुप्ररुपित सत्य धन छे, ते धनना सेवनथी अनंत जीव अक्षय सुखना संगी थया, थाय छे, अने एशेज एम जाणी हे भविप्राणी सुखनी खाणिरूपी धर्म धननो संग्रह करी सदैव शाश्वत सुखना सेवनार थाओ के जेथी कल्याणकमला वरो अने फरी संसारमां फेरा न फरो !

व्याख्यान पांचमुं.



(अनुष्टुप् छंद.)

गतः सारेत्र संसारे सुखभ्रांतिः शरीरिणाम् ॥
लालापानमिवांगुष्टे बालानां स्तन्यविभ्रमः

श्री अरिहंत भगवंत सुरासुरसेवित शातादाता भयत्राताओ एवुं प्रकाशेल छे के. हे भविजीवो !

आ संसारमां कंइ सार नथी एथी असार छे. जेम केलना थम्भमां कशो सार नथी तेम संसार सार रहित छे. आ संसारमां भमतां भटकतां आ जीवे अनेक भव कर्या. नाटकियानी पेठे अनेक वेषथी आ संसाररूपी स्टेज—नाटकना तख्ता ऊपर देखाव दीधो, तथा अनेक संबंधबंधन सह सगाइ न्यातो पण दर्शाव्यो अर्थात् माता ते स्त्री, स्त्री ते माता, पिता ते पुत्र, पुत्र ते पिता इत्यादि विपरित संबंध जोड्या अने एकज भवमां पण केटलांए सगपण बांध्यां; तथापि तेमां कशो सार हाथ आव्यो नहीं-जेमके अढार नात्रानो एक संबंध अगाडी जोडायो हतो एटले के-

मथुरांनी अंदर कुबेरसेना नामनी वेश्या बहुज रूपवंत हती, ते नायकाए पोताना जार पुरुषना संयोगवडे एक जोडलाने जन्म आप्यो. तेमां एक पुत्र अने एक पुत्री एम जुगल जोडी हती. गणिकाने अनेक जणनां मन साचववां त्यां तेनाथी पुत्र पुत्री बेन शी रीते सचवाय ? बीजां बधाओनां मन जालववां बाजुपर मुकाय तोज संतान सचवाय छे. लंपट स्त्रीओ परना प्यारमां लुब्ध होवाथी संतती तरफ प्यार रहित होय छे. ए नियमानुसार तेणीए दशुटन निवार्यां बाद ते

બેઉ બાલકોનાં કુબેરદત્ત અને કુબેરદત્તા એવાં નામ રાખી, તે નામની વીંટીઉ કરાવી એક પેટી કે જેમાં પવન આવી શકે, પણ પાણી જીવજંતુ ન જઇ શકે તેવી તૈયાર કરી તેમાં તે બાલકોને સુવારી વીંટીઉ આંગલી સાથે ટાંકી પેટીને પેક કરી યમુનાના પૂરમાં વ્હેતી મૂકી.

(સમઝાય છે કે તે સમયમાં પણ બાલહત્યાને મહાપાતિક માનતાં હતાં, નહિ તો વેશ્યા જેવી નિષ્ઠુર મનવાલી સ્ત્રી આ પ્રમાણે બાલકને જીવતાં રાખી યમુનાને શ્યા માટે સુપરદ કરે?)

આયુબલના યોગથી તે પેટી પાણીના પ્રવાહની અંદર ચાલતી ચાલતી સોરીપુર નામના શહેરની ભાગોલે નિર્વિઘ્ન પૂર્વક જઇ પહોંચી. દરમ્યાન બે દોસ્તદાર વાણિયા યમુનાના કાંઠે સ્નાન-માર્જન કરતા હતા, તેમણે તે પેટીને આવતી જોઇ શરત સાથે જે માલ નિકલશે તે અરધો અરધ વ્હેંચી લેવાના ઇરાદે પાણીના પ્રવાહમાં પડી પેટીને બહાર કહાડી, અને જ્યારે ઉઘાડી જોયું ત્યારે તેમાં બે રમતાં ખેલતાં બાલક જોયાં, જેથી શરત મુજબ જેને પુત્રની ખોટ હતી તેણે પુત્ર અને જેને પુત્રીની ખોટ હતી તેણે પુત્રીને લઇ તે વીંટીના કારણથી તેજ નામોથી બોલાવી રમાડી

हसतां हसतां घेर गयां. तेमनी स्त्रीओ पण आनंद पामी अने ते बालकोने पोतानांज बालक मानी लालन पालन प्रीणन पोषण सहित उछेरी ल्हाव लेवा लागी. ज्यारे भणवानी वये पहोंच्यां त्यारे ते बालक बालिकाने तेमनां पालक मावापोए विद्याध्ययन कराव्युं, अने विवाहसंस्कारनो समय थतां तेमनां लग्न करवानी चिंता धरी.

श्रोतागण! ते बालको पेटमांथी जूदां थइ पेटीमां भेगां थयां अने पेटीमांथी जूदां थइ जूदे जूदे ठेकाणे उछर्यां, तथापि पूर्वकृत कर्मे ते युगल-जोडीने जुदां थवा दीधां नहीं. एथी ए थयुं के ते बेन भाइ बहेननांज वरवहू तरीके लग्न जोडायां, संसारसुखनो ल्हाव लेवा लाग्यां अने पति पत्निना हक पूरा पाडवामां कचाश राखी नहीं.

एक समय सोगठबाजी रमतां हतां ते वखते कुबेरदत्ताने कुबेरदत्तना हाथमांनी वींटी अने पोताना हाथनी वींटीने एकज कारीगरना हाथनी घडेली तथा सरखा नामनी जोइ एवी शंका पेदा थइ आवी के-' जूदां जूदां मावापनां फरजंदो छतां एक जेवां नाम रूप गुण अने वींटी

वगेरे छे तेनुं शुं कारण हशे ! गमे ते हो; पण आमां मारुं मन एवी साक्षी पूरे छे के कंइ न कंइ गूढ भेद होवोज जोइये ! ' इत्यादि विचारी उपजेली शंका संबंध माटे माता पिताने पोतानी उत्पत्तिनो मर्म पूछयो, एटले तो खात्रीज थइ के—'नक्की अमारो संबंध भाइ व्हेनना वच्चेज जोडायो छे ए अति नठारुं थयुं छे, महापाप बंधायुं छे, अने ए शी रीते छूटाशे. ' वगेरे पश्चाताप करी तेणीए पोताना कुबेरदत्तने ते बिनाथी वाकेफ करी त्यांथी (ते) पापनी निवृत्ति माटे चाली नीकली संवेगने वश थइ संसारनी असारताने ध्यानमां लइ कोइ शुद्धाचारी गुरुणीद्वारा दीक्षा ग्रहण करी अने ते पछी शुद्धाचारनी शिक्षा प्राप्त करी ज्ञानमां निपुणता मेलवी.

कुबेरदत्त पण अघटित घटना घटावाना संयोगनी वात जाहेरमां आवतां लज्जाने वश थइ किरियाणुं वेचवाने व्हाने मथुरे जइ पहोंच्यो, अने अजाणपणाना प्रतापे कामनो केदी बनी पोतानी जनेता—वेश्या कुबेरसेनानी साथेज विषयसुखमां लीन बनी ते तेणीनेज त्यां रहेवा लाग्यो. पंचेंद्रिय सुख भोगवतां पोताना संयोगथी तेणी कुबेरसेनाना कुखथी एक पुत्रने जन्म

मल्यो, एथी अत्यंत आनंद मामी मस्त चित्तवंत थयो दिवस निर्गमवा लाग्यो.

कुबेरदत्ता साध्वीजीने छठ अठम तप करतां अने खांडानी धार प्रमाणे चारित्र पालतां कर्मक्षय थये अवधिज्ञान प्राप्त थयुं अने अवधिज्ञान मारफत ज्यारे कुबेरदत्त शी दशामां छे ते तपास्युं त्यारे तो ते कुलमांथी नीकली चूलमां पड्यो मालूम पड्यो, एथी कामदेवने शतकोटि धिःकार आपी विचारवा लाग्यां के–'आ जीव विषयसुखथी कदि तृप्त थतो नथी अने एना लीधे कार्य अकार्य करतां पण जरा डरतो नथी.

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु ॥ अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे याता यास्यंति यांतिच.

अहा ! धन एकठुं करवाथी, जीवनमर्यादाथी, स्त्री संबंधी कामभोगथी, अने भोजनपदार्थ जमवाथी कोइ दिवस संतोष–तृप्ति पामतोज नथी !' इत्यादि इत्यादि विचारीने साध्वीजीए शोच्युं के–" अहीयां पश्चाताप कर्ये कंइ वले तेम नथी, माटे त्यां जइ समजाववाथीज प्रयास सफल थतां धर्मनी वृद्धि थइ अधर्मनो अंत आवशे." एम निश्चय करी गुरुणीजीनी आज्ञा

मेलवी विहार करी क्रमसर मथुरे पहोच्यां अने कुबेरसेनानुं घर पूछतां तेणीने त्यां पहोंची तेणीनी पासे रहेवा माटे जग्यानी मांगणी करी. एथी वेश्याए चित्रशालामां रहेवानी खुशी बतावी अने बोली के–' साध्वीजी ! अहीयां रहो एटली महेरबानी राखजो के, कोइ दिवस उपदेश न देतां फक्त पुण्यनीज वातो करजो अने अमारुं बच्चुं रोतुं होय तो छानुं राखजो. '

साध्वीजी त्यां रह्यां अने धर्मध्यानमां लीन रही धारेली धारणाने सफल करवानो समय शोधवा लाग्यां. एकवार बपोरनी वखते बालक रोवा लाग्यो जेथी तेने छानो राखवा साध्वीजी हालरडां गावा लाग्यां अने ते साथे घणी सगाइनो संबंध बतावी अढार नातरां कही बताववां शरु कर्यां. भाइ ! रोइश नही ! जो तारी ने मारी एकज मा छे तेथी तुं मारो भाइ थाय छे १, वली तुं मारा धणीनो दीकरो छे जेथी मारो दीकरो पण थाय छे २, तथा मारा पतिनो तुं न्हानो भाइ होवाथी मारो दीअर पण थाय छे ३, मारा भाइनो दीकरो होवाथी तुं मारो भत्रीजो पण थाय छे ४. मारी मानो पति तेनो भाइ होवाथी ते मारो काको पण थाय छे ५. अने शोक्यना

दीकरानो दीकरो होवाथी प्रपुत्र पण थाय छे. ६. आम तारी साथे छ सगपण छे. तेमज तारा बाप साथे पण छ सगपण छे ते पण कहुं छुं. कुबेरदत्तनी अने मारी मा एकज छे जेथी ते मारो भाइ थाय छे. १, मारी मानो धणी जेथी ते मारो बाप पण थाय छे. २, मारा काकानो बाप होवाथी ते मारो वडदादो पण थाय छे. ३, शोक्यनो दीकरो होवाथी ते मारो पण दीकरो थाय छे. ४, मने परणवाना सबबथी ते मारो पति पण थाय छे. ५ अने दीकरनो बाप होवाथी ते मारो ससरो पण थाय छे. ६. आम तेमनी साथे पण मारे छ सगपण छे. अने तारी मा साथे पण एवीज रीते छ सगपण छे ते ए के—मने गर्भमां राखी तेथी ते मारी मा थाय. १, काकानी मा होवाथी ते मारी वडीआइ थाय छे. २, मारा भाइनी वहू होवाथी ते मारी भोजाइ पण थाय छे. ३, सोक्यना दीकरानी वहू होवाथी मारी वहू थाय छे. ४, मारा पतिनी वहू होवाथी मारी सोक्य पण थाय छे ५, अने मारा धणीनी माता होवाथी ते मारी सासु पण थाय छे. ६, आम तमो त्रणे जण साथे मारे १८ जातनी सगाइ छे ”

આ પ્રમાણેનું બોલવું સાંભળી વેશ્યા રાતીપીળી થઇ નીચે આવી સાધ્વીજીને કહેવા લાગી— ' વાહ ! વાહ ! ! પંચમહાવ્રતધારિણી છતાં આવું અસત્ય કેમ ઉચ્ચારોછો ? વગર પૂછયે જુઠું બોલવાથી અધર્મ ગણાય છે. કહી બતાવો કે તમારું બોલેલું સર્વ રીતે સાચુંજ છે ? "

સાધ્વીજીએ આદ્યથી અંત લગીની હકીકત કહી અઢારે નાતરાંની સગાઇ સાબિત કરી બતાવી. જેથી તે બન્નેના મનમાં મહા સંતાપ થયો અને પશ્ચાતાપ સાથે વિચારવા લાગ્યાં કે આપણાથી બહુજ અનિષ્ટ–દુષ્ટ કર્મ થયું ! ગજબ ગુજર્યો ! મહાપાપનાં દળ બંધાયાં ! હા ! શી રીતે છૂટકો થશે ! ખચીત આ સંસાર સાર વગરનોજ છે. ફક્ત સાર શ્રી વીતરાગદેવનો ધર્મજ છે. ' વગેરે વગેરે પાપનો પશ્ચાતાપ કરી વૈરાગ્યપૂર્ણ ચિત્ત થયે તે બેઉ જણે પુત્રને અનાથાશ્રમમાં સુંપી દીક્ષા ગ્રહણ કરી. અને તપ જપ વડે કરેલાં દુષ્કર્મ ક્ષય કરી આયુના અંતે મરણ પામી દેવલોકમાં દેવતાપણે ઉત્પન્ન થયાં. આમ સંસારનો સંબંધ અસાર છે, એથીજ વ્યાખ્યાનની ભૂમિકાનાં શ્લોકનું પ્રથમ પદ કહે છે કે ગતસારેત્ર સંસારે–સાર–માલ રહિત આ સંસાર છે. ઇમ જાણી ધર્મનોજ સબંધ કરવો શ્રેષ્ઠ છે.

नः बीजा पदमां कहे छे के–सुखभ्रांतिः शरीरिणाम्–संसारनी अंदर मनुष्योने सुख छे (शारीरिक सुख होय छे) एवी एक भ्रांति–भ्रमनाज छे. वास्तविक रीते जोइशुं तो संसारना दुःखभर जीवनमां फक्त मधुबिंदुना जेटलुंज सुख मानी लेवा जेवुं छे. एटले के मधुबिंदुआनी एक कथा छे ते आ प्रमाणे छे–

एक मनुष्य कोइ वखते वननी लीला जोवा किंवा अगत्यना प्रसंगने अनुसरी वनमां गयेल हतो अने वनमां पोतानी मुराद पूरी पाडतां दरम्यान एक जंगली गांडो हाथी दोडतो तेनी तरफ आवतो जणायो के ते जीव लइने नाशी पोतानो बचाव खोलवा लाग्यो. थोडे छेटे जतां एक गंभीर वडनुं झाड जोवामां आववाथी ते तेनी ऊपर चढी एक जबरी वडवाइने अवलंबी लटकी रह्यो. लटकवानुं कारण ए हतुं के–ते वडनी वडवाइ नीचे एक जंगी घेरावादार कूवो हतो जेथी ते वडवाइ नजीक हाथी आवी शके तेम न हतुं. तेमज हाथी कदाच झाडना थडने उपाडी ले तो पण आ कूवामां पडतुं मूकीने मारो जान बचावी शकीश, एवा इरादाथी ते लटकी रह्यो हतो.

हाथी पण दोट देतो वड हेठल आवी पहोंच्यो अने वडने थड सहित उपाडी नाखवा शूंढनी सबलताथी थडने हचहचावा लाग्यो. परंतु थड घणुं मजबूत होवाथी तेमां तेने तुरत सफलता मली शके तेम थयुं नही; तथापि ए थयुं के, ते थडने धंधोलवाथी आखुं झाड कंपी उठयुं, तथा जे वडवाइये ते भयभीत मानव वलगी रह्यो हतो ते शाखा पण कंपवा लागी. आम थवाथी ते शाखाना मूलमां रहेलो जंगी मधपुडो हतो तेनी माखीओ उडी, अने ते मनुष्यना शरीरने पोताना पराभव करनार मानी चटका भरवा लागी. आथी कंइ कष्टमां तो मणा रही नही. शरीर सूजी गयुं. वेदनानो पार रह्यो नही. क्यांक क्यांक तो लोहीनी तसेरो पण फूटी नीकली, अने बलतरा बलवा लागी, ते छतां ते माखीओने ते उडाडी शके तेवा हाथ छूटा कराय तेम न हतुं. शुं तेने एटलीज पीडाथी पती जाय तेम हतुं ? ना ! जे शाखाने ते वलगी रह्यो हतो तेने धोलो अने कालो एम बे उंदर कापी रह्या हता, जेथी त्यां वधारे वखत टकी शकवानो संभव रह्यो नहीं. नीचे पडतुं मूकवानी आशाने अमलमां लेवा धार्युं तो ते नीचेना गहेरा कूवामां चार भयंकर मोटा साप अने

(एक)बे अजगर हता तेनीचे पडे तो खोराक मळे एवी लालसाथी म्हों फाडी जीवना उपकारा करी रहेला जोवामां आव्या. आथी हवे ऊगरवानो एके आरो रह्यो नहीं. मरणनो वायदो पूरो करवानी पळ नजीक नजीक आवती जणाइ. छतां पण आ बधा दुःख अने भयना विसारा रूप ए आनंदमां ते बधुं विसरी जतुं जणायुं. ते ए के, ते मधपुडाने कोइ हालनो गोदो वागवाथी माखीओनुं करेलुं पड भेदाइ जवाना लीधे पुडामानुं मिष्ट मध टपकवा लाग्युं अने ते मधनुं टींपु ते भयथी वींटायला मानवना म्होंमां आवी पडवा लाग्युं. आ मधबिंदुना मळवाथी बधुं दुःख विसारे नाखी तेमांज तल्लीन बनी गयो. पण मरणे पोतानो केदी करवा तेनी चोमेर जावणी नाखी हती तेनुं तेने जरा भान रह्युं नहीं. एटलुंज नहीं पण तेवा समयमां एक विद्याधरनुं विमान त्यां थइ पसार थतुं हतुं तेमां बेठेली विद्याधरीए आ बापडा दुखियारानी वीतक वात ध्यानमां लइ पति प्रत्ये कह्युं—' प्राणनाथ ! आ मरणने वायदो पुरो करवानी अणी ऊपर पहोचेला दुःखग्रस्त जनने आपण बचावी लइये अने विमानद्वारा तेने तेना घेर पहोचतो करीए.' विद्याधरे कह्युं—' ए महामूर्ख

मदांध लोलुप मधबिंदुना सुख अगाडीथी दूर थइ पोतानो बचाव करवा चाहतोज नहीं माटे वृथा श्रम शा माटे करवो जोइये ? ' विद्याधरी स्त्रीजातीना नियम प्रमाणे हठपूर्वक बोली के–' आटलां दुःखोथी मुक्त थवामां मधुबिंदुनी लालचने कोइ व्हाली गणे के ? पुरुषोनां मन हमेशां कठोर निठोर होय छे. ' इत्यादि सांभली विद्याधरे पोतानुं विमान ते मधुबिंदुना लोलुपीनी समीप राखी कहेवुं शरु कर्युं के–' हे भाइ ! हवे दुःखमां कशी मणा रही नथी. मरणना म्होंमां कोलियो थवानीज तैयारीमां छुं अने हवे जीवने मूकवे मार्ग नथी माटे तुं आ विमानमां आवी जा के जेथी तुं आ बधां दुःखोथी छूटकारो पामीश अने ज्यां तारी मरजी हशे त्यां तने पहोंचाडीश. हाल तुरत तुं आवी जीवनने सफलता मेलववा तत्पर था. "

आवी वाणी सांभली ते आतुरता साथे कहेवा लाग्यो–' भाइ ! मने उगारो तो तमारो मोटो आभार, पण जरा महेरबानी करी फक्त एक मधनुं टीपुं मारी जीभ उपर पडे तेटलो समय मने अहीं थोभवा द्यो, मने ए मधबिंदु बधा दुःखोनो विसारो करावी रहेल छे. अहा !

दुःखनुं तो लातपणुं वादल फरूमी रह्युं छे, पण मधबिंदु अत्यंत मिष्ट होवाथी मने ए दुःखनी दरकार कमती रहे छे, माटे एक टींपुं पडवा द्यो ' आम एक टींपुं पड्युं के बीजा टींपानी लालच वधी अने बीजुं पड्युं के त्रीजानी आशा बंधाइ. ज्यारे टींपानी लालचथी मुक्त थतो जोवामां न आव्यो त्यारे तेनुं स्वरूप पोतानी स्त्रीने समजावी विद्याधर विमान सहित पोताना पंथे परवर्यो. भाइ मधुबिंदुनी लालचमां लटकता रह्या. उंदरोए शाखा कापी नाखी के ते गहेरा कूवामां पड्यो अने पडतांनी साथेज अंदर टांपी रहेला जीवोए ग्रास करी लीधो. भाइनो अंत आव्यो अने ते साथे आ मधुबिंदुनी वातनो पण अंत आव्यो. तथापि आमांथी सार ग्रहण करवानो ए छे के—भव—संसाररूपी अटवीमां प्राणीरूपी जीवात्मा विहार करतो रहे छे; परंतु तेनी पाछल कालरूपी हाथी प्राण लेवा दोट देइ रहेल होवाथी जीववा माटे फांफां मारतो फरे छे, अने आयुरूपी वडवाइए वलगी रही जीवनने बचावा यत्न आदरे छे; पण नथी जाणतो के वडना थडरूपी शरीरने कालरूपी हाथी मूलमांथी कखेडवा मची रहेल छे, तेमज अंधारियुं अने

अजुवाळीयुं पखवाडियां रूपी बे–काळा अने धोळा उंदर आयु वडवाइने कापी रह्या छे अने मोह रूपी ऊंडा कूवामां पडी बचवा इच्छनारा प्राणिने क्रोध मान माया तथा लोभ रूपी चार भयंकर सापो तथा राग अने द्वेष ए रूपी बे अजगरो तेने पोतानुं भक्ष करवा म्हों फाडी जीभ लपकावी रह्या छे. छैयां वैरी सगांव्हालां रूपी मधमाखीओ चोमेर चटका मारी संताप्या करे छे छतां पण फक्त सांसारिक सुख रूपी मधना टींपानी लालचमां फसायलो प्राणी गुरू रूपी विद्याधर जिन वाणी रूपी विद्याधरीना बोधथी धर्म रूपी विमान के जे धारेला स्थले (स्वर्गापवर्गमां) पहोंचाडवा शक्तिमान छे तेनुं शरण लेवा आग्रह करे छे; तथापि तेमने वायदो बतावी दुःखवेष्टित मधबिंदुमां लीन रहेल छे. जेथी गुरू धर्मविमानना तेने भोक्ता न गणतां पोताना अन्य स्तुत्य कार्यमां प्रवर्त्ते छे. आथी अंते आयु रूपी वडवाइ पक्ष मास वर्ष वडे पूर्ण कपाइ जतां ते अभागीओ प्राणी मोहकूवामां पडी कषायोनो कोळियो बने छे अने भवभ्रमणाने वश थयेलो जीव भवजळमां लीन थइ जाय छे.

वली लोको जाणे छे के अमे सुखी छिये; पण वास्तविकपणे जोतां सांसारिक सुख झांझवाना नीर (मृगजल तृष्णा) जेवुंज छे. एटले के तापना समयमां जेम हरिणो तरश लागवाथी पाणीनो पत्तो मेलववा खारा रणमां आम तेम नजर फेरवे छे; पण त्यां पाणी होतुं नथी; छतां पाणीथी भरेला सरोवर सरखो भ्रमरूप देखाव नजरे पडतां ते मेलववानी आशाए दोडी दोडी भटके छे; पण आखर खरी रीते पाणी न होवाथी ते आघुं ने आघुं जणातां ताप, तरश ने थाकथी हेरान थइ मरणने तावे थाय छे. एज रीते संसारी जीवो पण सुख मेलववानी आशातृष्णाने अवलंबी आम तेम दोडादोड करे छे; परंतु आखर धारेली धारणा भ्रमरूप नीवडतां निराशा वडे दुःखपात्र बनी—हाय वॉय करतां मरणने स्वाधीन थाय छे. कदाच सहेज सुख मळ्युं तेमां मूर्खताथी अज्ञान बालकनी पेठे अंगूठो धावतां स्तनपाननुं सुख मानी लेतो ते परिणामे वृथा छे. भूख तो साचा स्तनपानथीज भागी शके. कांइ अंगूठो चूस्ये भूख भागे नहीं. अंगूठो चूसवाथी फक्त पोतानीज लाल पोताना म्होंमां आवतां ते पदार्थने अंगूठामांथी मलेलो मानी

आनंद माने छे; परंतु सत्य बुद्धिथी तपासतां ते तद्दन घेलछा भरीज समज छे. अथवा तो जेम कूतरूं सूकायला हाडकाने करडतां ते हाडकानी करचो पोतानीज दाढोना पेढांनमां भोंकातां तेमांथी लोही नीकले तेने ते हाडकामांथी मलता लोहीना स्वादने मानी आनंदी बने छे, तेम पोतानांज छैयां-छोकरां के जे पोतानाज लोहीविकारनां गुमडां छे तेने पाटा पट्टी वगेरेनी संभालथी साचववामां कालजी धरावी पोतानी कुशलता माने छे; परंतु सत्य रीते जोतां ए सघलां पोतानुंज लोही चूसनारां छे; छतां ते लोही चूसनारने पोतानां जीवनप्राण माने छे एज महा घेलछा छे. माटे ए बधी जलोजथा दूर करी आ भव परभवमां सुखसंपत्ति आपनार धर्मनुंज सेवन करी जन्म सफल करवो के जेथी आत्मकल्याणनुं सुकान हस्तमां रहेतां भवोदधि तरी आत्मारूप जहाज पार पहोंचे छे !

व्याख्यान छठुं.

—— ०※० ——

(आर्या–छंद.)

खणभंगुरे असारे, मणुअभवे अभ्भपमलसारित्थे;
सारं इतिअमित्तं, जं कीरइ सोहणो धम्मो. १

परम प्रभावक दीनदयाल प्रणतप्रतिपाल त्रिभुवनभूपाल श्री देवाधिदेव जिनराज महाराज कथी गयेल छे के–हे श्रोताजनो! आ मायामयी संसार असार छे; छतां आ संसारनी अंदर दश दृष्टांते मनुष्य जन्म प्राप्त थवो अत्यंत मुश्केल छे.

॥ चुल्लग पासग धन्ने जुए रयणे य सुमिण चक्के य ॥ चम्म जुगे परमाणू दसदिठ्ठंता मणुअलंभे ॥

चूलानुं १, पासानुं २, धान्यनुं ३, जुगारनुं ४, रत्ननुं ५, स्वप्ननुं ६, चक्रनुं ७, कूर्मनुं ८, धुंसरानुं ९, अने परमाणुनुं १० आ दश दृष्टांत नीचे मुजब.

प्रथम चूलाना दृष्टान्ततुं स्पष्टीकरण आ प्रमाणे छेः—एक चक्रवर्ती राजा अमुक ब्राह्मण उपर खुशी थइने बोल्या, " हे ब्राह्मण, तारी इच्छा होय ते माग, हुं आपवाने तैयार छुं " परंतु ब्राह्मण पोतानी स्त्रीने वशवर्ती थएलो होवाथी बोल्यो के हुं घेर जइने पछी विचार करीने मागीश. राजाए कह्युं भले जाउ घेर विचार करीने मागजो. आ प्रमाणे चक्रवर्तीनी सम्मति मळवाथी ब्राह्मण घेर आव्यो, हवे स्त्री पुरुष बेउ एकान्तमां बेसी विचार करवा लाग्या जे शुं मागवुं ? गाम गरास मागवाथी आपणे उलटो व्याधि वधशे. आपण ब्राह्मणने तो दक्षिणा सहित भोजननी प्राप्ति थाय तो तमाम मळेलुं गणाय. माटे स्त्रीए कह्युं, ' जाउ, वारा दीठ भोजन आपणने मळे एवुं जइने मागो. स्त्रीनी शिक्षानुसार ब्राह्मण चक्रवर्ती पासे आवी उभो रह्यो त्यारे चक्रवर्तीए कह्युं, ' माग, माग; मागे ते आपुं. ' त्यारे ब्राह्मण विकस्वर मुखे बोल्यो जे ' हे महाराज ! आपना राज्यभरमां वास दीठ अमने दरेक घर घरथी भोजन तथा दक्षिणा तरीके एक सोना महोर मळे एवुं हुं मागुं छुं. '

आ वात सांभली चक्रवर्ती आश्चर्यमां मग्न थइ विचार करे छे के भले पुष्करावर्त्त मेघनो वरसाद वरसे तोपण पर्वत उपर तो पाणी तेनी उपरनी जग्याना प्रमाणमांज ठरी शके. खेर, जेवा जेना भाग्य तेवुंज तेने मले छे. आम क्षणवार चकित बनी विचार करी ब्राह्मणने प्रथम पोताने घेर भोजन करावी ब सुवर्णमहोर आपी विदाय कर्यो. हवे चक्रवर्त्तीना बत्रु क्रोड गाममां चूला दीठ भोजन लइने ब्राह्मण फरीने चक्रवर्त्तीने घेर आवे खरो ? कदाच देवना प्रभावथी वारा पूरा करी फरी चक्रवर्तीने घेर आवे तोपण मनुष्य जन्म फरी मलवो दुर्लभ छे.

हवे बीजा पाशक दृष्टान्तनुं विवेचन करे छेः—चंद्रगुप्त राजानो भंडार वधारवा सारु चाणाक्ये एक देवनी आराधना करी, त्यारे देवे प्रसन्न थइ तेने दिव्य पाशाओ आप्या. आ पाशा वडे जे कोइ बाजी रमे तेने कोइ जीती शके नहि.

आम होवाथी तेणे एक पुरुष के जे द्यूत क्रीडामां कुशल हतो तेने सुवर्णनी गिनीनो एक थाल भरी आपी तथा ते दिव्य पाशा आपी शहेरमां मोकल्यो. हवे ते पुरुष मोटा रस्ता उपर

बेसी बोले छे जे हे लोको, जे मने जीते तेने हुं आ सोना महोरथी भरेलो थाल आपुं, अने जो हुं जीतुं तो फक्त एक सोना महोर लेउं. आम जाणी घणा लोको तेनी साथे रमे छे, परंतु कोइ-नाथी ते पुरुष हारवो दुर्लभ छे. तेमज मनुष्यावतार पण दुर्लभ समजवो.

हवे त्रीजा धान्यना दृष्टान्तनुं स्पष्टीकरणः—दुनियामां तमाम प्रकारनां धान्यो एकठां करी तेमां एक पाली सरसव नांखी कोइ एक सो वर्षनी घरडी डोशीने ते धान्यनो राशि जुदो करवा हूकम करवामां आवे तो ते डोशीथी ते दरेक धान्य अलग अलग थवुं बहु दुर्लभ छे, तेम मनुष्य-नो अवतार पण दुर्लभ छे.

चोथुं द्यूत दृष्टांतः—एक राजाने एकसोआठ स्तंभवाली एक सभा छे, प्रत्येक स्तंभनी अंदर एकसो आठ हांसो छे, एक दिवस एक पुत्रने राज्यनो लोभ थयो जे मारे राजानी गादी उपर बेसवुं, आ वात मंत्रीए जाणी. हवे राजाए तमाम पुत्र प्रपौत्रने एकठा करी कह्युं के भाइ! जेनी राज्य लेवानी इच्छा होय ते मारी साथे जुगार रमे. मने जीते ते राजा थाय. परंतु तेनी

रीति आ प्रमाणेः—एक सो ने आठ दाव ज्यारे तमाम एक साथे आवे त्यारे एक हांस जीते, वली जो तेमां वच्चे राजानो दाव पडे तो तमाम व्यर्थ थाय, एवी रीते एकसो आठ हांस जीते त्यारे एक स्तंभ थाय. तेवीज रीते एकसो आठ स्तंभ जीतवा जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्यनो जन्म पण दुर्लभ छे.

पांचमुं रत्ननुं दृष्टांतः—कोइएक शेठनी पासे परंपराथी उतरी आवेलो तेमज पोते पण उपार्जन करेलो, अनेक रत्नोनो संग्रह हतो; कोइ पण दहाडो ते एके रत्न बहार काढतो नहोतो. एक समये ते देशान्तर वेपारने माटे गयो, हवे पुत्रोए विचार्युं जे पिता लोभथी रत्नो बहार काढता नथी, घरमां क्रोड सोना महोर छतां आपणी ध्वजा बीजा कोटीध्वजनी माफक केम न चडे? एम विचारी देशावरथी आवेलां रत्नो वेपारीने हाथे वेची नांख्यां, अने कोटीध्वज बन्या. शेठ देशान्तरथी आव्यो, अने रत्नो वेच्यानी वात जाणी, तथा पुत्रोने ते रत्नो पाछा वालवा हूकम कर्यो, परंतु हवे ते रत्नो पाछा मलवा दुर्लभ छे तेम मनुष्य जन्म पण दुर्लभ छे.

छठुं स्वप्ननुं दृष्टांतः—कोइ एक दिवसे, मूलदेव तथा एक भिक्षु उज्जयिनी नगरीनी बहार एक कोटडीमां सूतो छे, तेवामां बेउ जणने एक सरखुं चंद्र पाननुं स्वप्न आव्युं. मूलदेव ऊठयो, नवकार मंत्रने गणी, देवदर्शन करी तथा फल फूल हाथमां लइ निमित्तियाने घेर गयो. विनय पूर्वक पोतानुं स्वप्न निवेदन कर्युं, अष्टांगना जाण पंडिते प्रथम पोतानी पुत्री साथे विवाह करवानुं मूलदेवनी पासे कबूल करावी कह्युं जे हे मूलदेव ! तने आजथी सातमे दिवसे राज्यनी प्राप्ति थशे. तेज प्रमाणे थयुं.

हवे भिक्षुक बालक पण ऊठयो, तो तेणे पण गुरु पासे जइ कह्युं, "गुरुजी मैंने आज रातको सारा चंद्रका पान किया," गुरुजी अल्पज्ञ होवाथी बोल्या "बालक ! आज तेरेको घी गुडसें युक्त चंद्राकार रोटी मिलेगी." एज प्रमाणे थयुं. कालान्तरे हवे आ भिक्षुक बालकने मालूम पड्युं जे मारुं तथा मूलदेवनुं स्वप्न एक सरखुं हतुं, परंतु में विधिपूर्वक स्वप्ननी क्रिया करी नहि, में जो ते प्रमाणे कर्युं होत तो हुं पण राजा थात. हवे हुं फरीने तेज प्रमाणे एवाज स्वप्नने माटे

पूर्वोक्त कूटीमां जइने शयन करुं, आम विचारी चंद्र पानना स्वप्न माटे गयो; परंतु हवे ते स्वप्न जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्यनो जन्म पण दुर्लभ छे.

सातमुं राधावेधनुं दृष्टांतः—एक स्तंभनो उपर आठ चक्र निरंतर फरतां रहे छे, तेमांना चार चक्र उलटा फरे छे, अने चार सुलटा फरे छे. तमाम चक्रने आठ आठ आरा छे, तेनी उपर एक पूतली छे ते पण चक्रनी माफक फरती रहे छे. हवे ते पूतलीनी डाबी आंखने, नीचे भरी राखेली तेलनी कुंडीमां पडता प्रतिबिंब तरफ दृष्टि करीने, जे कोइ पुरुष बाण वडे विंधे तेणे राधावेध साध्यो गणाय; परंतु ते जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्य देह पण पामवो दुर्लभ छे.

आठमुं कूर्म दृष्टांतः—अमुक विस्तीर्ण तलावनी अंदर एक काचबानुं कुटुंब आनंद सहित निवास करे छे. ते तलावनी अंदर लील फूल एटली बधी बंधाणी छे के जरापण जलनुं दर्शन थवुं दुर्लभ छे; परंतु एक दीवसे कर्म योगे वायुना जोरथी सेवालने खसवुं छे के तेज वखते काचबाने त्यांज डोक बहार काडवी छे, तेवा समयमां काचबाने पूर्णिमाना चंद्रना दर्शन थयां; का-

चबे विचार्यु जे हुं एकलो अपूर्व आनंद भोगवुं तेना करतां मारा कुटुंबनी साथे आनंद लेउं तो ठीक, आ विचारी कच्छप पाणीमां गयो, अने कुटुंब परिवारने लइने पाछो आव्यो तेटलामां तो ज्यां सेवाल खसी गइ हती ते छिद्र बुराइ गयुं, कूर्म फरी फरीने थाक्यो, परंतु हवे जेम ते छिद्र पामवुं दुर्लभ छे, तेम मनुष्य जन्म दुर्लभ छे.

नवमुं युग समीला दृष्टांतः—कोइ एक विद्याधर बे लाख योजन प्रमाण लवण समुद्रनी अंदर युगने (धोंसराने) पूर्व किनारे नांखे तथा समीला एटले धोंसरामां नांखवानी खीलीने पश्चिम किनारे नांखे, हवे ते बेउ एकठा थइ खीली धोंसराना छिद्रमां स्वयमेव आववी दुर्लभ छे तेम मनुष्य भव दुर्लभ समजवो.

परमाणु दृष्टांतः—कोइ एक देव एक स्तंभनो चुरो करी तेने वांसनी नलीमां भरी, मेरु पर्वत पर चढी दशे दिशामां फेंकी दे, हवे ते परमाणुओने एकत्र करी फरी स्तंभ बनवो माणसथी दुर्लभ छे तेम मनुष्यनो अवतार दुर्लभ जाणवो.

केटलाएक भद्रिक परिणामी जीवो दश दृष्टांते दुर्लभ केवल मनुष्य जन्मने समजे छे, परंतु तेनी साथे एटलुं पण विशेष जाणवुं के मनुष्य जन्मनी पूर्वमां पण एटले द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय थवुं, एम चतुरीन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय थवुं ते पण दश दृष्टान्ते दुर्लभ छे, तेज प्रमाणे मनुष्य जन्म पाम्या पछी पण आर्यदेशादिकनी जोगवाइ मलवी ते पण पूर्वोक्त दश दृष्टान्ते करीने दुर्लभ जाणवी.

कदाच मनुष्य जन्म प्राप्त थाय; परंतु आर्य-पवित्र क्षेत्र तथा श्रीजिनवरभाषित धर्म पामवो अत्यंत मुश्केल छे. छतां पूर्व पुण्यना संयोगवशे ए बधा संयोगो प्राप्त थया, तो जीव प्रमाद बलथी धर्मनुं सेवन करतो नथी. ते तो पुत्रना के स्त्रीना स्नेहमां अथवा धन, धान्य, परिवार, मित्र, वैभव अने रूप आदिमां लीन रही धर्मनो अनादर करे छे जेथी भव हारी जाय छे. पण जीवने जाणवानी जरूर छे के संसारनो संबंध बनावटी छे. अने एनो ख्याल थवा महेश्वरदत्तनी कथा ध्यानमां लेवा जेवी छे ते ए के-

विजयपुर नगरनी अंदर महेश्वरदत नामनो व्यापारी रहेतो हतो. तेने पुत्र न हतो जेथी

ते चिंतामां निमग्न थइ चिंतववा लाग्यो-' मारा मरण पछे मने पाणी कोण आपशे ! श्राद्ध कोण करशे ! पुत्र वगर नखोदियानुं घर शून्यु गणाशे ! पुत्र विना सद्‌गति थशे नहीं अने कह्युं पण छे के-

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नेव च

तस्मात् पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥ १ ॥

अपुत्रियानी गति थती नथी, तेमज स्वर्ग मळवानुं होतुंज नथी, ते माटे पुत्रनुं म्होडुं जोवामां आवे त्यारबाद धर्म करवा उद्यमी थवुं.' वगेरे वगेरे चिंतवी अनेक देव देवियोनी बाधा मानता औषध प्रयोग आदि उपयोगमां लीधा. पछी दैवयोगे स्त्रीने गर्भ रह्यो अने गर्भकाळ पूर्ण थये पुत्ररत्ननी प्राप्ती थइ. आम होवाथी अपार आनंद थयो. अवगति थवानी चिंता दूर गइ. पुत्र महसेननी लालन पालन प्रीणन पोषण वगेरे पुत्रनी मावजत थवा लागी अने शुक्लपक्षनी चंद्रकळा समान दिनप्रतिदिन वर्धमान दशाने पामी पुत्र मोटो थतो चाल्यो. विद्याभ्यासनो

समय थतां तेने भणावी हुंशियार कर्यो जेथी पिता, पुत्रना ऋणथी मुक्त थयो अने ज्यारे यौवनवयनी प्राप्ति थइ त्यारे तेने सुकुलिनी कन्या साथ परणावी सांसारिक सुख विलासमां मग्न कर्यो.

कंइक वखत वीत्याबाद महेश्वरदत्त अचिंतो मरणने शरण थयो, अने मोहमायामां लुब्ध रही प्रमादवशथी धर्मनी सेवना न करी जेथी आखर आर्त्तध्यान–हाय वोय करी मरवाने लीधे मरती वेलाए पुत्रनुं मुख जोवाथी सद्गति थाय तेने बदले असद्गति थइ एटले के मरीने पाडो थयो अने तेनी वहू मरीने घरना आगलज कूतरी थइ. ते कूतरी हमेशां बारणा आगल रही घरनी चोकी कर्या करती हती.

एक वखते ते महसेने पोतानी स्त्रीने अन्य पुरुष साथे अनाचार खेलती दीठी तेथी ते चिंतववा लाग्यो–' मारी स्त्री मारा उपर पुष्कल प्यार राखे छे. पतिव्रतानो ठाठ बतावे छे अने कुकर्ममां मशगुल रहे छे. हा ! स्त्री कोइनी होतीज नथी. शास्त्रमां कह्युं छे के–

एकनसें बतियां करे, चिंतत चितमें और; दृग जोरतहे औरसें, एक चित्त त्रिहुं ठौर. ।१।

नारी किनकी ना हुइ, कोटिक करो उपाय; तदपि अपनी समुझिकें, रहत सुरंग लगाय. ।२।
सांढणियां अरू गोरडी, मती पतीजो कोय; जब जाहीके आसने, तब तिनहीकी होय. ।३।
इत्यादि विचारी ते बेउना भोगविलास वखते दावने ध्यानमां राखी ते व्यभिचारी पुरुषने गार मारी महसेन सुख मानवा लाग्यो. जार पुरुष पोताना कुकृत्यने निंदतो पोताना दोषने ध्यानमां लइ प्रायश्चित आलोवतो मरण पामी ते स्त्रीना उदरनी अंदर पुत्रपणे उत्पन्न थयो. गर्भ-काल पूरो थतां जन्मी माता पिताने आनंद रूप नीवड्यो. दशुवण आदि विधि साचवी उत्सव महोत्सव साथ सगां संबंधीने संतोषी महसेन अहोभाग्य मानवा लाग्यो.

जोके पोतानी स्त्रीनुं पोते कुकर्म जोयुं हतुं छतां ते बाबतनी जरा पण पोतानी स्त्रीने के कोइने पण इर्ष्याभावना बतावी नहीं. केमके—

द्रव्यनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च ॥ मानापमानौ गुह्यं च मतिमान्न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥

द्रव्य संबंधी थयेलुं नुकसान १, मनमां रहेली फिकर २, घरनुं नठारूं चरित्र ३, मलेलुं मान

४, वेठेलुं अपमान ५, अने गानो ज्ञेद ६ आ ७ बाबतो सदा गुप्तज राखवी योग्य छे. कारण के जाहेर करवाथी लोकहांसी ने घरमां हानि थवानो संज्ञव रहे छे.

आम थवाथी महसेननी स्त्री मनमां समजी गइ के–' मारुं कुकर्म नजरोनजर जोया छतां जारनो नाश कर्यो; पण मने कशुं कह्युं नहीं, तेमज ए वात क्यांय जाहेर पण न करी जेथी मारे अनाचार निवारी दीर्घदर्शी पतिनी सेवा करवी एज हितकर छे. ' एम विचारी सदाचारने तावे रही ते पतिसेवा करवा सावधान रहेवा लागी.

महसेननो पुत्र जेम जेम मोटो थतो चाल्यो तेम तेम पोते घणा प्यारथी रमाडतो महानंद मानतो हतो; पण ते जाणतो न हतो के जेने में रोषवश थइ बेजान कर्यो छे ते शत्रुज आ पुत्रपणे पेदा थयो छे अर्थात् शत्रु ते मित्र थइ प्रकटेल छे अने राखेलो ते पुत्र थइ महासेननी स्त्रीने पण आनंद आपी रहे छे एटले वहूने मातानुं पद आपी जार पुरुषनो जीव मस्त बने छे.

एक समय पोताना बापनुं श्राद्ध आववाथी श्राद्धने दिवसे पितानी सद्गति थवा माटे पिंड

आपवा विचारी महसेन पोताना बापनो जीव पाडो थयो छे तेनेज खरीदी लाव्यो अने तेनोज वध करी पिताने पिंड आप्यो. अहा ! पितानाज पिंडना मांसथी पिताने तृप्त कर्यो ! पिताना नामथी श्राद्ध पिंड आपी पितानी सद्गति करी (!) पुत्रना हाथथी पिताना जीवनी मुक्ति थइ ! ! !

ए प्रस्ताव समय एक ज्ञानी-त्रणज्ञानवान् मुनिमहात्मा विहार करता जता हता, तेमणे धामधूमने ध्यानमां लइ ज्ञानोपयोगवडे जोयुं तो अनर्थ जाणी महसेनने प्रतिबोधवा माटे तेनी समीप जइ मस्तक धूणी ज्ञानी गुरु कहेवा लाग्या-

पुष्णाति स्वपितुर्मांसं शत्रुमुत्संगसंगतम् ॥ विधत्ते च पितुःश्राद्धं महामोहविजृंभितम् ॥ १ ॥

पोताना पितानुं मांस खवाय छे, पोताना शत्रुने खोलामां लइ पितुमांसथी पोषण कराय छे, दुश्मनने लालपाल कराय छे अने म्होंथी कहे छे के हुं बापनुं श्राद्ध करी पिंड आपुं छुं ते तेने मलतां सद्गति थशे. अहा ! जीवनुं अजाणपणुं तो जुवो ! खरेज मोहनी वात महान् विषम छे ! !

आवुं सांभली आश्चर्य अने खेद साथ साधु महाराजने पगे लागी कहेली वार्तानो खुलासो

पूछवा लाग्यो. एटले महात्माए अथेति संबंध कही वाकेफ करी तेनो भ्रम दूर थवा उद्यम आदर्यो. अने निःशंक थवा महासेने (तेनी प्रतीति माटे) पुनः प्रश्न कर्यो-'के मारी मा कूतरी थइ छे ते जीवती छे माटे तेनो कंइ दर्शनीक पूरावो आपवा कृपा करो.' गुरुए कह्युं-'आ वात सांभळतांज तारी माता-कूतरीने जातिस्मरण ज्ञान थयुं छे जेथी तारा घरमां दाटेलुं धन एनी जाणमां होवाथी ते खोदी बतावशे; माटे तेनी पाछळ पाछळ जा !' आटली वात थतांज कूतरी अगाडी थइ अने घरमां जइ दाटेलुं धन खोदी बताव्युं, एथी महासेनने गुरुकथित वचननी पूर्ण प्रतीती थइ. श्राद्ध तरफ कंटाळो बताव्यो. जैनधर्म अंगिकार कर्यो. स्त्रीए पण जिनप्ररूपित अहिंसा एज परम धर्म छे ए तत्वने कबूल कर्युं. अने ते पछी अनेक दान पुन्यना प्रकार उपयोगमां लइ सुकृत्य करवावडे जीवनगाळी आयुना अंते बेउ स्वर्गे गयां. आ प्रमाणे संसारनी सगाइनो संबंध छे एथी सार रहित होवाथी असार छे, अने तेमांना दरेक पदार्थो पलमां फालेला फूलेला तथा पलमां करमाइ धूळ साथे मळेला नजरे पडे छे. मात्र वायरानी झपट लागवाथी दीवो राज थइ जाय

तेवी रीते मानवभव क्षणमां लय थनारो जणाय छे. अथवा तो शरदनी वादलघटा रूप गयेल छतां क्षणमां पवन योगथी विखराइ जइ तेनुं नाम निसान पण जणातुं नथी तेवो क्षणभंगुर मानव देह छे. अथवा काचनी शीशी जेवो जराक ठबलातां फूटी जाय तेवो नाशवंत मानवदेह छे. ए ध्यानमां लइ असार संसारमां क्षणभंगुर देहवडे सार रूप जैनधर्मने शुद्धपणे आदरी पाली दया धर्मने दिलमां टांकी मानवजन्मने सफल करवो अने जे जिनधर्मवडे भूतसमयमां अनेक जीवो तर्या छे, वर्त्तमान समयमां तरी रह्या छे अने भविष्यमां अनेक जीवो तरशे तेज धर्मनुं शरण लेवा सतत उद्यम आदरी कल्याण मंगलीक माला वरवी एज श्रेयस्कर छे !

व्याख्यान सातमुं.

(आर्या छंद.)

संसारे मानुष्यं सारं हि मानुष्ये च कौलीन्यम् ॥
कौलीन्ये धर्मत्वं धर्मत्वेचापि सदयत्वम् ॥ १ ॥

श्री अरिहंत जगवंत केवलकमलावंत मुक्तिवधुकंत अनेक सुरासुर सेवित जव्य जीवोना हित माटे परंपरागत धर्मनो सार प्ररूपी गयेल बे के–चार गति रूप संसारमां जटकतां दश दृष्टांते दोहिलो मानवजव प्राप्त थयो एज संसारनुं सारपणुं बे. केमके जन्मस्थल चोराशी लाख बे; पण तेनी अंदर मनुष्य जन्म जेवो जव प्रशंसाने पात्र बीजो बेज नहीं. श्रीउत्तराध्ययनजीमां कथेल बे के–त्रण व्यापारि वाणिया गांठे मुंमी बांधी लाज मेलववा परदेश गया हता. ते पैकी एक जणे मुंमीने कायम राखी तेनी उथलपाथलवमे विशेष लाज मेलव्यो. बीजे लाज न मेलवतां फक्त मुंमीनेज जालवी राखी अने त्रीजाए मुंमी गमावी दीधी. एवीज रीते मानवजव असलनी मुमी छे. तेमांथी देवनी गति प्राप्त करे ते मुंमी कायम राखी लाज मेळव्यो गणाय अने नरक के तिर्यंचगति-प्राप्त करी तो गांठनी मुंमी गुमावी गणाय. आम होवाथी लाज मात्रनुं मूल मानवजव बे. तेमज मनुष्य जन्ममां पण उत्तम कुलनी अंदर जन्म अने तेमां पण श्रावक कुलना उत्तम आचार युक्त प्राप्त थाय तो धन्यातिधन्य मनाय बे; केमके श्रावक कुलमां जन्म लेवा इंद्र

महाराज जेवा पण उत्कंठा धरावे छे. अर्थात् जेनो पूर्वपुन्य संचय जबरदस्त होय तेज श्रावक (श्रद्धा विवेक अने क्रिया युक्त शुद्ध श्रावक धर्मवंत) कुलमां जन्म पामे छे. अरे ! श्रावककुलमां पुत्र पणे तो शुं पण दास पणे पेदा थाय तो पण अहो भाग्य गणाय छे के जेमां दरहमेशां सदाचार सद्धर्म अने सत्क्रियाज जोवामां पालवामां आवे छे. श्रावक कुलमां जन्मवाथी धन्यवादने पात्र नथी; परंतु भक्ष्याभक्ष्य–पेयापेय–कृत्याकृत्य–लाभालाभ वगेरेनुं जाणपणा युक्त प्रतिपालन करवामां आवतुं होय, दया एज मुख्य धर्म छे एम समजी प्राणांते पण दयानो किंचित् पण भाग खंडन न थता होय, एजछे के पोताना जीव समानज परना जीवने किलामना–पीडा तकलीफ–मननुं दुभावापणुं पूर्ण पणे जाणवा पालवामां आवतुं होय एज श्रावककुल पाम्यानो सार छे. नही के नामनाज श्रावक गणाइ जिनभाषित वचन प्रमाणे यथास्थित न चालतां धामधूम रूप धर्म मानी पापव्यापारमांज जीवन गाले ते श्रावक कहेवाय. श्रावक एकवीश गुणथी अलंकृत होवो जोइये. ते केवा–

श्रावकना २१ गुण–(१) अक्षुद्र (२) रुपवान (३) शांत प्रकृतिवालो (४) लोकप्रिय (५) अक्रूर (६) पापभीरु (७) अशठ (८) दाक्षिण्यतावान (९) लज्जालु (१०) दयालु (११) मध्यस्थ सोमदृष्टी (१२) गुणरागी (१३) सत्कथाख्य (१४) सुपक्षयुक्त (१५) दीर्घदर्शी (१६) विशेषज्ञ (१७) वृद्धानुगामी (१८) विनयी (१९) कृतज्ञ (२०) परहितार्थकारी (२१) लब्धलक्ष्य.

१ अक्षुद्र–जे उछांछली बुद्धिवालो न होय, स्वपरने उपकार करवा समर्थ होय, पारकां छीद्र खोले नहीं एवो गंभीर होय ते. २ रुपवान–संपूर्ण अंगोपांगवालो, पांच इंद्रियोथी सुंदर देखातो, सारा बांधावालो, एवो होय ते. ३ शांत प्रकृतिवान–स्वभावे शांत प्रकृतिवालो, प्राये पाप भरेला काममां नहीं प्रवर्ते, सुखे सेववा योग्य तथा बीजाओने शांति आपनार होय ते. ४ लोकप्रिय–जे पुरुष दातार, विनयवंत अने सुशील थइ आ लोक अने परलोकथी जे विरुद्ध काम होय ते न करे ते लोकप्रिय थइने लोकोमां धर्मनुं बहु मान उपजावे. ५ अक्रूर–अक्लिष्ट परीणामी जे होय ते. ६ पापभीरु–आ लोक परलोकनां संकटो विचारीनेज पापमां न प्रवर्ते अने अपयशना कलंकथी

करतो रहे ते. ७ अशठ—बीजाने ठगे नही, तेथी विश्वास करवा योग्य तथा वखाणवा लायक काम
अने भावपूर्वक उद्यम करे ते. ८ दाक्षिण्यतावान—सुदाक्षिण्य गुणवालो, पोतानो कामधंधो मुकीने
बीजाने उपकार करतो रहे तेथी तेनुं वाक्य सौ कबुल राखे तथा सौ तेना पगलामे चाले तेवो
होय ते. ९ लज्जालु—लज्जालु पुरुष नानामां नाना अकार्यने पण दूर वर्जे छे तेथी ते सदाचार आ-
चरे छे ने स्वीकारेलो वातने कोइ पण दिवस मूके नही ते. १० दयालु—दया ए धर्मनुं मूल छे अने
दयाने अनुकूलज सघलुं अनुष्ठान जैन सिद्धांतमां कहेलुं छे माटे तेवा गुणवालो होय ते. ११ मध्यस्थ
अने सौम्यदृष्टि—खरा धर्मविचारने सांभलनारो, गुणो साथे जोडाइ दोषने दूर तजनारो सर्व स्थले
रागद्वेषरहित होय ते. १२ गुणरागी—गुणवान माणसोनुं बहु मान करनारो, निर्गुणोनी उपेक्षा
करनारो, गुणनो संग्रह करनारो, अने पामेला गुणोने मलीन न करे ते. १३ सत्कथाख्य—उत्तम
पुरुषोनां चरीत्र कहेनार थवुं एटले अशुभ कथाना प्रसंगथी कलुषित थयुं नथी मन जेनुं एवा
विवेकी थवुं ते. १४ सुपक्षयुक्त—जेनो परिवार अनुकूल अने धर्मशील होइ सदाचार युक्त होय ते.

१५ दीर्घदर्शी–परिणामे सुंदर काम एटले बहु लाभ ने थोडी महेनतवालुं होय अने केळवायेला माणसने वखाणवा लायक होय तेवां काम करनारो होय ते. १६ विशेषज्ञ–अपक्षपातपणे वस्तुना गुणदोष जाणनारो होय ते. १७ वृद्धानुगामी–ज्ञानादी गुणे करी वृद्ध माणसनी पाछल चालनारो होय ते. १८ विनयी–जेना वडे आठ प्रकारना कर्मनो नाश कराय एवा सम्यक् ज्ञानदर्शनादी गुणोए करी सहित. १९ कृतज्ञ–करेला गुणने बराबर जाणनार होय एटले विना कारणे उपकार करनार गुरुमहाराजने पण खरी बुद्धिथी परम उपकारी गणीने तेमनुं बहु मान करनारो होय ते. २० परहितार्थकारी–पारकानुं हित करवामां तैयार रहेनार तथा बीजाने खरो धर्म पमाडवामां तत्पर होय. २१ लब्धलक्ष्य–प्राप्त थयुं छे जाणवा लायक अनुष्ठान ते जेने एवो पुरुष ते सुखे करीने सघलुं धर्म कर्तव्य जाणी शके छे.

अने सदा परनी पीडा ध्यानमां लेतो होय तेज शुद्ध श्रावक गणाय छे. जे परनी पीड–पीर विचारे तेज पीर–महान् पुरुष गणाय छे. कह्युं छे के–

देखो सब तन पीर है, पीर बिना तन नाहि; जे परपीर न जानही, सो बेपीर कहाय ! १

एज श्री तीर्थंकर देवना उपदेशनो सार छे ते जाणी अमलमां आणी प्राणी पूर्ण पणे तेमां दृढ रहे तो आ भव अने परभव सुखसंपदा तेमज, अंते मुक्तिकमलाने वरी सिद्ध पदनो भोक्ता थाय छे !

*व्याख्यान आठमुं.



(गाथा छंद.)

म्हरा बुड्ढा य पासह, गब्भठावि चयंति माणवा ॥
सेणे जह वट्टयहरे एवं आउखयंमि तुट्टइ ॥ १ ॥

श्री जिनेश्वर सकल दुखहर परम सुखकर नमत सुरासुर नर नरवर भविकजनहितकर

* आ व्याख्यान शोकनिवारणार्थे उठमणांना समय अगर शोकवंतना मनने शांति आपवा समय विशेष वांचवा लायक छे.

मानव शरीरनी स्थिरताने माटे आ प्रमाणे कही गयेल छे के–हे महानुभाव ! आ संसार असार दुःखतणो भंडार छे त्यां कर्मनी बहुज मारामार छे. एवा संसारनी अंदर मनुष्य देह पामीने जे जीवे धर्म न कर्यो तेणे मानव देह पामीने नकामुं जीवन गुमाव्युं कहेवाय. बाल्यावस्था बाल खेलमां, युवानी रामाना रसमां अने वृद्धपण हाय वोयमां वखत वीतावी मरणना मुखमां स्थान ले छे तेनो फोगट फेरोज छे. केइक मानवोने रुष्टपुष्ट महा स्वरूपवंत, रूपवंत स्त्री, मनहर बालक अने मनमानता धननो संयोग छतां तेनो वियोग स्वीकारी पराणे यमदूतोना ताबे थवुं पडे छे, ते पण व्यर्थ जन्मारो गणाय छे. कोइ जीवो गर्भमांना गर्भमांज मरणने शरण थइ बीजी योनिरूप कारागृहनी कोटडीमां केदी बनी रहे छे. केइक मास छमास वर्ष बे वर्षज जीवीने आ फानी दुनियां शरायथी कूच करी बीजे डेरा नाखे छे. केइक रोग शोकना भोग थइ म्होतने मेलवे छे ए बधांनुनो जन्म नकामोज थइ पडे छे. जे जीवे गत जन्मनी अंदर दया न पाली होय–हिंसा पापकर्मज कीधा कर्यां होय ते जीवो टुंक आवरदावाला थाय छे; जेथी वेठे वेठे बगासुं खाते,

ठोकर वागते, के हृदय बंध पडी जते जीवन सफरने संकेली ले छे. आ जीव रूप चकली ऊपर कालरूप बाज ओचिंतो झपट मारी, किंवा कबूतरना बच्चा ऊपर समली कागडो सकरो अणधारी झपट मारी पोताना परिवारथी विखूटां करी डोक मरडी नाखे छे अने ते बच्चानां मा बाप पंखी मां चीं चा मचावी बने तेटलुं करे छे; छतां पण निर्दय आमिष भक्षीओ पोताना भक्षने लइ जइ रामशरण करी दे छे. एज मुजब आपणा मानव शरीर ऊपर पण पळे पळे काल दोट दइ रहेल छे ने ते केइ वेलाए कोट मरडी चोटनी सफलता मेलवशे तेनी कशी खबर पडती नथी. भले पछी मा बाप भाइ बहेन आदि सगां सणीजां रूवे रडे अने बेसुमार कल्पांत साथ छाती माथां कूटी झटियां चुंटी देहने दुःख आपे; तथापि ते जीव तो गयो ते गयोज. फरी ते कोइ प्रकारे रोनाराओ तरफ नमणो वाली शकतोज नथी. माटेज हे जीव! सदैव धर्म–करणी कर्या कर के जेथी ते काल पण कशुं न करी शके तेवो गतिनो भोक्ता थइ शके. तारा मनमां एवुं न जाणतो के मारे मरवुंज नथी. कोइ पदार्थ प्राणिमात्र अमरपटो लखावी लावेलज नथी! तो पछी स्थिरता शी

रीते रही शके ? एतो जनार छे. जेवुं पीपलानुं पान, हाथीनो कान, संध्यानुं वान, चपलानी कटाक्षसान, वीजलीनुं झबकवुं वगेरे जोत जोतामां अथिरपणानो पंथ बतावे छे, तेवुंज आ शरीर पण अस्थिर छे. छतां तेवा अस्थिर पदार्थना वियोगथी सगां संबंधी कल्पांत करे छे ते उलटां जनारा जीवने भारेकर्मी करी मोहमां डूबावे छे. तेनी उच्चदशा थती अटकावी नीच दशा—नीच गतिमां नाखवा उद्यम आदरे छे ए शुं सगां संबंधी स्नेहीओ स्नेहपणुं साचवे छे के हाथे करी तेनी माठी स्थिति करवानी प्रेरणावडे दुर्जननी गरज सारे छे ?!

व्हालां जनोनो ए धर्म छे के मरनारनी पाछल रोवुं कूटवुं न करतां धर्म दान पुन्य तीर्थ यात्रादि सत्कर्म करी ते पुन्यकृत्यवडे तेनो उध्धार करवा खंतवंत रहेवुं. नही के तेनी पुन्यदशा परवारी वेसे तेवी हीलचाल करवी. वली विचार करवानी जरुर छे के मरनारनी रुबरु रुवे छे त शाने लीधे रुवे छे ? शरीरना अंतथी के जीवना अंतथी रुवे छे ?! जो शरीरना अंतथी रुवे तो ते शरीर तो नजर अगाडी पडेलुंज होय छे. तेमज भाडानुं घर बदलवाथी जे शोच करवो ते डहाप-

एानुं काम नथी. अने जो जीवना अंतने लीधे रोवुं आवतुं होय तो जीव अमर छे. जेथी ते मरतोज नथी. समय आव्ये सहु पोतपोताने ठेकाणे जवानुंज छे.

तित्थयरा गणहारी सुरवइणो चक्कि केशवा रामा ॥
संहरिया इह कालेण अवरसत्ताण का वत्ता ? ! ॥ १ ॥

ज्यारे ऊपरनी गाथा अंदर स्पष्टपणे बतावेल छे के उत्तमोत्तम जीवो पण समय पूर्ण थतां पोत पोताने प्राप्त थएली गति हाथ करवामां विलंब करी शक्या नथी–तेमने कालनुं मान राख्युं छे. अने चोखा शब्दोमां कहिये तो तेवाओने पण काले संहरी लीधा छे तो बीजा जीवोनी शी वात ! एटले के तीर्थंकर भगवंत अतुल पराक्रम युक्त अने चोसठ इंद्रसेवित तथा सदा एक कोडि देवो हाथ जोडी सेवामां हाजरी आपे तेवा जिनराज पण आयु पूर्ण थतां एक क्षण आयुने वधारी के घटाडी शक्या नथी. दाखला तरीके ज्यारे श्री वीरप्रभुनुं बहोत्तर वर्षनी आयुमर्यादा पूर्ण थइ त्यारे मानवशरीर छोडी सिद्धिपद वरवानी तैयारी थइ जाणवामां आवतां इंद्र महाराजे प्रभुप्रत्ये

वीनती करी के–' हे तरणतारण परमोपकारी परमात्मन् ! बहोत्तर वर्षनी बेकी छे तेथी एकी थवा एक समय वधारी पछी सिद्ध पदने प्राप्त करो !' एना उत्तरमां परमेश्वर महावीरे ए फरमाव्युं के–

॥ घड़ी न वद्धे अग्गली, इंद्र आखे वीर;॥ इम जाणी जिय धर्म कर, जब लग वहे शरीर.॥

इत्यादी बोधद्वारा इंद्रने समजावी जाहेरमां आव्युं के निमायली आयुमर्यादामां कोइथी घटाडो के वधारो थइ शकतो नथी. एथी हे जीवो ! कोइ जीवन माटे गर्व न करशो केमकेः-

॥ जे नर गिरि कंपावता, सायर घूंट भरंत;॥ ते नर धरतिमें रम्या, मत कोन गर्व धरंत. ॥

अर्थात् जे पर्वतने पण धूजावी नाखता हता अने दरियानुं पाणी एक घुंटडो करी पी जता हता तेवा महान् प्रतापी पण कोण जाणे केइ वखते धरतीमां समाइ गया तेनी पण खबर पड़ी नही, तो तुं ते धरतीमां नही समावानो ? आखर साडा त्रण हाथनी धरतीमांज समावानो.

तीर्थंकर भगवान पण काल धर्मने अंगीकार करे छे, तेमज गणधर भगवान के जे काची

बे घमीनी अंदर चौद पूर्व उलटां सुलटा गणी जाय ते पण आयु पूर्ण थये क्षणवार पण स्थिर रही शके नहीं. तथा इंद्र महाराज अनेक देव देवांगनाना परिवार मध्ये बिराजता छतां कालने तावे थाय छे अने जेम वायरानी झपट लागतां दीवो डलाय तेम देवपति मरणने शरण थाय छे. वली चक्रवर्ति के जे १४ रत्नना निधानरूप, ६४ हजार स्त्रीउंना पति, सवा लाख साहेलीउ, चोराशी लाख घोमा, ७४ लाख हाथी, ७४ लाख रथ, अने छन्नू कोम पैदलवंत छ खंमनो जोक्ता होय छे. ते पण आखर मरी जाय छे. वासुदेव के जे त्रणसेने साठ संग्राम–लमाइ पोतानी जातथी करनार, त्रण खंमपति छतां म्होंत आव्ये तेथी लमाइ लीधा विनाज शरण थाय छे. बलदेव के जे देवलोकनी के मोक्षनी गति पामवावाला ते पण काल खूटये पलजर टकवा पाम्या नहीं. तो पछी मनुष्य शा हिसाबमां छे के जे संसारमां धार्या प्रमाणे स्थिरता करी शके ? ! माटेज संसारनी अने शरीर वगेरे संसारना सर्व पदार्थोंनी अथिरता समजी जीव फरी जन्म मरणने शरण न थाय, तेना उपायनी योजना योजी ते जीवना शोक संताप बंध पामी खरुं व्हाल जणावो.

नहीं के लींट लाल आंसु वगेरे वहेवरावी, धर्म करणी बंध करी, रोइ कूटी आर्त्त रौद्र ध्यानने वश थइ तमो पोते अने ते मरनारना व्हाला जीवने भारेकर्मी थवा उद्यम करवो. केमके–

राग; भजन.

छे तन रंग पतंग सरीखो, उडी जशे सही एतोरेजी;
एनी ममता म्हेली अलगी, चेतनजी ऊठ चेतोरेजी. १
बाजीगरनी बाजी जेवी, जगनी रचना जाणोरेजी;
तेमां शुं तल्लीन बनीने, मोज मजाउ माणोरेजी. २
सगां सर्व स्वारथनां संगी, मित्र सहु मतलबनारेजी;
तारुं सगुं कोइ नथी तेथी, तज तडनी तुं तपनारेजी. ३
जगलाडी जेवी जे लक्ष्मी, ते न थशे कदि ता'रीरेजी;
मफत बनी मगरूर मूरखमा, माने मा'री मा'रीरेजी. ४

छल प्रपंच छोडी चटपटतुं, करीछये सुकृत्य–कमाणीरेंजी;
मान वचन पूर्णेछुतां आ, जरूर हितकर जाणीरेजी. ५

प्रिय श्रोतागण ! ध्यानमां लेवानी खास जरुर छे के–

संसारंमि असारे नत्थि सुहं वाहिवेयणा पउरे ॥
जाणंतो इह जीवो न कुणइ जिणदेसियं धम्मम् ॥ १ ॥

आम होवाथी आ संसार सर्व वाते असार छे. फक्त धर्म एज एमां सार छे. तेमज एज संसारनी अंदर अंश मात्र पण सुख नथी. वली व्याधि वेदनाओथी भरपूर छे. इत्यादि जाणवामां आवतां छतां जिनेश्वर प्रणित धर्म करता नथी. जे धर्म करे छे तेज भवसमुद्रने तरी पार पहोंचे छे अने उत्तरोत्तर श्रेय मंगल कमला प्राप्त करे छे. एम जाणी भवीप्राणी वीतराग देवनी वाणी प्ररूपे सद्दहे पाले सांभले ते आ भव परभव आनंद मंगल वरी अंते पंचम गतिना भोक्ता थवा अचल शांति हितार्थे शांति प्रभुनुं ध्यान धरो.

व्याख्यान नवमुं.

—०※०—

(अनुष्टुप् छंद.)

दानं दुरितनाशाय शीलं सद्गतिहेतवे ॥
तपः कर्म विनाशाय नावना नवनासनी ॥ १ ॥

श्री अरिहंत नगवंत वीतराग देव नव्य जीवप्रति चार प्रकारनो धर्म वखाणेल छे ते ए के–प्रथम दान धर्म छे. ते दान देवाथी कंई पण कष्ट रहेवा पामतुंज नथी. ते दानना पांच प्रकार छे, एटले के–

अनयं सुपत्तदाणं अणुकंपा उचिय कित्तिदाणं च ॥
डुन्नवि मुस्को नणियो तिम्न विन्नोगाऽदिया हुंति ॥ १ ॥

पहेलुं अनयदान अर्थात् तमाम जीव मात्रने किंचित् पण त्रास नय न आपवो, तेमनुं सर्व

प्रकारे संरक्षण करवुं अने अज्ञयनुं दान देवुं. १. बीजुं सुपात्रदान अर्थात् सुसाधु, सुसाध्वी, सुश्रावक अने सुश्राविकाने खानपान वस्त्र पात्र मकान आदि जोइये ते समये आपवां. २. त्रीजुं अनुकंपादान एटले के—दीन दुखी दुर्बल प्राणी तरफ दया लावी तेना कष्टनो अंत लाववा तन मन धननो उपयोग करवो ३. चोथुं उचितदान अर्थात् बेहेन दीकरी वगेरेने जोइ ते समय आपवुं ते उचित—व्याजबी हक्कनुं दान छे ४, पांचमुं कीर्तिदान एटले के पोतानी कीर्ति वधवा कोइ मोटा न्हाना फंडमां रकम जरवी, सदाव्रत देवां, चोराशी करवी, नोकारशी करवी, संघ कढाववा, प्रज्ञावना करवी, याचकोने दान देवुं, पूजाउ जणाववी, स्कूलो खोलवी, वगेरे धर्मत्व जाणीने नहीं, पण फूलाइने कीर्ति वधवानाज हेतुथी करे छे ते. ५ आ पांच प्रकारनां दान छे. ए पांच पैकी उचित अने कीर्तिदानने बाद करी बाकीनां त्रण दाननो अवश्य उच्च जावनायुक्त उपयोग करवो.

बीजो शील धर्म—ब्रह्मचर्य व्रत पालवुं, जेथी उत्तम गतिनो जोक्ता थाय छे. एटले के देवगति, मानवगति, अने मुक्तिगति ए त्रण गति स्वाधीन थाय छे. शत्रु आदिनो जय रहेतो नथी. नगारा

रोगो प्राप्त थता नथी अने शरीरे सबल रही दरेक कार्यमां फतेह मेलवनार थाय छे.

त्रीजो धर्म तपस्या छे, ते करवा–पालवाथी अशुभ कर्मनो अंत आवे छे. अशुभ कर्म आठ प्रकारनां छे ते ए के–ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणी कर्म, वेदनी कर्म, मोहनी कर्म, आयु कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म अने अंतराय कर्म–ए आठे कर्मनी अंदर फसावाथी जीव त्रिविध दुःख भय दुर्गति प्राप्त करे छे ते तपस्या आराधवाना प्रतापवडे नाश पामे छे, अर्थात् तपस्या करनार जीव कर्म रहित थइ पंचमी गतिनो भोक्ता थाय छे.

चोथो धर्म सारी भावना भाववी. जे जीव सारी भावना भावे छे ते जीवनां नठारां कर्मो क्षय थाय छे. केमके भावना भवभ्रमणानो नाश करनारी छे. तेमज दान देवामां, शील पालवामां तपस्या करवामां पण सारी भावनानी खास जरूर छे, जो ए सर्वनी अंदर सारी भावना न होय ते बधुं छार उपर लीपण कर्या जेवुं नकामुं जाणवुं. भावना अनित्यादि बार प्रकारनी छे ते भावतां भवसमुद्र निर्भीतिवडे तरी पार जवाय छे.

केइक जीव दानदेवाथी, केइक जीव शीलपालवाथी, केइ तप करवाथी अने केइक जीव भावना भाववाथी भीम भवोदधि तरी गयाछे, जायछे अने भविष्यमां तरशे, ए निर्विवादनो विषयछे

आ चार विध धर्मनां मूलतत्त्वो जाणवा उत्सुक थवानी विशेष जरुर छे. दरेक बाबत ऊपर चोटियापणे सांभलवाथी तेनो खरो ख्याल के ऊंडा रहस्यनी पिछाण पडती नथी. भले थोडुं सधाय तेनी दरकार नहीं, परंतु ते शुद्धपणे—परमात्मानी आज्ञा प्रमाणे थाय तो अवश्य कथन मुजबज फल प्राप्त थाय छे.

ज्यां लगी लोकरंजन माटेज जे कंइ धर्मना चारे प्रकारने अमलमां मूकाय ते कंइ यथार्थपणे फल आपी शकता नथी. वखते अनाज्ञाना संगी थतां लाभने बदले हानी हाथ लागे छे.

सांसारिक व्यापारमां पण वस्तुनो पूर्णपणे भाव समजी, नफा तोटानो ख्याल राखी लाभना समयपर तेनुं वेचाण के खरीदी करवामां आवे तो बेशक नफोज प्राप्त थाय छे.

दान, शील, तप, भाव—ए चारेना पण भेद, नियम अने फल वगेरे तथा आराधना विराधनाने

पूर्णपणे ध्यानमां लइ तेहनो उपयोग अमलमां मूकाय तो निःसंदेहपणे उत्तरोत्तर मनमानतो लाभ हाजरी आपे छे.

एम जाणी भव्य प्राणी निज हितने ध्यानमां आणी ए चारे प्रकारोने इष्ट–उपासना रूप धर्म मानी तेमनुंज सेवन करो के जेथी आ भव आनंद-मंगल-कमला वराय अने परभवमां मुक्ति लक्ष्मीने वरी अजर अमर थवाय–आ वचनोना नियमने जे कोइ श्रोताजनो सांभळे पाळे सद्दहे तेहने घेर मंगलिकमाला प्रकटे अने दुःखवादल विघटे !

—*—

व्याख्यान दशमुं.



(अनुष्टुप् छंद.)

देवपूजा गुरूपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः ॥
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥

श्रीजिनेंद्र भगवान नरेंद्र सुरेंद्र-वंदित-पादपद्म, देवदेवेश सेवित वीतराग प्रभो गृहस्थाश्रमनां नित्यकर्म आ प्रमाणे कथी गयेल छे के—वीतराग देवनी निरंतर त्रिकाल विधिवत् पूजा करवी. तेमां पण द्रव्यपूजा अने भावपूजा एवा बे भेद छे ते. द्रव्यपूजा ए के पूजनना द्रव्यो एकठा करी ते वडे क्रमशः पूजा करवी. अने भावपूजा ए के—भगवाननी गुणस्तवना करवी, दर्शन करवां, मानसिक पूजोपचार सह उच्च भावश्रेणीनो संचय करवो ते छे. आ श्रावकनी प्रथम करणी छे. १

बीजी करणी ए छे के—सद्गुरुनी सेवा करवी. गुरुमुखथी सुशास्त्र श्रवण करी मनन करवां. भणवुं गुणवुं अने गुरुराजनो विनय करवो, तथा भाव भेद समजी हृदयमां ते संबंधी विचार बांधवो, २

त्रीजी करणी ए छे—नवकारमंत्र गणवो. स्वाध्याय ध्यान धरवुं अने ते ध्यानवडे पापनी निवृत्ति करवी.

चोथी करणी ए छे के-प्रतिदिन नियम पळी न शके तो बीज, पांचम, आठम, एकादशी, चौदश, पुनम, अमावासना दिवसे लीलोतरी, अनंतकाय, अभक्ष्यनो त्याग करवो. अभक्ष्य एटले न खावा लायक वस्तुओ बावीश छे ते ए के-

पंचुंबर चउ विगई, हिम विष करगेय सव्व मिट्टीय ॥ राइभोयणगंचिय, बहुबिय अणंतसंधाणा ॥ १ ॥
घोलवडा वायंगण, अमूणीयनामाणि फूलफलयाणि, तुच्छफलं च चलियरसं॥वज्जइ दव्वाणि बावीसं॥२॥

पींपरनी पीपियो १, वडना टेटा २, गुलर-उबरानां फल ३, काकोदुंबर-पाकर (कालां उंबरानां फल-गूलर) अने पीपरनां फल ५, (ए फलोमां झीणा-सूक्ष्म त्रसजीव घणा होय छे माटे खावा लायक नथी.) चार महाविगय ते एज के-मध ६, दारु ७, मांस ८ अने ए, मांखण ए चारनी अंदर तेओना रंग सरखाज समूर्छिम जीवोनी उत्त होय छे माटे एओनो उपयोग करवाथी धर्मनो नाश थाय अने शरीरमां रोगो थवाथी जिंदगी जोखममां आवी पडे छे. बीजा धर्मोमां पण कह्युं छे के-

मद्ये मांसे मधुनिच नवनीते तक्रतो बहिर्नीते॥उत्पद्यन्ते विलीयंते ह्यतिसूक्ष्मा जंतुराशयश्चैव ॥१॥
सप्त ग्रामे च यत्पापमग्निना भस्मसात्कृतम् ॥ तदेतज्जायते पापं मधुबिंदुभक्षणात् ॥ २ ॥

दारुनी, मांसनी, मधनी अने छाशथी अलग करेला मांखणनी अंदर अत्यंत सूक्ष्म जंतुओना समूह पेदा थाय छे अने लय थइ जाय छे. तथा सात गाम लाह्य म्हेली बाळ्यां होय तेटलुं पाप एक मधनुं टीपुं खावाथी प्राप्त थाय छे. माटे ए चारे चीजो अभक्ष्य छे. ए

हीम–बरफ असंख्याता अप्पकायनो पिंड छे जेथी ते अभक्ष्य छे. १०, तथा झेर अथवा तो झेहेरी वस्तुओथी बनेली चीजो–औषधियो शुद्ध करेल छतां पण परिणामे पेटमां जीवात पेदा करी शरीरने हानि पहोचाडे छे जेथी ते अभक्ष्य छे. ११, करा–वर्षादजल विकार पामवाथी करा रूपे वरसे छे तेनी अंदर असंख्य अप्पकायनाज जीवो छे माटे ते खावालायक नथी. १२ सर्व जातनी माटी–खडी-मुलतानी माटी-मटोडी पण अभक्ष्य छे, केमके तेना खावाथी पेटमां पीडा, पांडुरोग, सोजो, श्यामपणुं, आंतरडांनुं सडवुं, अने पेट वधी श्वास तथा अशक्तिनुं वधवुं ए रोग पेदा

कर्या बाद अंते मरण साथे भेटाय्ने छे. शिवाय खांसी-क्षय अजीर्ण-दुर्बलता पण प्राप्त करावे छे. जेथी ते खावा लायक नथी. १३ रात्रीभोजन करवुं नहीं; केमके राते जमवाथी पाणी पीवानी ताण रहे तेथी अजीर्ण थाय छे. अजीर्ण ए सर्व रोगनुं मूल छे जेथी राते खावुं नहीं. ते वखते खावाथी पतंगीयां जु कीडी करोलिया वगेरे जीव जंतु अने वाल वगेरे खावामां आवी जवानो संभव छे, अने ते खावामां आववाथी घणा रोगोनां बीज रोपाय छे, अन्यदर्शनमां पण कहेल छे के-

रक्ती भवंति तोयानि, अन्नानि पिशितानि च ॥ रात्रीभोजन सक्तस्य ग्रासे तन्मांसभक्षणम् ॥१॥
उदकं नैव पातव्यं रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥ तपस्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिना ॥ २ ॥
ये रात्रौ सर्वदाहारं वर्जयंति सुमेधसः ॥ तेषां पक्षोपवासस्य फलं मासेन जायते ॥ ३ ॥

सूर्य अस्त थया पछी पाणी रुधिर-लोही समान अने अन्न मांस समान थाय छे. माटे राते जमनारने कोलियो लेतां मांस खाधा जेटलुं पाप लागे छे. हे युधिष्ठिर! रात्रिनी अंदर पाणी गृहस्थे न पावुं अने तपस्वीए तो खास करीने न पावुं. जे सारी बुद्धिवाला छे ते रातमां एक

महिना लगी बिलकुल जमता नथी तेमने एक पक्षना करेला उपवास (पाषखमण) नुं फल मले छे. तेमज आयुर्वेदमां पण कहेल छे के—सूर्य अस्त थया पछी नाभि हृदयकमलनो संकोच थाय छे माटे राते जमवाथी गेरफायदो थाय छे अने सूक्ष्म जीवो पण अजाणते खावामां आवी जाय छे माटे राते खावुं पीवुं अभक्ष्य छे. १४, बहुबीज पंपोटा वगेरे खावा लायक नथी. १५. अनंतकाय के जे अनंता जीवना घात पातना हेतु रूप छे माटे खावा लायक नथी. सतावर १, लीली वरियाळीनो वेलो २, कुमारपाठुं ३, थोर ४ गळो ५, लसण ६, पिंडालु ७, सर्व जातना कंद एटलेके सूरण वगेरे ८, वज्रकंद ९, लीली हलदर १०, काचुं आदुं ११, वाम्कारेलां १२, गाजर १३, लूणी १४, लोढक कमलकंद १५, गरमर १६, तद्दन कोमल अवस्थावालां पांदडां १७, खरसूया १८, थेग १९, लीली मोथ २०, लीली मुसली २१, लूणा वृक्षनी छाल २२, खिलोडा २३, अमरवेल २४, मलानो कांदो २५, भोमीफोडा २६, पलंखनो भाजी २७, बथवो २८, भोंयकोहोलुं २९, पलारेला धानमांथी फूटेला अंकुर ३०, कुणी आमली के जेमां बीजनुं निसान पण न जणातुं

होय ते ३१, आलूक (रतालु) ३२, आ शिवाय साधारण वनस्पति पण अनंत कायनाज भेदमां समाय छे; माटे ते तजवा योग्यज छे. १६, वगेरे वधी जातनां बोल अथाणां खावा लायक नथी; केमके तेनी अंदर अनेक अतिसूक्ष्म जीवो पेदा थाय छे. १६, गोलवर्मा करवामां आवे छे (दहीं वर्मा) ते खावा लायक नथी. केमके तेमां निगोदिया जीव पेदा थाय छे. जेथी एना खावाथी पाप अने रोग हाजरी आपे छे. १७, वंत्याक न खावां; केमके ते खावाथी अंध वधे छे. कामदेव सतेज थाय छे अने दोषनी पुष्टि करे छे. अन्यदर्शनि पण कहे छे केः—

यस्तुवृंताककालिंग मूलकानां च भक्षकः ॥ अंतकाले विमूढात्मा न स्मरिष्पति मां प्रिये ॥ १ ॥

वंत्याक, कालिंगर्मा—तरबूज, अने मूलाना कांदा अथवा कंदमूलना भक्षणथी अंतवेलाए ते मूढात्मा, हे प्रिये ! मने यादीमां लावी शकतो नथी. केमके कंदमूल तथा वंत्याक खावाथी मदोन्मत्त अने कालिंगर खावाथी बुद्धिहीन थाय छे जेथी अंतकाले हुं तेने याद आवी शकतो नथी (ए मने वीसरी जाय छे.) आम होवाथी एज अभक्ष्य छे. १९. जे फल के फूलनां नाम न

जाणता होइए तो ते अन्नक्ष्य होय छे; केमके तेना खावाथी अनेक उपाधि अने मरणनी मुलाकात थवा सन्नव छे; माटे अजाण्यां फल फूल खावां नही. २० महुमां जांबु बीलां अने कुणां फल मात्र तथा अरणी सरगवो महुमा वगेरेनां फूल, तेमज चोमासा (वर्षाकाल) मां जगती तुरतनी जगेली कुणी नाजी, अने चोला मग वगेरेनी कुणी सींगो तथा चणा वगेरेना ठेला आदि अन्नक्ष्य छे. २१ चलितरस एटले के कोहेलुं अन्न, वासी अन्न, वासी कठोल, वासी रोटली ते खावा लायक नथी; केमके ते खावाथी रोग पेदा थाय छे अने त्रस जीवोनी उत्पत्तिनुं स्थान होवाथी तेनो उपयोग करतां जीवहिंसानुं पाप लागे छे, माटे निषेध रूप छे. २२ आ बावीश अन्नक्ष्य छे. अन्यदर्शनियो पण अन्नक्ष्य नक्षण निषेध विषे कहे छे के–

अन्नक्ष्यन्नक्षणाद्दोषाः कंठ रोगः प्रजायते ॥ न खावा लायक आ बावीश अथवा अन्य पण अन्नक्ष्यना नक्षणथी दोष अने कंठ रोगने जन्म मले छे. एम ब्रह्मांड पुराण साक्षी आपे छे. तेमज शातानपोक्त शास्त्रमां पण कहेवामां आव्युं छे के–अन्नक्ष्य नक्षणे चैव जायंते कृमयो

हृदि ॥ अन्नकृयना ज्ञक्षणथी हृदयमां कृमि जीव पेदा थाय बे माटे ते तजवा योग्यज बे.

श्रावकनी पांचमी करणी ए बे के, पोताना शरीरनी शक्ति मुजब छ पर्वने दिवसे नवकारसीथी मांमी उपवास आदि तपस्या करवी; केमके तपस्या करवाथी नठारां कर्मो अने रोगोनुं मूल नाश पामे बे. माटे बार ज्ञेद वाली तपस्या अवश्य करवी.

बठी करणी ए बे के–दान देवुं. तेमां पण शुद्ध साधुनी योगवाइ मले तो अति उत्तम, नहीं तो स्वधर्मी ज्ञाइउने दान देवु अने कदाच तेनो पण जोग न मले तो दुर्बल-अनाथ-कंगाल-दुःखीने ज्ञोजन आपवुं. नही के पैसा पाइ अनाज (रांध्या विनानुं) आपवुं. केमके ते वेचीने व्यापार चलावे बे. जोके दीन दुखी तरफ कोमल चित्त राखवुं अने कशुं पण तेमना माटे न बनी शके तो तेमना ज्ञलानी खातर सारी जोज्ञ वावी. नहीं के खराब जीज्ञ वाइ निंदाना ज्ञागी थइ ज्ञारे कर्मी थवुं.

आ प्रमाणे श्रावकने निरंतर करवानी बे करणी–कृत्यो बे ते हमेशां शुद्ध ज्ञावथी करी

जीवनने सफल करवुं. केमके जीवननुं सार्थकतापणुं ए करणीतमांज समायलुं छे. एम जाणी भविप्राणी हेत आणी आ हितवाणीने कंठमणि गणि लेवो जेथी आभव सुख संपदा अने परभव बार देवलोक नवग्रीवेक पांचअनुत्तर विमान अने यावत् मोक्षनां सुख प्राप्त थाय !

———— (+) ————

व्याख्यान अगीआरमुं.



(गाथा छंद.)

अरिहंत देवो सुगुरु, शुद्धं धम्मं च पंच नमुक्कारो ॥
धन्नाणं च कयन्नाणं, निरंतरं वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥

अरिहंत, महंत, दीनदयालु, भक्तवत्सल, अनाथना नाथ, अशरणशरण, पतितपावन, अधमउद्धारण कृपासिंधु वर्धमान जिनेश्वरे भविकजीवोना उद्धार निमित्त आ प्रमाणे भलामण करेली छे के—हम्मेशां शुद्ध देव, शुद्ध गुरु, अने शुद्ध धर्म ए त्रण रत्नत्रयी तथा पंचपरमेष्ठि नमस्कार (नवकार मंत्र) आ चारेनुं यथाविधिथी तन मन वचनना शुद्धपणा सहित सदा सेवन करवुं तोज जीवन धन्य—कृतकृत्य गणाय छे. अर्थात् जे पुन्यशाली प्राणीओना हृदयनी अंदर निरंतर आ चारेनुं उच्च भावना पूर्वक स्मरण चालु रहे तो बेशक ते प्राणियोनुंज जीवन सफल अने धन्यवादने पात्र छे.

शुद्ध देव ते शुं, जिनेश्वर भगवान-ब्रह्मा-विष्णु-महादेवजी-भैरव-भवानी विगेरे छे तेज के बीजा ? आना उत्तरमां एज समाधान वचन छे के गमे ते देवमां अंशमात्र पण अढार दूषणो न होय ते शुद्ध देव मनाय छे. शुद्ध देवनी मूर्त्ति शांत अने नरलीलानां चिन्हो रहित होवी जोइये.

अढार दूषण ए गणाग छै के

अन्नाण[1] कोह[2] मय[3] माण[4] लोह[5] माया[6] रइअ[7] अरइअ[8] ॥
निद्दा[9] सोग[10] अलियवयण[11] चोरिया[12] मच्छर[13] भयाय[14] ॥ १ ॥
पाणिवह[15] पेमकीला[16] पसंग[17] हासाय[18] जस्स ए दोसा ॥
अढार सविपणठा नमामि देवाहि देवंतं ॥ २ ॥

देव एक अरिहंत विदीत, रागद्वेष वेरी जिणेजीत ॥ दोष अढार रहित हितकार । त्रिभुवन जननें तारणहार ॥ १ ॥ नाम ठवण द्रव्यभाव विचार, निक्षेपा अनुयोगद्वार ॥ चिहुं प्रकार एणिं-परे अरिहंत । चउग्ने भेदनमुं जयवंत ॥ २ ॥ चउवीसत्थो भणतां नाम, जिननामे तसुकरुं प्रणाम ॥ ठवणाश्री जिनप्रतिमा कही, जिनेभावे तें वंडुसही ॥ ३ ॥ पंचमअझयण आवश्यकतणो, अधिकारें

यति श्रावक नणे ॥ पढमनवंगे दसमे अंग । प्रगट साखिजाणो मनरंग ॥ ४ ॥ आवंति चनवीसी हुस्ये, लहिकेवल जिनधर्म नाखस्ये ॥ आगम नाख्या द्रव्यजिणिंद, ते प्रणमुं मन धरि आणंद ॥ ५ ॥ इमचनवीसी जे जिनयदा, एहिज चनवीसत्थो तदा ॥ वंदनीक इमद्रव्यजिनेस । गुरु पुनी जाणो सुविसेस ॥ ६ ॥ एणिपरें देवतत्व अरिहंत गुरुसु साधु जे जगगुणवंत ॥ सूधो निरवद्य दे नपदेश । टाले सावद्यनो लवलेश ॥ ७ ॥ परिग्रहने आरंन्ननिवार, वरते निरतेपंचाचार ॥ आणक्रिया जे पालेखंरी । दोसरहित विहरे गोचरी ॥ ८ ॥ इस्या सुगुरु गुरुतत्वसद्दहुं, तेनी आणा मस्तक वहुं ॥ जिन नाषितते साचो धर्म, पालंता आपे शिव सर्म ॥ ए ॥ सर्व जीववलिहणवा नही, इण नपदेशे धर्म हुवे सही ॥ एक करी थापे आरंन्न धर्म । ते जिन मतनुं न लहे मर्म ॥ १० ॥ धर्मारथ आरंन्न मिथ्यात, एहवि वात करे विख्यात ॥ बहु जन मांहे जे इम कहे । ते पण जैन धर्म नविलहे ॥ ११ ॥ बेवे नाव जिहां ए नही, तिहज धर्म साचो सद्दही ॥ एहि परे पालुं त्रिणतत्त्व । साचुं सद्दहतां समकित्त ॥ १२ ॥

આ અઢાર દૂષણથી તદ્દન દૂર હોય તેજ શુદ્ધ દેવ છે, બાકીના વિરુદ્ધા ચરણવંત દેખાતા દેવો કુદેવમાંજ ગણાય છે.

શુદ્ધ ગુરુ તે એજ કે જેઓ હિતનાં વચનો બોલે, ખુશામત ન રાખે, શુદ્ધ પ્રરુપણા કરે, નઠારા માર્ગથી ખસેડી સારા માર્ગ ઉપર ચઢાવવાનોજ પ્રેરણા ચાલુ રાખે અને તદ્દન ત્યાગ વૃત્તિવાળા હોય તે સુગુરુ મનાય છે. પરંતુ આવા આચારણ શિવાયના જે ગુરુઓ હોય તે કુગુરુજ ગણાય છે, અને તેવા સંસારની મોહ મમતામાં ફસાયલા ધાંધલિયા ગુરુઓજ દેશનું અને દેહનું અકલ્યાણ કરે છે.

શુદ્ધ ધર્મ તે એજ કે જે લોકાલોક પ્રકાશક જિનરાજ પ્રકાશિત તરણ તારણ ધર્મવચન હોય અને જે દશ લક્ષણોથી પૂર્ણપણે અલંકૃત હોય એટલે કે—

ધૃતિઃક્ષમા દમઃસ્તેયં, શૌચમિન્દ્રિયનિગ્રહઃ ॥ ધીર્વિદ્યા સત્યમક્રોધો દશકં ધર્મ લક્ષણમ્ ॥ ૧ ॥

ધૃતિ—હમેશાં ધૈર્યતા ધારણ કરવી; અને ધારણા શક્તિને વધારવી. ક્ષમા—નિંદા સ્તુતિમાન

અપમાન હાનિ લાભ આદિ દુઃખોમાં પણ સહન શીલતા રાખવી, દમ—મનને સદા ધર્મમાં પ્રવૃત્ત કરીને અધર્મમાંથી રોકવું. અધર્મ કરવાની ઇચ્છા પણ કરવી નહીં. અસ્તેય આજ્ઞા વગર કપટ વિશ્વાસઘાત વેદ વિરુદ્ધ ઉપદેશથી ગ્રહણ કરવું તે ચોરીને છોડી દેવી. શૌચ—રાગ દ્વેષ પક્ષપાત મૂકી અંદરની તથા પાણી માટીથી બહારની પવિત્રતા રાખવી. ઇંદ્રિય નિગ્રહ—અધર્મા ચરણથી રોકી ઇંદ્રીઓને સદા ધર્માચરણમાં ચલાવવી. ધીઃ—માદક—નશો પેદા કરનારી ચીજ તથા બુદ્ધિને નાશ કરનારી ચીજો અને દુષ્ટ લોકોનો સંગ આલસપ્રમાદ તજીને ઉત્તમ પદાર્થોનું સેવન અને સત્પુરુષોનો સંગ તથા બુદ્ધિને યોગ્યાભ્યાસથી વધારવી વિદ્યા—ભૂમિથી માંડી પરમાત્મા લગીનું યથાર્થ જ્ઞાન અને તેનો યથાયોગ્ય ઉપકાર લેવો. સત્ય આત્મામાં મનમાં વાણીમાં ને કર્મમાં સમાન રાખી વર્ત્તવું. સત્ય—જે પદાર્થ જેવો હોય તેવોજ સમજવો અને તેવુંજ બોલવું તથા તેવુંજ કરવું. અક્રોધ—ક્રોધાદિ દોષોને ત્યજીને શાંતિ આદિ ગુણોનું ગ્રહણ કરવું. આ દશ લક્ષણ સહિત જે વચન હોય તેજ ધર્મ વચન છે. અહિંસા એજ પરમ ધર્મ છે. કોઇનું મન દુભવવું એ પણ હિંસામાં

समावेश छे.

आवो शुद्ध धर्म विवेकी जनोए जाणी ते धर्मनां विवेकी वचनोने श्रवण करी आत्म कल्याणने साध्य करवुं अने जीवादि नव तत्त्वने ओळखी शुद्ध धर्ममां लीन थइ तत्त्व दृष्टिवडे विधर्म पंथमांथी तत्त्वने खोळी आनंदमां रहेवुं.

पंच परमेष्ठि नमस्कार अर्थात् श्री अरिहंत-श्री सिद्ध-श्री आचार्य, श्री उपाध्याय अने श्री साधु आ (नमो अरिहंताणं आदि) पांच पद अने चार पद रुप फल श्रुतियुक्त एम नव नमस्कार-नवकार मंत्र के जे चौद पूर्वना सारोद्धार रुप चिंतामणि सादृश मनोरथ पूरक छे तेनुं श्वासोश्वासें स्मरण करवुं जेथी उभय भवमां सुख प्राप्त थाय छे. तेमज ए मंत्रना प्रभावथी कैक जन तर्या, तरे छे, अने तरशे एवी प्रतीति छे ए माटे एज मंत्रनुं निरंतर आराधन करवुं.

आ चार पदार्थ अहर्निश हैयानी अंदर रम्याज करे तो ते जापक जीव आ भवमां परभवमां सुखशाता पामे. तथा बार देवलोक, नवग्रीवेक पांच अनुत्तर विमान अने यावत् मोक्ष सुख

पामे छे. एम जाणी हे भविप्राणी ! जिनवाणी चित्तमा आणो विवेक धारण करो जेथी श्रेय कल्याण मंगलीक माला संपजे !

व्याख्यान बारमुं.

(उपजाति छंद.)

जिनेंद्रपूजा गुरुपर्युपास्ति ॥ सत्वानुकंपा शुभपात्रदानम् ॥
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य ॥ नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि ॥ १ ॥

नरेंद्र-खगेंद्र-नगेंद्र-सुरेंद्र-मुनींद्र-असुरेंद्र-सेवित श्री वीतराग देव प्रणीत वाणीनो रहस्य ए छे के-मनुष्य जन्म रुप कल्पवृक्षनी सफलता ते छे के जेणे मानवभव धारण करी नीचे बतावेली बाबतो न करी तेणे जन्मारो हार्यो ज मनाय छे. अने जेणे जन्म धरी जिनराजश्रीनी उच्च भावनां साथे त्रणे काल अगर बने तेटली वखत विधि युक्त पूजा करी तेणे जन्म सफल

कर्यो मानवो. (पूजा केवी रीते करवी ए विधि गुरु मुखथी धारी लेवी.) तथा जेणे धर्म अने ज्ञानना देनारा उपकारी गुरुना चरणनी सेवना करी तेमने अन्न वस्त्र पात्र वस्ती ओषध आदि वस्तु जरुर वखते हाजर करी तेणे पण मानव भव सफल कर्यो मानवो. तेमज जेणे जन्म धरी छकाय जीवनी रक्षा करी—एटले के पृथ्विकाय, अप्पकाय (पाणी), तेउकाय (अग्नी), वायुकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय (हालतां चालतां प्राणी मात्र.) ए बधाने पोताना प्राण समान वल्लभ गणी बने तेटली तेमनी संभाल राखवी, तेमनो नाश करवो तो शुं, पण तेमने मारवां के मन दुभववुं एटलुं पण न थवा पामे एवी जीवदया पाली तेणे पण मानव भवने सफल कर्यो मानवो. तेमज तेणे सुपात्र—गुणवंत साधु—शुद्धाचारीने तथा योग्य श्रावकने भाव-भक्ति सह अन्नादिथी संतोष्या तेणे पण जन्म सफल कर्यो मानवो. तथा जेणे गुणवान पुरुषोना गुणो लक्षमां लइ तेमना गुणो तरफ प्रेम धरी तेमनुं सन्मान तथा तेमनो सत्कार कर्यो, निर्गुणी जनो एटले गुण रहित—चोर—जुगारी—शिकारी—पापी—जूठाबोलो, व्यभिचारी वगेरे वगेरेनो—

संग विचार्यो तेणे पण जन्मारानो शुभ लहाव लीधो मानवो. अथवा जेणे ज्ञानी जनो तरफ पूर्ण प्रेम राखी तेमना सेवना करी के शीलवंत, तपस्वी, आदिनी भक्ति साचवी तेणे पण जीवन—साफल्यता मेलवीज समजवी. अने जेणे भगवानश्रीनां प्ररुपेलां अने गणधर श्रीनां गुंथेलां गोठवेलां पिस्तालीश आगमो एटले के आचारांग, सुयगडांग, ठाणांग, समवायांग, भगवती, ज्ञातासूत्र, उपाशकदशांग, अंतगडदशांग, अनुंतरोववाइ, प्रश्नवैयाकरण, अने विपाकसूत्र ए अगीआर अंग तथा उवाइसूत्र, रायपशेणी जीवाभिगम, पन्नवणा, सुरपन्नति, जंबुद्वीपपन्नति, चंदपन्नति—निरीयावली, कप्पिया, कप्पवडंसीया, पुष्फीया पुष्फचूलीया अने वन्हीदशांग आ बार उपांग, तेमज चउशरण पयन्ना, महापच्चख्काण, तंडुलवियाली, चंदाविजय, मरणसमाधि, आउर पच्चख्काण, भतपच्चखाण गणीवीज्जा, देविंदस्तव अने संस्थारक आ दश पयन्ना, तथा बृहत्कल्पसूत्र, जीतकल्पसूत्र, महानीशीथ दशाश्रुतस्कंध, व्यवहार सूत्र, नीशीथसूत्र आ छ छेद ग्रंथ, तथा आवश्यसूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन अने पींड नियुक्ति सूत्र आ चार मूलसूत्र अने अनुयोग-

द्वार तथा नंदीसूत्र ए बे मली पिस्तालीश जैनागम छे. तेमनुं बहु मानथी जे पूजन, वाचन अने सांभलवुं वगेरेमां उत्तमभावे राखी मनन करी ते विचारोने आचारमां मूके छे ते जीवने मानव जन्मनी सफलता मली मानवी.

आ छ प्रकार जे पुन्यात्माए विधिपूर्वक आदर्या पाल्या छे ते भव्य जीवो भवो दधिथी तरी पार पहोच्या छे, हाल पण तेम करे ते पार पहोचशे अने भविष्यमां कोइ करशे तो ते पण अवश्य बेडो पार करवानाज एम जाणी हे भविप्राणी ! भाव आणी वीतरागश्रीनी वाणी, हृदयमां धरी तेने पालो—अंगीकार करो के जेथी उभय भवमां मन मानती सुखसंपदा अने यावत् मोक्षनां सुखनी प्राप्ति थाय ! ॥

इति सुभाषितव्याख्यानसंग्रहः समाप्तः

॥ श्री वैराग्य शतक. ॥



आ राग अने दुःखथी भरपुर एवा असार संसारमां सुख नथी; आ बाबत जाणतां छतां जीव जीनेश्वरे कहेलो धर्म आचरतो नथी. १.

आज, काल, पोर, परार धन मलशे एम मनुष्यो चिंतवे छे, पण खोबामां रहेला जलनी माफक आयुष्य गले छे ते जोता नथी ! २.

हे मनुष्यो ! जे काले करवानुं होय ते त्वराथी आजे करो. काल बहु विघ्नवालो छे. माटे बीजा पहोरनी पण राह जोता नहि. ३.

संसारना स्वरुपनुं वर्तन तो जुओ ! प्रेम अने स्नेहमां लागेला पुरुषो जे सवारमां जोवामां आव्या हता ते सांजे जणाता नथी. ४.

हे लोको ! जागवाने ठेकाणे सुइ न रहो ! नासवानी जग्याए विश्राम न करो; रोग, जरा

(वृद्धावस्था) अने मृत्यु आ त्रण तमारी पुंठे लागेला छे. ५.

चंद्र अने सूर्य रुप बलद रात्रिदिवस रुप घडानी हारवडे जीवनुं आयुष्य रुप जल ग्रहण करीने कालरुप अरहट्टने फेरवे छे. ६.

काल रुप सर्पथी खवाती काया जेथी धारी रखाय तेवी कोइ कला नथी, तेवुं कोइ औषध नथी. तेमज तेवी कोइ हीकमत नथी. ७.

मोटा शेष नाग रुपी जेनुं नालवुं छे, पर्वतो जेवा जेनां केसर छे, दिशाओ रुपी जेनां पांदडां छे, एवा पृथ्वी रुप कमलमांथी मनुष्य रुपी रसने कालरुपी भ्रमर पी जाय छे ए खेदनी वात छे. ८.

शरीरना छायाना बहाना वडे सकल जीवोना छिद्रने शोधतो काल कोई पण प्रकारे मनुष्यनी बाजु छोडतो नथी; तेटला माटे धर्ममां उद्यम करवो. ९.

आ अनादि काल विषे जुदी जुदी जातना कर्मने वश थयेला जीवोने एवी एक पण स्थिति नथी के जे न संभवे, (अर्थात् सघली स्थितिओमां आ जीव जइ आव्यो छे.) १०

सर्व बांधवो, मित्रो, पिता, माता, पुत्र, स्त्री वगेरे मरेला स्वजनने जलनी अंजली आपी स्मशानथी पाछा वले छे. ११.

रे ! जीव ! पुत्र तथा पुत्रीओनो वियोग थाय छे. बांधवोनो वियोग थाय छे, स्त्रीओनो वियोग थाय छे, फक्त एकनोज वियोग थतो नथी अने ते जीनेश्वरे कहेलो धर्म छे. १२.

आठ कर्मना पाशथी बंधायेलो जीव आ संसार रुपी केदखानामां रहे छे, अने आ आठ कर्मना पासथी छुटो थयेलो आत्मा शिव मंदिरमां रहे छे. १३.

वैभव, सगां स्नेहीनो संबंध अने विलासथी मनोहर एवा विषय सुख; आ सर्व कमलना पांदडांना किनार पर रहेला पाणीनां बिंदुना जेवा चंचल छे. १४.

हे मनुष्यो ! ते बल क्यां गयुं ? ते यौवन क्यां चाल्युं गयुं ? ते शरीरनी शोभा क्यां जती रही ? आ सर्व अनित्य छे, काले आ सर्व हतुं नहतुं करी दीधुं ते जुओ अने विचारो. १५.

ज्यारे कर्म बंधथी बंधायेलो जीव आ संसार रुपी नगरना चौटा विषे विविध प्रकारनुं दुःख

पामे छे; अहीं तेनुं कोण शरण छे? १६.

आ जीव कर्मोने लीधे अशुद्ध, अपवित्र अने अशुचि द्रव्यथी भरेला गर्भवासमां अनंतवार वसेलो छे. १७.

आ संसारमां जीवोने उत्पन्न थवानां स्थान चोराशी लाख कहेलां छे अने एकेक स्थानमां आ जीव अनंतवार उत्पन्न थयेलो छे. १८.

जुदा जुदा उत्पत्ति स्थानमां उत्पन्न थयेलां अने संसारमां रहेला माता, पिता, बंधु वगेरेथी आ जगत् भराएलुं छे; पण ते लोको तारुं रक्षण करे तेम नथी, तेमज तने शरण रुप थइ शके तेम नथी. १९.

दुःखथी घेराएलो जीव जल वगरनी जग्या उपर माछली जेम तरफडे तेम तरफडे छे; बधा जीवो ते जुए छे, पण तेनुं दुःख दूर करवा कोइ समर्थ नथी. २०.

हे जीव! पुत्र स्त्री वीगेरे मने सुखना हेतु थशे एम तुं जाणीश नहि; संसारमां वसता

जीवोने एज गाढ बंधन रुप थाय छे. २१

माता बीजा जवमां स्त्री थाय, अने स्त्री मरीने माता पण थाय. पिता मरीने पुत्र थाय अने पुत्र मरीने पिता थाय. कर्मने वश सर्व जीवोनी आ संसारमां एक सरखी स्थिति नथी. २२

एवी एक पण जाति नथी, एवुं एक पण उत्पत्ति स्थान नथी, एवी एक पण जग्या नथी, एवुं एक पण कुल नथी के ज्यां सर्व जीवो अनंतवार जन्म के मरण पाम्या न होय. २३.

वालना अग्र जाग जेवुं एक पण स्थान आ जगत्मां नथी; के ज्यां जीवो अनेक प्रकारना सुख दुःख घणी वार पाम्या न होय. २४

आ संसारमां बधी रीद्धि तने घणी वार मली छे, तथा बधा स्वजन संबंध पण तुं घणी वार पाम्यो छे; माटे तुं जो आत्माने जाणवा मागतो होय तो तेथी वैराग्य पाम. २५

जीव पोते कर्म बांधे छे; अने तेज जीव एकलो वध, बंध, मरण वीगेरे दुःखो अनुजवे छे, अने कर्मथी छेतरायेलो जीव एकलो आ संसारमां जमे छे.

बीजो कोइ अहित करतो नथी, तेमज बीजो कोइ हित पण करतो नथी; पण आत्माज पोतानुं अहित के हित करे छे; अने पोते करेलुं सुख दुःख आत्मा भोगवे छे. छतां पण तुं दीन मुख वाळो केम बने छे ? २७

हे जीव ! घणा आरंभ करीने मेळवेलुं धन तारा स्वजनो भोगवे छे, पण ते मेळवतां करेलुं पाप तारेज भोगववुं पडशे. २८

हे जीव ! तुं तारा दुःखी अने भुख्या बाळकोनी जेटली चिंता करे छे; तेनी थोडी पण तारा आत्मानी तुं करतो नथी तो तने शुं कहीए ?

शरीर क्षणभंगुर छे, अने आत्मा शाश्वत स्वरुपी छे. कर्मने लीधे बन्नेनो संबंध थयेलो छे. एवा शरीरमां आटलो बधो मोह शा माटे राखे छे ? ३०

हे जीव ! पुत्र, माता, पिता अने भार्या विगेरेनुं कुटुंब क्यांथी आव्युं ! क्यां जशे ? तुं क्यांथी आव्यो अने क्यां जइश ? तमे एक बीजाने आ रीते जाणता नथी; त्यारे आ कुटुंब

सघलुं तारुं शी रीते ? ३१

आ शरीर क्षणभंगुर छे, वादलना समूह जेवो आ मनुष्य भव चंचलछे ते दरम्यान जेटलो धर्म करी लीधो एटलोज खरो सार छे. ३२

जन्म दुःखनुं कारण छे, वृद्धावस्था रोगनुं कारण छे, मरण दुःखनुं कारण छे, अरे ! आ संसारज दुःखमय छे, जेथी जीवो क्लेश पामे छे. ३३

ज्यां सुधी इन्द्रियो नाश पामी नथी, ज्यां सुधी घडपण रुप राक्षसे पोतानुं जोर दाखव्युं नथी, ज्यां सुधी रोगना विकारो थया नथी, ज्यां सुधी मृत्यु भेटवाने तैयार थयुं नथी, त्यां सुधी हे जीव ! धर्म करी ले. ३४.

ज्यारे आग लागे छे त्यारे कुवो खोदवाने कोइथी पण बनतुं नथी; तेम मरण आवी पहोंचे जीव केवी रीते धर्म करी शकशे ? ३५.

रुप अशाश्वत छे, जगत्मां जींदगी वीजली जेवी चपल—अस्थायी छे, अने यौवन संध्या

समयना रंग जेवुं क्षणिक रमणिय छे. ३६.

लक्ष्मी वीजलीना जेवी चंचल छे, विषय सुख मेघ धनुष्यना रंग जेवुं क्षणिक छे; माटे हे जीव ! समज, समज, अने आवी न जेवी बाबतोमां मुंझाइ न रहे. ३७.

जेवी रीते सांजरे पक्षीओनो संबंध छे, जेवी रीते मुसाफरोनो रस्तामां संबंध छे, तेवीज रीते हे जीव ! स्वजनोनो संबंध पण क्षणभंगुर छे. ३८.

रात्रि पूरी थये मारे विचार करवो जोइए के घर लाग्युं छे, छतां हुं केम ऊंघु छुं ? आ कर्मथी बलता आत्मानी केम बेदरकारी करुं छुं ? अने धर्म रहित दिवसो केम गुमावु छुं ? ३९.

जे जे रात्रि दिवस जाय छे ते ते पाछा आवता नथी; तेमज जे जीव रात्री दिवस अधर्म करे छे, तेना रात्री दिवस अफल जाय छे. ४०.

जेने मृत्यु साथे मैत्री छे, अथवा मृत्युथी नाशी छुटवाने जेने बल छे, अथवा हुं मरीश नहि एम जे नक्की जाणे छे, ते मनुष्य भविष्यमां धर्म करवानुं भले मुलत्वी राखे. ४१.

जवी रीते वणकरो लाकमी उपरथी सूतर उखेमे छे, तेवीज रीते रात्री अने दिसस चाल्या जाय छे, तेउ आयुष्यने उछुं करे छे, अने गया पछी पाछा आवता नथी. ४२.

जेवी रीते सिंह मृगने झालीने अवश्य मारेछे, तेवीज रीते मृत्यु अंत समये मनुष्यने झाले छे, ते वखते तेना माता, पिता के जाइ तेमां जाग पमावता नथी ४३.

जींदगी पाणीना परपोटा समान छे, वैजव पाणीना तरंगनी माफक अस्थिर छे, अने राग स्वप्न तुल्य छे; जो तुं आ यथार्थ जाणतो होय तो ते प्रमाणे वरत. ४४.

संध्या समयना रंग जेवी अने पाणीना परपोटा समान आ जिंदगी छे, अने यौवन नदीना वेग समान छे, छतां हे पापी जीव ! तुं केम समजतो नथी ? ४५.

जूतने बली फेंकवामां आवे तेम मृत्यु देवे कुटुंबने जूदे जूदे स्थले फेंकी दीधुं छे. ४६

पुत्र, पुत्री आदि कांइक गया, स्त्री कांइक चाली गइ, अने स्वजनो पण बीजे स्थले चाल्या गया. ४७

જૂદા જૂદા ભવોમાં જીવે જે શરીરો ધારણ કર્યાં તથા તજ્યાં તેમની સંખ્યા અનંત સાગરના બિંદુથી પણ મપાય તેમ નથી. ૪૮

જૂદા જૂદા જન્મોની રડતી માતાઓનાં આંસુની સંખ્યા સમુદ્રના પાણીના બિન્દુ કરતાં પણ વધારે થાય. ૪૯

નરકમાં નરકના જીવો જે અનંત ઘોર દુઃખ અનુભવે છે, તેના કરતાં પણ અનંત ગણું દુઃખ નિગોદમાં જીવ ભોગવે છે. ૫૦

હે જીવ ! વિવિધ કર્મને લીધે તેં નિગોદ મધ્યે અનંત પુદ્ગલ પરાવર્તન સુધી તીક્ષ્ણ દુઃખ સહન કરેલ છે. ૫૧

ત્યાંથી ઘણી મહેનતે બ્હાર નીકળીને હે જીવ ! તું મનુષ્યત્વ પામ્યો અને ત્યાં ચિંતામણી રત્ન જેવો જિનવર ધર્મ તને મળ્યો. ૫૨.

હે જીવ ! આવો ધર્મ પામ્યા છતાં જેથી ભવ રુપી કુવામાં પડીને ફરીથી દુઃખ ભોગવવું

पडे एवो प्रमाद तुं केम करे छे ? ५३.

हे जीव ! जैन धर्म पाम्यो, छतां प्रमाद दोषथी तें तेनुं सेवन न कर्युं. हे ! आत्माना वैरी जीव ! आगळ उपर तारे घणो पश्चाताप करवो पडशे. ५४

पाप अने प्रमादने वश थइ जेउए जैन धर्मनुं पालन कर्युं नथी, ते बिचारा जीवो मरण पासे आवे घणा दिलगोर थाय छे. आ संसारने धिक्कार हो, के जेमां देव मरीने तिर्यंच थाय छे अने चक्रवर्ती राजा मरीने नरकाग्निमां बळे छे. ५५

धन, धान्य, आभूषण, गृह अने स्वजन कुटुंबने तजीने कर्म रुपी पवनथी हणायेला वृक्षना पुष्पनी माफक जीव अनाथ थइ जाय छे. ५६

आ संसारमां प्रयाण करतो जीव पर्वतोमां, गुफामां, समुद्रना मध्यमां, झाडनी टोचे रहेलो छे. ५७

हे जीव ! तुं केटलीक वार देव, केटलीक वार नारकी, केटलीक वार कीडो, केटलीक वार

પતંગીયું, કેટલીક વાર મનુષ્ય, કેટલીક વાર રુપવાન, કેટલીક વાર બેડોળ, કેટલીક વાર સુખી અને કેટલીક વાર દુઃખી થાય છે. ૫૮

હે જીવ ! તું રાજા થયો, ભીખારી થયો, ચાંડાલ થયો, વેદ જાણનાર થયો, સ્વામી થયો, દાસ થયો, પૂજ્ય થયો, શઠ થયો, નિર્ધન થયો અને ધનવાન પણ થયો. ૫૯

આમાં કાંઇ નિયમ નથી, પણ પોતાના કર્મની પ્રકૃતિ તેની જેવી ગતિ કરે તેમ જીવ અનેક અનેક વેષ ધારણ કરી નટની માફક વર્તે છે. ૬૦

હે જીવ ! નરકમાં તને અનંત વાર બહુ પ્રકારની, ઉપમા ન આપી શકાય તેવી અને દુઃખ પૂર્ણ વેદના મળેલી છે. ૬૧

દેવ પણામાં, મનુષ્ય પણામાં અને પરતંત્ર પણું પામીને અનંત વાર બહુ પ્રકારનું ભયંકર દુઃખ તેં અનુભવ્યું છે. ૬૨

તિર્યંચ જાતિમાં ઉત્પન્ન થઇ અનેક પ્રકારની ભયંકર વેદના હે જીવ ! તેં અનુભવી છે; જ-

न्म मरणनी रेंट मालमां तुं अनेक वार जन्म्यो छे. ६३

शरीर संबंधी अथवा मन संबंधी जे कोइ दुःख छे, ते आ जीवे आ संसार रुपी अरण्यमां अनंतवार अनुभव्या छे. ६४

आ संसारमां तारी एवी तृष्णा अनंत वार हती के जे तृष्णा शांत पमाडवाने सर्व समुद्रोनां जळ पण पूरतां न थइ शके. ६५.

आ संसारमां अनंतवार तारी भूख एवी बधी हती के जे मटाडवाने सर्व पुद्गल (जड पदार्थ) समूह पण पूरता नथी. ६६

अनेक जन्म मरणनी परंपरा करीने महा महेनते मनुष्य जन्म मले छे, त्यारे जीव पोतानुं इच्छित कार्य (कल्याण) करी शके छे. ६७

मनुष्य जन्म बहुज दुर्लभ छे, अने मनुष्यत्व विजलीना चमकारानी माफक चपल छे; छतां जे धर्मने विषे आलसु रहे छे, ते कायर पुरुष छे पण सत्पुरुष नथी. ६८

संसार समुद्रना तटरुप मनुष्य जन्म पामीने, जेणे जिनेंद्र भगवाने प्ररुपेलो धर्म नथी आचर्यो, ते पुरुष दोरी तूटे जेम धनुष्य धारीने हाथ घसवा पडे छे, तेम जरुर हाथ घसे छे. ६९

हे जीव ! बराबर श्रवण कर, चंचल स्वभाव वाला सघला बाह्य पदार्थो तथा नव प्रकारना परिग्रहना समूहने तारे मूकवा पडशे. आ संसारमां आ सर्व इंद्रजाल समान छे. ७०

हे मर्ख ! पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री वगेरेना समुदाय आ लोक संबंधी छे, अने सर्व पोतानुं सुख मेलववाना स्वभाववाला छे, तुं एकलोज नरक तिर्यंच वगेरेना दुःख सहन करीश. अने ते वखते तारुं कोइ पण रक्षण करनार नथी. ७१

जेवी रीते झाकलनुं बिन्दु कुशना अग्रभाग पर घणाज थोडा वखत टकी रहे छे, तेवीज रीते आ मनुष्योनुं जीवित छे, माटे (भगवान् कहे छे केः हे गौतम ! एक समय पण तुं प्रमाद करीश नहि.) ७२

बुझो (बोध पामो !) केम बुझता नथी ? (बोध पामता नथी ?) मरण पछी आवुं

बोधी ज्ञान मलवुं दुर्लभ छे, रात्रि दिवस जे गया ते पाछा आवता नथी. फरीथी आवुं जीवित मलवुं सुलभ नथी. हे बालो ! हे वृद्धो ! आंख उघाडीने जुओ. गर्भमां रहेला जीवो मरण पामे छे. जेवी रीते बाज पक्षी चकलीने मारे छे, तेम आयुष्य पुरुं थये जींदगी नाश पामे छे. ७३

त्रण भुवनना मनुष्योने मरता जोइ जे पोताना आत्माने कल्याण मार्गमां जोडतो नथी, तेमज पापथी पाछा हठता नथी, तेना निर्लजपणाने धिक्कार थाओ. ७४

जओ चिकणां कर्मथी बंधाएलो छे, तेमने बहु उपदेश न आपो. तेमने आपेली हित शिखामण मोटा अनर्थ के द्वेषनुं कारण थाय छे. ७५

हे जीव ! अनंत दुःखमां कारण एवा धन, स्वजन, वैभव वगेरेमां तुं ममत्व धारण करे छे, पण अनंत सुखरुप मोक्षना मार्गमां शिथिल देखाय छे. ७६

संसार दुःखनुं कारण छे, दुःख रुप फलवालो छे, अने दुःखे करीने भोगवाय एवो दुःख स्वरुपी छे; छतां पण स्नेहनी सांकलोथी बंधायेला जीवो आ संसारने त्यजता नथी. ७७

પોતાના કર્મરુપ પવને કરી ચાલેલો જીવ આ ભયંકર સંસાર રુપી વનમાં દુઃખે કરીને ભોગવાય એવી કઇ કઇ વીટંબનાઉ નથીઅનુભવતો ? ૭૮

તિર્યંચના ભવમાં અરણ્ય વિષે, શિયાળામાં શીતળ પવનની લ્હેરોથી ઘણીવાર તારો દેહ ભેદાયો છે, અને આ રીતે અનંતવાર તું મરણ પામ્યો છે. ૭૯

તિર્યંચના ભવમાં અરણ્યમાં, ઉનાળાના, સખત તાપથી તપેલા તે બહુ વાર ભૂખ અને તરસના દુઃખ વેઠયાં છે; અને ઘણું ઝુરી ઝુરીને મરણ દુઃખ પામ્યો છું. ૮૦

તિર્યંચના ભવમાં વર્ષાઋતુમાં જઇને, અરણ્યમાં પર્વતની નદીથી ખેચાઇ; શીત પવનથી ઠરી જઇને તું ઘણી વાર મરણ પામ્યો છે. ૮૧

આ પ્રમાણે તિર્યંચના ભવમાં લાખો ગમે દુઃખ સહન કરતો તું અનંતવાર આ ભયંકર સંસાર રુપી અરણ્યમાં ભટક્યો છે. ૮૨

હે જીવ ! દુષ્ટ આઠ કર્મરુપી પ્રલય કાલના પવનથી પ્રેરાયેલા અને આ ભયંકર સંસાર રુપી

अरण्यमां फरतां तें अनंतवार नरकमां दुःख अनुभव्यां छे. ८३.

सात नरकोमां वज्राग्नि जेवी गरमीथी अने अति शितलताथी उत्पन्न थती वेदनाओमां करुणा शब्दो वडे विलाप करतो तुं अनंतवार वस्यो छे. ८४

आ संसारमां मनुष्य भवमां पण पिता, माता के स्वजन वगरनो थइने अथवा भारे पीडा सहन करीने तें घणीवार विलाप कर्यो छे, आ बधुं तुं केम संभारतो नथी ? ८५

आ संसार रुपी वनमां धन, स्वजन वगेरेनो त्याग करीने, आकाश मार्गमां न देखाता पवननी माफक, आ जीव एक स्थानथी बीजा स्थानमां भटके छे. ८६

जन्म, जरा अने मरण रुप तीक्ष्ण भालाए करी अनेकवार विंधायेला जीवो, संसारमां फरतां अनेक भयंकर दुःख अनुभवे छे. ८७

छतां पण अज्ञान रुपी सर्पथी डंख पामेला मूढ मनवाला जीवो एक क्षण वार पण आ संसार रुप बंदिखाना तरफ वैराग्य धरावता नथी ! ८८

ज्यां दरेक क्षणे कालरुप रेंट तेनी घडीउ वडे शरीर रुपी वावमांथी जींदगी रुपी जल खेची ले छे; त्यां तुं केटलो वखत क्रीडा करी शकीश ? ७९

हे जीव ! बोध पाम ! हे पापी जीव ! प्रमाद न कर ! रे अज्ञानी जीव! परलोकमां महा दुःखनुं भाजन (पात्र) तुं केम थाय छे ? ९०.

रे जीव बोध पाम ! अने जिन मत जाणीने मुंझाइ न जा. हे जीव ! फरीथी आवी सामग्री मलवी बहु दुर्लभ छे, ९१.

जिन धर्म दुर्लभ छे. तुं प्रमादनी खाण छे अने सुखनी इच्छा करे छे. नरक दुःख अति दुःसह छे. आ कारणथी तारुं सारु शुं थशे ते अमे जाणता नथी. ९२.

रे जीव ! अस्थिर, मल सहित अने रोगादीने आधिन एवा शरीर वडे स्थिर, निर्मल अने स्वाधीन एवो जो धर्म मलतो होय तो शुं खामी रही ? ९३.

तुच्छ वैभव वालाने चिंतामणी रत्न मलवुं दुर्लभ छे; तेम गुण वैभव रहित जीवोने धर्म

रत्न मळवुं दुर्लभ छे. १४.

जन्मथी अंध पुरुषोने जेम द्रष्टीनो संयोग–एटले देखवुं अशक्य छे, तेम मिथ्यात्वथी अंध जीवोने जिन मत संयोग अशक्य छे. ए५

अनंत गुण युक्त जिन धर्ममां दोषनो लेश पण अंश नथी तोपण हे भव्य जीवो ! अज्ञानथी अंधथइ तमे ते जिन धर्ममां केम जोडाता नथी ? ए६.

मिथ्यात्वमां (असत्य मतमां) अनंत दोष प्रगटपणे देखाय छे. त्यां जरा पण गुणनो भास नथी; तोपण मोहांध जीवो ते मिथ्यात्वनुं सेवन करे छे ए आश्चर्य छे. ए७.

जे लोको सुखरुप, सत्यमय धर्म रत्ननी परीक्षा जाणता नथी, ते मनुष्योनी कळा अने गुणो संबंधी चतुराइने धिक्कार हो ! ए८.

आ जिन धर्म जीवोने अपूर्व कल्प वृक्ष समान छे, अने स्वर्ग तथा मोक्ष रुप फळने आपवा वाळो छे. धर्म एज बंधु छे; धर्म एज सुमित्र छे. एए.

धर्म एज परम गुरु छे, अने मोक्ष मार्गमां प्रवृत्त थयेलाने धर्म एज परम रथ छे. १००.

हे जीव ! चतुर्गतिनां अनंत दुःखरुपी अग्निए सलगावेल संसार रुपी भयंकर वनमां अमृतनां कुंड समान जिन वचन छे, माटे तेनुं तुं सेवन कर. १०१.

अनंत दुःख रुप ग्रीष्म ऋतुना तडकाथी तपेला आ संसार रुपी मारवाड देशमां जिन धर्म एज कल्पवृक्ष समान छे. ते शिव सुखने आपनार जिन धर्मनुं तुं सेवन कर. १०२

हे जीवो ! वधारे कहेवाथी शुं ? तमारे जैन धर्ममां एवी रीते श्रम लेवो जोइए के जेथी तमे आ संसार रुपी भयंकर समुद्रने जल्दीथी तरीने अनंत शुखरुप शाश्वत स्थान पामो. १०३



श्रीजिनेश्वरप्रार्थना.

अहो अमेघजावृष्टि—रहोअकुसुमं फलम् ॥ अहोपुराकृतंपुण्यं यद्दृष्टोनाथ ! लोचनैः ॥ १ ॥ धन्योहं कृतपुन्योहं, निस्तीर्णोहंभवार्णवात् ॥ अनादौ भवसंसारे दृष्टो येन जिनोमया ॥ २ ॥ सर्वामरेंद्र संपूज्य सर्वज्ञज्ञानभास्करः ॥ सर्वसत्वहितानंद सर्वसौख्य नमोस्तुते ॥ ३ ॥ मिथ्यांबुलहरीधौतं निमज्जंतं भवार्णवे ॥ दुग्राहग्रसितं नाथ ! मामुत्तारयतारय ॥ ४ ॥ जन्ममृत्युजरारोगशोकसंत्रासवैरिणः ॥ पृष्टतो धावतो देव ! मयिवारयवारय ॥ ५ ॥ अद्यजन्म महाभाग ! अद्यवृद्धिर्दयानिधे ! ॥ अद्यैव मंगलाधीश ! तीर्णः सद्योभवोदधिः ॥ ६ ॥ अद्यसद्यः सुरावासो अद्यसद्यः समाधयः ॥ अद्यतद्यःश्रियःसर्वा मोक्षश्चजिनदर्शनात् ॥ ७ ॥ त्रैलोक्याद्भुतवृत्ताय त्रैलोक्याद्भुतवृत्तये ॥ त्रैलाक्याद्भुतसौख्याय त्रैलाक्याद्भुतकीर्त्तये ॥ ८ ॥ विश्वत्रयत्रि नेत्राय विश्वत्रयहितैषिणे ॥ विश्वत्रयार्त्तिनाशाय नमोविश्वविभूतये ॥ ९ ॥ (मालिनीछंद) प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मंप्रसन्न वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यः करयुगमपियत्तेशस्त्रसंबंधवंध्यं तदसिजगतिदेवोवीतरागस्त्वमेव१०

॥ अथ श्रीआदिजिनेंद्र चैत्यवंदन. ॥

आदिमंपृथिवीनाथ—मादिमं निः परिग्रहम् ॥ आदिमंतीर्थनाथंच ऋषभस्वामिनंस्तुमः ॥ १ ॥
श्रीमन्नाभिकुलादित्य मरुदेवांगजप्रभो ! ॥ संसाराब्धिमहापोत ! जय त्वं वृषभध्वज ! ॥ २ ॥
(आर्या छंद.) जयतिकनकावदातःकृष्णजटामुकुटमंडितोवृषभः ॥ इक्ष्वाकुवंशतिलकस्त्रिभु-
वनचूडामणिर्भगवान् ॥ ३ ॥ (उपेन्द्रवज्रा छंद.) सुवर्णवर्णंगजराजगामिनं प्रलंबबाहुं
सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैःस्तुतपादपंकजं नमामिभक्त्यावृषभंजिनोत्तमम् ॥ ४ ॥ इति
॥ अथ श्रीशान्तिजिननमस्कार ॥ श्रीमतेशांतिनाथाय नमः शांति विधायिने ॥
त्रैलोक्यस्यामराधीश ! मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना निर्मली-
कृत दिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः शांत्यै शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ २ ॥ नमः श्री शांतिनाथाय कृ-
त विश्वाघशांतये ॥ षोडशाय जिनेंद्राय पंचमायचचक्रिणे ॥ इति ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथनमस्कार
यदुवंशसमुद्रेंदुः कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान् भूयाद्वोरिष्टनाशनः ॥ १ ॥ ॐ नमो विश्व-

नाथाय जन्मतोब्रह्मचारिणे ॥ कर्मवल्लीवनछेदनेमयेरिष्टनेमये ॥ २ ॥ शिवगामिन् शिवासूनो ! समुद्रानंदचंद्रमाः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान् भूयाद्वोरिष्टनाशने ॥ ३ ॥ (उपेंद्रवज्रा छंद) अभंग वैराग्यतरंगपूर्णे हृदित्वदीयेयदुवंशरत्न ॥ कथंकृशांग्योपिहिमांतुदंत यस्मादनंगोपिपदंन लेभे ॥४॥इति॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनमस्कार ॥ कमठे धरणेंद्रेच स्वोचितंकर्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्य मनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेस्तुनः ॥ १ ॥ पार्श्वनाथनमस्तुभ्यं विघ्नविध्वंसकारिणे ॥ निर्मलसुप्रभातंते परमानंददायिने ॥ २ ॥ अश्वसेनावनीपाल कुलचूडामणे ! प्रभो ! ॥ वामासूनो ! नमस्तुभ्यं श्रीमत् पार्श्वजिनेश्वर ॥३॥ इति ॥ अथ श्रीमहावीरप्रभु नमस्कार ॥ श्रीमते वीरनाथाय सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज–मरालायार्हते नमः ॥ १ ॥ सर्वेषांवेधसामाद्य मादिमंपरमेष्ठिनां ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं श्रीवीरंप्रणिदध्महे ॥ ७ ॥ कल्याणपादपारामं श्रुतगंगाहिमाचलम् ॥ विश्वांभोजरविंदेवं वंदे श्री ज्ञातनंदनम् ॥ ८ ॥ (आर्या छंद) जयतिविजितान्यतेजाः सुरासुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥ विमल स्त्रासविरहित स्त्रिलोक चिंतामणिर्वीरः ॥ १४ ॥ जयतिभुवनैक भानुः सर्वत्राविहितकेवला

लोकः ॥ नित्योदितः स्थिर स्तापवर्जितो वर्द्धमानोजिनः ॥ १५ ॥ जयतिनमदमरमुकुट प्रतिविंबछद्मविदित बहुरूपः ॥ उद्धर्तुमिव समस्तं विश्वंभव पंकतो वीरः ॥ ६ ॥ (शार्दूल विक्रीडित छंद.) वीरः सर्वसुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिता वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीरायनित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरंतपो वीरे श्री धृति कीर्ति कांति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥ ७ ॥ इति नमस्कार चैत्यवंदना.

 ॥ पंचपरमेष्ठि स्तोत्रम्. ॥ 

(वसंततिलका छंद.) लोकोत्तमास्त्रिजगतीजनताशरण्याः पुण्यप्रभावपरमाः परमेष्टिनोमे ॥ तीर्थेशसिद्धगुरुवाचकसाधुमुख्याः सौख्यायमंगलमहोदयदानदक्षाः ॥ १ ॥ उच्चैरशोकचमरामरपुष्पवृष्टि सिंहासनध्वनिविशेषसितातपत्रैः ॥ भामंडलेनवरदुंदुभिनासनाथ स्तेमंगलायभविनांत्रुत्रितीर्थनाथाः ॥ २॥ आनंदमंदिरचिदात्मपरस्वरूपा रूपाद्युपाधिरहिता भवहेतुमुक्ताः ॥ मुक्ताफलोज्व-

लतराः परमात्मराज ॥ स्तेमंगलायभवविनांभुविसिद्धराजः ॥३॥ सद्भूतलक्षणगणागुणमेढिभूता भूतावबोधकृततीर्थकरानुकाराः सूत्रार्थसार्थपरमार्थविदोगभीरा स्तेमंगलायभवविनांभुविसूरिवीराः ॥ ॥ ४ ॥ आचार्यवर्यपदवीयुवराजकल्पाः सदज्ञानदर्शनयुताजितमोहशल्याः ॥ सूत्रादितंत्रमणिरोहणभूधरेंद्रा स्तेमंगलायभवविनांभुविवाचकेंद्राः ॥ ५ ॥ शीलांगतुंगरथधूर्वहणेधुरीणाः स्वाध्यायसंयमसमाधिविधिप्रवीणाः ॥ दुर्वारमारकरिकुंभविभेदसिंहा स्तेमंगलायभवविनांभुविसाधुसिंहाः ॥ ६ ॥ तीर्थेश्वराः क्रमविनम्रहरिप्रवीराः सिद्धाश्चसिद्धिललनोरुललामहीराः ॥ आचार्यवाचकवराजगदर्च्यपादाः सत्साधवश्चमयिसंतुकृतप्रसादाः ॥ ७ ॥ (मालिनी छंद.) पठतपठतसंतः संततंभक्तिमंतः परमिहपरमेष्ठि स्तोत्रमेतत्पवित्रम् ॥ सततमनवबोधे येनवःसिद्धिसौधे ॥ महतिविमलचंद्र श्रीमतिस्यान्निवासः ॥ ८ ॥ इति श्रीविमलचन्द्रसूरिराजकृतं पंचपरमेष्ठिमंगलाष्टकम्. ॥



॥ श्रीसिद्धगुणस्तवना. ॥

(चोपाइ छंद.)

मंगलकारण नमिय त्रिकाल, कर जुग अंजलि म्हेली भाल;
सिद्ध गुण स्तुति भगतिये करुं, भवसायर दुस्तर जिम तरुं. १

एक अपेक्षा सदा अनंत, सर्व गिणुं ते अनादि अनंतः ॥ अजर अमर कीधो भवअंत, वंदुं सिद्ध सदा जयवंत.॥२॥केवल दंसण केवल नाण, निर्म्मल सम्यग् द्दष्ट प्रमाण ॥ मोह नरिंद मनावी आण॥ पाम्युं सिद्धपुरीनुं ठाण.॥३॥ भव्य अभव्य थावर त्रस नहीं॥ सन्नि असन्निवि नको कहीः ॥ पज्जत्ता पज्जत्त न होइ, केवल जीव सरुवी जोय ॥४॥ इम श्री सिद्धी अकल अकलंक;समतृणमणि समभू-पनेरंक; तस सरुप जोगीसर लहै, ध्यान ज्योति पातिकमल दहेः ॥ ५ ॥ नरभव पामी सूधा बार, तप संयम गुण विनय विचार; कर्म खपी पहोता भवपार, गति आगतिसंसारनिवार ॥ ६ ॥

लोक अग्रध्यायो श्री सिद्ध, अलख जीव गुण रिद्ध समृद्ध ॥ ते को नहि प्रकट विवहार, जिण कहिये श्रीसिद्धविचार ॥ ७ ॥ देखीतो तिहां कह्यो न जाय, अछतो कहेतां किमसमझाय; धन्य धन्य श्रीगुरुनी वाण, जगप्रकाश हुवो जस प्राण ॥ ८ ॥ आचारंगे पहिले खंध, पंचम अज्झयण सिद्ध संबंध, छठे उद्देशे गुण एकत्रीश, ते हुं समरुं मन निश दीश ॥ ९ ॥ चउखुणो लंबो वाटलो, वलि कहियें परिमंडलो; त्रिखुणो पंचमे सुठाण, तेहनो जाणे इम जाण ॥ १० ॥ कालो नीलो ने पीअलो, रातो वर्ण वली उजलो, पंच वर्ण रहित श्री सिद्ध, प्रवचन मन निश्चल मन कीध ॥ ११ ॥ सुरभि दुरभि ए बेए गंध, जिहां सुए तणो संबंध; रागद्वेषना कारण जेह, सिद्धे संगत टाली तेह ॥ १२ ॥ मधुरो तिखो कडुओ जाण कसायलो अंबिल मन आण; पंचेरस सर्वत परिहरी, संवर शिवरमणी जिहां वरी ॥ १३ ॥ लुखो स्निग्धखरमीउलो, भारी लघु उन्हो सीयलो; आठ फरस इणि परि पंचवीश, प्रकृति निवारी थया जगदीश ॥ १४ ॥ काय रहित लेश्या सवि टली, संसार न अवतरसी वली; नीरा कर्यो तिण तेहनो संग, न स्त्री पुरुष नपुंसक रंग ॥

॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप एणीपरे लही, रूप रहीतसाता तसु कही; पद विशेष तिहां कोइ नही, कहणी आगम तेणे सही ॥ १६ ॥ कोइ न उपम जिण तोलीएं, कोई न शबद जिणे बोलीएं; लोकअंत एक गाउ तणो, छठे नागे क्षेत्र ते नणो ॥ १७ ॥ तिहां सासइ छे सिद्ध अनंत; काल अनंत न लहिये अंत; सुखसायरजल झीले सदा, समरंते टाले आपदा ॥ १८ ॥ सिद्ध साथ चम्वानो श्रेणि, संयम मांहि खिपकां श्रेणि; अनुक्रम पामी ठाण संजोग, केवलनाणी थया अयोग ॥ १९ ॥ संवत समत लहे विवहार, निश्चय सकल कर्म परिहार; अशरीरि तिण मारग वहुं, घन दिन जिण शिव मारग लहुं ॥ २० ॥ इणिपरि सिद्ध गुण स्तुति करी, तिण गुणतें प्रनु हियमे घरी; पार्श्वचंद्रसूरीश्वर सीस, सिद्ध प्रणाम करे निश दीश ॥ २१ ॥

॥ श्रीगोडीपार्श्वनाथजी–स्तोत्र. ॥ १ ॥

(प्रमाणीका छंद.) वरिष्ट इष्ट देवता सुगोमीपार्श्वसेविता; तपःप्रनावनासिता गुणोकु-

राजवर्धिता ॥ १ ॥ चरित्र भार गोपति र्हताष्ट कर्म विश्रुतिः विवेक बुद्धिवाक्पति र्गुणेंदुरद्य सद्यतिः ॥ २ ॥ यशोमरालमंडली गताब्दमार्गमंडली; दिगंगनांगभूषिता भवद्गुणाब्धिपोषिता ॥ ३ ॥ त्वदीयधर्मदेशना कृताष्टकर्मपेषणा; सरत्सुधावधीरिणी सुतंत्र तत्त्व भीरिणी ॥ ४ ॥ कुतर्कतर्कतर्किता भवंतमेत्यदूषिता; परे प्रवीणवाक्छरा अपास्तमानमत्सराः ॥ ५ ॥ त्वदीय पादभक्तितःप्रचंडपापपंक्तितः जनाभवंति दूरतः शुभानिमेषमात्रतः ॥ ६ ॥ त्वदीयदानशौंडता कृतार्थिसर्व्वदेवता; किमस्ति कामधेनुका धनेशतुल्यसेवकाः ॥ ७ ॥ गुणा विलोक्य सर्वतः कलावनेह्य शर्मतः वसंत्यनन्यविश्रमा भवच्छरीर अश्रमाः ॥ ८ ॥ गुणाष्टकं सुखाकरं सतां मनस्सु संचरं; अकारि रत्नधी धरै र्गुणेंदुभक्तिनिर्भरः ॥ ९ ॥ (वसंततिलका छंद.) इत्यष्टकं गुणवतो गुणमालिकाभि स्सम्यक् प्रयोगरुचिरं रचितं चिराय; श्रीमन्मुनेर्विमलशीलभृतो गुणेंदो र्भव्याश्रितं भवतु भव्यतराय भूमौ ॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडित छंद.) कोवालंघितुमिच्छतीह जल-धिं लोलन् भुजाभ्यांतरन् कोवा मेरुगिरिस्वकीयतरसा प्रोत्तंभितुं चेष्टते; कोवा सागरमध्यरत्न

निचयान् संख्यातुमुज्जृंभते तद्वत्तेपि गुणाकरस्य निखिलान् वक्तुं गुणान् कः क्षमः ॥ ११ ॥ (इंद्रवज्रा छंद.) एवंतथाप्युत्सुकमानसेन मया प्रणीतं तव भक्तिभावात् यच्चात्र दुष्टं सुधिया विशोध्यं निसर्ग दुर्बोधहता हि बालाः ॥ १२ ॥

॥ श्रीगौडीपार्श्वनाथजी–स्तोत्र.॥ ५ ॥

(शार्दूलविक्रीडित छंद.) स्वस्ति श्रीपदमद्भुतं सुकृतिनामानंदसंदोहदं मुक्तिस्त्रीरमणं त्रिलोकशरणं कारुण्यकल्पागमं ॥ संसारार्णवलंघने गुरुतरे निष्णातनिर्यामकं वंदेवीतभयं प्रसिद्धसमयं श्रीगोडिपार्श्वं जिनं ॥ १ ॥ (भुजंगप्रयात छंद.) स्फुरत्स्फाररोचिःकलापाभिरामं जगज्जालजंजालदावानलाभं; प्रभावोद्धुरंबंधुरं स्वर्वराणां, भजे पार्श्वपार्श्वं प्रभु गौडिपार्श्वं ॥ २ ॥ यदीया यशोराजहंसी हसंती सुधासिंधुशोभां सती संचरंती; नमन्नाकनागाधिपैर्गीयमाना ॥ भजे० ॥ ३ ॥ लसत्तारहारावलीलंबिनीनां कणत्किंकिणीमेखलाऽलंकृतीनां गणैः सा-

दरं स्वर्वधूनां समर्च्यं ॥ जजे० ॥ ४ ॥ यदीयः प्रतापः प्रतिष्ठां प्रयातः सहस्रांशुलज्जामसावातनो
तिः महीयान् प्रकाशो यतो विश्वलोके ॥ जजे० ॥५॥ अपायाद्दपैति स्मरन्नाम घोराद्यदीयं जनो जू·
तले जूतिजूतं, जितो येन चिंतामणि र्यत्र मुख्यः ॥ जजे० ॥६॥ सुधासारणिं जक्तिमत्सूरिरंतं शरत्
कालशुज्राज्रमूर्तिंवहंतं; दयालुं दलंतं महाजालकंदं ॥ जजे० ॥ ७ ॥ यदि स्वांतपारं प्रयातुं प्र·
यत्नो जवाब्धे स्तदा गौमिपार्श्वाय नित्यं; नमस्कुर्वतस्ते पुनर्नात्रपातो ॥ जजे० ॥ ८ ॥ हृदिस्याद्य
दाजीष्ट धुग्यस्यपार्श्वस्तदा तस्य किं कल्पवृक्षैः पुरोगैः किमर्थं पशुः कामधेनुर्वराकी ॥ जजे० ॥९॥
(आर्या छंद.) अष्टकमनुपममरचन्मंत्रपदेनापि गुंफितं गुणिना; यो जानाति स विद्वान् रत्नै
र्ज्जीवताच्छतं शरदां ॥ १० ॥ इति श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिवर संतानीयगणीरत्नचन्द्रेणकृता स्तुतिः ॥

अथ तत्त्व विचाररूप दुहा सोरठा.

जिनमतना दुर्जण घणा, अवगुण बोले नित्त; जो इम चित्त चंचल करिश, धर्म लहिश किमचित्त? ॥१॥

श्रीजिन अवगुण दाखवी, रोहिणीउ गुणगण; लोहखुरे तां जोलव्यो, जां लगे हुतो अजाण. ॥२॥
विप्रें सुत विप्रतारिया, कूडा देई आल; मुनिजनने ते वीसस्या, जां लगी हुंता बाल. ॥३॥
धरण रणाको संजली, कोइ पूछे ए कुण पम्यो; वलतो उत्तर दीध, जे नर परवचने चड्यो. ॥४॥
इत्यादिक दृष्टांत, लौकिक लोकोत्तर बहु; कुण पामे तसु अंत, इण वानगीए ते सहु. ॥५॥
मनरसें अव्नरकाण, जिहने दीजे जेहवो; पंचम अंगि ने ठाण, जोगविये वली तेहवो. ॥६॥
अवगुण हुंतो जो कहे, तो मन पछतावो किशुं; वलि संजलि अणहुंत, ते तो जोईजे किशुं. ॥७॥
कसतां पहुंचे काल, पण जे अवगुण मन वश्यो; खिणखिण पाप विशाल, ते पूठि जिह जाइशुं. ॥८॥
जे दे कूडो आल, अधमाधम ते जाणीए; ते मोटो जंजाल, विण परख्ये मन आणिये. ॥९॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुए संताप; नादन्नेद खरनी परे, आपे जाणे आप. ॥१०॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुए संताप; नकुलघाति जिम बंज्नणी, आपे जाणे आप. ॥११॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुवे संताप; अंबछेद नृपतणी परे, आपे जाणे आप. ॥१२॥

दोखीसोखी छे घणा, इक इकना जगमांहि, वंदक निंदक देख तसु, वहता कोडि प्रवाह. ॥१३॥
परमारथ थोडो अछे, वहु गाडरी प्रवाह; जोवो राशन्नमीणीयो, लोकशोक अवगाह. ॥१४॥
जणजणना संज्ञली वचन, पावे चित्तविकार; धीज पतीज पतीज वत, इम किम पामे पार. ॥१५॥
इम जाणी आदर करी, कलुष हियानो टाल; गुरु श्रावक व्यवहार नय, वार वार संज्ञाल. ॥१६॥
बोध बीज ते नीगमे, निंदक पंचप्रकार, (श्री) पासचंद (सूरी) इम वीनवे, आगमने अनुसार. ॥१७॥

———(०)———

एक चारित्र असंजती, इक श्रुत न्नाषण होय; बिहूमांहि न्नारी किशो, लहेजि बोलुं सोय. ॥१॥
पहिलो श्यामक दोषगिणि, बीजो व्यापक जोय; बिहुं मांहि न्नारी किशो, लहेजि बोलुंसोय. ॥२॥
इक आपणने बोलवे, बीजो बोले लोय; बिहुं मांहि न्नारी किशो, लहेजि बोलुं सोय. ॥३॥
मिश्र प्रतिष्ठावास, नपदेशे सयि हर्ष करे; कोई रहे नदास, इह कहि आराधक किशुं. ॥४॥
दीसे किरिया अंतरो, नपदेशे सवि एक; इहां कहो कुण वंदवो, आणी हिये विवेक. ॥५॥

तरवो करणी आपणी, उपदेशे ते होय; शालावालि आषमती, तिह अंतर नहु कोय. ॥६॥
कुण वंदी कुण वंदिये, कहो ते जेहु जाण; जिनशासन त्रिणे जला, चारित दंसण नाण. ॥७॥
दंसण नाण परखियये, सुणी सूधो उपदेश; तेह विना क्रिरिया बहु, जाणो कायकलेश. ॥८॥
क्रिया जोरि वांको कहे, थापे सूत्राचार; भारी कर्मा ते सही, जोला बोलणहार. ॥९॥
शुद्ध कहीय न शके करी, सूधो जाखे मग्ग; पर तारे आपां तरे, शिवपद साधन जुग्ग. ॥१०॥
पूलघा गच्छ परंपरा, जाखी जेह करंत; ते आराधक सूत्रबल, जवजल पार लहंत. इति दोधका॥११॥

॥ [1]कायिकः श्यामको दोषो, वाचिको व्यापको जवेत् ॥
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, वाचिकं परिवर्जयेत ॥ १ ॥

श्री धर्मनाथ जिन स्तवन.

राग—भरथरी वा सूत्रसहत्त करी सद्दहुं—ए देशी.

श्री धर्म जिणवर सांभळ्या, मेरूतानयर मझार; चउगति केरा भय टळ्या, तुम दरिसण हो हरख अपार. दीठा हो दीठा सोहग सुंदरुए, आज धन दिन हो मुज सफल विहाण, साहिब हो साहिब मोरा सुरतरुए. १ कल्याणकंदे जलधरु, आलसपंकजि नाग; प्रभु मोहतिमिर निरा कर्यो, देखाड्यो हो सूधो माग. दीठा. २ सवठसिद्धि विमाणथी, तेत्रीश सागर आयु; पालीअ सुर सुख भोगवी, पछी लीधी हो तीर्थंकर काय. दीठा. ३ जिन भरतक्षेत्रे रतनपुरिमें, भानुराय सुव्रता नारि; तसु उयरे आवी ऊपना, मात पाले हो व्रत सुत सुविचार. दीठा. ४ सुव्रता घरमें दृढ थइ, ए पुत्र कारण जाण; नृप धर्म कुंवर कह्यो तिहां, सुत होशे हो गुणमणिखाण. दी. ५ पणचाल धनुष सोहामणो, सोवन्न वन्न शरीर; करमदल भंजे मुदा, वज्र लंछन हो साहसधीर.

दी. ६ चारित्र पाली केवल लही, देशना दीधी सार; निरवद्य साची सद्दहे, प्रभु आगल हो परषद बार. दी. ७ धन साहु साहुणि सावया, आविय जे व्रत धार; जिणे ताहरी सेवा करी, ते पहुता हो भवजल पार. दी. ८ सम्यग् दृष्टि अविरती, सुणि ताहरा सुवचन्न; सद्दहे मन आणंद धरे, ते जाणुं हुं पुरुषरतन्न. दी ए धन दिवस महूरत सा घमी, जिणे पेखीए तुम पाय; उल्लासे प्रभु गुण जे स्तवे, तिणे लाधो हो मुगति उपाय. दी. १० इम मेदिनीपुरे मुज मिल्यो, पनरमो धर्म जिणंद; समरचंद्र संथव्यो, जस सद्गुरु हो श्री पार्श्वसूरीन्द. दी. ११

——(०)——

श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन.



(राग मल्हार.–सांभलजो मुनि संजम रागी उपसम श्रेणि चमियारे ए देशी.)

पास जिणेशर अति अलवेशर, भुवणदिणेशर रायारे; भवभयभंजण मनमथगंजण, जणमणरंजण पायारे. ॥ १ ॥ जय जय जगजीवन जगनायक, दायकशिवसुख स्वामीरे; कमठमतंगजकेशरी समवड; चरण नमुं शिरनामीरे. जय. ॥२॥ भवजलतारक कुगतिनिवारक, कारक हित जगमांहिरे; चउशठ सुरपति वहुला भावे, सेवा करे उगाहिरे. जय.॥३॥ क्रोध विना वैरी बहु जीत्या, अठावनशो जाणुंरे; उत्तर आठ मूलने सवला, जूय जूय करिय वखाणुंरे. जय.॥४॥नाण दंशण आवरण वेदनिया, मोहनीय नाम वलि गोयरे; आयु अने अंतराय मूलुत्तर, पयडि खिवी धन होयरे. जय. ॥५॥नाणी पंच दंशण नव जाणी, वेदनीय दुन्नि प्रकाशीरे; मोह अठाविश नाम तिऋत्तर, सयइक अधिक विमासिरे. जय.॥६॥ गोत्र दुभेदे आयु करम चउ, अंतराय पण पंचरे; संयम तप बले ए सवि मरदी, टाल्यो भ्रमण प्रपंचरे. ज. ॥ ७ ॥ धन धन जणणी वामादेवी, जनम्या पुरुषरतन्नरे; राजरिद्धि लीला सवि परिहरी, धर्मे कर्यो यतन्नरे. जय. ॥ ८ ॥ अश्वसेनराजाकुलमंडन, दुरित विहंडण नाहरे; नीलकमलदल घन जिम शामल, देह ते आजानुंबाहुरे. जय. ॥९॥ नव रयणी प्रभु

नंचो राजति, फणिपति सारे सेवरे; शामल पास प्रगट भुवि महिमा, सोइ हमारो देवरे. जय. ॥१०॥ (कलश) मेरुतानयरें पासजिणवर कृपासागर मुज मिळ्यो, मनरंगि भवियो नयणे दीठो कर्मवैरी भय टळ्यो; बहु दिवस केरो मन मनोरथ स्वामी भेटचे ते फळ्यो, समरचंदे मन आणंदे सुखाकर इम अटकळ्यो. ॥११॥

श्री महावीर स्वामी स्तवन.

(छंद भुजंगी जेवी देशी.)

सदा शीश नामी नमुं वीरस्वामी; खपी कर्म तपि संजमें सिद्धि पामी; अनंते सुखे लीन साइ अनंत, इशा सिद्ध छे भविकना दुह हरंत. ॥ १ ॥ वसी त्रिशल उर सारध नवय मास, लही जनम सवि पूरवी चित्त आश; महाराय सिद्धछ सिद्ध कीधो, तिणे तेहनो नाम वर्धमान दीधो. ॥२॥ मही मोहए सत्तकर देहमान, घणुं सोहए स्वामी सोवन्नवान; नही कोइ जगमांहि जेहना

समान, तिणे कारणे जाणीए निरुपमान. ॥३॥ अछे सूर शशि कमल हरि हय गयंद, मणि काम गो कुंभ सुरसाल इंद; इशा जग भलाभाव भणिये अनेक, जिणि दिये किशो तासु उपमा विवेक ॥४॥ जिम वनचर नयरना गुण न जाणे, जिम्या लाडुआ घेबर शुं वखाणे; करी बुझवे सजनने पंशु रेह, तिम स्वामीनें एह उपमान एह. ॥५॥ जिनाधीश श्रीवीर त्रिहुं भुवनवीर, जिणें जीतला मूलथी कर्मवीर; थइ केवली मनरली लोक केरी, करी तेम जिम वाणी न गमे अनेरी. ॥६॥ करुं वीनती वीरजिण तुम्ह आगें, तुम्ह दंसण निर्मल बुद्धि जागे; प्रभो कर्मने योग में जनम पाम्यो इहां भारतें भूरि पाखंड भाम्यो. ॥ ७ ॥ घणा नवनवा जुजूआ धर्म भासे, सहु वास आपापणे लोक वासे; अनेरांतणी दृष्टि निंदे निशंक, हुं हुं हिये हरघडि इम सशंक. ॥८॥ प्रभो जे न मानंति प्रतिमा तुम्हारी, तिणे ढीलि अरिहंत जिन आणहारी; वली जे जगि साधुनी नास्ति बोले, तिके विण कही पारकी गांठ खोले. ॥९॥ करे व्याप व्यापारनो मूल पाखे, प्रभो ते किमे ताहरी आण राखे; जिके धर्म आरंभ आरंभ जाणे, नही परखदे तिहज संबर वखाणे. ॥१०॥ सही थाय वे

तेहने समितिनंग; तुम्ह साखि आषातणो मूल अंग; हिवं पन्नवो जे तुम्हे तेह साचुं, मन वचन तन स्वामि तुम्ह वचनि राचुं. ॥ ११ ॥ प्रभु मूरते आवि तुम्हने जुहारुं, अरी पंच मासीम मनि सुगुरु धारुं; दया आणशुं धर्म करिशुं प्रमाणं, महावीरजी जिन नमो मे जिणाणं. ॥ ॥ १२ ॥ (कलश.) इम नयरी वगमी जगि बे पगमी तिणि गामे श्रीवीरजिण; प्रह ऊठी वंडुं मनि आणंडुं, नवनव मांगुं तुम्ह शरण. ॥ १३ ॥

उपदेश बत्रीसी.

(क्या गुमान जिंदोनी आखर मीट्टीमें मिलजाना ए देशी.)

आतमराम सयाने तुं झूंठे भरम भूलाना, झूंठे भरम भूलाना तुं तो झूंठे भरम भूलाना किसके भाइ किसको माइ, किसके लोग लुगाइजी; तुं न किसीका को नहीं तेरा, आपोआप सहाइ. आतम. ॥ १ ॥ चार दिनांका सब है मेला, थिर कोइ न रहाइजी, हटवामे ज्यौ डुनियां सवही, मिलि मिलि आइ जाइ. आ० ॥ २ ॥ मंदिर मेमी म्हेल चुणावो, जालीबंध झरोंखाजी;

जंगल पाँव पसारिके पमणा, धरणा कछु न घोखा. आ० ॥ ३ ॥ पघमी खूबीदार डुपट्टा, जामा जरकसी वागाजी; साज सबेही छोमी चलेगा, धागा विन तुं नागाजी. आ० ॥४॥ सहस लखी जोमी लिखमी कोमी, अरब खरबकुं धायाजी; तृष्णा लोन्न पलीता लाया, फिर फिर ढूंढे माया. आ० ॥ ५ ॥ चूवा चदन फूल फूलेले, करता है खुसबोइजी; हंस उडंते गिरे जमीपर, तनु बदबोइ होइ. आ० ॥ ६ ॥ या संसार सराह मंमी है, जहां घर लख चोराशीजी; नाम कर्म सबही घर चुणे है, जीव वमाउवासी. आ० ॥ ७ ॥ लोहु मांस बन्या या गारा, पत्थर हाम लगाएजी; ऊपर लींपण चममी लाइ, श्रोत्र दुवार दिखाए. आ० ॥ ८ ॥ आयु कर्म ले घरका त्नामा, दिन दिनका करी लेखाजी; महेतल पूगां पलक न राखे, ऐसा बमा अदेखा. आ० ॥ ए ॥ सांझ सवेर अबेर न जाणे, न गणे धूप अरु वर्षाजी; न गणे नेह मुलाजा किसका, आउ सबकों सरीखा. आ० ॥ १० ॥ जीव बटाउके फिरि होवै, करम चेजीरा संगीजी; जाइ अगाउ गेह बनावे, प्रीति बनावे चंगी. आ० ॥ ११ ॥ जोलों घरमें आप वसे है, तोलों प्रीति बणावोजी; शूने पीछे गामो

जलावो, न्हावे नीर बहावो. आ० ॥ १२ ॥ जिस घर अंदर आइ वस्या है, सो घरनांही तेराजी; ऐसेसे घर बहुत बसाए, राह चलत ज्यौं मेरा. ॥ आ० ॥ १३ ॥ जिस घरको जब छोड्यो चल्या है; तिसकी चिंत न आणीजी; नइ नइ फिर माया जोडी, तोडी प्रीति पुराणीजी. आ. ॥ १४ ॥ जो आये सो सब जावेंगे, जीव सबे जगवासीजी; अपणी छूटि कमाइ के बिनु, जीवके संग न जासी. आ० ॥ १५ ॥ यह है जीव सदा अविनाशी, मरि मरि जाय शरीराजी; इसकी चिंता कछुअ न करणी, हुइ अपणे धर्मधीरा. आ० ॥ १६ ॥ सहस लाखसुं जोध भुजाबल, लडते जंग अकेलेजी; ब्रह्मा विष्णु महासुर दानव, काल सबे संकेले. आ० ॥ १७ ॥ वाडी यह संसार बन्या है, काल तहां है मालीजी; काचे पाके चुणीले सबहो, लगे जो दरखत डाली. आ० ॥ १८ ॥ तन धन यौवनका मतवाला, गिणत किसीकों नाहींजी; बादशाह छत्रपति भूमिपति, मोतिगले है छंवांही. आ० ॥ १९ ॥ न्याती गोती सेण संबंधी, सब स्वारथके बूझेजी, स्वारथ विण सूके दरखत ज्यौं, देख पंखेरु जूझे. आ० ॥ २० ॥ पवन स्वरूपी काया अंदर, हंस लिया है वासाजी;

पलपल आयु घटत है ऐसें, पानी मांहे बतासा. आ० ॥ २१ ॥ मूरख करि करि मेरी मेरी, पर-संगति दुख पावेजी; ममता तोरी सहज सुख पावे, जो सुमता घर आवे. आ० ॥ २२ ॥ तन पंजर बिच जीव पंखेरु, फरत ऊरत आयाजी; आवत जावत किसी न इनका, खोज कहुं न पाया आ० ॥ २३ ॥ भोलत वोलत तन अंदर वसी, चेतनचि हि न दिखावेजी; ज्यौ बाजीगर काठ पूतरीआ, नव नव जांति नचावे. आ० ॥ २४ ॥ काया पाटण चेतन राजा, मन कोटवाल बिठाया-जी; पंच ठगोसुं एका करिकरि, सब पट्टण मुसि खाया. आ० ॥ २५ ॥ नये नये तन जामे पहिरे, नय नय थाट थटे हैजी; तीन घौव है तीन अवस्था, चोथे घोव फटे है. आ० ॥ २६ ॥ तेरा है सो कहुं न जावे, तुं अपणा ना खोवेजी; बिगरूया गया विडाणा थासो, तुं मुरख क्यौ रोवे. आ० ॥ २७ ॥ जला बुरा तुज कुबु करेगा, जो कबु तुंही देगाजी; पंथ बिचे होयगासो संबल, तेरे संग चलेगा. आ० ॥ २८ ॥ डोरी ज्यौ अंगुल अटकाइ, चकरी आवे जावेजी; डोरी तूटे या तन चकरी, ना जावे ना आवे. आ० ॥ २९ ॥ यह करता हुं यह में किया, यह में सही करुंगा-

जी; मेरे मोत लगी है लारे, गणे नही जिय गुंगा. आ० ॥ ३० ॥ आवत जावत सास उसासा,
करत है गौन अभ्यासाजी; जाणेका कछु अचरिज नाही, रहणेका है तमासा. आ० ॥ ३१ ॥
इस काया पायेका लाहा, सुकृत कमाइ कीजेजी; राज कहे उपदेश बत्तीसी, सद्गुरु शीख
सुणीजे. आ० ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयतपागछाचार्यश्रीराजचंद्रसूरिकृता ॥

पुष्पो माटे असत् आक्षेपदाताओने उत्तर.

वर्तमान समयनी अंदर कोइएक मुनिमहाराजो अने श्रावको गुरुगम विना छपाइ प्रसिद्धिमां आवेलां पुस्तको उपलकपणे वांची पोताना आत्माने गीतार्थ मानी महान् पूर्वाचार्योना सिद्धांतोने संपूर्ण अवलोकन कर्या विना भवभयभीरुपणानो त्याग करी जेम फावे तेम कुयुक्तियो आदरे छे अने भोलाजनोने भरमावी भमावी भववृद्धिनुं संबंध तैयार करे छे; केमके सांभळेली वातो उपरथी समर्थ गीतार्थोनी निंदा करवा तत्पर रहेवुं ए भववृद्धिनुंज कारण छे.

श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरजीए पुष्पने मानेल छे; छतां असत् आक्षेप आपी रहेल छे के–तेओ प्रति

पुष्पोमा टेअसत् आक्षेप दाताओ नेउत्तर १२३७।

माजीने फूल चढाववां मान्य करता न हता.

खेदनो विषय छे के तेउश्रीना रचेला ग्रंथोनी शोध खोल करी पछी एवो आक्षेप आपत तो ते व्याजबी गणात, पण तेम कर्या विना गपाष्टकगोळा चलावो अन्य जीवोने खेदित करवा ए निंदित प्रकार छे.

अमारुं मानवुं तो संपुर्णपणे तेउश्री पुष्प पूजाने मानता हता एम तेउ पूज्यश्रीना रचेला ग्रंथोज प्रत्यक्षपणे साक्षी आपी रहेल छे. जूउ जिनेंद्रगुणरत्नमाला नामना पुस्तक अंदर पुष्ठ ५५ मां सत्तरभेदी पूजाना स्तवनमां १५ मी गाथा छे के–

" सत्तम विरल सूचि सरस फूले रचे, देव अनुज्ञात्र ते कहिये नवि संकुचे; माल सुविशाल वलि कंठ जिनवरतणे, भविय सुर अष्टमी पूजा आगम भणे. जिहां जिहां जेहवो वर्ण शोभा धरे, तिहां तिहां तेहवो कुसुम वर्णक करे. फूल घर करे पूजा ए तेरमी, समकितधारक लोक मनने रमी; भरे सुर फूलनो पगर भंगी घणी, चौदमी पूजाए जाण आगम भणी. जेम सुर तेम नर

पु० उ० १२३७।

भक्तिकारक भएया, विरति अधिकार सविशेष अंतर सुणया; प्रथम तो भक्ति अरिहंतनी सुर करें, तेहने अनुक्रमे सहुअ भवियण लहे."

इत्यादि ग्रंथोमां जोतां स्पष्ट मालम पडे छे के तेउ पुष्पपूजा मानताज हता; तथापि अछता आरोप आपवा ए कैवी आचरणा छे! मुखथी कहे छे के 'निंदा करे ते थाय नारकीरे' परंतु ए वचन, मात्र पोथीमांनां रींगणानी पेठे समजाय छे.

वळी अन्य स्थळे पण दृष्टि करतां सत्तर भेदी पूजा पंचप्रतिक्रमण पत्र २३० थी पूजा पांचमीमां वचन छे के—

" पंचमी पूजा जिनवर केरी, मुकुलित कुसुमनी जाती रे; लाल गुलाब ने केतकी चंपक, पूजतां बहु परि भांतीरे, पंचमी. ॥ १ ॥ डमरो जाइ जुइ ने मरवो, कुमुद निलुप्पल साररे; वेउलसीरी वेली मोगर अरविंद, परिमल जास अपाररे. पंचमी. ॥ २ ॥

इत्यादि पांचमी पूजा निहालवानी जरुर छे— पुनः छठी पूजामां पण पाठ छे के—

पुष्पोमा टअसव आक्षेप दाताओ नेउत्तर ।२३८।

" कुमुद निलुप्पल सहसपत्त, रत्तुपल पउम सयपत्त, अतिमुत्त चंपक केतकीस्युं मिद्धयाए, नाग पुन्नाग नें मचकुंद, ममरो मरवो अरविंद, वळी कुंद जाइ जुइ पाडल जळयांए. बोलसीरी कोज कोरंट, मोगर जासु शुभ्र बींट नहीं कंठ—बहुल तिलक नव मालतीए; लाल गुलाब ने मंदार टोडर गुथ्यो तसुसार अती फार छठी पूजा शोभतीए. (रागकालहरो) छगेरे पूजा श्रीजिन केरी कंठे टोडर दीपेरे; पंच विध वरणी कुसुमकी माला. रयणावली हार जीपेरे. छठी० ॥ १ ॥ "

॥ कलश मध्येनी ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर गुणनिधि, तसपट समरसूरींदो ॥ राजचंद्रसूरि तास पटोधर, तेजे कोडी दिणंदोरे ॥वामा०॥५॥ श्रवणमुनि गुरु साधु तणो शिष्य, मेघराज मुनि भाखे ॥ संवत सोलसेछगणसाठे पुजा सत्तर भेदी आखे रे ॥ वामानो नंदन त्रुठयो ॥ इति ॥

इत्यादि विशेष विस्तार पूर्वक लेखना दाखला मौजूद छे, तो पछी भ्राताग़ण ! तेश्री फूल चडाववा नथी मानता, ए केम मानी शकाय ! माटे सत्यासत्यनो पूरतो तपास करी सावद्य वचन व्यापार बंध पाडवो एज योग्य छे, अछती वात छती बतावबी ए अति अनिष्ट परिणाम दाता

छे. ए हेतुने लीधे सत्यने ग्रहण करी गच्छभेदथी उपजतो भेदबुद्धिनो भाव त्याग करवो जेथी भवोभव सुख संपदा प्राप्त थइ जय मंगळ कमळाना भागी थवाय. ॐ शान्ति ! शान्ति ! !शान्ति !!

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन. ॥

(उपजाति छंद.)

कंटालकस्थः प्रभु पार्श्वनाथः, सुरासुरैः सेवित पादपद्मः ॥
विख्यात कीर्त्तिः प्रकट प्रभावो, ददातु मे सर्व समीहितानि. ॥ १ ॥

(प्रभाती गोडी छंद.) गाम गुण ठाम श्री पास कंटालिये, नमिय सवि संकट कंटक टालिये; हियडले प्राण जिन आण तसु पालिये, भावजलें पापमळपंक पखालिये. ॥ २ ॥ प्रह-समे स्वामि तुम्ह नाम समरे सदा, जेह नर नारि ते लहे सुखसंपदा; एक चित्त प्रणमशे मू-रति ताहरी, त्राससे तेहने आपदा परिहरी. ॥ ३ ॥ जेहना मांहिला नयन छे आवर्या, सुदृढ नर दंसणावरण गुण अणुसर्या; तेह तुम्ह नाम ने थापना किम लहे, सूत्रमां प्रकट भणी तहति

नहु सद्दहे. ॥ ४ ॥ पेखतां रूप सरूप प्रभु तुम्हतणो, ऊपजे हियडले हरख मुज अति घणो; चंद्र चकोर रवि चक्र पंखी अली, कमल पेखेवि जिम तेहने मन रळी. ॥ ५ ॥ एम प्रभु पायनी सेव नितु वंछिए, जवतणा पाप संताप सवि वंचीये; एहवी आश अम पासजी पूरजो, सेवक चित्त चिंता सवि चूरजो. ॥ ६ ॥

(इंद्रवज्रा छंद.) कंटालिकस्थानविभूषणाय, विश्वेश्वराय च्युतदूषणाय; कल्याणवल्ली वनवारिदाय, श्री पार्श्वनाथाय नमोस्तु नित्यम् ॥ ७ ॥ इति श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर कृतम् ॥

॥ श्री विमलजिन वासुपूज्य जिन स्तवन. ॥

(चोपाइ) हरियामाली विमलजिणंद, वासुपूज्य बीजो जिणचंद; बे ए वंदुं मन उल्लास, सयलरिद्धि आवे जिम पास. ॥ १ ॥ लंछन सोहे जास वराह, धन धन त्रिभुवन करे सलाह, म्हाले महिष सबल शामलो, जंजे भविक तणो आमलो. ॥ २ ॥ कनक वर्ण विद्रुम तनकंति, बेय जिणेसर एके पंति; बेठा पदमासणे सोहंति, निरुपम रूपें जन मोहंति ॥ ३ ॥ साठ अने सि-

त्तर धनु माण, बिहुं तणो किम करुं वखाण; एक जीद गुण कह्या न जाय, लाञ्ने शिवपद स्वामि पसाय. ॥ ४ ॥ वंश इखाग तणो शिणगार, केवललक्ष्मीनरवरहार; नृप कृतवर्म अने वसुपूज्य, कुलदीपक सुरनरवर पूज्य. ॥ ५ ॥ श्यामा जया नाम जसु माय, उरसरिहंस सरिस जिण-राय; महिमावंत सदा जयवंत, बे ए हुवा शिवरमणीकंत. ४ ६ ॥ गिरि संमेते चंपा नाम, नगरी पहुता शिवपुर गाम; प्रह ऊठी तसु समरी नाम, ञाव ञगतिशुं करुं प्रणाम. ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनेंद्रस्तुतिः ॥

मौनेनोर्वीं व्यहृतपरितो वत्सराणां सहस्रं । यो निर्माणश्चरणयुगलं ञव्यमालोपकारी ॥ अर्हन्नुत्तारयतु हृदयात्तस्वकीयं कलानां । यो निर्माणश्चरणयुगलं ञव्यमालोपकारी ॥ १ ॥ नमस्यत्पौलोमीपतिमुकुटरत्नांशुकवरं । नतानां दत्तश्रीधनयुवतिरत्नांशुकवरं ॥ त्रिलोकी जंतू-नामञिलषितसंपादकमलं । जिनस्य श्रीशांतेः स्तुतसरञसं पादकमलं ॥ २ ॥ अपुनर्ञवमार्गलं-ञक क्रमकमला नलिनिप्रञापतेः ॥ शरणं समुपैमि नेमिनः क्रमकमलानलिनितनुत्विषः ॥ ३ ॥

पार्श्वप्रभुर्जिनः कलिताऽपचयं विदधज्जगतः कलितापचयं ॥ फणिचक्रमणीरुचिरं जितखः प्रद- दातुसुखं रुचिरंजितखः ॥ ४ ॥ अगणयंतमुपप्लवमुच्चकै-रहित संगमकाऽमरनिर्मितं ॥ नमतवीरजिनं मुनिसत्तमं रहित संगमं कामरसं मुदा ॥ ५ ॥ शिवरतोवरतोषवशान्नतो-मघवताऽघवतामतिदूरगः ॥ अमदनो मदनोदनकोविदः शममलंममलंन्नयताज्जिनः ॥ ६ ॥ अविकलं विकलंकधियां सुखं विदधतं दधतं जगदीशितम् ॥ अकलहं कलहंसगतिं श्रये जिनवरं नवरंगतरंगितः ॥ ७ ॥

वेल्लत्कल्याणवल्लीविपिनवनमुचः स्वर्गगंगातरंग–छायादायादरोचिः पटलधवलिताखंरू दिङ्‌ मंरूलस्य ॥ नम्रामर्त्यालिमौलिप्रसृतपरिमलोद्गारमंदारमाला–ऽभ्यर्च्यश्चंद्रप्रभस्य प्रभवतु भवतां भूतये पादपद्मः ॥ ८ ॥ ॥ इति जिनेंद्रस्तुतिः ॥

इतिषट्द्रव्यस्वभावनयविचारादिप्रकरणसंग्रह समाप्त.

। राग भैरव: । गत चोवीसी स्तवन.

जागोरेसुग्यानिजीवन्नयो सु प्रज्ञातरे, ध्यावोरे धरम ध्यान वीतगई रातरे ॥ जागो० ॥ पहेला श्रीकेवलग्यानि, बीजानिर्वाणीरे,त्रीजा सागरस्वामि नाम,ध्यान धरो प्राणीरे॥जा०॥१॥ चोथा महा-जसदेव पांचमाविमलरे,सर्वानुभुतिछठ्ठा प्रभु आपे सुख अमलरे॥जा०॥२॥ सातमा श्रीधरईश आठमा श्रीदत्तरे,दामोदर देव नोमा नांमथीपवित्तरे ॥जा०॥३॥ सुतेजास्वस्वामिदोई दस नें इग्याररे, बारमा श्रीमुनिसुव्रत समरणसाररे ॥जा०॥४॥ सुमति शिवगति अस्ताघजिनेशरे, तेर चौद पनरमा सेवेसुर इंद्ररे॥जा०॥५॥नेमिश्वरसोलमा अनिलदश सातरे, अष्टादशयशोधर स्वामीसुविख्यातरे॥जा०॥६॥ओग-णीसवीसइकवीसमा अरिहंतरे,कृतारथ जिनेश्वर शुद्ध मतिसंतरे॥जा०॥७॥ शिवंकर दोयवीस स्यंद-नत्रेवीसरे,संप्रतिसु नामध्यान वधति सफल जगीसरे॥जा०॥८॥एइगतचोविह हुयाजिणजाणरे गु-णचंद कहै सदा सफल विहांणरे ॥जा०॥९॥ इति गतचोवीशी स्तवन सम्पूर्ण.

॥ अथ विस विहरमानजिन स्तवन ॥

रागरामकली ॥ विहरमानजिनवंदो सुगुणभवि, विहरमान जिनवंदो. श्रीमंधर जुगमंधर स्वामि बाहुसुबाहू मुणींदो,जंबुदीव विदेहिजिन प्रणम्ये परम आणंदो ॥सु० ॥१॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभ स्वामी रुषभानन जिनचंदो, अनंतवीरजसुरप्रभ अरिहा अरचे चोसठइंदो ॥सु०॥२॥ श्री विशाल जयवंतावज्रधर चंद्रानन मुखचंदो,धातकी खंडे दोइ विदेहि ए अडजिनपति वंदो ॥सु०॥३॥ पुष्कर अरधमां युगमविदेहे, विचरे जिनराजेंदो,चंद्रबाहू भुजंग जिनेश्वर, इश्वर सेवेसुरेंदो ॥सु०॥४॥ नेमिप्रभवीरसेनदोइ फेडेंभवभवफंदो,महाभद्रदेव यसदेवा नासिंदूरित निकंदो॥सु०॥५॥अनंतविरज अरिहंत आराधो दूर टले दुखदंदो, ए वीसें जगदिसनपासन करतां भविचिरनंदो॥सु०॥६॥रत्नत्रयीगुणकमल विकासन प्रभुगुण भग्यो दिणंदो रामकलिरागें जिनराया गायागुणीगुणचंदो ॥सु० ॥७॥इति॥

॥ अथ अनागत चतुर्विंसति स्तवन ॥

(राग प्रभाति) प्रभातै उठीने माता मुखडु जोवे । ए देशी ।

प्रज्ञातें उठीनें ज्ञावें परमेश्वरज्ञजियें, परमेश्वर ज्ञजीयेरे ज्ञावें परमेश्वर ज्ञजियें ॥ अविरति बंधउम्हारी प्राणी सुज्ञपरणती सजीयें, प्रज्ञातें उठिने ज्ञावें० पद्मनाज्ञपहिलाजिनहोस्ये बीजाश्री सुरदेव, त्रीजा श्रीसुपारस जिननी करशे त्रिज्ञुवन सेव ॥प्र०१॥ स्वयंप्रज्ञ चोथोजिन होस्ये, पांचमा सर्वानुज्ञुति,देवश्रुत उद्दा उदयाज्ञीध,सातमावें शिवज्ञुती ॥प्र०२॥ आठमा श्रीपेढाल प्रज्ञुजी, पोटि-लनोंमानाथ,सतकीरत्तएदशमाहोस्ये सिद्धपुरिनोसाथ॥प्र०३॥सुव्रतएकादशमासमरो बारमा अममइष्ट निष्कषाय तेरमा निपजस्ये स्वामि सर्वथीश्रेष्ट ॥प्र०४॥ निःपुलाकनिर्म्ममदोयदेवा चौदपनराचितचाह चित्रगुप्त सोलमा धर्मचक्रि उपजस्ये उछाह ॥प्र०५॥ सुखदाइसत्तरमासमाधि अढारमां संवरईश यशोधर श्री विजय जिनेश्वर उगणीसनेवलीवीस ॥प्र०६॥ मल्लिनाथ जिनदेवदयालु एकवीस ने बावीस अनंत विर्यज्ञईकरएदोइ ज्ञाविजिन चोवीस ॥प्र०७॥ केवलल्हो अजुवाला करश्ये आदरस्ये उपगार सिद्ध प्रज्ञुनुं ध्यान धरंतां वरस्ये शिवसीरीसार ॥प्र०८॥ सुवीहाणे उठीने समरे जेज्ञविजिन चोवीश गुणचंद्र कहे तेहने मंदिर होस्ये सफल जगीस ॥प्र०॥ इति ॥

। श्री पार्श्वजिनस्तवन ।

ॐनमः पार्श्वप्रभुपत्कजे, विश्व चिंतामणि रत्नरे, ॐह्रीधरणेंद्रपद्मावती, वैरुटया करे सुयत्नरे । १ । ॐ० । अब मोये शांति महा पुष्टिदे, धृतिकीर्त्तिकांतिविधायने, ॐह्री अक्षर शब्दथी. सर्व आधिव्याधि विनाशिने ॥ ॐ० । २ ॥ जया अजिता विजया तथा, अपराविजयान्वितादेविरे, दशदिशापालग्रहयक्षजे, विद्यादेवि प्रसन्न होय सेविरे ॥ ॐ० । ३ ॐ अ सि आ उ सा नमोनमः तुंहीं त्रैलोक्यनो नाथरे, चोसठ इंद्र टोले मली, सेविये प्रभुने जोडि हाथरे ॥ ॐ० । ४ ॥ ॐ ह्रींश्रीं प्रभुपासजी, मूलना मंत्रनुं बीजरे, जापथी दुरित दूरे रहे, आयमिलेसविचीजरे, ॥ ॐ० ५ ॥ गोडी प्रभुपास चिंतामणि, स्थंभणो अहिछत्तो देवरे, जगवल्लभ जगतमां जागतो, अंतरीक अवंति करूसेवरे ॥ ॐ० ॥ ६ ॥ श्री श्री संखेश्वर मंडणो, पार्श्वजिन प्रणत तरुकल्पतरे, चूरय दुष्टनाव्रातने, पूरय सुजय सुखतल्पपरे, सुजय सौभाग सुखकल्पपरे । ॐ नमः पार्श्व प्रभु पत्कजे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ सज्झाय ॥

काया माया कारमी, परदेशीरे, कबहुन अपनि होय, मित्र परदेशीरे, इणको गरव न कीजिये । प० । छिनमे दिखावे छेह ॥ मित्रप० ॥ १ ॥ जैसे रंग पतंगको । प०। छिनमें फीको होय, मि० प० । मणि माणेक मोति हीरला, प० । त्राण शरण नही कोय ॥ मि० प० ॥ २ ॥ जिस घर हयगय घूमते । प० । हुंता बत्रीस राग । मि० प० । सोभी घर सुना पड्या । प० । बेसणलाग्या काग ॥ मित्रप० ॥ ३ ॥ मणि माणेक मोति पहेरतो । प० राजा हरचंद घर नार । मि० प० । एक दिन ऐसा हो गया । प० । परघरकी पनिहार, ॥ मित्रप० ॥ ४ ॥ हाथे परवत तोलते । प० । करते नरपति सेव । मि० प० । सोभी नर सब चले गये । प० । तेरी क्या गिणती अबेव ॥ मित्रप० ॥ ५ ॥ मेरुके मंदिर मालिया । प० । करले जिन सुं राग । मि० प० । दो दीनकी कर सोचना । प० । लगसी इन तन आग । मि० प० ॥ ६ ॥ झुठो सब संसार हे । प० ।

सुपनाका सोखेल । मि० प० । नगके तास समजके । प० । करले प्रभु सुं मले ॥ ॥ मित्र परदेशीरे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अष्ट प्रवचन माता सझाय ॥

चाले जयणा जोवतारे, पाले जीव छ काय । निरवद्य वचन मधुर कहे, नितु जाणे धर्म उपाय ॥ १ ॥ नमुं गुरु पायारे, जसुसीले निरमल सार । सुहावे कायारे । सुमिति गुप्ति धर्म प्रकार, कहे जिनरायारे । तिण कारण हर्ष अपार ॥ नमु० ॥ १ ॥ दोष बैंतालीस टालतां रे, सूधो ले आहार । नयणें निरखी पूजतां, लेवे उपगरण प्रकार ॥ नमुं० ॥ २ ॥ जल्ल मल्लादिक परठवेरे, सूधो स्थण्डिल जोई । शुभ ध्याने मन राखतां, जसु चारित्र निरमल होई ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ वचन सावध न उचरेरे, वचन गुप्ति संभार काया करणी ते करे, जेहथी हुए जीव उपगार ॥ ॥ नमु० ॥ ४ ॥ प्रवचन माता आठ एरे, जे पाले अनुदिन सार । ब्रह्म कहे ते मुनि नमुं, जिम पामुं जैन धर्मसार ॥ नमुं गुरुपायारे, जसुसीले निरमल सार सुहावे कायारे. ॥ ५ ॥ इति ॥

आ ग्रंथने अगाउथी आश्रय आपनार गृहस्थोनां मुबारक नामो.

(धन्यवाद)

६ बाबुसाहेब बाहादुरमलजी हजारीमलजी हीरालालजी रामपुरीया

बाबुसाहेब जेवंतमलजी रामपुरीया

बाबुसाहेब भेरुदानजी शखेचा

बाबुसाहेब उदयचंदजी रामपुरीया

उपरनां ग्रहस्थो तरफथी आ पुस्तकमां मदद आववाथी तेउ साहबोनो आ सभा अंतःकरण पूर्वक आभार माने छे.

ली. श्रीपार्श्वचंद्रगच्छनी जैन हठीसींघ सरस्वती सभा.

१० आचार्य महाराजश्री १००० श्री देवचंद्र सूरीश्वरजी तरफथी बीकानेरना ग्रहस्थोए भरेलां.

१ शेठ तेजकरण मूलचंदजी रामपुरीया

१ शेठ आसकरणजी

बीकानेर वासी ग्रहस्थोनां नामो लखी मोकलेलां बराबर नही उकलवाथी छपाणां नथी ते माफ करशोजी.

अमदावाद.

१ शेठ. फतेचंद दोलतचंद.

१ शा. मंगलदास लल्लुभाई छपावनार.

१ शा. महासुभाइ कालीदास.
१ शा. सोमचंद गोटालाल.
१ शा. भोगीलाल गाकरसी.
१ शा. अमरतलाल हेमचंद
१ शा. सांकलचंद खेमचंद

देश कच्छ.

गाम कोडाय मुनिमहाराजश्री १०८श्री दीपचंदजी
महाराजना उपदेशथी

१ शा. वजपार राणा
१ शा. कोरसी लाधाभाइ
१ शा देवजी लखमण ठे. नानी धर्मशाला
१ शा. जेठा नपु
५ मोटी धर्मशालाना भंडार खाते
२ शा. नथुभाइ मेघराज
२ शा. पुंसी वणवीर
१ शा. जेठा मांडण
२ शा. राणा करमसीह हा. बाइ हीमइबाइ
१ शा. वेलसी तेजसी
२ शा. जेठाभाइ नथु हा. रमीबाइ

नवोवास.

१० शेठ. धारशी लीला
२ शा. रणसी वाघा हा. रमीबाइ

मोटी खाखर साध्वीजी महाराजश्री लब्धीश्रीना उपदेशथी.

५ शेठ. रणसीभाइ देवराज
२ शा. गणसी केशव
२ शा. देवसी राइसीनी वीधवा बाइ भचीबाइ
३ बाइ लधीबाइ
२ शा. भाणजी घेलानी वीधवा बाइ लधीबाइ
१ गाम बीदडा शा. वेरसी वीरपाल
१ शा. गगुभाइ लधाभाइ
१ शा. मेघजी रवजी
१ शेठ, केशवजी मेघजीनी कंपनी मुंबाइ

नानी खाखर

५ शा. नागजी गुणपत नपु
५ शा. नेणसी कोरसी
१० शा. कचराभाइ नपु नानी खाखर
२ शा. जेठाभाइ दाइआ

गाम मांडल साधवीजीश्री आणंदश्रीजीना उपदेशथी.

५ वोरा रायचंद भगवान
१ शा. बालचंद ललुभाइनी मातुश्री बाइ फुकल
१ दोशी. सुरचंद वेलसी
१ वोरा मोहनलाल जीवराज

१ शा. हरखचंद रवचंद
१ शा. बालचंद मगनलालनीं मातुश्री बाइ जीवी
पुण्यस्थळ धांगध्रा
१ शा. झामर खोरुीदास
१ शा. मणीलाल लाटकचंद
१ शा. चतुरभाइ पदमसी
१ गांधी. ताराचंद झामर
१ कपासी. जगजीवन बबल
१ शा. नानजी वेणा खेरवापा
१ पारेख. रगनाथ लखमीचंद
१ शा. भवान परभु

१ शा. न्यालचंद कस्तुर
१ शा. दलसुख प्रागजी हलवद गामना
१ शा. कचरा कानजी
१ शा. लेरा जेसींग
१ शा. मणीलाल लखमीचंद खेरवापा
१ शा. शीवलाल फुलचंद कुढना
१ दफतरी छगनलाल नानचंद
१० शा. चतरभूज देवसी हाल बीकानेर
जैन स्कुल हेड मास्तर
१ बेन चंडु हठीसींग वीसनगर.
१ शा. छगलाल नथुभाइ मढिजना

सुविदीत मुनिमहाराज श्री १०८ श्री गुणचंद्रजी महाराजना सदुपदेशथी मंगावेलां
कच्छ—गाम—देवपुर निवासी गृहस्थोनां मुबारक नाम.

२ शा. कल्याणजी खेराज
१ शा. खेराज पचाण
१ शा. गेला हेराज
१ शा. रवजी अमरसी
१ शा. कोरसी पालण
१ शा. ठाकरसी कानजी
१ शा. पदमसी भारमल
१ शा. नरसी नेणसी

१ शा. पचाण लखु मोटी लाइजा
१ शा. लालजी हेमा राएणवाळा
५ शा. लधा रतनसीनी वीधवा बाइ
मेघबाइ गाम तुंबडी
१ शा. छगनलाल नथुभाइ गाम महीजना
१ शा. महासुखभाइ काळीदास अमदावाद

ली. मं. ल.

॥ आत्महितोपदेशपत्रिका ॥

सद्गुरु आचार्य श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरपादपद्मसेवी मुनि महाराज श्री सागरचंद्रजीये धर्मवृद्धिकारक श्रावक सद्गुरुचरणोपासक मंगलभाइ प्रति लखेल आत्महितोपदेशपत्रिका ते भव्यजीवोने अवश्य उपयोगी जाणी अत्र प्रकट करवामां आवेल छे.

आ संसारनी अंदर सर्व जीव सुखनी चाहना करनारा छे; परंतु जो जीवने बरोबर सुखनां साधन समजवामां आवे तोज जीव यथार्थ सुखनो भागी थाय. पण ज्यां सुधि अतत्मां तत्बुद्धि अने तत्मां अतत्बुद्धि दूर थयेल नथी, एटले के ज्यां सुधि शीपमां रुपानी बुद्धि, रज्जुमां (दोरडु) सर्पनी भ्रांति, पोताना पडछायामां प्रेतनी मति, जांझवाना जल (मृगतृष्णा) मां जलनी

॥ १ ॥

शंका, बंधनकारी पदार्थोमां तल्लीनता, अने परपरिणतिमां प्रीति–स्वाभिमान विगेरे मिथ्याज्ञान जीवमाथी दूर खसेल नथी त्यां सुधि आ जीव साचा सुखनो भागी थवानो नथी. आ जीव सुखी शयाथी थाय? आ प्रश्नना उत्तरमां मारे जणाववुं जोइये के परमात्मा प्ररुपित धर्म आराधन करवाथी आ जीव सुखी थाय छे, पण स्वकपोलकल्पितधर्मथी श्रेयनी प्राप्ति थति नथी. थोडुं पण आणा अने विधिपूर्वक करवामां आवे तो तेथी मोटा लाभ थाय छे.

जेने आज्ञा अने विधिनो तो खप नथी, पण मात्र लोकप्रवाहमां धर्म माने छे, तो ते जीव शी रीते सुखनो भागी थाय. जिनआणा रहित अने अविधिथी तो घणी वखत पेहेलां पण आ जीवे क्रियानुष्ठान कर्यां, तेनाथी कशो फायदो थयो नहि अने एमज आ जीव संसारमा जन्म मरणजनित दुःखोने भोगवतो भमतो रह्यो. जो आ जीवने जिनेंद्रप्रणीत पदार्थ तत्वोनुं रहस्य प्राप्त थयुं होत तो आ जीवनी आवी दशा न होत, पण स्वस्वभावमां रमण करी परमानंद प्राप्त करत. हजी सुधि पण परपरिणति पुद्गलदशानो जो आ जीव त्याग नहि करे तो फरीथी ॥ १ ॥

पश्चाताप करवाना दिवस आ जीवने आव्या विना नहि रहे; माटे 'समय न चूको चतुर नर, कवि कहत है कूक;—चातुरकुं खटके सदा, समय चूककी हूक.'

समयनो अर्थ सूत्रकार उपकारी पूज्योये आवो करेल छे के सर्व श्रेयना साधनभूत मनुष्य देह, आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल, इंद्रियपूर्णता, श्रावक कुलमां उत्पत्ति, शरीरे निरोगता, सुविहित गुरु आचार्यश्रीना उपदेशथी जिनेंद्रप्रणीत धर्मनी श्रवणरुचि, धर्मपर श्रद्धा अने ते प्रमाणे प्रवृत्ति, आ पामवां जीवने बहु दुर्लभ छे. केमके मनुष्यभव तो आ जीव घणी वखत पाम्यो; पण सर्व सानुकूल सामग्री आ जीवने मली नहि तेथी सुखनो भागी आ जीव थयो नहि, माटे आ समये सर्व सानुकूल सामग्री मलेल छे, तेने चूकवी भूलवी नहिं, एज समयनो अर्थ छे, अने तेथीज ज्ञानी पुरुषो उद्घोषणा करे छे के, आवो समय फरीफरीने नहि आवे. ए सर्व सामग्रीमां एकनी पण खोट होय तो मनुष्यभव नकामो छे अने ते सर्व सामग्री सदाय जीवने मलती नथी; किन्तु बहु पुन्यराशी प्रबल थाय छे त्यारेज सर्व सामग्रीनो संयोग थाय छे माटेज दुर्लभपणुं बतावेल

॥ २ ॥ छे. ते हाल सर्व सामग्री मलेल छे तेथी समय चूकवो नहि, जेथी आ जीव सुखनो भागी थाय
माटे ध्यान दइ स्वआत्मकल्याणमार्ग सेवन करवा. तत्परता—वीर्योल्लासपूर्वक धर्म अनुष्ठानादि-
क क्रिया लोकरंजन माटे नहि; पण स्वआत्मरंजन करवा माटे करवामां आवे, अर्थात्
“ आतमसाखे धर्म कह्यो, त्यां जननुं शुं काम; जनमनरंजन धर्मनुं, मूल न एक बदाम. ”
माटे स्वात्मरंजन हितार्थ जो धर्म करवामां आवे तो आ जीवनुं अवश्य कल्याण थाय.
पण जेने धर्म ए शुं चीज छे तेनुं भान नथी तेने कर्मोथी आत्माना कया कया गुणो
आवरणाय छे? कर्मने दूर करवामां मुख्य साधन श्यां छे? अने आ जीव दुःख केम पाम्या
करे छे? तेनो विचार तो करतो नथी, मात्र व्रतउच्चारण करवाथी तथा हुं साधु, हुं श्रा-
वक एम मानवाथी आ जीव सुखनो भागी थतो नथी, कारण के “ तत्व तो परख्यो नहि
क्या हुवा व्रतधार? धान विहुणा खेतमें, वृथा बनाइ वाड. ” माटे जे जे कोइ पण धर्म—कार्यादि ॥ ६ ॥
कार्य करवुं ते सम्यक्पणे विचारी अने पछी झाझुं नहीं पण भले थोडुं करवामां

आवे तो ते सन्मार्गानुगामी जीव धीमे धीमे स्वश्रेय साधन करी उंची पायरी ऊपर आव्या विना रहेशे नहि अने अनुक्रमे सर्व दुःखोनो नाश करी आ जीव शास्वता सुखनो भागी थाय एमां किंचित्मात्र संदेह नथी. हमेशां जेमना हृदयमां एवी भावनानो आविर्भाव थाय छे के हुं क्यांथी आव्यो छुं? आहिं कया पुन्यना उदयथी मारी उत्पत्ति थइ हशे? केवां में सारां कर्म करेलां हशे के जेथी आवो उत्तम देह पाम्यो छुं, हवे हुं केवां कर्म करुं छुं अने अन्य जन्ममां आ जीवने क्यां जवानुं थशे एटले आ भवथी कया भवमां आ जीवनुं प्रस्थान थशे, आवा प्रकारनी विचारणा जेना हृदयमां उद्भव पामती न होय तो आ जीव धर्ममां प्रवीण केम थाय अने धर्म विना सूखनो भागी पण क्यांथी थाय! कह्युं छे के "इहोपपत्तिर्ममकेन कर्मणा? क्वचप्रयातव्यमितो भवादिति। विचारणा यस्य न जायते हृदि कथं स धर्मप्रवणो भविष्यति!" माटे भव्यजीवोये आवी भावना भूलवी नहीं, पण सदाय ध्यानमां राखवी.

आ जीव सदानो मुसाफर छे; केमके केटली योनियोमां मुसाफरी करी करी आ भवमां पण

परिणाम पूर्वक करेली चेष्टा मिथ्यादृष्टिने चीकणा कर्मबंधन विपाकोदयवाली थाय छे.

भले कार्य तो सम्यक्त्ववान् पुरुष अने मिथ्यात्वी पुरुष एकज सरखां करो, पण तेमां परिणाममां बहु अंतर होवाथी एटले के पेलाना बहु निर्मल परिणाम छे अने मिथ्यात्वीना मलीन परिणाम छे तेथी कर्मबंधमां बहु तफावत पडे छे; केमके सम्यक्दृष्टिने अल्पकर्मबंध थाय छे. "अप्पोसि होइ बंधो जेणं न निद्धंधसं कुणइ." अने विरसपरिणाम होवाथी मिथ्यादृष्टिने गाढ बंध पडे छे, माटे जेम बने तेम सुगुण ग्रहण करवाना उद्यमपर प्रीति, क्रियामां रुचि, सौजन्यता, मैत्रीभावना, दान, दाक्षिण्यता, गुणग्रहणता पूज्योनिभक्ति अने तेना उपर धर्म अनुराग विगेरे आदरणीय गुणो ग्रहण करी आ जीव जेम सुखनो भागी थाय तेम प्रवर्त्तवा चूकवुं नहि.

आ संसारनी अंदर संसारनां कार्य तो हरकोइ करे छे; परंतु परमार्थ कार्यनी अंदर ज्यारे आ जीवनी प्रवृत्ति थशे त्यारेज आ जीवनो कल्याणमार्ग खुल्लो थतांज तेने सन्मार्ग प्राप्ति थशे, अने त्यारेज संसार–मोहादि भवभ्रमण मटशे. तेमज अनंत सुखनो भागी अमर आत्मा पण त्या-

॥ ४ ॥ रेज सत् चिद् आनंदरुप थशे. माटे जो आ जीवनुं कल्याण इच्छता हो तो प्रमाद दूर करो. प्रमाद एटले ८ मद, ५ विषय (पांच इंद्रियोना विकार), ४ कषाय, ४ विकथा अने निद्रा ए पांच प्रमाद छे. एमने दूर करवाथी ज सुख प्राप्त थाय छे. उत्तम चरित्रवाला पुरुषोनी सदा अमीदृष्टि विश्वव्यापक सर्व जीवो ऊपर समान वर्त्या करे छे. स्वश्रेय अथवा स्वअश्रेय ते स्वस्वाधीन छे. अन्य निमित्त कारणमात्र छे. हां ए वात तो ठीक छे के जो कारण सानुकूल होय तो कार्य सानुकूल थतां उत्तम इच्छावान्ने उत्तमज फल मलशे. उद्यमथी कार्यनी सिद्धि थाय छे ए प्राये मुख्य नियम समजवो. तेम करतां पण जो न थाय तो पछी जावी. पंच समवायथी कार्यसिद्धि ए परमात्मा देवाधिदेवनुं मुख्य सिद्धान्त सर्वत्र अस्खलित प्रवर्ते छे, कोइ वखत कोइनी गौणता, कोइ वखत कोइनी मुख्यता तेमां ए धर्म रहेल छे; पण एकनेज अंगीकार करी लेवुं ए एकान्तवाद कहेवाय छे अने तेथीज जगतमां अनेक मतमतांतर प्रादुर्भाव थयेल छे. जो जीवनी अनेकान्त दृष्टि थाय तो सर्वना मतमतांतर लय थइ जाय छे अने जीवने जिनवचन उपर प्रतीतिनो ॥ ४ ॥

प्रादुर्भाव प्रगट थाय छे, तेथी जीव शुद्ध समाचारीनो त्यागी थइ ते प्रमाणे वर्ती स्वात्मानुं कल्याण करे छे.

आ जीवनी असत् प्रवृत्ति अनादिकालनी छे तेने एकदम अटकाविये तो पण अटकति नथी जो अटके तो अंतर मूहुर्त सुधीज स्थिर रहे; परंतु अधिक काल सुधि प्रवृत्तिनी निवृत्ति थवी असंभव छे एटलाज माटे सत् प्रवृत्तिमां उद्यम राखवो एटले प्रवृत्तिने अटकाववी; पण ज्यारे प्रवृत्ति अटके नही त्यारे सत् प्रवृत्तिमां प्रवृत्त थवुं ए मुख्य रहस्य छे अने एटलाज माटे संजम पौषध प्रतिक्रमण सामायिक प्रभुपूजादिक धर्मानुष्ठानछे. जीव अने पुद्गलना संबंध संयोग संबंध छे ते प्रवाहे करी अनादि छे तेनो वियोग सम्यक् ज्ञानपूर्वक शुद्ध क्रिया अनुष्ठानथी थाय छे अन्य संयोगमां ज्यां सुधि आ जीव फसाइ रहेल छे त्यां सुधि सर्व कर्मोनो अभाव थवानोज नथी. केवल मुखथी मोटी मोटी वातो करवाथी कोइनुं कल्याण थवानुं नथी; परंतु सत् अनुष्ठानना सेवनथी शान्ति थशे. तेवां सत् अनुष्ठान देवाधिदेवे सिद्धान्तोमां जे कहेलां छे

तेज जाणवां. गुरुमहाराजनी कृपाथी तरवानो निकट रस्तो उपशम संवर विवेक अने आचर विचार के उत्तम पुरुषो जे मार्गे चाले ते मार्गे चालवुं, अने तेवा उत्तम विचार करवा प्रकृतिने अनुकूल आहार विहार सुखदायि थाय छे. हाल तो शुद्ध स्वरुपी अनंत सुखभोगी थाय एवी भावना करवी अने जिनोक्त शुद्ध अनुष्ठानमां रक्त रहेवुं के जेथी परंपराये आ जीव अष्टकर्मातील थइ शास्वत सुखनोभागी थाय. अवकाश अल्प होवाथी अल्प लखेल छे. श्रावकजी ! जेम तमने ठीक लागे तेम करजो, आलस प्रमाद दूर करजो, दरिद्रपणुं छोडजो, धर्ममां उद्यम राखजो, घरमा तो कोइ तमने प्रेरणा करे तेम नथी के धर्म करो; परंतु तमे तमारुं हित भूलशो नहीं एज आ समयनो सार छे. आप सुज्ञ छो जाण छो विशेष शुं लखवुं जेम आत्मश्रेय थाय तेवां कार्योमां तत्पर रहेवुं, शुष्क अध्यात्मनो पल्लो पकडशो नहीं, जिनआणा सहित क्रिया ते भाव अध्यात्मपूर्वक आदरजो जेथी आत्मश्रेय थाय. स्त्री पुत्र पुत्रीमां अनादि कालथी आ जीव घेरायेल छे. पण आ जीवने एक वखते जो परमात्मा प्ररुपित शुद्ध तत्व सद्दहणा थइ जाय अने ते प्रमाणे

जो वरताय तो आ जीवनो बेडो पार थाय; पण घणा जीवो अंधश्रद्धालु थइ गयेला छे तेथी गुणी अगुणीनी पण परीक्षा करता नथी, जिनवचन आराधनपणुं स्वप्नमां पण तेमने आववुं प्राये मुसकेल छे. हलुकर्मी जीव हशे ते विधि बहु मानी विधिपर आदर करनार थशे. इतितत्वं

धांगद्रा संवत १९६९ वैशाख शुक्ल पक्ष.

अथ पांच आंगलीए नोकारवाली गणवानां फल.

॥ ६ ॥

१ अगूठे जपतां अलिय विघ्न सर्वे जाय अने भरपूर सुख पामे
२ तर्जनी आंगुलीए जाप करतां दुष्ट वैरी नाश पामे.
३ मध्यमाए जाप करतां ऋद्धि सुख बहु फल आपे.
४ अनामीकाए जाप करतां वशीकर्ण करे—कोइ साथे प्रीत करवी होय तो थाय.
५ कनीष्ट थकी जाप करे तो आकर्षण करे—पुरुष स्त्री चाल्यां थकां आवे.

आसन फल १ वांसना आसन ऊपर बेसी जाप करे तो दारीद्री थाय.
२ पाषाणपर बेसी जाप करे तो रोग उपजे.
३ धरती उपर बेसी जाप करे तो दुःख पामे.
४ लाकडा उपर जाप करे तो दुर्भाग्य पणुं पामे.
५ त्रण उपर बेसी जाप करे तो हेत टूटे.
६ यान उपर बेसी जाप करे तो चित्त विभ्रम करे.
७ वस्त्र उपर बेसी जाप करे तो धन प्राप्ती करे.
८ कांबलीपर बेसी जाप करे तो अउखुं वधे.
९ मृगचर्मपर बेसी जाप करे तो धननी वृद्धि करे.
१० वाघचर्मपर बेसी जाप करे तो बंधीखानुं छुटे.

मालानुं फल. १ सूत्रनी माळा जपतां सुख आपे.
२ माटी हाडकानी लाकडानी मालाथी अल्प सुख पामे.
३ रुपानी सोनानी परवालानी मोतीनी शांति सौभाग्य आरोग्य तुष्टी पुष्टी करे.
४ रत्न स्फटिकनी वैडुर्यमणीनी मालाथी जाप करे तो हजार उपवासनुं फळ आपे.

॥ ६ ॥

षट् द्रव्य नय विचारादि प्रकरण संग्रह-

ग्रन्थः समाप्तः